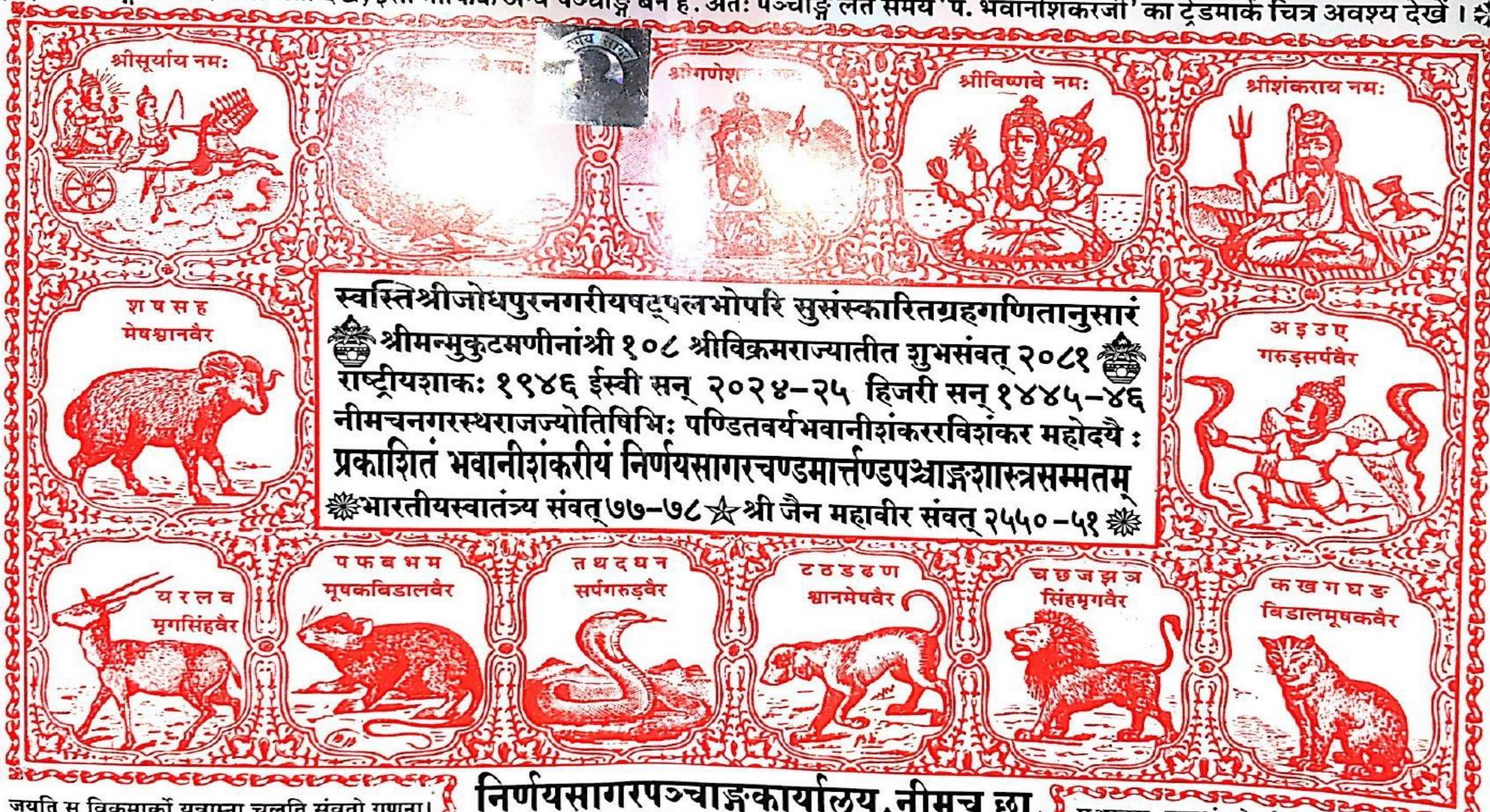
❁ इस पञ्चाङ्ग की विशेषमान्यता देख, इसी माफिक अन्य पञ्चाङ्ग बने हैं. अतः पञ्चाङ्ग लेते समय 'पं. भवानीशंकरजी' का ट्रेडमार्क चित्र अवश्य देखें। ❁




स्वस्तिश्रीजोधपुरनगरीयपट्टपलभोपरि सुसंस्कारितग्रहगणितानुसारं

श्रीमन्मुकुटमणीनांश्री १०८ श्रीविक्रमराज्यातीत शुभसंवत् २०८१

राष्ट्रीयशाकः १९४६ ईस्वी सन् २०२४–२५ हिजरी सन् १४४५–४६

नीमचनगरस्थराजज्योतिषिभिः पण्डितवर्यभवानीशंकररविशंकर महोदयै :

**प्रकाशितं भवानीशंकरीयं निर्णयसागरचण्डमार्त्तण्डपञ्चाङ्गशास्त्रसम्मतम्**

❁भारतीयस्वातंत्र्य संवत् ७७–७८☆श्री जैन महावीर संवत् २५५०–५१❁

जयति स विक्रमार्को यन्नाम्ना चलति संवतो गणना।
पञ्चाङ्गम् हि तदीयं मान्यतमं भारतादिदेशेषु।।

## निर्णयसागरपञ्चाङ्गकार्यालय, नीमच छा.

पञ्चाङ्गम् सुलभं सेव्यं शास्त्रमर्मसमन्वितम्।
निर्णयात्मकं सर्वमान्यं निर्णयसागरसंज्ञकम्।।

卐 शत तुल्य वर्षों से प्रचलित सम्मान्य लोकप्रिय पञ्चाङ्ग ● मूल्य १२०) रु. मात्र 卐

नकलों से सावधान ● नववर्ष का पञ्चाङ्ग लेते समय मुख पृष्ठ पर पं. श्री रविशंकरजी का स्पष्ट चित्र एवं इन्द्रधनुष सा-सामरंगी-त्रिदपणीय □ होलोग्राम देख लेवें।



♠ **श्रीवर्षफलाऽभिमुखं** - श्रीगणेशाय नमोनमः ♠ श्री विश्वप्रबोधकाय - भगवते श्रीभुवनभास्कराय नमोनमः ♠ ज्योतिषक्रस्य केन्द्राय जगत: स्तिथि रुपिणे त्रिनेत्र नेत्र रूपाय ग्रेह्शाय नमोनम: ♠ भवानीशंकरो वन्दे श्रधाविश्वास रुपिणौ ♠ स्वस्ति श्रीभारतहृदयसम्राट श्रीराष्ट्रपतिमहोदया:♠ येषां सुपल्लविते प्रजा-लोकतंत्रीय विज्यराज्ये ज्योतिर्विद्वर्य श्री पण्डित भवानीशंकर रविशंकर शास्त्री महोदयै: सम्यक् प्रकाशितं विनिर्मितश्च विविधविषयाऽलंकृत ♠ श्री निर्णयसागर पंचांग ♠ सर्वत्र भरतखण्डे परमादरणीयम् ♠ अथास्मिन् विक्रमाब्दे सृष्टितोगताब्दा: **१९५५८८५१२५** एवं चतुर्युगमनेषु कृत-सतयुग प्रमाणं १७२८०० अस्यां वेलायां श्रीविष्णु मत्स्यकच्छपावराहनृसिंहदी देवानामवतार:। त्रेतायुग प्रमाणं १२९६००० युगेऽस्मिन् श्रीवामनपरशुराम मर्यादा-पुरुषोत्तम: श्रीरघुसूर्यवंशीय राघवेन्द्र रामचंद्राऽवतार। द्वापरयुग प्रमाणं ८६४००० कालांशेऽस्मिन् षोडशकलावन्त: श्रीयुदचन्द्रवंशीय श्रीकृष्णचन्द्र बलरामयो: अवतार:। कलियुग प्रमाणं ४३२००० तन्मध्ये अहिंसानायक श्री बुद्धाऽवतारऽभवत् तथा च कल्कि अवतार: कलियुगस्य ८२१ वर्षाऽवशेषकाले स्यात्।। सम्प्रति गत्कालिवर्षाणि **५१२५** एवं गणनया भोग्यकलियुगवर्षाणि **४२६८७५** तथा च विविध कालांश विषये श्रीरामरावणयुद्धतो गताब्दखा: **८८०१६६** एवञ्च श्रीकृष्णाऽवतारतो गताब्दा: **५२५०** कुरुपाण्डवयुद्धतो गताब्दा: **५१२५** एवञ्च कालक्रमानुगते श्रीविक्रमादित्य राज्यात् संवात **२०८१** राष्ट्रीय शाके **१९४६** तथा च श्रीभारतीयस्वातंत्र्य संवत् **७७-७८** एवञ्च श्रीभारतीय गणराज संवत् **७५-७६** कालांश गतिक्रम:

♠ वर्षेऽस्मिन् वर्षेश अधिपति: **चन्द्र** सहिंतामतान्तरे उपेश **भौम** १, मंत्री **शनि** : २, पूर्व अन्नाधिप: सस्येश **भौम** : ३, पच्श्रादन्नाधिप : ध्यानेश **सूर्य** : ४, मेघेश **शुक्र** : ५, रसेश **गुरु** : ६, निरसेश **भौम** : ७, फलेश **शुक्र** : ८ धनेश **चन्द्र** : ९, दुर्गेश **शुक्र** : १० एते वर्षमध्ये विश्ववृतीय संसदीयविमंडले दशाऽधिकारिण:।। ♠ इथं काल गणनानुगते ब्रार्हस्पत्यमानेन षष्टि अब्दानां मध्य ब्रह्मा -विष्णु-रूद्र शिव विंशतिकायां **श्री कालयुक** नामकीय संवत्सर **५२** तथा च सौराब्दीय मानत: चैत्र शुक्लपक्ष कालांशत: **श्री सिद्धार्थी** नामकीय संवत्सर ५३ गतिशील:।। तथा च संकल्पादौ चैत्री वर्षांत **श्री कालयुक** संवत्सर: गणनीय:।। सम्प्रति सप्तमवैवस्वद् मन्वंतरकाल:। एवमेव वर्षफलाभिमुखे वर्षनाम **कार्तिक**। चतुर्मेघगणनया मेघनाम **आवर्त** : नवमेघ गणनया मेघनाम **वरुण**, रोहिणी निवास **तट**, समय निवास **धोबी (रजक)** गृहे संवत् समय वाहनं **मृग** : केचिन्मते **वृषभ** : संवत् विश्वा ८, आषाढ़ कृष्णे रोहिणी **१२-१३** तिथि मध्ये।। एवं विगणनया - गणितागते स्तंभ चतुष्के चैत्र शुक्ल प्रतिपदायां रेवती भोग : **१९ घटी**, वैशाख शुक्ले प्रतिपदायां **भरणी भोग : १२ घटी**, ज्येष्ठा शुक्ल प्रतिपदायां मृगशिरा ५१ **घटी**, आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदायां पुनर्वसु ६० **घटी** एवं गणितागत स्तंभ विषये **वायु - अन्न - स्तंभ मान्यता तथा - जल - तृण स्तंभस्य अल्पता।** वर्षेऽस्मिन् सोमवती अमावस्या **१**, अंगारकीय भौम चतुर्थी १, सोमवती पंचमी ० रविवारीय सप्तमी २, बुधाष्टमी ३, रविवारीय दशमी ३ एवं विगणनानुक्रमे शुभाऽशुभ तिथ्यादी रचना मान्यता। ♠ **वर्षेऽस्मिन् संवत २०८१ में भूगोल पर २ सूर्य ग्रहण तथा २ चन्द्र ग्रहण घटित होंगे परन्तु इन में से दोनों सूर्य ग्रहण और एक चन्द्र ग्रहण भारत वर्ष में दृश्य नहीं होगा तथा शेष एक चन्द्र ग्रहण भारत में मान्ध रूप में दृश्य होगा जिसका सूतक लागू नहीं होगा।।** ♠ शनि द्रष्टि: **पश्चिमे**, उत्पत्ति विश्वा ९३, खपति विश्वा ८४, अगस्त्य: **सिंहाऽक्रस्यसप्तांशे** उदयं स्यात्।। संवत् मुहूर्ता ३९० संवत् दिनानी ३५५, क्षय तिथय: १६, वृद्धि ११, सौभाग्य पंचमी घटिकादय: ४४।। इत्थं वार्षिक गणनानुगते स्पष्टता।।

♣ **वर्षमध्ये विश्वादय:** ♣ वर्षा विश्वा ५, धान्य ११, तृण ५, शीत १३, तेज १७, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ३, तृष्णा ९, निंद्रा १५, आलस्य १५, उधम १३, शांति १५, क्रोध १३, दंभ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रसनिष्पत्ति ९, फलनिष्पत्ति १३, उत्साह ११, उग्रता १५, पाप १७, पुण्य ७, व्याधि ७, व्यधिनाश ५, आचार ५, अनाचार ११, मृत्यु मरण ९, जन्म १, देशोपद्रव ७, देशस्वास्थ्य १३, चोरभय ३, चोरभयनाश १३, उद्भिज (वृक्षलताबेलादि) ३, जरायुज (मनुष्य गौ आदि वर्ग) ३, अण्डज (पक्षी एवं विषजीव) ३, स्वेदज (जूं-खटमल-दीमक-मच्छर आदि कीट) ३ ♠ विश्वाप्रमाणे पूर्णविश्वा २० अनुपातेन फलादेशो वीजानियात् ♠ तथा च वर्षरक्षार्थे परिपालन-संवर्धनार्थचत्वारि रक्षा-कल्प दुर्गाणि ♠ वैशाखशुक्ले तृतीययां रोहिणी **१६ घटी** भावी सुभिक्षार्थे **सामान्य** प्रतिफलं। श्रावण शुक्ले पूर्णिमायां श्रवण **१२ घटी** उत्पत्ति उत्पादानार्थे **न्यूनतम सामान्य:** कार्तिक शुक्ले पूर्णिमायां कृतिका **१२ घटी** गौ प्रजा बालऽबाल संरक्षण-पोषणर्थे **हानि प्रतिफलं**। पौष कृष्णे अमावस्यायां मूलनक्षत्रीय **५० घटी सुखद : प्रतिफलं** शीतकलिकं।। एवं चत्वारि वर्षरक्षा दुर्गाणि स्पष्टता एतेषां ६० घटी मानतो अनुपातेन निर्णयम्। इत्थं वर्षान्तर्गते सौरमण्डलीय ग्रहजनित गोचर-चलनकलनाऽनुसारेण शुभाऽशुमं वर्षफलाऽभिमुखं अनुभूयते।। बालवृद्ध धेनु प्रजायाभाग्यं सुकल्पं सततं सबलं प्रबलमस्ति धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा-धर्मो रक्षति रक्षितः।। धर्मेयत्नः सदा कार्यो धर्म एकः सुखावहः धर्मेण पाल्यते सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्।। ग्रहाः राज्यं प्रयच्छन्ति ग्रहाः राज्यं हरन्ति च। ग्रहैर्व्याप्तमिदं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्।। श्रीरस्तु-भारते भारतु भारती।। ♣ **ग्रहशान्ति मंत्र** ♣ ब्रह्मामुरारि त्रिपुरान्तकारीः भानु शशि भूमिसुतोबुधश्च। गुरुश्च शुक्रः शनि राहुकेतवः सर्वे-ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु।। एवं गणना गणित गतिक्रम पंचांगे निर्णयसागरे नीमच नगरस्थे मध्यप्रदेशे। शुभमिति -

**श्रीमानानन्दरूपोऽस्मि रविसूनुः सुनीमचे। गौड़ः पौत्रो भवानीशपंचाननस्य धीमतः**

♠ **त्रिपुष्कर + द्विपुष्कर** ♠ तिथि २-७-१२ वार-रवि, मंगल, शनि तथा नक्षत्र - विशाखा, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद, पुनर्वसु, कृतिका, उत्तराषाढ इन तीनों के योग होने पर त्रिपुष्कर नामक योग होता है। ♠ तथा तिथि - २-७-१२ वार-रवि, मंगल, शनि तथा नक्षत्र - चित्रा, मृगशिरा, घनिष्ठा इन तीनों के योग बनने पर द्विपुष्कर नामक योग गणनानुगत। इन दोनों योगानुयोगों का प्रतिफल मृत्यु + विनाश + वस्तुलाभवृद्धि में त्रिपुष्कर तीन गुना तथा द्विपुष्कर दोगुना फल देता है। इन योगवश लाभ होने पर भावी लाभ और अधिक तथा मृत्यु विनाश होने से और भी हानि विशेष बन पावे एवं शास्त्रीय मान्यता मुहूर्त्त चिन्तामणि शास्त्रग्रन्थ मतानुसार स्पष्टं एवञ्च तदग्रे नीतिसार सूत्राणि।। ♠ ♣ ♠

♣ उषः प्रशस्यते गर्गः शकुनं च बृहस्पतिः। अंगिरा च मनोत्साह विप्रवाक्य जनार्दनः।। गर्गमते सूर्योदय पूर्ववेला, गुरुमते शकुन प्रमाण, अंगिरानुसार मनोत्साह, जनार्दनमते श्रीविज्ञवचन। इत्यादि शास्त्र वचन आवश्यकीय मुहूर्त्त रचना हेतु श्रीकार रहते हैं। ● भाग्यं फलति सर्वत्र न च विद्या न च पौरुषम्। समुद्रमन्थनं प्राप्य, विष्णुर्ललक्ष्मीहरेर्विषम्।। देवदानवगंधर्वाः यक्षराक्षस किन्नराः। पीड्यन्ते ग्रहपीड़ाभिः किं पुनर्भुवि मानवाः।। ● आयुः कर्म च वित्तं विद्या निधनमेव च। पंचेत्यान्नपि सृज्यन्ते गर्भस्थस्यैव देहिनः।। कालः पचति भूतानि कालः संहरते प्रजाः।। कालः सुप्तेषु जागर्ति कालो ही दुरति क्रमः।। वन रणे शत्रुजलाग्निमध्ये महार्णवे पर्वतमस्तके वा।। सुप्तं प्रमत्तं विषमास्थितं वा रक्षन्ति पुण्यानि पुराकृतानि।। यद् दूरं यद्दुराध्य यच्च दूरे अवस्थितम्। तत्सर्वं तपसा साध्यं तपोहि दूरित क्रमम्। इत्थं शास्त्रीय नीति वचन सूत्राणि।

## निर्णयसागर पंचांग कार्यालय, नीमच छा. (म.प्र.)



**वर्षफलाशय–सूत्रावली** – श्रीशंवन्दे–सजयति सिंधुरवदनो-देवोयत्पाद पंकजस्मरणम् । वासरमणिरिवतमसां राशीन्नाशयति विघ्नानाम् ॥ आदित्यो मंत्र संयुक्त आदित्यो भुवनेश्वरः। अदित्यांन्नापरो देवो आदित्यः परमेश्वरः ॥ प्राप्तेनूतनवत्सरे प्रतिगृहे कुर्यात् ध्वजारोपणं स्नानं मंगलमाचरेत् द्विजवरैः सार्ध सुपूजोत्सवम् देवानां गुरुयोषितां च शिशवोऽलंकारवस्त्रादिभिः, संपूज्योगणकः फलं च श्रुणुयात्तस्माच्चलाभप्रदम् ॥ सरस्वतीं च दैवज्ञं पूजयित्वा विनायकं दैवज्ञ मुखतो भक्त्या श्रुणुवर्षफलं मुदा ॥ **कालयुक् नाम-कीय संवत्सरे तु–** वत्सरेकालयुक्ताख्येसुखिनः सर्वजन्तवः। संत्यथापिचसस्यानिप्रचु-राणितथागदाः।।1।। एवं **तदग्रेऽपि फलश्रुतिः–** सिध्दार्थवत्सरेभूयोज्ञानवैराग्ययुक्प्रजाः। सकलावसुधाभातिबहु-सस्यार्घवृष्टिभिः।।2।। **(1) वर्षेश राजा चन्द्रफलं–** चन्द्रे नृपे मंगलशोभनानि प्रभूतवृष्टिः प्रचुरं च धान्यम्। सौख्यं जनानामुदयो नृपाणां प्रशाम्यति व्याधिजरा नराणाम्।। उपनायक भौमस्तस्य फलं– भौमे नृपे वह्निभयं जनक्षयं चौराकुलं पार्थिवविग्रहं च। दुःखं प्रजाव्याधिवियोगपीड़ा स्वल्प पयो मुञ्चति वारिवाहः।। **(2) मंत्री शनिस्तस्य-फलं–** रविसुतेयदिमंत्रिणिपार्थिवाविनयसंरहिताबहुदुःखदाः। नजलदाजलदाजनतापदाजनपदेषु सुखंनधनंक्वचित्।। **(3)सस्येश (पूर्व अन्नाधिपः) भौमस्तस्यफलं–** प्रथमधान्यपतौधरणीसुतेगजतुरंगखरोष्ट्रगवामपि। प्रभवदोबहु-रोगघनोजलंनसमसौख्यकरंतुषधान्यहृत्।। **(4) धान्येशे(पश्चादन्नाधिपः) रविस्तस्यफलं–** पश्चाद्धान्या-धिपेसूर्येपश्चाद्धान्यंतदानहि। विग्रहम्भूभृतांधान्यंमहर्घंज्वरपीड़नं।। **(5) मेघेश शुक्रस्तस्यफलं–** भृगुसुतोजल-दस्यपतिर्यदाजलमुचोजलदादिविशोभनाः। धननिधानयुताद्विजपालकानृपतयो जनतासुखदायकाः।। **(6) रसेश गुरुस्तस्यफलं–** यदिगुरुरसपोजनसौख्यदः कमलवन्तिसरांसि त्रिणानिच। जनपदाद्विजपूजनतत्परागजसुवाजिर-थाष्ट्र्युतानृपाः।। **(7) नीरसेश भौमस्तस्यफलं–** निरसेशोयदाभौमः प्रवालरक्तवाससाम्। रक्तचन्दनताम्राणामर्घ-वृद्धिर्दिनेदिने।। **(8) फलेश शुक्रस्तस्यफलं–** यदि फलस्यपतौभृगुजेधरामृदुकुमारमहीरुहराशयः। बहुफलानरनाथसुभोगदाद्विजवराः श्रुतिपाठपरायणाः।। **(9) धनेश चन्द्रस्तस्यफलं–** धनपतिर्मृगलाञ्छनकोय-दारसचयक्रयविक्रयतो धनम्। वसनशालिसुगंधरसंबहुद्रविणतैलयुतंनृपसौख्यदम्।। **(10) दुर्गेश शुक्रस्तस्यफलं–** नगरदेशविशेषपतिर्यदाभृगुसुतोबहुसौख्यकरो मतः। विनयवाणिजगेहसमः सुखानगवनेनिकटपिचदूरतः।। **वर्षनाम कार्तिकस्तस्यफलं–** सत्यात्पीड़ाकार्तिकेवर्षेवह्नीगावोपजीविनाम्। शस्त्राग्नेश्चभयंवृद्धिः पुष्पकौसुम्भजीविनाम्।। **रोहिणी निवास तट भागे तत् फलं–** यदिविधिधिष्ण्यपतिततटस्थं। शुभजलवृष्टिर्धनकणवृद्धिः।। **समय निवास रजकगृहे तत् फलं–** जलपूर्णानि दृश्यन्ते वासोरजकगृहे सौख्यदम्।। **चतुर्मेघ गणनानुसारेण मेघनाम आवर्तस्तस्यफलं–** विनाशनंशालियवादिकानांतथैवकार्पासघृतादिकानाम्। घनोयदावर्तकनामधेयः स्वल्पंजलं स्याद्धनिनामपायः।। **नवमेघ गणनानुसारेण वरुणस्तस्य फलं–** अग्निहोत्रकरणादराद्विजाः स्युः सदाधिकमुदोखिलाः प्रजाः। अर्णवेणसहितंमहीतलंवारुणेजलधरे भवेदलम्।। **स्तम्भ चत्वारेशु–** तृण + जल स्तम्भ अल्पता, वायु + अन्न स्तम्भः मान्यता ♠●♠ **कालेवर्षतुपर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी देशोऽयं क्षोभरहितो सुप्रजाः सन्तु निर्भयाः। अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तुपौत्रिणः। अधनाः सधनाः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः। शिवमस्तु सर्वजगतः परिहितनिरताः भवन्तुभूतगणाः दोषाः प्रयान्तु नाशं सर्वत्र सुखी भवतु लोकः।। सूर्यशौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मंगलं मंगलः। सद्बुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं. शनिः।। राहुर्बाहुबलं करोतु विपुलं केतुः कुलस्योन्नतिं। नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु भवतां सर्वे प्रसन्ना ग्रहाः।। इत्याशीर्वादादिकं शुभ संकल्प।। एवं बहुविधं संचिन्त्य दैवज्ञैः कथनीय शुभाऽशुभफलम् एवं मेदिनी संहितान्तर्गते राजावली फलश्रुतिः पंचांगे निर्णयसागरे नीमच नगरस्थे - शुभमिति।।** ♠●♠



## 卐 श्री भैरव – भवानी सुवाक्यं सूत्रावली 卐




आद्य सनातन शक्ति हो! जीव जगत प्रतिपाल। विक्रमाब्द अभिनव बना, कहो भुवन के हाल।।
अम्बाजी कहे ज्ञान से, सुनिये भैरव मंत्र। जीव प्रजा का कर्मफल, निर्णय पत्र सुतंत्र।।
सुनो देव! इस वर्ष के, अधिनायक शशिराज। अमृत रश्मि नाम से, भू प्रसिद्ध अधिराज।।
जन मंगल की कामना, निर्धन सौख्य स्वराज। उन्नत महिला देश की, निर्णय कथन सुकाज।।
सूर्य पुत्र शनि देव का, पद मंत्री संचार। राज तंत्र अभिनव गति, प्रजा तंत्र अभिसार।।
श्रमकर्मी निर्धन जगत, विकसित देश–प्रदेश। संग्राहक धन सम्पदा, अस्त गतिक संदेश।।
सस्य धान्य के श्रीपति, मंगल–रवि निहार। कृषि साधना कष्ट की, कृषक चित्त अधिभार।।
हरित श्वेत क्रांति विषय, वसुधा जग संसार। वैज्ञानिक कृषि योजना, शासन केंद्र प्रसार।।
मेघराज भृगु देवता, फलाधीश भृगु दक्ष।। गौ प्रजा के भाग्य से, लक्षण सुखद विलक्ष।।
देव चंद्र हैं धनपति, रक्षाधिप भृगु देश। अर्थ तंत्र नव योजना, समकल वित्त प्रवेश।।
बैंक कोष मुद्रा विषय, जन–जन सौख्य विचार। रक्षा सुविधा पक्ष में, व्यय विशेष संचार।।
रसाधीश गुरु देवता, मंगल नीरस पक्ष। अणु शक्ति विज्ञान से, भारत महिमा दक्ष।।
रोहिणी वास मंडित तटे, रजक वर्ष संचार। नहर–बंध नव योजना, सजल पक्ष गतिचार।।
उत्पादन उद्योग हित, कृषक पक्ष अभिज्ञान। वैज्ञानिक नवसाधना, शासन नित्य निदान।।
धर्म कर्म पर दृढ़ रहो, राष्ट्र सत्व अभिलक्ष। विज्ञ भवानी सुत कहे, मौलिक तत्व सुदक्ष।।

### ♠ ● लाभ खर्च विवेक २०८१ विक्रमाब्दे एवं सनाब्दे २०२४–२०२५ ई. ● ♠

| राशि | मेष | वृषभ | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुंभ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लाभ | १४ | ०८ | ११ | ०५ | ०८ | ११ | ०८ | १४ | ०२ | ०५ | ०५ | ०२ |
| खर्च | ०२ | ११ | ०८ | ०८ | ०२ | ०८ | ११ | ०२ | ११ | ०५ | ०५ | ११ |

♣ **लाभ खर्च विगणना** – अपनी–अपनी राशि अनुसार लाभ खर्च दोनों अंकों का योग कर १ घटावें तथा ८ का भाग देवें। यदि शेष १ रहे तो वर्ष में लाभ, २ में सुख शान्ति, ३ में क्लेश, ४ में रोग–शोक, ५ में अपयश, ६ में मानद जीवन, ७ में विजय लाभ, तथा ८ या ० शेष रहते कुयोग नेष्ट फलसूचक। इसे भी विशेषकर अपनी जन्मराशि में गोचर दिन दशा का मनन करना भी योग्य विषयक सूत्र रचना समझना चाहिए।

♣ **सुभिक्षदुर्भिक्ष परिज्ञान सूत्र** – प्रभवादि संवत्सर क्रम से वर्तमान वत्सर संख्या में दो का गुणा करें ३ घटावें तथा ६ का भाग देवें शेष १ – ४ से दुर्भिक्ष, ५ – २ से सुभिक्ष, ३ – ६ शेष में साधारण फल, ० शेष अशुभफल ✲ अन्य नियम – विक्रम वर्ष की संख्या ३ से गुणा कर ५ जोड़ें योगफल में ७ का भाग देने से शेष ३ – ५ रहते दुर्भिक्ष शून्य से नेष्ट फल तथा १ – २ – ४ – ६ शेष से सुभिक्ष प्रदायक प्रतिफल समझना चाहिए।



पद्मालयां पद्मकरां पद्मपत्र निभेक्षणाम्।
वन्दे पद्ममुखीं देवीं पद्मनाभप्रियां शुभाम्।।
ॐ सर्वज्ञे सर्व वरदे सर्वदुष्ट भयंकरी।
सर्व दुःखहरे देवि महालक्ष्मी नमोस्तु ते।।
जयति कञ्जपत्राक्षि जयति श्रीपति प्रिये।।
जयमातर्महालक्ष्मी संसारार्णवतारिणी।।
भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकाम प्रदायिनी।
सुपूजिता प्रसन्ना स्यान्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।

**श्रीवर्धन श्रीःयंत्रराज**

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७ | १२ | १ | १४ |
| २ | १३ | ८ | ११ |
| १६ | ३ | १० | ५ |
| ९ | ६ | १५ | ४ |

## ♣ श्री महालक्ष्मी पूजा-अर्चना मुहूर्त्त ♣

सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्ति मुक्ति प्रदायनी।
मंत्रपूते सदा देवि महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शंख चक्र गदा हस्ते महालक्ष्मी नमोस्तु ते।।

## ● बहीखाता निर्माण एवं आनयन मुहूर्त्त ●

(१) **स्वस्ति शुभ संवत् २०८१ आश्विन शुक्ल पक्ष ४** सोमवार अनुराधा नक्षत्र दिवा ९:४८ उ.ता. ७.१०.२०२४ ई.। (२) **आश्विन शुक्ल पक्ष ८** शुक्रवार उत्तराषाढ़ नक्षत्र ता. **११.१०.२०२४** ई.। (३) **आश्विन शुक्ल पक्ष १५** गुरुवार रेवती नक्षत्र दिवा ६:४९ उ.ता. **१७.१०.२०२४** ई.। (४) **कार्तिक कृष्ण पक्ष ५** सोमवार मृगशिरा नक्षत्र प्रातः ६:४४ उ. दिवा ११:११ तक ता. **२१.१०.२०२४** ई.। (५) **कार्तिक कृष्ण पक्ष ८** गुरुवार पुष्य नक्षत्र सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, गुरुपुष्य योग ता. **२४.१०.२०२४** ई.। (६) **कार्तिक कृष्ण पक्ष १३** बुधवार हस्त नक्षत्र दिवा ८:५१ उ. दिवा १:१६ तक ता. **३०.१०.२०२४** ई.।

## ● धनत्रयोदशी श्री कुबेर पूजा ●

स्वस्ति शुभ संवत् २०८१ **कार्तिक कृष्ण पक्ष १२ मंगलवार** तिथि मानक रचना अनुसार ता. **२९.१०.२०२४** ई. सायं प्रदोष वेला यम दीपदानं एवं श्री पूजन सायं ५:५४ से ८:१८ पर्यंत। ● **ता. ३०.१०.२०२४** ई. को **नरक चतुर्दशी** निमित्त प्रदोष वेला में **दीपदानं** मान्य। ● **ता. ३१.१०.२०२४** को **रूप चौदस** निमित **अरुणोदय स्नान पर्व** मान्य।

## ● श्री महालक्ष्मी पूजा-दीपोत्सव ●

स्वस्ति शुभ संवत् २०८१ **कार्तिक कृष्ण पक्ष ३० शुक्रवार** तिथि मानक रचना अनुसार ता. **१.११.२०२४** ई. (देखें पृष्ठ २३) दिवस वेला पर प्रालेपन गादी स्थापना स्याही भरना कलम दवात संवारने हेतु शुभ चौघड़िया काल समय अनुसार प्रातः ६:५१ से ८:१४ तक **चंचल वेला** समगतिक मान्य, प्रातः ८:१४ से १०:५९ तक **लाभ-अमृत वेला**, दिवा ११:५९ से १२:४४ तक **अभिजित वेला**, दिवा १२:२२ से १:४४ तक **शुभ वेला**, दिवा ४:२९ से ५:५२ तक **चंचल वेला** समगतिक मान्य, सायं ५:५२ से ८:१६ तक **प्रदोष वेला**, रात्रि ९:०७ से १०:४४ तक **लाभ वेला**, रात्रि १२:२४ से ३:३६ तक **शुभ- अमृत वेला**, रात्रि शेष ३:३६ से ५:१४ तक **चंचल वेला** समगतिक मान्य तथा स्थिर संज्ञक शुभ लग्न समयानुसार **वृश्चिक लग्न** प्रातः ८:०० से १०:१७ तक, **कुम्भ लग्न** दिवा २:०५ से ३:३५ तक, **वृषभ लग्न** सायं ६:४० से ८:३७ तक, **सिंह लग्न** रात्रि शेष १:०८ से ३:२४ पर्यंत एवं इस **सिंह लग्न में कनकधारा स्तोत्र** का पठन-पाठ विशेष श्रीकारक सिद्ध होता है।

## ● श्रीरोकड़ मिलान लेखन ●

**श्री रोकड़ मिलान लेखन कार्य-** श्री नवकार्य शुभारम्भ हेतु कार्तिक सुदी १ शनिवार प्रतिपदा तिथि मानक एवं तारीख २.११.२०२४ ई. दिवा ८:१४ से ९:३६ तक शुभ वेला शुभ श्रीकार।

## ● शासकीय लेखा-बही निर्माण व्यवहार मुहूर्त्त ●

(१) चैत्र बदी ६ **गुरुवार** अनुराधा नक्षत्र ता. **२०.०३.२०२५ ई.** (२) चैत्र बदी १० **सोमवार** उत्तराषाढ नक्षत्र **ता. २४.०३.२०२५ ई.**

## ✱ विवाह लग्ने विश्वादा ग्रहाः ✱

(लग्नं शुभं विवाहे स्याद् दश विंशोपकाधिकम्-मुहूर्त्तगणपति)

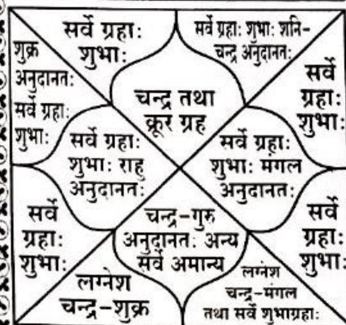
| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | २ | ३ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ३ |
| ६ | ३ | ६ | २ | २ | २ | ६ | ६ | ६ |
| ८ | ११ | ११ | ३ | ३ | ४ | ८ | ८ | ८ |
| ११ | | | ४ | ४ | ५ | ११ | ११ | ११ |
| | | | ५ | ५ | ९ | | | |
| | | | ६ | ६ | १० | | | |
| | | | ९ | ९ | ११ | | | |
| | | | १० | १० | | | | |
| | | | ११ | ११ | | | | |
| ३।। | ५ | १।। | २ | ३ | २ | १।। | १।। | १।। |

## विवाहेलग्नभंगदा ग्रहाः

**● एवञ्च विवाहलग्ने शुद्धि-विवेचना सूत्र ●**

सर्वमान्य आगम काल से सिद्ध मुहूर्त्त चिन्तामणि मतानुगत विवाहलग्न-विषयक सूत्र- **व्यये शनिःखेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः। लग्नेट् कविग्लौश्च रिपौ मृतौ ग्लोर्लग्नेट्- सुभाऽराश्च मदे च सर्वे।।** भावार्थ विवेचना- विवाहलग्न काल में चन्द्र तथा पाप ग्रह वर्जित है। परन्तु वृषभ, कर्क राशि एवं पूर्ण चन्द्रमा की स्थिति दोषसंज्ञक नहीं। ✦ **द्वितीय** २ भाव में कोई भी ग्रह वर्जित नहीं है। ✦ **तृतीय ३** भाव में शुक्र सम गतिक अनुदानादि से शुभ मान्य तथा अन्य सभी ग्रह शुभ मान्य ✦ **चतुर्थ ४** भाव में राहु सम गतिक तथा अनुदानादि से शुभ मान्य तथा अन्य सभी ग्रह शुभ मान्य ✦ **पंचम ५** भाव में सभी ग्रह प्रायः शुभ ही मान्य ✦ **षष्ठ ६** भाव में चन्द्र-शुक्र तथा लग्नेश शुभ नहीं। तथापि चन्द्र नीच राशि वृश्चिक - नवांश का चन्द्र एवं शुक्र-कन्या नीच राशि का तथा कर्क-सिंह शत्रु राशि का शुभ ही मान्य तथा चन्द्र व शुक्र का लग्नेश होकर छठे भाव में होना शुभ नहीं। ✦ **सप्तम ७** भाव में चन्द्र-गुरु की रचना सामान्य संज्ञक बनते अनुदानादि से शुभ मान्य तथा सप्तम में अन्य सभी ग्रह वर्जित हैं। ✦ **अष्टम ८** भाव में चन्द्र-मंगल-लग्नेश तथा अन्य सभी शुभ ग्रह मान्य नहीं। तथापि नीच राशि वृश्चिक ८ चन्द्र एवं शुक्र शत्रु राशि कर्क-सिंह तथा मंगल शत्रुराशि मिथुन-कन्या एवं अस्तंगत स्थिति का शुभ ही मान्य। परन्तु चन्द्र-शुक्र-मंगल का लग्नेश होकर ८ भाव में स्थान शुभसूचक नहीं। ✦ **नवम ९** भाव में प्रायः सभी ग्रह शुभ ✦ **दशम १०** भाव में मंगल सामान्य संज्ञा का बनते अनुदानादि से शुभ ही मान्य तथा अन्य सभी ग्रह वर्जित नहीं हैं। ✦ **एकादश ११** भाव में प्रायः सभी ग्रह शुभ मान्य। ✦ **द्वादश १२** भाव में शनि तथा चन्द्र सामान्य संज्ञा के बनते अनुदानादि से शुभ मान्य तथा अन्य कोई भी ग्रह वर्जित नहीं है एवं यह विवाह लग्न शोधन-शुद्धि का नियामक बहुसम्मत है। ● **विशेषशास्त्रीय सूत्र-लग्न बल-ग्रह परिहार-समाधान हेतु भी शास्त्रीय वचन प्राप्त है। यथा-गुरुरेकोपि केन्द्रस्थः शुक्रो वा यदि वा बुधः। हरेः स्मृतिर्यथा हन्ति तद्वद्दोषा न कालजाः।।** काव्यो गुरुर्वा सौम्यो वा यदा केन्द्र त्रिकोणगाः। नाशयंत्यखिलान् दोषान् पापानिव हरिस्मृतिः।।

## विवाहलग्न भंगदा ग्रहाः



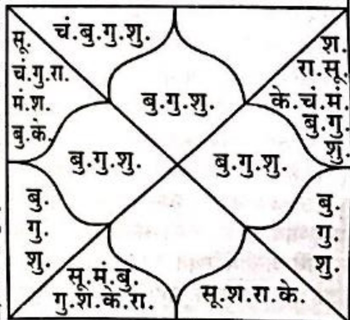

## विशेष संकेत-समाधान सूत्र

लग्न प्रथम १ भाव स्थान तथा षष्ठ ६-७ भाव स्थान एवं अष्टम ८ भाव स्थान तथा १०-१२ भाव ग्रह रचना हेतु विशेष उपरोक्त भाषा लेखन परिहारक वचन सूत्र पर भी ध्यान रखना चाहिए।

**✦ प्रत्येक शुभ कार्यों हेतु सामान्य लग्न शुद्धि ✦**

व्ययाष्टशुद्धोपचये लग्नगे शुभदृग्युते। चन्द्रे त्रिषड्दशायस्थे सर्वारम्भः प्रसिद्धयति।। अभिष्ट कार्य सम्पादन हेतु जन्म लग्न या जन्म राशि से ३-६-१०-११ भाव राशि में लग्न हो तथा लग्न से द्वादश १२ एवं अष्टम ८ भाव स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) रहें। लग्न पर शुभ ग्रह की दृष्टि या योग हो तथा चन्द्रमा लग्न से ३-६-१०-११ स्थान भाव में हो। एवं सुयोग रहते सभी शुभ कार्यों का शुभारंभ शास्त्रसम्मत एवं सामान्य लग्न शुद्धि नियामक गणना से शुभ होता है।

## विवाहलग्न रेखाप्रदाः ग्रहाः



# स्वस्ति श्री विक्रमाब्द २०८१ शाकः १९४६ रेखाभिः सहिता विवाहलग्नोपनयनादि विविध मुहूर्त्तादयः

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारू–भक्षणम् ! उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम् ॥
वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभः । निर्विघ्नं कुरू मे देव ! शुभकार्येषु सर्वदा ॥ श्रीमन् महागणाधिपतये नमो नमः ॥

**स्वभावादेव कालोऽयं शुभाशुभ समन्वितः । अनादिनिधनः सर्वो न निर्दोषो न निर्गुणः ॥**
**तस्मान्निर्दोषकालार्थे मुहूर्त्तमधिगच्छताम् । कालः शुभो गुणैर्युक्तो बलवद्भिः शुभप्रदः ॥**

## गुरूशुक्रास्त एवं विविध समयशुद्धि विवेचना

*** भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वास रूपिणौ ***

♣ **मीन संक्रान्ति मलमास** – संवत् २०८० फाल्गुन शुक्ल पक्ष ५ गुरूवार तारीख १४.३.२०२४ से संवत् २०८१ चैत्र शुक्ल पक्ष ५ शनिवार तारीख १३.४.२०२४ पर्यंत मान्य रहेगा। ♣ **शुक्र अस्तोदय** – संवत् २०८१ वैशाख कृष्ण पक्ष ४ रविवार ता. २८.४.२०२४ से शुक्र तारा अस्त रचना का बनते आषाढ़ कृष्ण पक्ष ३० शुक्रवार ता. ५.७.२०२४ को शुक्रतारा उदित स्वरूप का रहेगा। ♣ **गुरू अस्तोदय** – संवत् २०८१ वैशाख कृष्ण पक्ष १४ मंगलवार ता. ७.५.२०२४ से गुरू तारा अस्त रचना का बनते भावी ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ८ शुक्रवार ता. ३१.५.२०२४ को गुरूतारा उदित स्वरूप का रहेगा। ♣ **श्री हरि–देवशयनकालांशः** – संवत् २०८१ आषाढ़ शुक्ल पक्ष ११ बुधवार ता. १७.७.२०२४ से कार्तिक शुक्ल पक्ष ११ मंगलवार ता. १२.११.२०२४ पर्यंत देवशयन कालांश मान्य रहेगा। ♣ **महालय श्राद्ध पक्ष** -- संवत् २०८१ भाद्रपद शुक्ल पक्ष १४ मंगलवार ता. १७.९.२०२४ से आश्विन कृष्ण पक्ष ३० बुधवार ता. २.१०.२०२४ पर्यंत श्राद्ध पितृ पक्ष कालांश नेष्ट सूचक ♣ **धनु संक्रान्ति मल मास** – संवत् २०८१ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १५ रविवार ता. १५.१२.२०२४ से प्रारंभ होकर भावी माघ कृष्ण पक्ष १ मंगलवार ता. १४.१.२०२५ पर्यंत कुमुहूर्त्त सूचक नेष्ट कालांश ♣ **होलाष्टक कालांश** – संवत् २०८१ फाल्गुन शुक्ल पक्ष ८ शुक्रवार ता. ७.३.२०२५ से फाल्गुन शुक्ल पक्ष १४ गुरूवार ता. १३.३.२०२५ पर्यंत विवाह मुहूर्त्त आदि शुभ मांगलिक कार्य रचना शोधन हेतु कालांश मान्य नहीं।

♣ **मीन संक्रान्ति मल मास** – संवत् २०८१ फाल्गुन शुक्ल पक्ष १५ शुक्रवार ता. १४.३.२०२५ से संवत् २०८२ वैशाख कृष्ण पक्ष १ रविवार ता. १३.४.२०२५ पर्यंत मान्य होगा। ♣ **गोधूलि लग्न वेला** – गोरज गोधूलिक वेला के विवाह लग्न सर्वदा सूर्यास्त समय से १२ मिनिट पूर्व तथा १२ मिनिट उपरांत तक मान्य एवं गुरूवार को सूर्यास्त होने पर तथा शनिवार को सूर्यसाक्षी मध्य ही वर–कन्या का हस्तमिलाप–पाणिग्रहण शुभ। अन्यथा गोधूलि–अन्य गोधूलि वेला संज्ञक समय सिद्ध नहीं होगा। अतः विवाह विषयक अन्य पूजा कर्म आदि समय से १ घंटा पूर्व ही समाधित कर लेना योग्य सूत्र है ♣ तथा जिन ग्रहों के (दा.) दानतः अथवा (पू.) पूज्य उल्लेख किया गया हो उस दिवस पर अथवा श्रीगणपति स्थापना दिवस पर ही अभीष्ट ग्रह हेतु अनुदानादिक क्रिया सूत्र रचना पर ध्यान रखना युक्तियुक्त विषय है। ♣ **क्रान्तिसाम्य** – महापात गणितागत सूक्ष्म रचना अनुसार मान्य किया गया है। इस पक्ष विषयक सूर्य–चन्द्र की राश्यात्मक स्थिति मात्र को मान्य नहीं किया गया है। यह गणितागत सिद्धान्त रचना का विषय भी स्पष्ट है * तथा इन विवाह मुहूर्त्तों में दिवा–गोधूलि–रात्रि आदि इन ३ लग्नवेला की गणना मान्यता की गई है। अपनी–अपनी कार्यसुविधा लोक मान्यता देशाचार–कुलाचार अनुसार कार्य समाधान करना भी सन्मार्ग सूचक सूत्र। * दिवा लग्न हेतु शास्त्रीय व्यवधान विशेष नहीं यथासूत्र विवाह पद्धति मध्ये – **दिवासूर्यमवलोक्य रात्रौ ध्रुवं च विपश्य**। अर्थात् दिवा लग्न भी कार्य समाधान सूचक तथा रात्रिलग्न वेला पाठान्तर वैशेषिक मान्यता अनुरूप है। * देवशयन कालांश के लग्न मुहूर्त्त तथा कात्यायनोक्त नक्षत्र चतुष्टयी के विवाह मुहूर्त्त भी युगधर्मानुकुल जनसुविधार्थ प्रस्तुत हैं। इनका सदुपयोग – कार्यव्यवहार भी देशकाल परिस्थिति एवं निजकुलज धर्म सम्प्रदाय शाखा–प्रशाखा देशाचार–कुलाचार मान्यतानुसार समुचित है। * विवाह मुहूर्त्त विषयक शास्त्र वचन – **मुहूर्त्तात्मा स्थिरः काल पुराणादौ प्रकीर्त्तितः । अतो मुहूर्त्ते कर्तव्यं विवाहाद्यं बुधैः सदा । सिद्धिर्भवति कार्याणां शुभलग्न मुहूर्त्तयोः । अतो मुहूर्त्तमेवादौ सर्वकृत्येषु चिन्तयेत् ॥ भार्यात्रिवर्गकरणं शुभशील युक्ता, शीलं शुभं भवति लग्न वशेन तस्याः । तस्माद विवाहसमयः परिचिन्त्ये हि, तन्निघ्नतामुपागता सुतशील धर्माः । इति विवाहादिकेषु विविध मुहूर्त्तेषु सूत्राऽधारम् ॥**

## सर्वदिशीय शुभ विवाह–मुहूर्त्ताः विक्रम वर्ष २०८१ सन् २०२४–२०२५ ई.मध्ये

| मास–पक्ष–तिथि | वार | दिनांक | विवाह नक्षत्र | रेखा | लत्तादि दोष रेखाएँ | चन्द्रराशि | सूर्यराशि | गुरूराशि | ● विवाह लग्न समय दिवा–रात्रि एवं पूजा दानादि उपकरा–सूत्रावली ● |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चैत्र शुक्ल १० | गुरू | १८-०४-२४ | मघा | ७ | ।ऽ।।।ऽरा।ऽ।। | सिंह | मेष | मेष | विवाह लग्न २ वृषभ दिवा ७।५७ से ९।३७ दिवा ७।५७ उ.मं. १० पू.लग्न ३ मिथुन दिवा ९।३७ से ११।५० लग्न गोधूलि, लग्न ८ वृश्चिक रात्रि ८।५६ से ११।१३ लग्न ९ धनु रात्रि ११।१३ से १।१६ रा.४ पू.गणितेन क्रान्तिसाम्याऽभावः |
| चैत्र शुक्ल १३ | रवि | २१-०४-२४ | हस्त | ८ | ।।ऽके।।।ऽ।।। | कन्या | मेष | मेष | विवाह लग्न ८ वृश्चिक रात्रि ८।४४ से ११।०१ लग्न ९ धनु रात्रि ११।०१ से १।०४ रा.४ पू. लग्न १० मकर रात्रि १।०४ से २।४९ शु.३ पू.के.युति परिहारः रात्रि १।३० उ.रोग पंचक रेखा ७ आवश्यके |
| चैत्र शुक्ल १४ | सोम | २२-०४-२४ | हस्त | ८ | ।।ऽके।।ऽरो।।।। | कन्या | मेष | मेष | विवाह लग्न २ वृषभ दिवा ७।२४ से ९।२१ मं.१० पू.के.युति परिहारः आवश्यके |
| चैत्र शुक्ल १५ | मंगल | २३-०४-२४ | स्वाति | ७ | ।।।।ऽसू।ऽऽ।। | तुला | मेष | मेष | विवाह लग्न ८ वृश्चिक रात्रि १०।३२ से १०।५३ लग्न ९ धनु रात्रि १०।५३ से १२।५६ रा.४ पू. लग्न १० मकर रात्रि १२।५६ से २।४० शु.३ पू.रात्रि २।४५ उ.मृत्यु पंचकः |
| आषाढ शुक्ल ३ | मंगल | ०९-०७-२४ | मघा | १० | ।।।।।।।।।। | सिंह | मिथुन | वृषभ | विवाह लग्न ४ कर्क दिवा ७।५३ से ८।४५ दिवा ७।५३ उ.मं.१०पू. |
| आषाढ शुक्ल ५ | गुरू | ११-०७-२४ | उफा. | १० | ।।।।।।।।।। | कन्या | मिथुन | वृषभ | विवाह लग्न २ वृषभ रात्रि २।०६ से ४।०२ रात्रि ४।०९ या.शु.३ पू. |
| मार्गशीर्ष कृष्ण ७ | शुक्र | २२-११-२४ | मघा | ७ | ऽमं।।।।ऽचो।ऽ।। | सिंह | वृश्चिक | वृषभ | विवाह लग्न ७ तुला रात्रि ४।१७ से ६।३४ मं.१० शु.३ पू.गु.८ दोषः अत्यावश्यके |

| मास–पक्ष–तिथि | वार | दिनांक | विवाह नक्षत्र | रेखा | लत्तादि दोष रेखाएँ | चन्द्रराशि | सूर्यराशि | गुरूराशि | ● विवाह लग्न समय दिवा–रात्रि एवं पूजा दानादि उपकरा–सूत्रावली ● |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मार्गशीर्ष शुक्ल १ | सोम | २-१२-२४ | मूल | ९ | ।।।।।।ऽ।।। | धनु | वृश्चिक | वृषभ | विवाह लग्न १ मेष दिवा ३।४६ से ४।४० बु.८ दोष अत्यावश्यके |
| माघ कृष्ण ३ | गुरू | १६-०१-२५ | मघा | ९ | ।।।।।ऽअ।।।। | सिंह | मकर | वृषभ | विवाह लग्न २ वृषभ दिवा १।४३ से ३।४० बु.८ दोषः अत्यावश्यके |
| माघ कृष्ण ४ | शुक्र | १७-०१-२५ | मघा | १० | ।।।।।।।।।। | सिंह | मकर | वृषभ | विवाह लग्न १ मेष दिवा १२।०१ से १२।४५ भान्तमपि |
| माघ कृष्ण ५ | शनि | १८-०१-२५ | उफा | ७ | ।।ऽके।ऽ।।ऽ।। | कन्या | मकर | वृषभ | विवाह लग्न ८ वृश्चिक रात्रि २।५० से ३।४६ गु ७ पू.केतु युति परिहारः |
| माघ कृष्ण ७ | मंगल | २१-०१-२५ | स्वाति | ९ | ।।।।।!।ऽ।। | तुला | मकर | वृषभ | विवाह लग्न ८ वृश्चिक रात्रि २।३८ से ४।५५ गु.७ पू.भौम ८ परिहारः |
| माघ कृष्ण ८ | बुध | २२-०१-२५ | स्वाति | ८ | ।।।।।ऽरो।ऽ!। | तुला | मकर | वृषभ | विवाह लग्न १ मेष दिवा ११।४१ से १।१९ चं.७ पू. |
| माघ शुक्ल १० | शुक्र | ०७-०२-२५ | रोहिणी | ८ | ।।ऽगु।।ऽचो।।।। | वृषभ | मकर | वृषभ | विवाह लग्न १ मेष दिवा १०।४० से १२।१८ लग्न २ वृषभ दिवा १२।१८ से २।१४ चं. १ परिहार गणितेन क्रान्तिसाम्याऽभावः |
| फाल्गुन कृष्ण १ | गुरू | १३-०२-२५ | मघा | ८ | ।।ऽगु।।ऽचो।।।। | सिंह | कुंभ | वृषभ | विवाह लग्न १ मेष दिवा १०।१६ से ११।५३ लग्न २ वृषभ दिवा ११।५३ से १।५० |
| फाल्गुन कृष्ण २ | शुक्र | १४-०२-२५ | उत्तरा फा. | ७ | ।।ऽके।ऽऽअ।।।। | कन्या | कुंभ | वृषभ | विवाह लग्न १० मकर रात्रि ५।४५ से ७।१३ शु. ३ पू. |
| फाल्गुन कृष्ण ६ | मंगल | १८-०२-२५ | स्वाति | ७ | ऽचंऽ।ऽबु।।।।।। | तुला | कुंभ | वृषभ | विवाह लग्न १ मेष दिवा ९।५५ से ११।३३ चं.७ पू.लग्न १० मकर (रेखा ६)<br>रात्रि ५।०९ से ६।५६ बु.पाद वेधाऽभावः गणितेन क्रान्तिसाम्याऽभावः |
| फाल्गुन कृष्ण ७ | गुरू | २०-०२-२५ | अनुराधा | ७ | ।।।।।ऽरोऽऽ।। | वृश्चिक | कुंभ | वृषभ | विवाह लग्न १० मकर रात्रि ५।०१ से ६।४९ शु. ३ पू. |
| फाल्गुन कृष्ण ८ | शुक्र | २१-०२-२५ | अनुराधा | ७ | ।।।।।ऽरोऽऽ।। | वृश्चिक | कुंभ | वृषभ | विवाह लग्न १ मेष दिवा ९।४३ से ११।२१ चं.८ परिहारः लग्न २ वृषभ दिवा ११।२१ से १।१८ चं.७ पू. |
| फाल्गुन कृष्ण १२ | मंगल | २५-०२-२५ | उत्तराषाढ | ७ | ।ऽ।।ऽ।।ऽ।। | मकर | कुंभ | वृषभ | विवाह लग्न २ मेष दिवा ९।२८ से ११।०६ लग्न २ वृषभ दिवा ११।०६ से १।०२ |
| फाल्गुन शुक्ल ६ | बुध | ०५-०३-२५ | रोहिणी | ७ | ।।ऽगु।।।ऽऽ।। | वृषभ | कुंभ | वृषभ | विवाह लग्न १० मकर रात्रि ४।११ से ५।५५ शु. ३ पू. |
| फाल्गुन शुक्ल ७ | गुरू | ०६-०३-२५ | रोहिणी | ७ | ।।ऽगु।।।ऽऽ।। | वृषभ | कुंभ | वृषभ | विवाह लग्न १ मेष दिवा ८।५३ से १०।३१ लग्न २ वृषभ दिवा १०।३१ से १०।५१, १०।५१ उ.भद्रा |
| फाल्गुन शुक्ल ७ | गुरू | ०६-०३-२५ | मृगशिरा | ७ | ऽश।।।।ऽरा।ऽ।। | वृषभ | कुंभ | वृषभ | विवाह लग्न १० मकर रात्रि ४।०७ से ५।५१ शु. ३ पू. |

## कात्यायनोक्त विशेष–४ नक्षत्रीय विवाह मुहूर्त संवत् २०८१ मध्ये

चित्रा–श्रवण–घनिष्ठाऽशिवन्याधिकानि चत्वारि तथाऽपि खलग्रहयुतं वर्ज्यं सूत्रानुगत–अश्विनी–चित्रा–श्रवण–घनिष्ठा आदि ४ नक्षत्रीय विवाह लग्न शोधन विशेष शास्त्रीय मान्यता अनुसार अभिलेखन

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मार्गशीर्ष शुक्ल ५ | शुक्र | ०६-१२-२४ | श्रवण | ८ | ।।।।।ऽअ।ऽ।। | मकर | वृश्चिक | वृषभ | विवाह लग्न ९ धनु दिवा ८।०१ से १०।०४ रा.४ पू.मं.८ परिहारः |
| मार्गशीर्ष शुक्ल ५ | शुक्र | ०६-१२-२४ | धनिष्ठा | ८ | ।।।।।ऽअऽ।।। | मकर | वृश्चिक | वृषभ | विवाह लग्न गोधूलि |
| मार्गशीर्ष शुक्ल ६ | शनि | ०७-१२-२४ | धनिष्ठा | ९ | ।।।।।।ऽ।।। | कुंभ | वृश्चिक | वृषभ | विवाह लग्न ९ धनु दिवा ७।५७ से १०।०० रा.४ पू.मं.८ परिहारः |
| मार्गशीर्ष शुक्ल १२ | गुरू | १२-१२-२४ | अश्विनी | ९ | ।।।।।ऽरो।।।। | मेष | वृश्चिक | वृषभ | विवाह लग्न ९ धनु दिवा ७।३७ से ९।४१ रा.४ पू.मं.८परिहारः भान्तमपि |
| माघ शुक्ल ७ | मंगल | ०४-०२-२५ | अश्विनी | ८ | ।ऽ।।।।।ऽ।। | मेष | मकर | वृषभ | विवाह लग्न २ वृषभ दिवा १२।३० से २।२६ |

## * लता आदि दस दोष रेखाओं का संक्षिप्त वर्णन *

● विवाह मुहूर्त शोधन हेतु विवाह लग्न समय में शास्त्रानुसार १० विभिन्न दोष का विचार किया जाता है। इन दस दोषों में से प्रभावी रूप से क्रूरयुति, क्रान्तिसाम्य, दग्धा, मृत्युबाण व ग्रह वेध, दोष विवाह में सर्वत्र त्याज्य है। उपरोक्त विवाह मुहूर्त में १० दोष को रेखा के रूप में अंकित किया गया है। उदाहरण के लिए अगर विवाह मुहूर्त में लग्न समय में कोई दोष नहीं है तो उसे १० रेखा का विवाह मुहूर्त के रूप में दर्शाया गया है। अगर कोई एक दोष आएगा तो विवाह लग्न ९ रेखा का हो जायेगा, इसी प्रकार दोष अनुसार रेखा का घटना मान्य है।

● उपरोक्त वर्णित १० दोष इस प्रकार हैं – १. लता २. पात ३. युति ४. वेध ५. जामित्र ६. बाण (पंचक) ७. एकार्गल ८. उपग्रह ९. महापात (क्रान्तिसाम्य) १०. दग्धातिथि।

● विवाह मुहूर्त में क्रमशः इन दोष को "ऽ" चिन्ह से दर्शाया गया है। उदाहरण हेतु २२.४.२०२४ के मुहूर्त में दोष रेखा स्तंभ में क्रमशः तीसरे स्थान पर "ऽके" चिन्ह दिया गया है, यह तीसरे क्रम के युति दोष में केतु ग्रह का प्रभाव दर्शाता है। इसी पंक्ति में क्रमशः षष्ट स्थान पर "ऽरो" अंकित है यह छठे दोष बाणपंचक में रोग पंचक को दर्शाता है।

● ग्रह के युति या वेध से अगर कोई दोष बनता है तो उसे – सूर्य–सू, चन्द्र–चं, मंगल–भौ, बुध–बु, गुरू–गु, शुक्र–शु, शनि–श, राहु–रा, केतु–के के रूप में दर्शाया गया है। इसी तरह छठे स्थान के बाणपंचक दोष के प्रकार को अंकित करने हेतु – रोग–रो, अग्नि–अ, चौर–चो के चिन्ह से दर्शाया गया है।

## विशेष धर्म–सम्प्रदाय–पंथ मार्ग तथा संभागीय विवाह मुहूर्त्त सन्मान्यता संवत् २०८१ मध्ये

सिन्ध–पंजाब–कश्मीर–हिमाचल प्रदेश प्रान्तीय संभागों में देशाचार–लोकाचार नियामक स्थितिवश देवशयन चातुर्मास कालांश में भी विवाह लग्न आदि सम्पन्न होते हैं। जनसमाज एवं पण्डितगणों द्वारा कार्य सम्पन्न होते हैं। इस पक्ष हेतु बृहद दैवज्ञ रंजन नामक शास्त्रीय निबंध ग्रंथ में वचन प्रमाण भी प्राप्त हैं। यथा–प्रमाणं ग्राम वचनं विवाहादौ तथात्यये। अतः परम्परायातं धर्मं वदन्ति ते खलु॥ देशाचारस्तावदादौ विचिन्त्यो देशे–देशे या स्थिति सैव कार्या॥

| मास–पक्ष–तिथि | वार | दिनांक | विवाह नक्षत्र | रेखा | लत्तादि दोष रेखाएँ | चन्द्रराशि | सूर्यराशि | गुरूराशि | ● विवाह लग्न समय दिवा–रात्रि एवं पूजा दानादि उपकरा–सूत्रावली ● |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आषाढ शुक्ल १३ | शुक्र | १९-०७-२४ | मूल | ९ | ऽसू।।।।।।।।। | धनु | कर्क | वृषभ | विवाह लग्न १ मेष रात्रि ११।५७ से १।३५ |
| आषाढ शुक्ल १४ | शनि | २०-०७-२४ | उत्तराषाढ़ | ७ | ऽरा।।।।ऽरा।ऽ।। | धनु | कर्क | वृषभ | विवाह लग्न ३ मिथुन रात्रि ४।५७ से ५।४५ चं.७ पू. |
| आषाढ शुक्ल १५ | रवि | २१-०७-२४ | उत्तराषाढ़/श्रवण | ८ | ऽरा।।।।।।ऽ।। | मकर | कर्क | वृषभ | विवाह लग्न १ मेष रात्रि ११।४९ से १२।१४ भान्तमपि एवं रात्रि १२।१४ से १।२७ बु.पाद वेधाऽभावः |
| श्रावण कृष्ण १ | सोम | २२-०७-२४ | घनिष्ठा | ७ | ।।।ऽशुऽऽचो।।।। | मकर | कर्क | वृषभ | विवाह लग्न १ मेष रात्रि ११।४५ से १।२३ शु.पाद वेधाऽभावः |
| श्रावण कृष्ण ७ | शनि | २७-०७-२४ | अश्विनी | ७ | ।।।।।ऽअऽऽ।। | मेष | कर्क | वृषभ | विवाह लग्न ३ मिथुन रात्रि ३।०० से ५।१४ |
| श्रावण कृष्ण ११ | बुध | ३१-०७-२४ | मृगशिरा | ८ | ऽश।।।।।।।ऽ।। | मिथुन | कर्क | वृषभ | विवाह लग्न १ मेष रात्रि ११।१० से १२।४८ |
| श्रावण शुक्ल ३ | बुध | ०७-०८-२४ | उफा | ९ | ।।।।ऽ।।।।। | सिं/क. | कर्क | वृषभ | विवाह लग्न १ मेष रात्रि १०।४३ से १२।२१ लग्न ३ मिथुन रात्रि २।१७ से ४।३१ शु. ३ पू. |
| श्रावण शुक्ल ७ | रवि | ११-०८-२४ | स्वाति | ८ | ।।।।।।ऽऽ।। | तुला | कर्क | वृषभ | विवाह लग्न १ मेष रात्रि १०।२७ से १२।०५ चं.७ पू.लग्न ३ मिथुन रात्रि २।०२ से ४।१५ शु.३ पू. |
| श्रावण शुक्ल ८ | मंगल | १३-०८-२४ | अनुराधा | १० | ।।।।।।।।।। | वृश्चिक | कर्क | वृषभ | विवाह लग्न १ मेष रात्रि १०।१९ से ११।५७ लग्न ३ मिथुन रात्रि १।५४ मे ४।०७ क्रान्तिसाम्याऽभावः चं.६, ८परिहारः |
| श्रावण शुक्ल १५ | सोम | १९-०८-२४ | धनिष्ठा | ७ | ।।।।।ऽअऽऽ।। | कुंभ | सिंह | वृषभ | विवाह लग्न १ मेष रात्रि ९।५६ से ११।३३ लग्न ३ मिथुन रात्रि १।३० से ३।४३ शु.३ पू.रात्रि १०।३८ उ.पंचकाऽभावः रेखा ८ |
| भाद्रपद कृष्ण ४ | शुक्र | २३-०८-२४ | अश्विनी | ८ | ।ऽ।।।।।ऽ।। | मेष | सिंह | वृषभ | विवाह लग्न ३ मिथुन रात्रि १।१४ से ३।२७ शु.३ पू.लग्न ४ कर्क रात्रि ३।२७ से ५।४५ रात्रि २।२० या.चोर पंचकः रेखा ७ |
| भाद्रपद कृष्ण ८ | सोम | २६-०८-२४ | रोहिणी | ७ | ।ऽ।।।।ऽऽ।। | वृषभ | सिंह | वृषभ | विवाह लग्न १ मेष रात्रि ९।२८ से ११।०६ शु.६ परिहारः रात्रि १०।१७ उ.एकार्गलाऽभावः रेखा ८ |
| भाद्रपद शुक्ल ४ | शनि | ०७-०९-२४ | स्वाति | ९ | ।।।।।।।ऽ।। | तुला | सिंह | वृषभ | विवाह लग्न १ मेष रात्रि ८।४१ से १०।१९ शु.६ परिहारः चं.७ पू.लग्न ४ कर्क रात्रि २।२८ से ४।४६ शु.३ पू. |
| भाद्रपद शुक्ल ६ | सोम | ०९-०९-२४ | अनुराधा | ७ | ।ऽ।।।।ऽऽ।। | वृश्चिक | सिंह | वृषभ | विवाह लग्न ४ कर्क रात्रि २।२० से ४।३८ शु. ३ पू. |
| भाद्रपद शुक्ल ८ | बुध | ११-०९-२४ | मूल | ९ | ।।।।ऽ।।।।। | धनु | सिंह | वृषभ | विवाह लग्न १ मेष रात्रि ९।२३ से १०।०३ शु.६ परिहारः रात्रि ९।२३ उ. मूल प्रा. |
| भाद्रपद शुक्ल ९ | गुरू | १२-०९-२४ | मूल | ८ | ।।।।ऽऽरो।।।। | धनु | सिंह | वृषभ | विवाह लग्न १ मेष रात्रि ८।२१ से ९।५३ शु.६ परिहारः रात्रि ९।५३ या.भान्तमपि |
| आश्विन शुक्ल १ | गुरू | ०३-१०-२४ | चित्रा | १० | ।।।।।।।।।। | कन्या | कन्या | वृषभ | विवाह लग्न १० मकर दिवा ३।३२ से ३।५९ लग्न ४ कर्क रात्रि १२।४५ से ३।०३ दिवा ३।३२ उ. |
| आश्विन शुक्ल ४ | सोम | ०७-१०-२४ | अनुराधा | ८ | ।।।।।ऽअ।ऽ।। | वृश्चिक | कन्या | वृषभ | विवाह लग्न १० मकर दिवा १।५९ से ३।४३ |
| आश्विन शुक्ल ९ | शनि | १२-१०-२४ | श्रवण | १० | ।।।।।।।।।। | मकर | कन्या | वृषभ | विवाह लग्न ४ कर्क रात्रि १२।०९ से २।२७ |
| कार्तिक कृष्ण ५ | सोम | २१-१०-२४ | मृगशिरा | ७ | ।।ऽगु।।ऽरा।ऽ।। | वृषभ | तुला | वृषभ | विवाह लग्न ८ वृश्चिक दिवा ८।४३ से ११।००चं.गु.७ पू. |
| कार्तिक कृष्ण १० | शनि | २६-१०-२४ | मघा | ८ | ऽबुगु।।।।।।ऽ।। | सिंह | तुला | वृषभ | विवाह लग्न ८ वृश्चिक दिवा ९।४६ से १०।४०गु.७ पू.दिवा ९।४६ उ.लग्न ९ धनु दिवा १०।४० से १२।४४ रा.४ पू.मं.८ परिहारः |
| कार्तिक कृष्ण ११ | रवि | २७-१०-२४ | मघा | ८ | ऽबुगु।।।।।।ऽ।। | सिंह | तुला | वृषभ | विवाह लग्न ८ वृश्चिक दिवा ८।१९ से ८।५७ दिवा ८।५७ उ.मृत्यु पंचकः |
| कार्तिक शुक्ल २ | रवि | ३-११-२४ | अनुराधा | ८ | ।।ऽबु।।ऽरो।।।। | वृश्चिक | तुला | वृषभ | विवाह लग्न ९ धनु दिवा १०।१० से १२।१३ रा.४ पू.मं.८ परिहारः |
| कार्तिक शुक्ल ५ | बुध | ६-११-२४ | मूल | ८ | ।।।।ऽऽअ।।।। | धनु | तुला | वृषभ | विवाह लग्न ८ वृश्चिक दिवा ८।४७ से ९।५८ दिवा ८।४७ या.मृत्यु पंचकः गु.७ पू. |
| कार्तिक शुक्ल ९ | रवि | १०-११-२४ | धनिष्ठा | ९ | ।।।।।।।।ऽ।। | कुम्भ | तुला | वृषभ | विवाह लग्न ८ वृश्चिक दिवा ७।२६ से ९।४२गु.७ पू.लग्न ९ धनु दिवा ९।४२ से ११।०१ रा.४ पू.मं.८ परिहारः |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| श्रीविक्रम संवत् २०८१ | श्री निम्बार्काब्द ५१२०-२१ | श्रीफसली बंगाली १४३०-१४३१ | पारसी शहंशाही १३९३-१३९४ | ⁂ हस्तलिखित जन्म पत्रिका निर्माण एवं विश्लेषण ⁂ |
| राष्ट्रीय शाकः १९४६ | श्री रामचरणाब्द ३०५-३०६ | श्रीकृष्ण संवत् ५२५०-५२५१ | हिजरी मुस्लिम सन् १४४५-१४४६ | वर–वधु कुण्डली मिलान (विवाह गुण मिलान) ⁂ शुभ |
| भारत स्वातंत्र्य संवत् ७७-७८ | श्री रामानन्दाब्द ७२६-७२७ | श्रीमहावीर जैन संवत् २५५०-२५५१ | श्री खालसा सिक्ख पंथ ३२४-३२५ | मुहूर्त्त, ज्योतिषीय परामर्श आदि कार्य हेतु सम्पर्क करें– |
| श्री वल्लभाब्द ५४६-५४७ | श्री बुद्ध संवत् २५६७-२५६८ | श्रीराजेन्द्रगुरू जैन सं. ११७-११८ | मलयालम वर्ष १६९९-१७०० | **निर्णय सागर पंचांग कार्यालय** |
| श्री रामानुजाब्द १००८-१००९ | श्री हरिदासाब्द वृन्दावने ५४५-५४६ | श्री खरतरगच्छ श्रीसंघ संवत् १००१ | ईस्वी सन् २०२४-२०२५ | 503, तिलक मार्ग, नीमच मो. 89640 98640 |

## यज्ञोपवीत मुहूर्त्ताः

**चैत्र शुक्ल पक्षे**
१० गुरौ आश्लेषायां ७।५७ या.ल. २ ता.१८.४.२४

**आषाढ़ शुक्ल पक्षे** (अत्यावश्यके)
३ चन्द्रे आश्लेषायां ६।०३ उ.अभिजिति ता.८.७.२४
५ गुरौ पूफायां अभिजिति ता. ११.७.२४

**मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे** (अत्यावश्यके)
२ सूर्ये रोहिण्यां ल. ९ अभिजिति ता. १७.११.२०२४
३ चन्द्रे मृगशिरायां ७।५७ या.ल.चिं.ता.१८.११.२०२४
५ बुधे पुनर्वसौ ल. ९ ता. २०.११.२०२४

**मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे** (अत्यावश्यके)
३ बुधे पूषायां ल. ९ ता. ४.१२.२०२४
५ शुक्रे श्रवणे ल. ९ अभिजिति ता. ६.१२.२०२४
१२ गुरौ अश्विन्यां ल. ९ ता. १२.१२.२४

**माघ कृष्ण पक्षे**
२ बुधे पुष्ये १०।२८ या.ल.चिं.ता. १५.१.२५
२ बुधे आश्लेषायां १०।२८ उ.ल.चिं.ता. १५.१.२५
३ गुरौ आश्लेषायां ११।१७ या.ल.चिं.ता. १६.१.२५
५ सूर्ये उफायां ल.चिं.अभिजिति ता. १९.१.२५

**माघ शुक्ल पक्षे**
२ शुक्रे शतभिषायां ल.चिं.अभिजिति ता. ३१.१.२५
१० शुक्रे रोहिण्यां ल.चिं.अभिजिति ता.७.२.२५

**फाल्गुन कृष्ण पक्षे**
२ शुक्रे पूफायां ल. २ अभिजिति ता. १४.२.२५

## गृहारंभ मुहूर्त्ताः

**वैशाख कृष्ण पक्षे**
१ बुधे स्वात्यां ल. २,३ ता. २४.४.२४

**आषाढ शुक्ल पक्षे**
११ बुधे अनुराधायां ८।५५ या.ल.चिं.ता. १७.७.२४

**भाद्रपद कृष्ण पक्षे**
४ शुक्रे रेवत्यां १०।३९ उ.ल.८ अभिजिति ता. २३.८.२४

**भाद्रपद शुक्ल पक्षे**
११ शनौ उषायां ९।४२ या.ल.चिं.ता.१४.९.२४

**अश्विन शुक्ल पक्षे**
८ शुक्रे उषायां ल.८ अभिजिति ता. ११.१०.२४

**मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे**
३ चन्द्रे मृगशिरायां ७।५७ या.ल.चिं.ता.१८.११.२४

**माघ कृष्ण पक्षे**
२ बुधे पुष्ये १०।२८ या.ल.चिं.ता.१५.१.२५

**फाल्गुन कृष्ण पक्षे**
३ शनौ उफायां १०।४९ या.ल.चिं.ता.१५.२.२५

## नवगृह प्रवेश मुहूर्त्ताः

**आषाढ़ शुक्ल पक्षे**
६ शुक्रे उफायां अभिजिति ता.१२.७.२४ आवश्यके

**मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे**
१० चन्द्रे उफायां ११।४० या.ल.९ ता.२५.११.२४
१२ बुधे चित्रायां ल.९ ता. २७.११.२४
१३ गुरौ चित्रायां ७।३६ या.ल.चिं.ता.२८.११.२४

**मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे** (सामान्य मुहूर्त्त)
६ शनौ घनिष्ठायां ल.९ अभिजिति ता.७.१२.२४

**माघ कृष्ण पक्षे** (सामान्य मुहूर्त्त)
८ बुधे स्वात्यां ल.चिं.ता. २२.१.२०२५

**माघ शुक्ल पक्षे**
१० शुक्रे रोहिण्यां अभिजिति ता.७.२.२०२५

**फाल्गुन शुक्ल पक्षे**
७ गुरौ रोहिण्यां १०।५१ या.ल.चिं.ता.६.३.२५

## देवप्रतिष्ठा मुहूर्त्ताः

**चैत्र शुक्ल पक्षे**
७ चन्द्रे पुनर्वसौ १२।१२ या.ल.२,३ अभिजिति ता.१५.४.२४
१४ चन्द्रे हस्ते ल.२,३ अभिजिति ता.२२.४.२४

**वैशाख कृष्ण पक्षे**
१ बुधे स्वात्यां ल. २,३ ता. २४.४.२४

**माघ कृष्ण पक्षे**
२ बुधे पुष्ये १०।२८ या.ल.चिं.ता.१५.१.२५
५ सूर्ये उफायां अभिजिति ता.१९.१.२५
८ बुधे स्वात्यां ल.चिं.ता.२२.१.२५

**माघ शुक्ल पक्षे**
२ शुक्रे शतभिषायां अभिजिति ता.३१.१.२५
१० शुक्रे रोहिण्यां अभिजिति ता.७.२.२५
१३ चन्द्रे पुनर्वसौ अभिजिति ता.१०.२.२५

**फाल्गुन कृष्ण पक्षे**
३ शनौ उफायां १०।४९ या.ल.चिं.ता.१५.२.२५
६ बुधे स्वात्यां ७।३२ या.ल.चिं.ता.१९.२.२५
८ शुक्रे अनुराधायां ११।५८ या.ल.चिं.ता.२१.२.२५
१३ बुधे श्रवणे ११।०८ या.ल.चिं.ता.२६.२.२५

**फाल्गुन शुक्ल पक्षे**
७ गुरौ रोहिण्यां १०।५१ या.ल.चिं.ता.६.३.२५

**दक्षिणायने तु उग्र देवानां प्रतिष्ठा मुहूर्त्त**

**आषाढ शुक्ल पक्षे**
६ शुक्रे उफायां अभिजिति ता.१२.७.२४ परिघार्थ:

**मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे**
२ सूर्ये रोहिण्यां ल.९ अभिजिति ता.१७.११.२४
३ चन्द्रे मृगशिरायां ७।५७ या.ल.चिं.ता.१८.११.२४
५ बुधे पुनर्वसौ ल.९ ता. २०.११.२४
६ गुरौ पुष्ये ल.९ अभिजिति ता. २१.११.२४
१० चन्द्रे उफायां ११।४० या.ल.९ ता.२५.११.२४
१२ बुधे चित्रायां ल.९ ता. २७.११.२४
१३ गुरौ चित्रायां ७।३६ या.ल.चिं.ता.२८.११.२४

**मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे**
५ शुक्रे श्रवणे ल.९ अभिजिति ता.६.१२.२४
६ शनौ घनिष्ठायां ल.९ अभिजिति ता.७.१२.२४
१२ गुरौ अश्विन्यां ल.९ ता.१२.१२.२४

## द्विरागमन मुहूर्त्ताः

**चैत्र शुक्ल पक्षे**
७ चन्द्रे पुनर्वसौ १२।१२ या.ल.२,३ अभिजिति ता.१५.४.२४

**वैशाख कृष्ण पक्षे**
१ बुधे स्वात्यां ल. २,३ ता. २४.४.२४

**आषाढ शुक्ल पक्षे**
६ शुक्रे उफायां अभिजिति ता.१२.७.२४ परिघार्थ:

**मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे**
३ चन्द्रे मृगशिरायां ७।५७ या.ल.चिं.ता.१८.११.२४
५ बुधे पुनर्वसौ ल.९ ता. २०.११.२४
६ गुरौ पुष्ये ल.९ अभिजिति ता. २१.११.२४
१० चन्द्रे उफायां ११।४० या.ल.९ ता.२५.११.२४
१२ बुधे चित्रायां ल.९ ता. २७.११.२४
१३ गुरौ चित्रायां ७।३६ या.ल.चिं.ता.२८.११.२४

**मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे**
५ शुक्रे श्रवणे ल.९ अभिजिति ता.६.१२.२४
१२ गुरौ अश्विन्यां ल.९ ता.१२.१२.२४

**माघ कृष्ण पक्षे**
२ बुधे पुष्ये १०।२८ या.ल.चिं.ता.१५.१.२५
८ बुधे स्वात्यां ल.चिं.ता. २२.१.२५

**माघ शुक्ल पक्षे**
२ शुक्रे शतभिषायां अभिजिति ता.३१.१.२५
१० शुक्रे रोहिण्यां अभिजिति ता.७.२.२५
१३ चन्द्रे पुनर्वसौ अभिजिति ता.१०.२.२५

**फाल्गुन कृष्ण पक्षे**
६ बुधे स्वात्यां ७।३२ या.ल.चिं.ता.१९.२.२५
८ शुक्रे अनुराधायां ११।५८ या.ल.चिं.ता.२१.२.२५
१३ बुधे श्रवणे ११।०८ या.ल.चिं.ता.२६.२.२५

**फाल्गुन शुक्ल पक्षे**
७ गुरौ रोहिण्यां १०।५१ या.ल.चिं.ता.६.३.२५

## विपणि–व्यापार मुहूर्त्ताः

**आषाढ़ शुक्ल पक्षे**
६ शुक्रे उफायां अभिजिति ता.१२.७.२४ परिघार्थं
११ बुधे अनुराधायां ८।५५ या.ल.चिं. ता.१७.७.२४
१५ सूर्ये उषायां अभिजिति ता. २१.७.२४

**श्रावण कृष्ण पक्षे**
७ शनौ रेवत्यां १०।२३ उ.१३।०१ या.अभिजिति ता.२७.७.२४
८ सूर्ये अश्विन्यां ११।४८ या.ल.चिं.ता.२८.७.२४
११ बुधे रोहिण्यां १०।१३ या.ल.चिं.
ता.३१.७.२४ भौम वेध परिहार:
११ बुधे मृगशिरायां १०।१३ उ.ल.चिं.ता.३१.७.२४
१२ गुरौ मृगशिरायां १०।२४ या.ल.चिं.ता.१.८.२४

**श्रावण शुक्ल पक्षे**
१२ शनौ उषायां ११।४९ उ.अभिजिति ता.१७.८.२४
तिथिक्षये चाँवल अनुदानत: परिहारे

**भाद्रपद कृष्ण पक्षे**
४ शुक्रे रेवत्यां १०।३९ उ.ल.८ अभिजिति ता.२३.८.२४
५ शनौ अश्विन्यां ल.८ अभिजिति ता. २४.८.२४
तिथि क्षय चाँवल अनुदानत: परिहारे
१० बुधे मृगशिरायां १।२८ या.ल.८ ता.२८.८.२४
१३ शनौ पुष्ये ल.८ अभिजिति ता. ३१.८.२४

**भाद्रपद शुक्ल पक्षे**
१ बुधे उफायां ९।४७ उ.ल.८ ता.४.९.२४
११ शनौ उषायां ९।४२ या.ल.चिं. ता.१४.९.२४

**आश्विन शुक्ल पक्षे**
८ शुक्रे उषायां ल.८ अभिजिति ता.११.१०.२४
१५ गुरौ रेवत्यां ६।४९ उ.ल.८
अभिजिति ता.१७.१०.२४ संक्रान्ति

**कार्तिक कृष्ण पक्षे**
१ शुक्रे अश्विन्यां ल.८ अभिजिति ता.१८.१०.२४
५ चन्द्रे मृगशिरायां ११।११ या.ल.८ ता.२१.१०.२४
८ गुरौ पुष्ये ल.८ अभिजिति ता. २४.१०.२४

**कार्तिक शुक्ल पक्षे**
२ सूर्ये अनुराधायां ल.८ अभिजिति ता.३.११.२४
३ चन्द्रे अनुराधायां ८।०४ या.ल.चिं.ता.४.११.२४
६ गुरौ उषायां अभिजिति ता.७.११.२४
७ शुक्रे उषायां ल.८ ता.८.११.२४
१३ गुरौ अश्विन्यां ल.८ ता.१४.११.२४

**मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे**
२ सूर्ये रोहिण्यां ल.९ अभिजिति ता.१७.११.२४
३ चन्द्रे मृगशिरायां ७।५७ या.ल.चिं.ता.१८.११.२४
६ गुरौ पुष्ये ल.९ अभिजिति ता. २१.११.२४
१० चन्द्रे उफायां ११।४० या.ल.९ ता.२५.११.२४
१२ बुधे चित्रायां ल.९ ता. २७.११.२४
१३ गुरौ चित्रायां ७।३६ या.ल.चिं.ता.२८.११.२४

**मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे**
१२ गुरौ अश्विन्यां ल.९ ता.१२.१२.२४

**माघ कृष्ण पक्षे**
२ बुधे पुष्ये १०।२८ या.ल.चिं.ता.१५.१.२५
५ सूर्ये उफायां अभिजिति ता.१९.१.२५

**माघ शुक्ल पक्षे**
१० शुक्रे रोहिण्यां अभिजिति ता.७.२.२५

**फाल्गुन कृष्ण पक्षे**
३ शनौ उफायां १०।४९ या.ल.चिं.ता.१५.२.२५
८ शुक्रे अनुराधायां ११।५८ या.ल.चिं.ता.२१.२.२५

**फाल्गुन शुक्ल पक्षे**
७ गुरौ रोहिण्यां १०।५१ या.ल.चिं.ता.६.३.२५

## वेधशुद्धि सहिताः चक्रशुद्धि रहिताः

● संकेत समाधान – पूर्वोक्त गृहनिर्माण–नवीन गृह प्रवेश मुहूर्त्तों के अतिरिक्त चन्द मुहूर्त्त रचना शोधन विविध चक्रशुद्धि से रहित तथा वेध विगणना मान्यतायुक्त तथा मासादि शुद्धि न्यूनता पक्ष वाले भी समयानुकूल देशकाल स्थिति एवं विशेष आवश्यकता अनुसार समाधान समुचित ♣ तथा श्रीकार वेला ♣ एवं ल.चि.से अभिप्राय योग्य चौघटिका–वेला मान्य।

## ♣ गृहारंभ मुहूर्त्ताः ♣

**आषाढ शुक्ल पक्षे**

६ शुक्रे उफायां अभिजिति ता.१२.७.२४ परिघार्थः

**श्रावण कृष्ण पक्षे**

७ शनौ रेवत्यां १०।२३ उ. १३।०१ या.अभिजिति ता.२७.७.२४

११ बुधे रोहिण्यां १०।१३ या.ल.चिं. ता.३१.७.२४ भौम वेध परिहारः

११ बुधे मृगशिरायां १०।१३ उ.ल.चिं.ता.३१.७.२४

१२ गुरौ मृगशिरायां १०।२४ या.ल.चिं.ता.१.८.२४

**श्रावण शुक्ल पक्षे**

७ चन्द्रे स्वात्यां ७।५५ या.ल.चिं.ता.१२.८.२४

१२ शनौ उषायां ११।४९ उ.अभिजिति ता.१७.८.२४

तिथि क्षये चाँवल अनुदानतः परिहारे

**भाद्रपद कृष्ण पक्षे**

१० बुधे मृगशिरायां १।२८ या.ल.८ ता.२८.८.२४

१३ शनौ पुष्ये ल.८ अभिजिति ता.३१.८.२४

**भाद्रपद शुक्ल पक्षे**

१ बुधे उफायां ९।४७ उ.ल.८ ता.४.९.२४

१३ चन्द्रे घनिष्ठायां ल.८ अभिजिति ता.१६.९.२४ संक्रान्तिः

**आश्विन शुक्ल पक्षे**

१५ गुरौ रेवत्यां ६।४१ उ.ल.८ अभिजिति ता.१७.१०.२४ संक्रान्ति

**कार्तिक कृष्ण पक्षे**

५ चन्द्रे मृगशिरायां ११।११ या.ल.८ ता.२१.१०.२४

८ गुरौ पुष्ये ल.८ अभिजिति ता.२४.१०.२४

**कार्तिक शुक्ल पक्षे**

३ चन्द्रे अनुराधायां ८।०४ या.ल.चिं.ता.४.११.२४

६ गुरौ उषायां अभिजिति ता.७.११.२४

७ शुक्रे उषायां ल.८ ता.८.११.२४

**मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे**

६ गुरौ पुष्ये ल.९ अभिजिति ता.२१.११.२४

१० चन्द्रे उफायां ११।४० या.ल.९ ता.२५.११.२४

१२ बुधे चित्रायां ल.९ ता.२७.११.२४

१३ गुरौ चित्रायां ७।३६ या.ल.चिं.ता.२८.११.२४

**मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे**

६ शनौ घनिष्ठायां ल.९ अभिजिति ता.७.१२.२४

**माघ कृष्ण पक्षे**

८ बुधे स्वात्यां ल.चिं.ता.२२.१.२५

**माघ शुक्ल पक्षे**

२ शुक्रे शतभिषायां अभिजिति ता.३१.१.२५

१० शुक्रे रोहिण्यां अभिजिति ता.७.२.२५

**फाल्गुन कृष्ण पक्षे**

६ बुधे स्वात्यां ७।३२ या.ल.चिं.ता.१९.२.२५

८ शुक्रे अनुराधायां ११।५८ या.ल.चिं.ता.२१.२.२५

**फाल्गुन शुक्ल पक्षे**

७ गुरौ रोहिण्यां १०।५१ या.ल.चिं.ता.६.३.२५

## ♣ गृहप्रवेश मुहूर्त्ताः ♣

**वैशाख कृष्ण पक्षे**

१ बुधे स्वात्यां ल.२,३ ता.२४.४.२४

**मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे**

३ चन्द्रे मृगशिरायां ७।५७ या.ल.चिं.ता.१८.११.२४

६ गुरौ पुष्ये ल.९ अभिजिति ता.२१.११.२४

**माघ कृष्ण पक्षे**

२ बुधे पुष्ये १०।२८ या.ल.चिं.ता.१५.१.२५

**माघ शुक्ल पक्षे**

२ शुक्रे शतभिषायां अभिजिति ता.३१.१.२५

**फाल्गुन कृष्ण पक्षे**

३ शनौ उफायां १०।४९ या.ल.चिं.ता.१५.२.२५

६ बुधे स्वात्यां ७।३२ या.ल.चिं.ता.१९.२.२५

८ शुक्रे अनुराधायां ११।५८ या.ल.चिं.ता.२१.२.२५

## ● कलयंत्र–मशीन शुभारंभ मुहूर्त्ताः ●

**चैत्र शुक्ल पक्षे**

७ चन्द्रे पुनर्वसौ १२।१२ या.ल.३ अभिजिति ता.१५.४.२४

१४ चन्द्रे हस्ते ल.३ अभिजिति ता.२२.४.२४

**वैशाख कृष्ण पक्षे**

१ बुधे स्वात्यां ल.३ ता.२४.४.२४

**आषाढ शुक्ल पक्षे**

११ बुधे अनुराधायां ८।५५ या.ल.चिं.ता.१७.७.२४

१२ गुरौ ज्येष्ठायां अभिजिति ता.१८.७.२४

**श्रावण कृष्ण पक्षे**

७ शनौ रेवत्यां १०।२३ उ.१३।०१ या.अभिजिति ता.२७.७.२४

८ सूर्ये अश्विन्यां ११।४८ या.ल.चिं.ता.२८.७.२४

११ बुधे रोहिण्यां १०।१३ या.ल.चिं. ता.३१.७.२४ भौम वेध परिहारः

१२ गुरौ मृगशिरायां १०।१३ उ.ल.चिं.ता.३१.७.२४

१२ गुरौ मृगशिरायां १०।२४ या.ल.चिं.ता.१.८.२४

१३ शुक्रे पुनर्वसौ १०।५९ उ.अभिजिति ता.२.८.२४

**श्रावण शुक्ल पक्षे**

७ सूर्ये स्वात्यां अभिजिति ता.११.८.२४

७ चन्द्रे स्वात्यां ७।५५ या.ल.चिं.ता.१२.८.२४

**भाद्रपद कृष्ण पक्षे**

४ शुक्रे रेवत्यां १०।३९ उ.अभिजिति ता.२३.८.२४

५ शनौ अश्विन्यां अभिजिति ता.२४.८.२४

तिथि क्षये चाँवल अनुदानतः परिहारे

१० बुधे मृगशिरायां १।२८ या.ल.चिं.ता.२८.८.२४

१३ शनौ पुष्ये अभिजिति ता.३१.८.२४

**भाद्रपद शुक्ल पक्षे**

५ सूर्ये स्वात्यां अभिजिति ता.८.९.२४

८ बुधे ज्येष्ठायां ११।३६ उ.ल.चिं.ता.११.९.२४

१२ सूर्ये श्रवणे अभिजिति ता.१५.९.२४ मासान्तः

१३ चन्द्रे घनिष्ठायां अभिजिति ता.१६.९.२४

**आश्विन शुक्ल पक्षे**

९ शनौ श्रवणे १०।५८ उ.अभिजिति ता.१२.१०.२४

१० सूर्ये घनिष्ठायां ल.७ अभिजिति ता.१३.१०.२४

१५ गुरौ रेवत्यां ६।४१ उ.ल.८ अभि.ता.१७.१०.२४ संक्रान्ति

**कार्तिक कृष्ण पक्षे**

१ शुक्रे अश्विन्यां अभिजिति ता.१८.१०.२४

५ चन्द्रे मृगशिरायां ११।११ या.ल.चिं.ता.२१.१०.२४

८ गुरौ पुष्ये अभिजिति ता.२४.१०.२४

**कार्तिक शुक्ल पक्षे**

२ सूर्ये अनुराधायां अभिजिति ता.३.११.२४

३ चन्द्रे अनुराधायां ८।०४ या.ल.चिं. ता.४.११.२४

७ शुक्रे श्रवणे १२।०३ उ.अभिजिति ता.८.११.२४

१३ गुरौ अश्विन्यां ल.चिं.ता.१४.११.२४

**मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे**

२ सूर्ये रोहिण्यां ल.९ अभिजिति ता.१७.११.२४

३ चन्द्रे मृगशिरायां ७।५७ या.ल.चिं.ता.१८.११.२४

५ बुधे पुनर्वसौ ल.९ ता.२०.११.२४

६ गुरौ पुष्ये ल.९ अभिजिति ता.२१.११.२४

१२ बुधे चित्रायां ल.९ ता.२७.११.२४

१३ गुरौ चित्रायां ७।३६ या.ल.चिं.ता.२८.११.२४

**मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे**

५ शुक्रे श्रवणे ल.९,१० अभिजिति ता.६.१२.२४

६ शनौ घनिष्ठायां ल.९,१० अभिजिति ता.७.१२.२४

१२ गुरौ अश्विन्यां ल.९ ता.१२.१२.२४

**माघ कृष्ण पक्षे**

२ बुधे पुष्ये १०।२८ या.ल.चिं.ता.१५.१.२५

८ बुधे स्वात्यां ल.१ ता.२२.१.२५

११ शनौ ज्येष्ठायां ल.१ अभिजिति ता.२५.१.२५

१२ सूर्ये ज्येष्ठायां ८।२६ या.ल.चि.ता.२६.१.२५

**माघ शुक्ल पक्षे**

२ शुक्रे शतभिषायां ल.१ अभिजिति ता.३१.१.२५

१० शुक्रे रोहिण्यां ल.१ अभिजिति ता.७.२.२५

१३ चन्द्रे पुनर्वसौ ल.१ अभिजिति ता.१०.२.२५

**फाल्गुन कृष्ण पक्षे**

६ बुधे स्वात्यां ७।३२ या.ल.चि.ता.१९.२.२५

८ शुक्रे अनुराधायां ११।५८ या.ल.१ ता.२१.२.२५

१३ बुधे श्रवणे ११।०८ या.ल.१ ता.२६.२.२५

**फाल्गुन शुक्ल पक्षे**

७ गुरौ रोहिण्यां १०।५१ या.ल.१ ता.६.३.२०२५



## ● गोधूलि लग्न विषये–सूत्रम् ●

**लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवन शालिनी। तदा वै सर्व वर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥ तथा च लग्नवेलाकालांश विषये तु–चतुर्थमभिजिल्लग्नमुदयर्क्षात्तु सप्तमम्। गोधूलिकं ही भवति सम्पत्पुत्रादिसौख्यदम्॥**

◆ गोधूलिवेला कालांश विषयेऽपि – यावद्दिनान्ते दिशि पश्चिमायां पश्येतृतीयं रविबिम्ब भागं। तस्मात्परं नाड़िक युग्ममेके गोधूलिकालं मुनयो वदन्ति॥ तथा च चान्द्रमासीय स्पष्टार्थेऽपि सूत्रम् – चैत्रादि मासचतुष्टये अर्धास्ते सूर्ये, श्रावणादिमास चतुष्टये सम्पूर्णास्ते सूर्य एवं मार्गशीर्षादि मासचतुष्टये पिण्डीभूते सूर्ये एवं त्रिविधं गोधूलिकमतं बुधैः॥

◆ गोधूलिःअन्यगोधूलिकसमयभेद विषयेऽपि – द्वित्रिलाभ्गतश्चन्द्रो गोधूलिः शस्यते बुधैः। शेषा धूलिमुखाः स्मृताः। एवं सूर्यास्तकालीन लग्नवेलायां २–३–११ भावस्थे चन्द्रः गोधूलिः तथा लग्नात् ४–५–९–१०–१२ भवनस्थे चन्द्रे अन्यगोधूलि कालः। अर्थात् गोधूलिकाल में समयभेद नहीं अपितु चन्द्रस्थितिवश नामान्तर संज्ञा भेदमात्र ही है। तथा च विशेष वचन सूत्र – गुरू शन्यो र्दिने गोधूलिकालः – अस्तंयाति गुरूदिवसे–शनौसाऽर्के अर्थात् गुरूवार को रवि अस्त होने पर तथा शनिवार को सूर्य साक्षी में गोधूलि। तथा १ नाड़ी अर्थात् १ घटी = २४ मिनिट मात्र सूर्यास्त समय पूर्वाऽपर में पाणिग्रहण हो जाना चाहिये एवं विवाह विषयक अन्य उपकरण समय पूर्व–पश्चात् साधना योग्य।

◆ गोधूलिवेलायमपि निषेध वचन सूत्रम – कुलिक, क्रान्तिसाम्य, लग्नतः १–६–८ भावीय चन्द्र तथा मंगल लग्न में या ७–८ भाव स्थान में हो तो गोधूलि लग्न भी मान्य नहीं होगा। केचित्तु षष्टेऽष्टमे बुधगुरूशुक्र भौमानां स्थित्या गोधूलिकं वर्जयंति – किन्तु तन्न सर्वसम्मतमतः शिष्टैर्नस्वीकृतं – भौमाष्टम दोषस्तु सर्वदा वर्ज्यः।

# संवत् २०८१ साक्षेप
# ● दोषयुक्त ●
# विवाह मुहूर्त

### ● चैत्र शुक्ल पक्षे ●

११ शुक्रे मघायां ता. १९.४.२४ भद्रा, लग्नाऽभावः
१२ शनौ उफायां ता. २०.४.२४ बुध, शुक्र, राहु वेधः
१३ सूर्ये उफायां ता. २१.४.२४ बुध, शुक्र, राहु वेधः
१४ चन्द्रे चित्रायां ता. २२.४.२४ पापग्रह शनि वेधः, भद्रा
१५ भौमे चित्रायां ता. २३.४.२४ पापग्रह शनि वेधः, भद्रा

### ● वैशाख कृष्ण पक्षे ●

१ बुधे स्वात्यां ता. २४.४.२४ मृत्यु पंचकः
तदग्रे शुक्रास्तः

### ● आषाढ शुक्ल पक्षे ●

४ बुधे मघायां ता. १०.७.२४ व्यतिपातः, भद्राः
६ शुक्रे उफायां ता. १२.७.२४ परिघार्थः
६ शुक्रे हस्ते ता. १२.७.२४ परिघार्थः लग्नाऽभावः
७ शनौ हस्ते ता. १३.७.२४ लग्नाऽभावः, भद्रा
७ शनौ चित्रायां ता. १३.७.२४ भद्रा, पापग्रह शनि वेधः
८ सूर्ये चित्रायां ता. १४.७.२४ पापग्रह शनि वेधः, मृत्यु पंचकः
८ सूर्ये स्वात्यां ता. १४.७.२४ मृत्यु पंचकः
९ चन्द्रे स्वात्यां ता. १५.७.२४ मासांतः
तदग्रे देवशयन कालांशः

### ● मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे ●

१ शनौ रोहिण्यां ता. १६.११.२४ संक्रान्तिः
२ सूर्ये रोहिणी/मृगशिरायां ता. १७.११.२४ मृत्युपंचकः
३ चन्द्रे मृगशिरायां ता. १८.११.२४ भद्रा, लग्नाऽभावः
८ शनौ मघायां ता. २३.११.२४ लग्नाऽभावः, वैधृतिः
९ सूर्ये उफायां ता. २४.११.२४ लग्नाऽभावः, अल्परेखा ५
१० चन्द्रे उफायां ता. २५.११.२४ लग्नाऽभावः, भद्रा
१० चन्द्रे हस्ते ता. २५.११.२४ पापग्रह राहु वेधः
११ भौमे हस्ते ता. २६.११.२४ पापग्रह राहु वेधः, मृत्यु पंचकः
११ भौमे चित्रायां ता. २६.११.२४ मृत्यु पंचकः
१२ बुधे चित्रायां ता. २७.११.२४ लग्नाऽभावः, क्षीण चन्द्रः
तदग्रे क्षीण चन्द्र चतुर्दिनम्

### ● मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे ●

२ भौमे मूले ता. ३.१२.२४ लग्नाऽभावः
३ बुधे उषायां ता. ४.१२.२४ लग्नाऽभावः भद्रा, मृत्यु पंचकः
४ गुरौ उषा/श्रवणे ता. ५.१२.२४ भद्रा, मृत्यु पंचकः, लग्नाऽभावः
५ शुक्रे श्रवणे ता. ६.१२.२४ लग्नाऽभावः
६ शनौ घनिष्ठायां ता. ७.१२.२४ लग्नाऽभावः
८ चन्द्रे उभायां ता. ९.१२.२४ पापग्रह राहु युतिः
१० भौमे उभायां ता. १०.१२.२४ पापग्रह राहु युतिः, व्यतिपातः
१० भौमे रेवत्यां ता. १०.१२.२४ व्यतिपातः, पापग्रह केतुवेधः
११ बुधे रेवत्यां ता. ११.१२.२४ पापग्रह केतु वेधः
११ बुधे अश्विन्यां ता. ११.१२.२४ भद्रा, परिघार्थः
१२ गुरौ अश्विन्यां ता. १२.१२.२४ लग्नाऽभावः
१३ शुक्रे रोहिण्यां ता. १३.१२.२४ मृत्युपंचकः
१४ शनौ रोहिणी/मृग. ता. १४.१२.२४ मृत्युपंचकः, मासान्तः
१५ सूर्ये मृगशिरायां ता. १५.१२.२४ संक्रान्तिः
तदग्रे धनुसंक्रान्ति मलमासः

### ● माघ कृष्ण पक्षे ●

५ सूर्ये उफायां ता. १९.१.२५ लग्नाऽभावः
५ सूर्ये हस्ते ता. १९.१.२५ पापग्रह राहु वेधः
६ चन्द्रे हस्ते ता. २०.१.२५ पापग्रह राहु वेधः, भद्रा
६ चन्द्रे चित्रायां ता. २०.१.२५ पापग्रह शनि वेधः
७ भौमे चित्रायां ता. २१.१.२५ पापग्रह शनि वेधः
९ गुरौ अनुराधायां ता. २३.१.२५ लग्नाऽभावः, भद्रा, मृत्यु पंचकः
१० शुक्रे अनुराधायां ता. २४.१.२५ मृत्यु पंचकः, भद्रा
१३ चन्द्रे मूले ता. २७.१.२५ क्षीण चन्द्रः
तदग्रे क्षीण चन्द्र दोष

### ● माघ शुक्ल पक्षे ●

३ शनौ उभायां ता. १.२.२५ पापग्रह राहुयुतिः
४ सूर्ये उभायां ता. २.२.२५ पापग्रह राहुयुतिः, मृत्यु पंचकः
४ सूर्ये रेवत्यां ता. २.२.२५ पापग्रह केतु वेधः
६ चन्द्रे रेवत्यां ता. ३.२.२५ पापग्रह केतु वेधः
६ चन्द्रे अश्विन्यां ता. ३.२.२५ लग्नाऽभावः
९ गुरौ रोहिण्यां ता. ६.२.२५ लग्नाऽभावः
१० शुक्रे मृगशिरायां ता. ७.२.२५ वैधृतिः
११ शनौ मृगशिरायां ता. ८.२.२५ वैधृतिः
१५ बुधे मघायां ता. १२.२.२५ संक्रान्तिः

### ● फाल्गुन कृष्ण पक्षे ●

३ शनौ उफायां ता. १५.२.२५ लग्नाऽभावः, भद्रा
३ शनौ हस्ते ता. १५.२.२५ पापग्रह राहु वेधः
४ सूर्ये हस्ते ता. १६.२.२५ पापग्रह राहु वेधः
४ सूर्ये चित्रायां ता. १६.२.२५ पापग्रह शनि वेधः
५ चन्द्रे चित्रायां ता. १७.२.२५ पापग्रह शनि वेधः
६ भौमे चित्रा ता. १८.२.२५ पापग्रह शनि वेधः, लग्नाऽभावः
६ बुधे स्वात्यां ता. १९.२.२५ लग्नाऽभावः, भद्रा
९ शनौ मूले ता. २२.२.२५ लग्नाऽभावः, भद्रा, मृत्यु पंचकः
१० सूर्ये मूले ता. २३.२.२५ भद्रा, मृत्यु पंचकः
११ चन्द्रे उषायां ता. २४.२.२५ व्यतिपातः
१२ भौमे श्रवणे ता. २५.२.२५ क्षीण चन्द्रः
तदग्रे क्षीण चन्द्र दोष

### ● फाल्गुन शुक्ल पक्षे ●

२ शनौ उभायां ता. १.३.२५ पापग्रह राहु युतिः
३ सूर्ये उभायां ता. २.३.२५ पापग्रह राहु युतिः
३ सूर्ये रेवत्यां ता. २.३.२५ पापग्रह केतु वेधः
३ सूर्ये अश्विन्यां ता. २.३.२५ लग्नाऽभावः
४ चन्द्रे अश्विन्यां ता. ३.३.२५ लग्नाऽभावः, भद्रा

## ● गुरूशुक्रास्ते त्याज्य कार्याणि ●

**वाप्यारामतड़ागकूपभवनारम्भ प्रतिष्ठे व्रताऽऽरम्भोत्सर्ग वधूप्रवेशन–महादानादि–सोमाष्टके। गोदानाग्रयण –प्रपा–प्रथमकोपाकर्म वेदव्रतं नीलोद्राहमथातिपन्नशिशु संस्कारान् सुरस्थापनम् ॥**

**दीक्षा–मौञ्जि–विवाह–मुण्डनम पूर्व देवतीर्थेक्षणं संन्यासाग्नि परिग्रहौ नृपति सन्दर्शोऽभिषेकौ गमम् । चातुर्मास्य समावृती श्रवणयोर्वेधं परीक्षां त्यजेद् – वृद्धत्वास्तशिशुत्व इज्य–सितयोर्न्यूनाधिमासे तथा ॥**

भावार्थ – सरलार्थ यह कि गुरू–शुक्र की अस्तकाल स्थिति तथा इनके वृद्धत्व तथा बालत्व कालांश में कूप खनन–उपवन बगीचा–गृहनिर्माण–देवप्रतिष्ठा कार्य नूतन गृहप्रवेश–एकादशी प्रदोष–अनन्त व्रत–शिवरात्रि आदि व्रतों का आरंभ अथवा उद्यापन–वधू प्रवेश–षेड़शमहादान–सोमयाग–अष्टकाश्राद्ध–गोदान (केशान्त कर्म) नवान्न इष्टि–उपनयन के बाद प्रथम श्रावणी कर्म–वेदव्रत–काम्यवृषोत्सर्ग–जातकर्म–देवस्थापन–मन्त्राग्रहण–मुण्डन उपनयन–विवाह कार्य–सर्वप्रथमदेवतीर्थ दर्शन–सन्यासग्रहण–अग्निहोत्र–राजदर्शन–राज्याऽभिषेक–प्रथमामहायात्रा–चातुर्मास याग समावर्त्तन–कर्णवेध–दिव्य परीक्षा इत्यादि कार्य आगमकाल में ही विज्ञजनों द्वारा वर्जित कहे हैं।

तथा नित्य का व्यापार–व्यवसाय कार्य एवं नवीन वाहनादि प्रयोग मशीनरी संचालन हेतु वर्ज्य नहीं है।

विशेष वचन सूत्र भी – नष्टे चन्द्रे तथा शुक्रे नष्टे चैव बृहस्पतौ । मंगलानि तथो द्वाहं त्वरितेऽपि न कारयेत् ॥ शुक्रे चास्तं गते जीवे चन्द्रेवास्तमुपागते तेषां वृद्धे च बाल्ये च शुभकर्म भयप्रदम् ॥

अत्यावश्यकतायां परिहारवचनम् – आवश्यकेषु कार्येषु राज्ञां तत्कर्मकारिणाम् । विवाहादीनि कुर्वीत मौढ्येऽपि गुरूशुक्रयोः ॥ शान्तिं कृत्वा तयोस्तद्वच्छुक्रदेवेन्द्र मन्त्रिणः । ह्रीमेदानेजपेर्वापि तयोरूक्तैश्च मन्त्रकैः ॥ वैदिक मन्त्रैर्यथाविधि गुरूशुक्रयोः शान्तिं कृत्वा विवाहादि कुर्यात् ॥ भाव सरलार्थ यह कि यह परिहार वचन पद विशेषस्थ मन्त्रीगण तथा राजकीय सेवारत कर्मचारीगणों हेतु अत्यधिक आवश्यकता विशेष मात्र का ही सूचक है।

## ❊❊ आत्मीय निवेदन ❊❊

या वा मानव धर्मत्वाद् या वा मद दृष्टिदोषतः
मुद्रणादौत्रुटिर्जाता संशोध्या सा महोदयैः ॥
स्वभाव सुलभा येऽपि दोषाः स्युर्यदिकुत्रचित् ।
कृपालुभिस्तु विद्वद्भिः क्षन्तव्याः सन्ति ते सदा ॥

◆ **अभिसूच्यते** – यद्यपि इस पंचांग के निर्माण एवं मुद्रण में यथायोग्य पूर्णतया सावधानी–दक्षता रखी गई है । तथापि मानवीय सहजगतिक दृष्टिदोष वश तथा कम्प्यूटर यांत्रिकी तकनीकी वश किसी भी प्रकार की अशुद्धि–मुद्रण व्यतिक्रम के हेतु प्रकाशक–पंचांग रचियता एवं मुद्रक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी प्रकार के न्यायिक विवाद–समाधान हेतु न्यायक्षेत्र नीमच छावनी–मध्यप्रदेश ही मान्य रहेगा।

भवदीय – शुभाऽभिलाषी
**निर्णयसागर पंचांग**
नीमच केन्ट 458 441 (म.प्र.)

## गृह निर्माण मुहूर्त्त-क्रिया

❖ **गृहारम्भे शुभ मासा:** - सौर संक्रान्तिजनित मिथुन-कन्या-धनु-मीन का कालांश समय मान्य नहीं तथा शेष सभी सौर संक्रान्ति मास गृहारंभ में शुभ है। अभिप्राय यह कि मेष राशि सूर्य में चैत्र। वृषभ राशि सूर्य में ज्येष्ठ। कर्क राशि सूर्य में आषाढ। सिंह राशि सूर्य में भाद्रपद। तुला सूर्य में आश्विन। आदि कृष्णपक्षीय चान्द्रमास गृहारंभ नवनिर्माण हेतु शुभ फलद है।

❖ **शुभ तिथि** - २-३-५-६-७-१०-११-१२-१३-१५ तथा कृष्णपक्षीय प्रतिपदा १ भी शुभ। शुक्ल प्रतिपदा १ तथा ४-९-१४-८-३० तिथि गृह रचना विषय में मान्य नहीं

❖ **शुभ वार** - सोम, बुध, गुरू, शुक्र, शनि मान्य तथा रवि-मंगलवार वर्जित है।

❖ **शुभनक्षत्र**- रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, चित्रा, हस्त, स्वाति, अनुराधा, तीनों उत्तरा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती आदि १३ नक्षत्र सप्तशलाका चक्रवेध-रहित शुभ मान्य।

❖ **समय लग्न शुद्धि** - गृहारंभ हेतु स्थिर तथा द्विस्वभाव राशि के लग्न विशेष शुभ तथापि १-३-५-६-८-११-१२ संज्ञक लग्नों में तथा शुभ ग्रह ८-१२ भाव में नहीं रहे एवं केन्द्र १-४-७-१० एवं त्रिकोण ५-९ भाव स्थान में शुभ ग्रह की रचना तथा ३-६-११ स्थान भावों में पाप ग्रह शुभ ही मान्य एवं अभिजित मुहूर्त्त वेला तथा आवश्यकता विशेष में श्रीकार-शुभ चौघटिका वेला का समय भी मान्य है।

❖ **भू-शयन गणना क्रम** (१) सूर्य जिस नक्षत्र में रहे उससे इष्ट मुहूर्त्त दिवस का नक्षत्र गणनानुसार ५-७-९-१२-१९-२६ वाँ दिवस भूशयन सुप्तपृथ्वी विकार भी दोषप्रद माना जाता है। तथा इन नक्षत्रों में भी क्रमश: ४-८-५-३-६-७ घटी नक्षत्र (आदि की घटी) मात्र में ही भूशयन तथा शेष घटियों में सुप्त विकार नहीं। वास्तु रत्नावली ग्रन्थानुसार इस प्रकार का अभिमत है तथा कतिपय ग्रंथों में इष्ट सूर्य संक्रान्ति दिन से ५-७-९-१५-२१-२४ वाँ दिवस मात्र में ही भूशयन मानते हैं। इन भूशयन समय में गृह निर्माण-कूप-तड़ाग-बीज वपन-हल प्रवाह चलाना खनन आदि का कार्य नेष्ट सूचक है।

❖ **गृहारंभे वृषवास्तु-वत्सगणना** - सूर्य नक्षत्र से इष्ट दिन नक्षत्र तक गणनानुसार दिन नक्षत्र १ से ७ तक अशुभ तथा ८ से १८ तक शुभ, तथा १९ से २८ तक अशुभ। नक्षत्र गणना अभिजित् सहित करना चाहिये।

## भूमि-वस्तु क्रय-विक्रय मुहूर्त्त

दोनों पक्ष की ५-६-१०-११-१५ तथा कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा १ तिथि भी मान्य। तथा चन्द्र-बुध सामान्य एवं गुरू-शुक्रवार विशेष शुभ। एवमेव मृगशिरा-पुनर्वसु-पुष्य-आश्लेषा-मघा-हस्त-स्वाति-विशाखा-अनुराधा-मूल तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा-श्रवण-रेवती का सुयोग शुभ मान्य।

## ❁ नवीन गृह प्रवेश मुहूर्त्त ❁

❁ **चान्द्र मास** - वैशाख-ज्येष्ठ-माघ-फाल्गुन आदि उत्तरायण काल विशेष शुभ। तथा कार्त्तिक-फाल्गुन मास सामान्यतया आवश्यकता विशेष मध्य मान्य।

❁ **नक्षत्र** - रोहिणी, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, तीनों उत्तरा, रेवती विशेष शुभ मान्य तथा आवश्यकता विशेष मध्य-पुष्य-स्वाति-धनिष्ठा, शतभिषा भी मान्य। ❁ **वार** - चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्र, शनि। ❁ **तिथि** - शुक्ल पक्षीय १ रिक्ता संज्ञा ४-९-१४ तथा अमावस्या रहित सभी तिथि गणना मान्यता शुभ तथा स्थिर लग्न सर्वोत्तम २-५-८-११ तथा द्वि स्वभाव लग्न सामान्य शुभ ३-६-९-१२ तथा लग्न शुद्धि हेतु १-२-३-४-५-७-९-१० इन स्थान भावों में शुभ ग्रह स्थिति तथा ३-६-११ भावों में पापग्रह मान्य तथा चन्द्रमा १-६-८-१२ भाव स्थानों में नहीं होवे और ४-८ भाव शुद्ध होवे तथा कलश चक्र की शुद्धि देखकर सन्मुख में गाय कन्या-जलपूर्ण कलश, श्रीफल, आम्रपर्ण, पुष्पमाला तथा विप्र सहित वेदध्वनि मांगलिक गायन वाद्य के सहित दम्पत्ति को नवगृह प्रवेश शुभ है ❁ **कलश चक्र गणना सूत्र** - अभिजित रहित करें। सूर्य नक्षत्र से इष्ट दिवस दिन नक्षत्र तक गणना करें। ५ संख्या तक अशुभ तथा ६ से १३ तक शुभ। १४ से २१ अशुभ एवं २२ से २७ दिन गणना तक शुभफल।

## श्रीदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

चैत्रे वा फाल्गुन वापि ज्येष्ठे वा माधवे तथा।
माघे वा सर्वदेवानां प्रतिष्ठा शुभदा भवेत्॥
यस्य देवस्य यत्तिथिवार नक्षत्रादिकं तद्दिनेयदि
तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्त्तो भवेत्तदा अत्युत्तम:॥
रिक्तान्यतिथिषु स्यात्सावारे भौमान्यके तथा।
तथा महाश्विनो मास: उत्तम: सर्वकामद:॥

जिस देवता की प्रतिमा स्थापित करनी हो उस देवता के ही दिन-तिथि-नक्षत्र तथा शुभ योग-शुभ लग्न में स्थापना करना चाहिये तथा दिवस के पूर्वाह्न काल में स्थापना बनें यह भी लक्ष्य साधना रखना चाहिये। ● **शुभ मान्य मास** - माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ (तथा विकल्प से चैत्र-आश्विन मास भी प्रकारान्तर से मान्य) एवं माघ मास में श्री विष्णु की प्रतिष्ठा नहीं। तथा मातृ, भैरव, वराह, नृसिंह एवं देवी प्रतिष्ठा दक्षिणायन में भी शास्त्र सम्मत हैं ● **शुभ तिथि** - २-३-५-६-७-८-१०-११-१२-१३-१५ एवं कृष्ण पक्ष की १ प्रतिपदा तिथि भी शुभ श्रीकार। ● **शुभवार** - सोम, बुध, गुरू, शुक्र, शनि। तथा मंगलवार का पूर्णतया निषेध है। ● **शुभ नक्षत्र**-अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती तथा तीनों उत्तरा संज्ञक नक्षत्र दिवस शुभ।

## ✿ शासक अधिकारी सम्पर्क मुहूर्त्त ✿

दोनों पक्ष की तिथियां २-३-५-७-१०-११-१३ तथा कृष्णपक्षीय १ प्रतिपदा। **वार** - सूर्य, सोम, बुध, गुरू, शुक्र। **नक्षत्र** - अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण आदि शुभ।

## ♣ पद विशेष अधिग्रहण मुहूर्त्त ♣

राजपत्रित पद-मंत्री-सरपंच-प्रधान, दल नेता, नगराध्यक्ष तथा सभी सामाजिक एवं शासकीय पद विशेष हेतु भी। **तिथि** - ४-९-१४ रिक्ता तिथि - मंगलवार-रात्रि समय - मलमास आदि अमावस्या समय का त्याग करें। **नक्षत्र**- अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, ज्येष्ठा, अभिजित, श्रवण, रेवती नक्षत्र मान्य हैं। **लग्न समय** - ३-५-६-७-८-११ एवं अभिजित मुहूर्त्त। **लग्नशुद्धि विवेचन** - ३-६-११ भाव स्थानों में पापग्रह तथा १-४-७-१० केन्द्र एवं ५-९ त्रिकोण तथा ११-२-३ भावों में शुभग्रह रहते लग्न बल विशेष शुभद मान्य रहता है।

## ❀ शासकीय-राजसेवा-मुहूर्त्त ❀

दोनों पक्ष की तिथि यथा २-३-५-७-१०-११-१३ एवं १५ पूर्णिमा तथा कृष्ण पक्ष १ प्रतिपदा आदि शुभ मान्य एवं नृप पंचक दिवस का त्याग करें। अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, अभिजित, रेवती नक्षत्र शुभ मान्य तथा सोम-मंगल शनिवार अशुभ

## ● विविध चुनाव अभियान मुहूर्त्त ●

तिथि २-३-५-९-१०-१२-१५ शुक्ल पक्ष विशेष शुभ तथा कृष्ण पक्ष सामान्य मान्य। वार-सोम, बुध, गुरू, शुक्र। नक्षत्र-अश्विनी, रोहिणी, तीनों उत्तरा, रेवती आदि विशेष शुभ तथापि **अमृतसिद्धि-सर्वार्थसिद्धि-रवियोग विशेष दिवस** आदि का सुयोग भी श्रीकार विशेष मान्य रहता है।

## ▲ ज़लाशय कूप-खनन मुहूर्त्त ▲

रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, अनुराधा, पूर्वाषाढ, धनिष्ठा, शतभिषा आदि नक्षत्र शुभ। तथा शुभवार एवं मौलिक पंचांग शुद्धि का ध्यान रखते, एवमेव पूर्ण चन्द्र जल चर राशि (कर्क-मकर-मीन) अथवा अर्द्धजल (वृषभ-धन-कुम्भ) के चन्द्रचार में विशेष शुभ। तथा बुध, गुरू, शुक्र केन्द्रभाव स्थित तथा पापग्रह सूर्य, मंगल, शनि निर्बल भाव रचना के रहते मान्य।

## कुम्भकार-प्रजापति कार्य मुहूर्त्त

दोनों पक्ष की २-३-५-६-७-८-१०-११-१२-१३-१५ तथा कृष्ण पक्ष १ प्रतिपदा तिथि मंगलवार छोडकर, सभी वार शुभ मान्य। रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, ज्येष्ठा, श्रवण, रेवती, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ, उत्तराभाद्रपद आदि नक्षत्र श्रीकार शुभ मान्य। ईंट, चूना, सुरखी, सीमेन्ट आदि पक्ष हेतु सुखद।

## ★ मुकदमा नालिश-अर्जी मुहूर्त्त ★

**वार**-मंगल, शनि। **तिथि** ४-९-१४। **नक्षत्र**-कृतिका, आर्द्रा, पुनर्वसु, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल, विशाखा, तीनों पूर्वा, आदि नक्षत्र मान्य तथा भद्रा का समय काल भी विशेषकर श्रीकार।

## * मशीनरी शुभारंभ मुहूर्त्त *

नक्षत्र अश्विनी-पुनर्वसु-पुष्य-हस्त-चित्रा-स्वाति-अनुराधा-ज्येष्ठा-श्रवण-धनिष्ठा-शतभिषा-रेवती तथा सोमवार बुधवार विशेष शुभ। अन्यवार सामान्य मान्य एवं चर लग्न अथवा अभिजित मुहूर्त्त अथवा श्रीकार शुभादि चौघटिका वेला सुखद

## ✶ धेनु-गौ आदि दुधारू पशु मुहूर्त्त ✶

नक्षत्र-अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, विशाखा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती आदि में दुधारू पशु लेना बेचना शुभ। तथा अन्य चौपाया पशु हेतु-पुनर्वसु, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ, पूर्वाभाद्रपद, हस्त, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, धनिष्ठा, रेवती में लेना बेचना शुभ। *शकुन-नौमी-चौदस-चौथ चौपाया। वार मंगले हानिकर पाया॥* एवमेव दैनिक चन्द्र बल शुद्धि गणना पर भी ध्यान रखना चाहिए।

## ♠ श्रीराज मुहूर्त्त रचना ♠

**तिथि** - २-३-७-१२-१५ वार-रवि, मंगल, बुध, शुक्र तथा **नक्षत्र** - भरणी, मृगशिरा, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, चित्रा, अनुराधा, पूर्वाषाढ, धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपद। इन तीन तिथि+वार+नक्षत्र के सुयोग मिलने पर सर्वसिद्धिकारक श्रीकार श्रीराजयोग मुहूर्त्त वेला का निर्माण बनता है।

## ★ श्रीकुमार-तन्त्र मुहूर्त्त रचना ★

तिथि - १-५-६-१०-११ वार- मंगल, बुध, सोम, शुक्र। तथा नक्षत्र-अश्विनी, रोहिणी, पुनर्वसु, मघा, हस्त, विशाखा, मूल, श्रवण, पूर्वाभाद्रपद। इन तिथि+वार+नक्षत्र का सुयोग किसी भी दिन प्राप्त होने पर सिद्धिप्रदायक श्रीकुमार मुहूर्त्त का संयोग। सर्वकार्य रचना विषय में सुखद श्रीकार मान्य।

# ▲❀▲ अथमुहूर्त्तचिंतामणिमार्त्तण्डगणपतीत्यादिमतेन आवश्यकीय-कतिपय मुहूर्त्ताः ▲❀▲

| मुहूर्त्तनाम | ❋ नक्षत्रादिकम् ❋ | तिथि | वार |
|---|---|---|---|
| प्रथम रजोदर्शन | श्रवण, घनिष्ठा, शतभिषा, मृगशिरा, चित्रा, रेवती अनु. हस्त, अश्वि. पुष्य. रोहि. उत्तरा ३ स्वाति, तथा मास-माघ, मार्ग.वैशा. आश्विन ज्येष्ठ, फाल्गुन मास तथा शुक्ल पक्ष शुभ। | शुभ | चं.बु. गु.शु. |
| रजःस्नान शीघ्रगर्भा. | हस्त, स्वा., अश्वि., मृग., अनु., घनि., उत्तरा ३ रोहिणी ज्येष्ठा मृग., रेवती, स्वाति, हस्त, अश्वि., रोहिणी शीघ्र गर्भयोग। | शुभ | शुभ |
| सीमंत कर्म पुंसवन | मृग, पुष्य, मूल, श्रव., पुन., हस्त। उत्तरा ३ रेवती रोहिणी। गर्भमासतः ३-६-८ मास विष्णु पूजा। | शुभ | र.गु.मं. |
| जातकर्म नामकर्म | जन्मतः ११-१२ दिने, मृग., रेवती, चित्रा, अनु., उत्तरा ३ रोहिणी, हस्त, अश्विनी, पुष्य, स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, घनिष्ठा, शत.। | शुभ | शुभ |
| सूतिका स्नान | उत्तरात्रय ३ रोहिणी, रेवती, मृगशिरा, हस्त, स्वाति, अश्विनी, अनु.। | शुभ | र.मं.गु. |
| पालने में शयन | मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, अभि., अश्विनी, पुष्य, उत्तरा ३ रोहि.। सूर्यभाद्गणना आरोग्य ५, मृत्यु ५, देहकष्ट ५, व्याधि ५, अन्तिम सौख्य ७। दिन - ३२, १२, १६, १८, १० | शुभ | शुभ |
| जल पूजन जलवा | श्रवण, पुन., पुष्य, मृग., हस्त., मूल, अनु. (शु.+गु. अस्त चैत्र + पौष अधिकमास निषेध) | शुभ | शुभ |
| अन्नप्राशन | शिशु जन्मतः ६,८,१० मासे। कन्या प्रति ५, ७ विषम मासे, शुक्लपक्षे, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा ३ हस्त चित्रा स्वाति अनुराधा, अभिजित, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती (मीन, मेष, वृश्चिक, लग्न एवं जन्मराशि नक्षत्र निषेध) | २, ३, ५, ७, १० १३, १५ | शुभ |
| कर्णवेध परोजना | श्रवण, घनिष्ठा, पुनर्वसु, इस्त, अश्वि, पुष्य, अभिजित, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनु (देवशयन, चैत्र, पौष, जन्ममास तथा समवर्ष निषेध) जन्मतः ६-७ मास शुभ। | शुभ | शुभ |
| जडुला उतारना | मृगशिरा, रेवती, चित्रा, स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, ज्येष्ठा, चैत्रहीन, उत्तरायणे ३, ५, ७ वर्षे | शुभ | शुभ |
| विद्यारंभः अक्षरबोध | मूलतः पंचम् ५ वर्षे अश्वि.मृ.आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य श्ले. पूर्वा. ३ हस्त चित्रा स्वाति मूल घनिष्ठा शतभिषा अनध्याय वर्जित दिन तथा कुम्भ रवि निषेध। १-८ तिथि नैव। | २, ३, ५, ६, १० ११, १२ | सू.बु. गु.शु. |
| चूड़ा पहनना | अश्वि.ह.चि.स्वा.वि.अनु.घनि.रेव.शुभ। सूर्यभात ३ ने. ५ ने.३ शु.४शु.७ने.२ने.१शु.२शु.१ ने.। उत्तरा ३ रोहिणी नेष्टम्। | शुभ | सु.गु. बु.शु. |

| मुहूर्त्तनाम | ❋ नक्षत्रादिकम् ❋ | तिथि | वार |
|---|---|---|---|
| कन्या वरण | पूर्वा फा.३ उत्तरा.३, श्रवण अनुराधा स्वाति घनिष्ठा कृतिका रोहिणी रेवती मूल मृग मघा, हस्त एवं वैवाहिक नक्षत्र शुभद। | शुभ | मंगल त्याग |
| वर वरण | पूर्वा ३, उत्तरा ३, कृतिका रोहिणी। | शुभ | शुभ |
| वधू प्रवेश | विवाहतः २, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, १२, १४, १६ दिन। एवमग्रे विषम मास तथा वर्षों में। हस्त चि. रोहि. मृग अश्वि. रेवती, मघा, पुष्य, घनि. श्रव. उत्तरा ३ मूल. अनु. तथा स्थिर लग्न मान्य हैं। | शुभ | शुभ |
| द्विरागमन मुकलावा | मेषे. वृश्चि. कुम्भ के सूर्ये, मूल, ह. चि. रो. मृ. अश्वि. पुष्य. उ. ३, श्र. ध. पुन. रे. स्वा. अनु. २-३-६-७-१२ लग्ने विवाहतः १-३-५ वर्षे, दीपावली, विजयादशमी अबूझ शुभ। | शुभ | शुभ |
| गंधर्व विवाह | अश्विनी, कृतिका, आर्द्रा, पुनर्वसु, श्ले, ज्येष्ठा, घनिष्ठा, शतभिषा, इन नक्षत्रों में तथा गुरू शुक्रास्त का विचार नहीं। | शुभ | सू. मं.श. |
| दूकान शुभारम्भ | उत्तरा ३, रोहिणी, मृगशिरा, चित्रा, रेवती, अनुराधा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभि. चन्द्रलग्ने, कुंभ लग्ने निषेध। | शुभ | मंगल त्याग |
| वस्तु क्रय खरीद | शुक्ल पक्ष की ११ से कृष्णपक्ष की ५ तक, रेवती, अश्वि. स्वा. श्रव. शत.चित्रा | शुभ | शुभ |
| वस्तु विक्रय | पूर्वा ३, विशाखा कृतिका आश्लेषा, भरणी शुभद, रिक्ता तिथि अमावस्या निषेध, कुम्भ लग्न निषेध। | शुभ | शुभ |
| बहीखाता व्यवस्था | मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त चित्रा अनुराधा श्रवण रेवती चर तथा द्विस्वभाव लग्ने। | शुभ | शुभ |
| नौकर रखना | हस्त अभिजित अश्विनी पुष्य मृगशिरा रेवती चित्रा अनुराधा राशि + नक्षत्रयोनि मैत्री आदि वर्ग वैर चिन्तनीयम्। | शुभ | शुभ |
| ऋण का लेन-देन | मंगलवार संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तयुक्त रविवार को ऋण नहीं लेवें। मंगल को चुकावें तथा बुधवार को धन नहीं देवें। | | |
| रोगमुक्त स्नान | रेवती पुनर्वसु उत्तरा ३, रोहिणी मघा स्वाति आश्लेषा इनमें निषेध तथा शेष नक्षत्रों में अशुभ चन्द्र स्थिति रहते | अशुभ | चं.शु. त्याग |

## कृषिकर्म विषये

● **हल चलाना कृषि कर्म** - मूल. विशा, मघा, स्वा, पुन. श्र, ध, शत, उत्तरा ३ रोहि, मृग, चित्रा, रे, अनु। सूर्यनक्षत्र गणना-३ ने ३ श्रै ३ ने ५ श्रे ३ ने ५ श्रे ३ ने २ श्रे। वार तिथि शुभ है।

● **बीज बावनी** - हल चालक नक्षत्रों में से श्रव, शत, पुन, विशा छोड़ देवें तथा शेष नक्षत्रों में बीज बोवें। राहु नक्षत्रतः गणना- ८ ने, ३ श्रे, १ ने, ३ श्रे, १ ने, ३ श्रे, १ ने, ३ श्रे, ४ ने। तिथि शुभ लेवें। वार - र,चं. बु. गु. शु. श.।

● **दंगी सीटा तोड़ना** - फसल कटाई में मूल. ज्ये. आर्द्रा. श्ले. पूभा. हस्त. कृ. श्र. ध. मृ. स्वा. मघा. उत्त.३ पूषा. भरणी. पुष्य स्थिर लग्ने वार + तिथि शुभ।

### ♠ ट्रक-मोटर-कार-इंजन-स्कूटर-बस मुहूर्त हेतु ♠

अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वात्ति, अनुराधा, श्रवण, घनिष्ठा, शतभिषा, रेवती। मंगलवार तथा ४-९-१४ तिथि अशुभ।

# भारतीय भू संभाग मध्य सूर्य-चन्द्र ग्रहण-विवेचना

इस संवत् २०८१ के अंतर्गत भू-मंडलीय ग्रहण गणना नियामक से चार ग्रहण का प्रारूप गणितागत प्राप्त हो रहा है, इनमें से दो सूर्य ग्रहण व दो चंद्रग्रहण होंगे, **परंतु भारतीय भू भाग में दोनों सूर्य ग्रहण और एक चन्द्र ग्रहण दृश्य नहीं होगा तथा एक चन्द्र ग्रहण भी मान्द्य रूप में ही भारत में दृश्य होगा। भारत में अदृश्य/मान्द्य ग्रहण हेतु वेध - सूतक - स्नान - दान - पुण्य - कर्म - यम - नियम एवं जप अनुष्ठान हेतु मान्यता नहीं होगी।** इसी विषय में धर्मशास्त्रीय वचन विशेष यह की- **।। द्विपान्तारे ग्रहण सत्वेऽपिदर्शन योग्यत्वायान्न पुण्यकाल: ।।**

१. **मान्द्य / खंडग्रास चन्द्र ग्रहण ता. १७.९.२४ / १८.९.२४ : (क) मान्द्य चन्द्र ग्रहण ता.१७.९.२०२४:** संवत् २०८१ भाद्रपद शुक्ल पक्ष १४ मंगलवार को मान्द्य चन्द्र ग्रहण होगा भारतीय समय में रात्रि शेष ६:११ से ६:४० तक भारत में श्रीनगर, जम्मू, अमृतसर, श्री गंगानगर, बीकानेर, नागौर, अजमेर, जोधपुर, पाली, ब्यावर, भीलवाड़ा, नीमच, उदयपुर, कोटा, सूरत, अहमदाबाद, उज्जैन, इन्दौर, जलगाँव, नासिक, मुम्बई, पूणा, हुबली, केरल एवं यहाँ से पश्चिम में दृश्य होगा। **मान्द्य ग्रहण होने से इसका धार्मिक दृष्टि से कोई महत्त्व नहीं होने से अत: इसका कोई भी यम-नियम-सूतक आदि मान्य नहीं होंगे।**

**(ख) खंडग्रास चन्द्र ग्रहण ता. १८.९.२४ :** भाद्रपद शुक्ल पक्ष १५ बुधवार को खंडग्रास चन्द्र ग्रहण होगा, भारतीय समय से इसका विरल छाया प्रवेश प्रातः ६:११, स्पर्श प्रातः ७:४३, मध्य प्रातः ८:१४, मोक्ष प्रातः ८:४६ एवं विरल छाया निर्गम दिवा १०:१७ बजे होगा। **चूंकि यह ग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा इससे भारत में इस ग्रहण से सम्बंधित कोई भी यम-नियम-सूतक आदि मान्य नहीं होंगे।** यह ग्रहण कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, अफगानिस्तान, ओमान, तुर्कमेनिस्तान में मान्द्य रूप में एवं अफ्रीका, जर्मनी, पोलैंड, दक्षिणी अमेरिका, मध्य एवं पूर्वी उत्तरी अमेरिका में खंडग्रास रूप में दृश्य होगा।

२. **कंकणा कृति सूर्यग्रहण ता. २.१०.२०२४ :** संवत् २०८१ आश्विन कृष्णपक्ष ३० बुधवार को कंकणा कृति सूर्यग्रहण होगा। भारतीय समय से इसका स्पर्श रात्रि ९:१३, ग्रहण का मध्य, मध्य रात्रि १२:१५ एवं मोक्ष रात्रि ३:१६ बजे होगा। **यह ग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा। इससे भारत में इससे सम्बन्धी कोई भी यम-नियम-सूतक आदि मान्य नहीं होंगे।** यह ग्रहण मेक्सिको के पश्चिमी समुद्री क्षेत्र, मध्य एवं दक्षिणी दक्षिण अमेरिका, उत्तर एवं पश्चिमी अन्टार्कटिका में दृश्य होगा।

३. **खग्रास चन्द्र ग्रहण ता.१४.३.२०२५ -** संवत् २०८१ फाल्गुन शुक्ल पक्ष १५ शुक्रवार को चन्द्र ग्रहण होगा भारतीय समय में इसका विरल छायाँ प्रवेश प्रातः ८:२७, स्पर्श दिवा १०:४०, मध्य दिवा १२:२९, मोक्ष दिवा ०२:१८ एवं विरल छायाँ निर्गम दिवा ०३:३० बजे होगा। **यह ग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा इससे भारत में इस ग्रहण से सम्बंधित कोई भी यम-नियम-सूतक आदि मान्य नहीं होंगे।** यह ग्रहण अमेरिका, अफ्रीका, यूरोप, जापान, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड और रूस व चीन के पूर्वी भाग में दृश्य होगा।

४. **खंडग्रास सूर्य ग्रहण ता. २९.३.२०२५ -** संवत् २०८१ चैत्र कृष्ण पक्ष ३० शनिवार को सूर्यग्रहण होगा। भारतीय समय से ग्रहण का स्पर्श दिवा ०२/२१ बजे एवं मोक्ष दिवा ०६/१४ बजे होगा। **यह ग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा। इससे भारत में ग्रहण से सम्बंधित वेध-सूतक-स्नान-दान पुण्य-कर्म-यम-नियम मान्य नहीं होंगे।** यह ग्रहण ग्रीनलैंड, यूरोप, मोरोको, आर्कटिक और उत्तर अटलांटिक समुद्री क्षेत्र में दृश्य होगा।

# महाकुम्भ पर्व - प्रयागराज

भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत महाकुम्भ पर्व का माहात्म्य सर्वविदित विषय है। यह पर्व आदि-अनादि काल से सन्मान्य है। पूरा समुद्र-मंथन की रचना बनने पर चतुर्दश रत्नों में अमृत कलश हेतु देव-दानवों के मध्य संघर्ष-सृष्टि बनी एवं इसी संघर्ष रचना मध्य अमृत बिन्दु प्रपात बना जो कि प्रयागराज-नासिक-उज्जयिनी-हरिद्वार आदि संभाग में अमृत बिन्दु पतन से यहाँ के जलाशय अमृतमय बन गये तथा ग्रह गोचर परिभ्रमण स्थिति विभेद से सुयोगद कल्प तुल्य दिवस बनते विशेष स्नान-दान-पुण्य-अनुष्ठान-कल्पवास विधान हेतु धर्मशास्त्रीय संविधान का समादेश-सर्वमान्यता से चरितार्थ बना। इसी समाधार अनुसार सम्पूर्ण देश-विदेश के धर्माचार्य - महन्त श्री - महामण्डलेश्वर - तपस्वी-साधु सन्त - संन्यासी - योगीराज - मठाधीश - श्रीपीठपदासीन स्वामी - एवमेव विभिन्न अखाड़ों के सन्नायक तथा भारतीय धर्मनिष्ठ वर्ग विशेष द्वारा शाही स्नान विधान आदि क्रिया का पावन पवित्र सुयोग बना। इस महापर्व विषयक ग्रह योगानुयोग समीक्षा सूत्र यह कि :-

विक्रमाब्द २०८१ माघ कृष्ण पक्ष अमावस्या ३० बुधवार एवं दिनांक २९-०१-२०२५ ईस्वी दिवस पर प्रमुख शाही स्नान-पर्व मान्य होगा। इस विषयक धर्मशास्त्रीय तथा स्पष्ट गणितागत ग्रहगोचरीय रचना सूत्र यह कि - जीवे दूषभ्ये मकरे चन्द्रभास्करौ-प्रयागराज संगमे महाकुम्भ पर्व। मकरे च दिवानाथे वृषगे च बृहस्पतौ। कुम्भ योगो भवेतत्र प्रयागे जाति दुर्लभः।। ग्रन्थान्तरेऽपि सूत्रावली - माघे वृषभ्ये जीवे मकरचन्द्र भास्करौ। अमावस्या ततो योगः कुम्भाख्यस्तीर्थ नायके।। पुनरपि शास्त्र वचनम् - मकरे च दिवानाथे वृषराशिगते गुरौ। प्रयागे कुम्भयोगो वै माघमासे विधुक्षये।। इत्यादि शास्त्रीय सूत्रानुसार कुम्भ महापर्व चरितार्थ होगा। तथा मकर संक्रान्ति दिवस से ही पर्व स्नान-मेला प्रारंभ होकर पौषी पूर्णिमा-पुत्रदा एकादशी-षट्तिला एकादशी-माघी अमावस्या को प्रमुख स्नान पर्व एवं अग्रिम वसन्त पंचमी-जया एकादशी-माघ मासीय पूर्णिमा-महाशिवरात्रि-होलिका फाल्गुन पूर्णिमा आदि तक भी क्रमशः कुम्भ पर्वकाल जनित स्नानादि धार्मिक कृत्य प्रचलित रहेंगे।

**• कुम्भ पर्व स्नान माहात्म्य-महिमा सूत्र • अश्वमेघ सहस्राणि वाजपेय शतानि च। लक्षं प्रदक्षिणा पूरेः, कुम्भ स्नाने ही तत् फलम्।। प्रयागराज संगम तटे, कुम्भ पर्व मुख दक्ष। धर्म ध्यान स्नान की, महती महिमा लक्ष।। साधु सन्त मठ के पति, उत्साहित अनुदान। भारत भूमि धर्म की नर-नारी स्नान।।**

# आगामी प्रयागराज कुम्भ महापर्व- सन् 2025

**कुम्भ पर्वे स्नान महिमा-माहात्म्यम्-अश्वमेघ सहस्राणि वाजपेयशतानि च। लक्षं प्रदक्षिणा भूमेः कुम्भस्नाने हि तत् फलम्।।**

**ई. सन् २०२५, संवत् २०८१ शक १९४६ माघ माह में प्रयागराज में कुम्भ महापर्व का योग बन रहा है इस महापर्व में स्नान की मुख्य तिथियाँ निम्नानुसार रहेंगी-**

**(१) पूर्णिमा स्नान :** पौष शुक्ल पक्ष १५ सोमवार, दिनांक १३.१.२०२५ **(२) मकर संक्रांति शाही स्नान :** माघ कृष्ण पक्ष १ मंगलवार, दिनांक १४.१.२०२५ **(३) षट्तिला एकादशी स्नान :** माघ कृष्ण पक्ष ११ शनिवार, दिनांक २५.१.२०२५ **(४) प्रदोष एवं मारा शिवरात्रि स्नान :** माघ कृष्ण पक्ष १३ सोमवार, दिनांक २७.१.२०२५ **(५) मौनीअमावस्या शाही स्नान :** माघ कृष्ण पक्ष ३० बुधवार, दिनांक २९.१.२०२५ **(६) बसंत पंचमी शाही स्नान :** माघ शुक्ल पक्ष ४ रविवार, दिनांक २.२.२०२५ **(७) जया एकादशी स्नान :** माघ शुक्ल पक्ष ११ शनिवार, दिनांक ८.२.२०२५ **(८) माघी पूर्णिमा स्नान :** माघ शुक्ल पक्ष १५ बुधवार, दिनांक १२.२.२०२५ **(९) महाशिवरात्रि पर्व :** फाल्गुन कृष्ण पक्ष १३ बुधवार, दिनांक २६.०२.२०२५

## ● आगामी विवाह मुहूर्ताः सं.२०८२ सन् २०२५-२०२६ ई. ●

| मास–पक्ष–तिथि | वार | दिनांक | नक्षत्र | रेखा | चन्द्र | सूर्य | गुरू | ● विवाह लग्न समय ● |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वै.कृष्ण १ | सोम | १४-४-२५ | स्वाति | ७ | तुला | मेष | वृषभ | लग्न ३ मिथुन लग्न ८ वृश्चिक |
| वै.कृष्ण ३ | बुध | १६-४-२५ | अनुराधा | ८ | वृश्चिक | मेष | वृषभ | लग्न ११ कुम्भ रात्रि १२।१८ उ. |
| वै.कृष्ण ५ | शुक्र | १८-४-२५ | मूल | ६ | धनु | मेष | वृषभ | लग्न ११ कुम्भ दग्धा परिहारः |
| वै.कृष्ण ६ | शनि | १९-४-२५ | मूल | ७ | धनु | मेष | वृषभ | लग्न ३ मिथुन चं.७ पू. |
| वै.कृष्ण ७ | रवि | २०-४-२५ | उत्तरा षा. | ७ | मकर | मेष | वृषभ | लग्न ८ वृश्चिक गु.७ पू.लग्न ११ कुंभ |
| वै.कृष्ण १२ | शुक्र | २५-४-२५ | उत्तरा भा. | ७ | मीन | मेष | वृषभ | लग्न ३ मिथुन दिवा ९।३९ उ. |
| वै.शुक्ल २ | मंगल | २९-४-२५ | रोहिणी | ९ | वृषभ | मेष | वृषभ | लग्न ८ वृश्चिक लग्न ११ कुम्भ |
| वै.शुक्ल ३ | बुध | ३०-४-२५ | रोहिणी | ९ | वृषभ | मेष | वृषभ | लग्न २ वृषभ लग्न ३ मिथुन |
| वै.शुक्ल ३ | बुध | ३०-४-२५ | मृगशिरा | ९ | वृषभ | मेष | वृषभ | लग्न ८ वृश्चिक चं.गु.७ पू. |
| वै.शुक्ल ८ | सोम | ०५-५-२५ | मघा | ९ | सिंह | मेष | वृषभ | लग्न ८ वृश्चिक लग्न ११ कुंभ |
| वै.शुक्ल ९ | मंगल | ०६-५-२५ | मघा | ९ | सिंह | मेष | वृषभ | लग्न २ वृषभ लग्न ३ मिथुन |
| ज्ये.कृष्ण ५ | शनि | १७-५-२५ | उत्तरा षा. | ७ | धनु | वृषभ | मिथुन | लग्न ९ धनु गु.७ पू.मं.८ परिहारः |
| ज्ये.शुक्ल २ | बुध | २८-५-२५ | मृगशिरा | ९ | वृषभ | वृषभ | मिथुन | लग्न ३ मिथुन |
| ज्ये.शुक्ल २ | बुध | २८-५-२५ | मृगशिरा | ८ | मिथुन | वृषभ | मिथुन | लग्न ९ धनु चं.गु.७ पू.मं.८ परिहारः |
| ज्ये.शुक्ल ७ | सोम | ०२-६-२५ | मघा | ८ | सिंह | वृषभ | मिथुन | लग्न ९ धनु गु.७ पू.रात्रि ८।३५ या. |
| ज्ये.शुक्ल १२ | शनि | ०७-६-२५ | स्वाति | ८ | तुला | वृषभ | मिथुन | लग्न १ मेष चं.७ श.१२ पू. |
| ज्ये.शुक्ल १२ | रवि | ०८-६-२५ | स्वाति | ८ | तुला | वृषभ | मिथुन | लग्न ३ मिथुन ४ कर्क तिथ्यंतमपि |

## ＊ संवत् २०८१ ई.मध्य प्रमुख पर्व पूजनादि मुहूर्त वेला ＊

- **चैत्री बसंत नवरात्रि** – चैत्र शुक्ल पक्ष १ मंगलवार तारीख ९.४.२०२४ ई.दिन में १२।१४ से १।०५ तक अभिजित वेला में पूजन एवं घट स्थापना करना श्रेष्ठ रहेगा।
- **आषाढ़ी गुप्त नवरात्रि** – आषाढ़ शुक्ल पक्ष १ शनिवार तारीख ६.७.२०२४ ई.प्रातः में ७।३७ से ९।१९ तक शुभ, दिवा १२।१५ से १।१० तक अभिजित वेला में पूजन एवं घट स्थपना करना श्रेष्ठ रहेगा।
- **रक्षाबंधन पर्व मुहूर्त** – श्रावण शुक्ल पक्ष १५ सोमवार तारीख १९.८.२०२४ ई.भद्रोपरांत दिवा २।१७ से ३।५४ तक चंचल वेला समगतिक मान्य, दिवा ३।५४ से ७।०६ तक लाभ–अमृत में रक्षाबंधन का मुहूर्त श्रेष्ठ रहेगा।
- **श्रीगणेश पूजन स्थापना समय** – भाद्रपद शुक्ल पक्ष ४ शनिवार तारीख ७.९.२०२४ ई.मध्यान्ह में श्री गणेश जन्मोत्सव मनाया जाएगा। शास्त्रानुसार श्री गणेश पूजन का श्रेष्ठ समय वृश्चिक लग्न सहित मध्यान्हकाल माना गया है। वृश्चिक लग्न दिवा ११।३९ से १।५५ तक श्री गणेश स्थापना करना श्रेष्ठ रहेगा
- **आश्विन शरद नवरात्रि** – आश्विन शुक्ल पक्ष १ गुरूवार तारीख ३.१०.२०२४ ई.प्रातः ६।३५ से ८।०३ तक शुभ वेला, दिवा १२।०३ से १२।५० तक अभिजित वेला में पूजन एवं घट स्थापना करना श्रेष्ठ रहेगा
- **माघी गुप्त नवरात्रि** – माघ शुक्ल पक्ष १ गुरूवार तारीख ३०.१.२०२५ ई.प्रातः ७।२७ से ८।४८ तक शुभ वेला, दिवा १२।२९ से १।१३ तक अभिजित वेला में पूजन एवं घट स्थापना करना श्रेष्ठ रहेगा।
- **होलिका दहन** – फाल्गुन शुक्ल पक्ष १४ गुरूवार तारीख १३.३.२०२५ ई.भद्रोत्तरे रात्रि ११।२८ से १२।०६ तक होलिका का दहन करना श्रेष्ठ रहेगा।

## ★ दीपावली निर्णय सूत्र संवत् २०८१– दि.१.११.२०२४ ★

दीपावली कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रदोषव्यापिनी अमावस्या को मनाई जाती है। इस वर्ष संवत् २०८१ में कार्तिक अमावस्या ३१.१०.२४ गुरूवार को दिवा ०३:५४ से प्रारंभ होकर अगले दिन ०१.११.२४ शुक्रवार को सायं ०६:१७ पर समाप्त हो जाएगी। इस स्थिति में अमावस्या तिथि दो दिन प्रदोष काल (सूर्यास्त के बाद लगभग १४४ मिनिट का समय) में व्याप्त है, धर्मशास्त्र का स्पष्ट निर्देश है – यदि दो दिन अमावस्या प्रदोष व्यापिनी हो तो दूसरे दिन वाली अमावस्या में ही दीपावली का पर्व मनाया जाना शास्त्रसम्मत है। इस तर्क के पीछे पितृ कार्य भी है, पितृ देव पूजन करने के बाद ही लक्ष्मी पूजन करना उचित है, पितृ देव पूजन से तात्पर्य है प्रातः काल में अभ्यंग स्नान, देव पूजन और अपरान्ह में पार्वण कर्म, यदि दीपावली एक दिन पूर्व मनाई जाए तो यह सभी कर्म लक्ष्मी पूजन के बाद होंगे जो कि विपरीत दिशा–निर्देश है, अपितु यह शास्त्रोक्त नहीं रहेगा अतः दूसरे दिन ही दीपावली का पर्व शास्त्र नियम के अधीन उचित रहेगा।

निर्णय सिंधु प्रथम परिच्छेद के पृष्ठ २६पर निर्देश है कि जब तिथि दो दिन कर्मकाल में विद्यमान हो तो निर्णय युग्मानुसार करें। इस हेतु अमावस्या प्रतिपदा का युग्म शुभ माना गया है। अर्थात् अमावस्या को प्रतिपदा युता ग्रहण करना महाफलदायी होता है और लिखा है कि उल्टा होय (अर्थात् पहले दिन चतुर्दशी युता अमावस्या ग्रहण की जावे) तो महादोष है और पूर्व किये पुण्यों को नष्ट करता है। दीपावली निर्णय प्रकरण में धर्मसिंधु में लेख है कि **"तत्र सूर्योदयं व्याप्यास्तोत्तरं घटिकादिक रात्रि व्यापिनी दर्शे न संदेहः"** अर्थात् यहाँ सूर्योदय में व्याप्त होकर अस्तकाल के उपरांत एक घटिका से अधिक व्यापी अमावस्या होवे तब संदेह नहीं है, तदनुसार १ नवम्बर को दूसरे दिन सूर्योदय में व्याप्त होकर सूर्यास्त के बाद प्रदोष में एक घटी से अधिक विद्यमान है। निर्णय सिंधु के द्वितीय परिच्छेद के पृष्ठ ३०० पर लेख है कि **"दण्डैक रजनी योगे दर्शः स्यात्तु परेऽहवि। तदा विहाये पूर्वे द्युः परेऽहनि सुखरात्रिकाः"** अर्थात् यदि अमावस्या दोनों दिन प्रदोष व्यापिनी होवे तो अगली करना कारण कि तिथि तत्व में ज्योतिषी का कथन है कि एक घड़ी रात्रि का योग होवे तो अमावस्या दुसरे दिन होती है, तब प्रथम दिन छोड़कर अगले दिन सुखरात्रि होती है। तिथि निर्णय का कथन उल्लेखनीय है कि **"इयं प्रदोष व्यापनि साह्या, दिन द्वये सत्वाऽसत्वे परा"** अर्थात् यदि अमावस्या दोनों दिन प्रदोष को स्पर्श न करें तो दूसरे दिन ही लक्ष्मी पूजन करना चाहिए, इसमें यह अर्थ भी अंतरनिहित है कि अमावस्या दोनों दिन प्रदोष को स्पर्श करें तो लक्ष्मी पूजन दूसरे दिन ही करना चाहिए। व्रत पर्व विवेक में दीपावली के सम्बंध में अंत में निर्णय प्रतिपादित करते हुए लिखा है कि अमावस्या के दो दिन प्रदोष काल में व्याप्त/अव्याप्त होने पर दूसरे दिन लक्ष्मी पूजन होगा। इस प्रकार उपरोक्त सभी प्रमुख ग्रंथों का सार यह है कि यदि अमावस्या दूसरे दिन प्रदोष काल में एक घटी से अधिक व्याप्त है तो प्रथम दिन प्रदोष में सम्पूर्ण व्याप्ति को छोड़कर दूसरे दिन प्रदोषकाल में श्री महालक्ष्मी पूजन करना चाहिए, किन्तु कहीं भी ऐसा लेख नहीं मिलता कि दो दिन प्रदोष में व्याप्ति है तो अधिक व्याप्ति वाले प्रथम दिन लक्ष्मी पूजन किया जाये। प्रतिपदा युता अमावस्या ग्रहण किये जाने का युग्म का जो निर्देश है, उसके अनुसार भी प्रदोष का स्पर्श मात्र ही पर्याप्त है यदि एक घटी से कम व्याप्ति होने के कारण प्रथम दिन ग्रहण किया जाता है तो वह युग्म व्यवस्था का उल्लंघन होकर महादोष होगा। **उपरोक्त सभी शास्त्रोक्त आधारबिंदु का विचार करते हुए यह निर्णय लिया जाना शास्त्र सम्मत है कि १ नवम्बर २०२४ को श्री महालक्ष्मी पूजन (दीपोत्सव पर्व) उचित होगा इस दिन सूर्योदय से सूर्यास्त उपरांत विद्यमान होने से अमावस्या साकल्या पादिता तिथि होगी जो सम्पूर्ण रात्रि और अगले सूर्योदय तक विद्यमान मानी जाकर सम्पूर्ण प्रदोषकाल, वृष लग्न व निशीथ में सिंह लग्न में लक्ष्मी पूजन के लिए प्रशस्त होगी। दृश्य गणित से निर्मित होने वाले सभी पंचांगों में १ नवम्बर २०२४ को ही लक्ष्मी पूजन का निर्णय शास्त्र सम्मत है।**

## ● विवाह मुहूर्त में दस दोषों का संक्षिप्त विवरण ●

हमारे पंचांग में निम्नवर्णित दस दोषों का शोधन करने के उपरांत एवं देशानुकूल विवाह मुहूर्त प्रस्तुत किए हैं। इन दोषों को विवाह मुहूर्त में रेखा–स्तंभ में दर्शाया गया है। दोषों के क्रम में जहाँ दोष है वहां (ऽ) और जहां दोष नहीं है वहां (।) ऐसी रेखा दी है। इन दस दोषों में से भी क्रूर युति, क्रान्तिसाम्य, दग्धा, मृत्युबाण, वेध दोष सर्वथा त्याज्य हैं।

### ◆ १. लत्ता दोष चक्र ◆

| ग्रह | सूर्य | पूर्णचंद्र | मंगल | बुध | गुरू | शुक्र | शनि | राहु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वि.न. | १२ | २२ | ३ | ७ | ६ | ५ | ८ | ९ |
| दिशा | दक्षिण | वाम | दक्षिण | वाम | दक्षिण | वाम | दक्षिण | वाम |
| फल | धननाश | भय | मृत्यु | भय | बन्धुनाश | कार्यहानि | कुलक्षय | मरण |

उदाहरण – सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ.फा.का हो तो सूर्य नक्षत्र से विवाह नक्षत्र १२ वां होने से यह सूर्य का लत्तादोष वाला विवाह नक्षत्र होगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों का लत्ता दोष भी जानें।

### ◆ २. पातदोष चक्र ◆

हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गण्ड और शूल योगों का अंत जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।

| विवाह नक्षत्र | रो. | मृग. | मघा | उ.फा. | हस्त | स्वाति | अनु. | मूल | उ.षा. | उ.भा. | रेवती |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्याधिष्ठित नक्षत्र | आर्द्रा | मृ. | अश्वि. | कृ. | भ. | कृ. | अश्वि. | रो. | भ. | भ. | अश्वि. |
| | पुन. | आ. | मृ. | आ. | मृ. | श्र. | आ. | ज्ये. | पुन. | श. | म. |
| | श. | ज्ये. | ज्ये. | वि. | श. | ध. | उषा. | ध. | श. | वि. | ध. |
| | पूफा. | ध. | पुष्य | पूफा. | पूभा. | पुष्य | पूभा. | अश्ले. | वि. | उफा. | ज्ये. |
| | चि. | म. | ह. | उभा. | स्वा. | ह. | पूषा. | मू. | अनु. | मू. | पूफा. |
| | मू. | ह. | रे. | पूभा. | म. | रे. | पूफा. | उभा. | उषा. | पूफा. | स्वा. |

### ◆ ३. युतिदोष ◆

जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह का युतिदोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च, मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युतिदोष नहीं होता, अपितु श्रेष्ठ होता है। सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु की युति दारिद्रय, मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है।

### ◆ ४. वेध दोष चक्र ◆

| अश्विनी | रोहिणी | मृगशिरा | मघा | उफा. | हस्त | चित्रा | स्वाति | अनुराधा | मूल | उषा. | श्रवण | धनिष्ठा | उ.भा. | रेवती |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पूफा. | अभिजित | उषा. | श्रवण | रेवती | उभा. | पूभा. | शत. | भरणी | पुनर्वसु | मृग. | मघा | आश्लेषा | हस्त | उफा. |

उपर के नक्षत्र का विवाह और नीचे के नक्षत्र पर क्रूर ग्रह हो तो वेधदोष होता है, यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग देना चाहिए।

### ◆ ५. जामित्र दोष चक्र ◆

विवाह लग्न से सातवें ग्रह होने से जामित्र दोष होता है। उपर वाली पंक्ति में विवाह नक्षत्र हैं। यानि १४ वें नक्षत्र में पापी ग्रह का जामित्र दोष वर्जनीय है।

| अश्विनी | रोहिणी | मृगशिरा | मघा | उफा. | हस्त | चित्रा | स्वाति | अनुराधा | मूल | उषा. | श्रवण | धनिष्ठा | उभा. | रेवती |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चित्रा | अनुराधा | ज्येष्ठा | धनिष्ठा | पूभा. | उभा. | रेवती | अश्विनी | कृतिका | मृगशिरा | पुनर्वसु | पुष्य | आश्लेषा | उफा. | हस्त |

### ◆ ६. बाणज्ञान सुलभ चक्र ◆

| बाण नाम | सूर्य के गतांश प्रत्येक राशि के | वर्जित वार | वर्जित कार्य | वर्जित समय |
|---|---|---|---|---|
| रोग | ८/१७/२६ | रविवार | उपनयन | रात्रि |
| अग्नि | २/११/२०/२९ | मंगलवार | गृहप्रवेश | दिन–रात |
| नृप | ४/१३/२२ | शनिवार | राजसेवा | दिन |
| चौर | ६/१५/२४ | मंगलवार | यात्रा | रात्रि |
| मृत्यु | १/१०/१९/२८ | बुधवार | विवाह | संध्या |

### ◆ ७. एकार्गल दोष ◆

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कुंभ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगंड ये योग हो और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

### ◆ ८. उपग्रह दोष ◆

सूर्य के नक्षत्र से ५ वें, ७ वें, ८ वें, १० वें, १४ वें, १५ वें, १८ वें, १९ वें, २१ वें, २२ वें, २३ वें, २४ वें, २५ वें नक्षत्र पर चन्द्र हो तो उपग्रह दोष होता है।

### ◆ ९. क्रान्तिसाम्य दोष चक्र ◆

| मेष | वृष | मिथुन | कर्क | कन्या | तुला |
|---|---|---|---|---|---|
| सिंह | मकर | धनु | वृश्चिक | मीन | कुंभ |

नीचे दी गई सारणी में पंक्ति १ और २ में दी गई राशि क्रमशः में कहीं भी सूर्य एवं चन्द्रमा हो तो स्थूल रूप से क्रांतिसाम्य दोष होता है। यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे – मेष के सूर्य और सिंह के चन्द्रमा में या सिंह के सूर्य और मेष के चन्द्रमा में होता है। हमारे निर्णयसागर पंचांग के विवाह मुहूर्त शोधन में गणितागत सूक्ष्म क्रांतिसाम्य ही लिया गया है। जो महापात से गणित करना चाहिए।

### ◆ १०. दग्धा तिथि दोष ◆

| सूर्य राशि | धनु | वृष | कर्क | कन्या | सिंह | मकर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | मीन | कुंभ | मेष | मिथुन | वृश्चिक | तुला |
| तिथि | २ | ४ | ६ | ८ | १० | १२ |

इन संक्रान्तियों के सौर मास में ये दग्धा तिथियां विवाह में वर्जनीय हैं। इनका उपयोग संभाग विशेष पर निर्भर करता है।

## ● स्वयंसिद्ध-मुहूर्त्त सूत्रम् ●

प्रतिपद्वत्सरादि या तृतीया क्षय्यसंज्ञिका । दशमी विजयाख्या च मुहूर्त्तास्त्रय ईरिता: ।। प्रतिपत्कार्त्तिके शुक्ले स मुहूर्त्तोऽर्ध संज्ञक । स्वयंसिद्धा इमेज्ञेया: सर्वकार्य प्रसाधका: ।। ये ३।। साढे तीन मुहूर्त्त अबूझ संज्ञक तथा आश्विन सुदी की दशमी, दीपावली, प्रदोष वेला, आषाढ सुदी भडली नवमी तथा कार्त्तिक सुदी की देवप्रबोध एकादशी एवं माघ मध्य वसंत पंचमी, फाल्गुन शुक्ल २ फुलेरा दूज आदि भी मतान्तर से अनपूछा मुहूर्त्त संज्ञक लोकाचार में मान्य

## ♠ पुनरपिशास्त्रीय वचन ♠

वर्षादौ प्रतिपच्चैव दशमी विजयाभिधा। अक्षयाख्या तृतीया च कार्त्तिकी प्रतिपत्सिते ।। सार्धतिस्त्र: दिनान्येते शुभेषु सिद्धिदायक: । नात्र दोषो भवेत्किञ्चिनित्यं च शुभवर्धते ।। अर्थात् नववर्ष प्रतिपदा, विजयादशमी, अक्षय तृतीया, कार्त्तिक सुदी प्रतिपदा अर्द्धभाग समयोचित समाधान कारक

## ♠ अष्टादश पुराणादिक संख्या ♠

### ● अस्माकं सनातन सांस्कृतिक समृद्धि: ●

यद्यपि पौराणिक शैली प्रधानतया त्रैगुण्य-रचना और प्रकृति की विकासक है तथा प्रत्येक पुराण में गुणत्रय और गुणातीत संसार एवं अव्यक्त ब्रह्म का प्रतिपादन और उस प्रतिपाद्य की प्राप्ति का विधान है। वैदिक प्रक्रिया के अनुसार सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड तीन भागों में विभक्त है। १ पृथ्वी, २ अन्तरिक्ष, ३ द्यौ: तथा काल क्रमानुसार इन तीनों में ६-६ परिवर्तन होते हैं १ सत्ता, २ उत्पत्ति, ३ बुद्धि, ४ परिपाक, ५ अपचय, ६ विनाश एवं ३ से प्रत्येक विकारों की गणना करने से १८ संख्या बनती है। १८ पुराण इन तीनों स्थानों की सृष्टि-प्रलय आदि का निरूपण करते हैं। अत: १८ भाव विकारों को व्यक्त करने के लिये पुराण भी १८ माने गये हैं। १ ब्रह्म पुराण, २ पद्म पुराण, ३ विष्णु पुराण, ४ शिव पुराण, ५ श्रीमद् भावगत पुराण, ६ नारदीय पुराण, ७ मार्कण्डेय पुराण, ८ अग्निपुराण, ९ भविष्यपुराण, १० ब्रह्मवैवर्त्तपुराण, ११ लिंग पुराण, १२ वाराह पुराण, १३ स्कन्द पुराण, १४ वामन पुराण, १५ कूर्म पुराण, १६ मत्स्य पुराण, १७ गरूड़ पुराण, १८ ब्रह्माण्ड पुराण। पुराण लक्षण : सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च। वंशानुचरितञ्चैव पुराणं पञ्च लक्षणम् ।। पुराणे ही कथा दिव्या आदि वशा च धीमताम्। कथ्यन्ते ये पुरास्माभि: श्रुतपूर्व पितुस्तव ।।



## ♠ श्री प्रभु प्रार्थना-प्रत्याकर्षण सूत्र ♠

दैनिक व्यस्ततम जनजीवन में यथाशक्ति-श्रद्धा-भक्ति-निष्ठापूर्वक अपने श्रीइष्टदेव एवमेव श्रीदेवी शक्ति तत्व की उपासना प्रार्थना नियमित करना चाहिये। प्रति सद्गृहस्थ्य हेतु यह एक अनुपम सार्थक-फलद-पुण्यद सन्मार्ग है। इस प्रार्थना शक्तिजनित प्रभामण्डल के विकसित होने पर जीवनीय विषम विबाधा-समस्या का निवारण एवं विशेषकर मूल प्रकृति जनित "अहं तत्व भाव" विकार का शमन-निराकरण समाधान बनना भी सर्वधर्म सम्मत शाश्वत सूत्र है। इस युग के महामना महात्मा गांधीजी द्वारा भी किसी भी प्रायोजन-आयोजन के प्रथम "प्रार्थना तत्व" का समावेश किया जाता रहा है तथापि धर्मशास्त्रीय उद्घोषणा भी यही है कि "देवो भूत्वा देवं यजेत्" भावेन लभते सर्व भावेन देव दर्शनम्। भावेन परमं ज्ञानं तस्माद् भावाऽवलम्बनम् ।। अर्थात् अपने इष्टदेव का स्तोत्र पाठ जप-पूजन-ध्यान-कीर्तन-भजन-प्रार्थना-अनुष्ठान आदि कर्म सर्वदा सात्विक, पवित्र अन्त:करण एवं निष्काम मनोभावना से सम्पन्न करना चाहिये एवं पंच भौतिक देहधारी मानव-मनुष्य ग्रहजनित विबाधा-आधि व्याधि से भी मुक्त होकर शाश्वत सुगम शांत गतिक जीवनक्रम का अनुभव सहज भाविक प्राप्त कर सकता है। इस विषयक शास्त्रीय सूत्र-रोगार्त्तो मुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बन्धनात्। भयान्मुच्येत भीतस्तु मुच्येतापन्न आपद: ।। प्रार्थना हमारे आंतरिक परिवर्त्तनों में महत्वपूर्ण भूमिका बनाती है जब भी हम प्रार्थना करते हैं तो हमारे कलुषित विचार तिरोहित हो जाते हैं तथा इससे हमारा मन शरीर स्वस्थ्य-पवित्र-प्रफुल्लित होता है एवं तथ्य सार यह भी कि प्रार्थना एक प्रक्रिया है - आत्मा को परमात्मा के पथ का राही बनने का तथा इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के रचियता परिपालक सर्वेश्वर की परम शक्ति सत्ता संचेतना समाधार विधायक तत्व का सुगम सन्मार्ग। तदर्थ ही शास्त्रीय वचनामृत सूत्र- करोति सततं यो हि तन्नामगुणकीर्त्तनम्। कालं मृत्युं स जयति जन्म रोगं जरां भयम् ।। नाऽहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च। मद्भक्ता यत्र गायन्ति तिष्ठामि तत्र नारद ।। ॐ अपवित्र: पवित्रो वा सर्वाऽवस्थां गतोऽपि वा। य: स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तर: शुचि: ।। अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्। परोपकार: पुण्याय पापाय पर पीड़नम् ।। उत्तम सद्विचार रहें, करे मनुष्य सतकर्म। जो चाहे सो प्राप्त करें, संकल्पित मन का धर्म ।। जाना सब को एक दिन तज धन औ परिवार। आनन्द सूत्र ऐश्वर्य-मद ये मिथ्या अधिकार ।। ☆ कृणवन्तो विश्वमार्यम्-जीवेम शरद शतम् ☆

## ✷☆ मानवीय आत्म तत्व संबोध ☆✷

● इस नर देह शरीर का राजा आत्मा है। बुद्धि-शरीर का मंत्री। तथा मन-शरीर का सेनापति। एवमेव सभी ज्ञान-कर्म आदि इन्द्रियां शरीर की सेनाएँ हैं। यदि राजा सुषुप्त-सोया हुआ अथवा अज्ञान से विभ्रमित है तो मंत्री तथा सेनापति अपनी सेना द्वारा राजा को पराभव प्रदान करते-आधीन कर लेते हैं तथा यदि राजा संज्ञा एवं विवेकशील हो तथा अपने राजा होने का ज्ञान हो तो वह बुद्धिबल द्वारा मन को वश में करके अनैतिक क्रियाओं से बचकर सांसारिक-अव्यावहारिक कामनाओं का हनन कर सकता है। इस नियामक अनुसार निष्काम-कर्मयोगी परम पुरूष पद भी सहज ही प्राप्त कर सकता है।

✷ शरीर - मन - बुद्धि - आत्मा ✷
कर्मयोग - भक्तियोग - ज्ञानयोग - बुद्धियोग

शब्द: स्पर्शश्च रूपं च रसो गन्ध: क्रमाद् गुणा:
आकाश वायु अग्नि जल पृथ्वी

खनिलाग्न्यब्भुवामेक गुणवृद्ध्यन्वय: परे ।।

(१) पृथ्वी-जल-अग्नि-वायु-आकाशा। मन-बुद्धि-अहंकार। इन अष्टधा तत्व विषय पर आधारित ही मूलतया प्रकृति रचना है।

(२) जल पृथ्वी से सूक्ष्म है। अग्नि तत्व जल तत्व से सूक्ष्म है। अग्नि तत्व से वायु तत्व सूक्ष्म है। आकाश तत्व पंच भौतिक तत्वों में सबसे अधिक सूक्ष्म है। इन पंचभौतिक तत्वों से भी अधिक सूक्ष्म प्रकृति के तीन तत्व हैं मन-बुद्धि-अहंकार। आत्मा के संयोग से इन तीनों का समुच्चय चित्त या अंत:करण कहाता है। मन आकाश तत्व से अधिक सूक्ष्म है। तथा बुद्धि मन से अधिक सूक्ष्म तथा अहंकार बुद्धि से अधिक सूक्ष्म है। अंत:करण के ये तीन अंग "मन-बुद्धि-अहंकार" से आत्मा के देह छोड़ने के उपरान्त सारहीन ही हैं।

## शाश्वत ध्रुव-धर्म सूत्रावली

★ भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता स्तपो न तप्तं वयमेव तप्ता: ।
कालो न यातो वयमेव याता स्तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा: ।।
★ आत्मन: प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् ।
परोपकार: पुण्याय-पापाय परपीड़नम् ।।
★ अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम् ।
परोपकार: पुण्याय-पापाय परपीड़नम् ।।
★ सत्यान्नास्ति परो धर्मो नानृतात्पातकं परम् ।
स्वधर्मे निधनं श्रेय: परधर्मो भयावह: ।।

★ मुखो पवित्रं यदि रामनामं । हृदयपवित्रं यदि ब्रह्मज्ञानम् ।
चरणौ पवित्रं यदि तीर्थ गमनं । हस्तौ पवित्रं यदि पुण्यदानम् ।।
★ अत्यन्त कोप: कटुका च वाणी दरिद्रता च स्वजनेषु वैरम् ।
नीचप्रसंग: कुलहीन सेवा चिह्नानि देहे नरक स्थितानाम् ।।
★ निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु ।
लक्ष्मी: समाविशतु गच्छतु या यथेष्टम् ।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा ।
न्याय्यात्पथ: प्रविचलन्तु पदं न धीरा: ।। ★

### ◆ दुष्ट पंचांग कुयोग परिहार

तथा शास्त्रसम्मत अनुदान सूत्र यह कि ◆ दुष्टयोगे हेम चन्द्रे च शंखं धान्यं तिथ्यर्धे तिथौ तण्डुलांश्च। वारे रत्नं भे च तारासु राजा ।। योग-दुष्ट कुयोगद हो तो स्वर्णदान, चन्द्रमा-हेतु शंख, करण-हेतु धान्य, तिथि-हेतु चांवल, दिन-हेतु रत्न-मुद्रादि, नक्षत्र-हेतु गोदान, नाड़ी-हेतु स्वर्णदान, तारा हित नमक आदि के अनुदान से सरलतया परिहार बनता है।

### ✷ विवाहे शुद्धिचक्रं तथा गोचर ग्रहफल शुभाऽशुभ ज्ञानचक्रम् ✷

यादृशेन शशांकेनग्रह: संचरते नृणाम् ।। तादृशं फलमाप्नोति शुभं वा यदि वाऽशुभम् ।। शोभन से ठीक, पूज्य से सामान्य, निन्द्य से अशुभ समझें। ● विशेष वचनानुसार वर पक्ष में १२ चन्द्र शुभ मान्य तथा कन्या हेतु १२ वाँ चन्द्र मान्य नहीं। ● स्त्रीणां गुरूबलं श्रेष्ठं पुरूषाणां रवेर्बलम्। तयोश्चन्द्रबलं श्रेष्ठमिति गर्गेण निश्चितम् ।। गोचरे वा विलग्ने वा ये ग्रहारिष्ट सूचका: । पूजयेत्तान प्रयत्नेन पूजिता स्यु: शुभप्रदा: ।।

| सूर्य: | चन्द्र: | मंगल: | बुध: | गुरू: | शुक्र: | श.रा.के. | ग्रहा: |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३।६ १०।११ | १।२।३।५।६। ७।९।१०।११ | ३।६ १०।११ | २।६ १०।११ | २।५।७ ९।११ | १।२।३ ९।११ | ३।६ १०।११ | शोभन |
| १।२।५ ७।९ | ० | १।२।५ ७।९ | १।३।५ ७।९ | १।३।६ १० | ५।६ ७।१० | १।२।५ ७।९ | पूज्य |
| ४।८।१२ | ४।८।१२ | ४।८।१२ | ४।८।१२ | ४।८।१२ | ४।८।१२ | ४।८।१२ | निन्द्य |

## ● अष्टक वर्ग शोधन-साधना ●

प्रतिवार्षिक ग्रहगोचरीय चलन कलन अनुसार ग्रह एवं लग्न बल हेतु रेखाष्टक वर्ग रेखा बल की मान्यता ज्योतिर्विद समाज में पुरातन समय से ही प्रचलित है। इष्ट मुहूर्त्त अथवा अन्य कार्य विषयक दिवस पर अष्टकवर्ग रेखा बल की गणना बनने पर नेष्ट अशुभ संज्ञा ४-८-१२ गोचर ग्रह भी शुभ श्रीकार संज्ञा का मान्य हो जाता है। यथा ही शास्त्रीय सूत्र - **अष्टवर्गेण ये शुद्धास्ते शुद्धाः सर्व कर्मसु। सूक्ष्माऽष्टवर्गसंशुद्धिः स्थूला शुद्धिस्तु गोचरे॥** पुनरपि मुहूर्त्तग्रन्थान्तरे शास्त्रीय सूत्र - **अष्टवर्गविशुद्धेषु गुरूशीतांशुभानुषु। व्रतोद्वाहौ च कर्त्तव्यो गोचरे न कदाचन्॥ तावद् गोचरमन्वेष्यं यावन्न प्राप्यतेऽष्टकम्। अष्टवर्गे तु सम्प्राप्ते गोचरं विफलं भवेत्॥** इष्ट मुहूर्त्त दिवस अथवा विवाह लग्नादि समय पर सूर्य+चन्द्र+गुरू का अपना अपना रेखाष्टक बल प्राप्त करें यदि १ से ३ रेखा इष्ट ग्रह की आवे तो इष्ट ग्रह को रेखा बल मान्य नहीं होवें। यदि ४ या इससे अधिक ८ अंक मध्य तक रेखा बल प्राप्त होने पर गोचर गणनीय ४-८-१२ गणना के सूर्य+चन्द्र+गुरू गोचर में रहते भी मांगलिक कार्य का समाधान-विधान मुहूर्त्त शास्त्र सम्मत है। सभी ग्रहों के रेखाबल कोष्टक निर्णयसागरीय पंचांग संवत् २०७२ पृष्ठ संख्या ६८ पर स्पष्ट दिये गये हैं। जिस ग्रह का रेखाबल प्राप्त करना होवे उसकी कुण्डली रचना (जन्म कुण्डली अथवा चन्द्र लग्न कुण्डली की तरह कर लेवें) अर्थात् अभीष्ट ग्रह को इष्ट दिवस की ग्रह राशि अनुसार लग्न भाव मानते प्रथम भाव में रखते-अन्य इष्ट दिवस के गोचर ग्रह पंचांग में देखकर लिख लेवें। इस प्रकार जिस ग्रह का रेखा बल प्राप्त करना है उसकी स्थिति रचना बन जावेगी। तथा जो भी इष्टकालिक लग्न हो उस राशि भाव के स्थान पर लग्न लिख देवें। इस उपरान्त इष्ट ग्रह का रेखाबल कोष्ठक पंचांग में देखें। तथा इष्ट ग्रह की कोष्ठक रचना संख्या-भाव अनुसार ग्रह विषयक रेखा लगावें। यथा-गुरू रेखाष्टक **कोष्ठ** में सूर्य राशि भाव स्थान से १-२-३-४-७-८-९-१०-११ भाव में गुरू रहते पुनरपि १-। रेखा गुरू को प्राप्त। एवमेव चन्द्र राशि भाव से २-५-७-९-११ भाव में गुरू रहते १-। रेखा और भी। इसी प्रकार अवशेष मं.बु.गु.शु.श. तथा लग्न भाव स्थान से रेखा प्रदान करते यदि ४ **रेखा अथवा अधिक** रेखा गुरू को प्राप्त बनते रेखा बलिष्ट-गुरू शुभ ही मान्य रहेंगा। एवमेव इष्ट दिवस के सूर्य चन्द्रादि कुण्डली रचना करके रेखा बल भी विदित कर सकते हैं।

## मूलादिक-गण्डान्तक ✱ जन्म नक्षत्र ✱

नवजात शिशु-बालक के जन्म समय पर रेवती-अश्विनी। आश्लेषा-मघा। ज्येष्ठा-मूल आदि नक्षत्रों में जन्म होने पर गण्ड नक्षत्र मूलादि संज्ञा से जन्म माना जाता है। इन नक्षत्र समाप्त स्थिति समय से भावी नवीन नक्षत्र तथा नवीन राशि की गणना बनते गण्डान्त नक्षत्र की शान्ति मान्यता। तथापि-इन नक्षत्रों में भी चरण भेद से शुभ-अशुभ निर्णय बनता है। तथापि वेदिक साहित्य में इन नक्षत्रों की शान्ति साधना हेतु ये अभिमन्त्र है।

## ♣ गंड मूल नक्षत्र शांति मंत्र ♣

(१) **रेवती** (पूषा) : ॐ पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इहस्मसि। ॐ पूष्णे नमः।

▲ सर्वेषां कृते जप संख्या-यथाशक्ति ▲

(२) **अश्विनी** नक्षत्र (स्वामित्व अश्विनी कुमार) : ॐ अश्विनातेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वतीवीर्यम्। वाचेन्द्रोबलेनेंद्राय दधुरिन्द्रियम्। ॐ अश्विनी कुमाराभ्यां नमः॥

(३) **अश्लेषा** (स्वामित्व सर्प) : ॐ नमोस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनुः ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः॥ ॐ सर्प्पेभ्यो नमः॥

(४) **मघा** (स्वामित्व पितर) : ॐ पितृभ्यः स्वाधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्य स्वधायिभ्यः स्वधाः नमः। प्रपितामहेभ्य स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्नापित्रोमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्तपितरः पितरः शुन्धध्वम्॥ ॐ पितृभ्यो नमः/पितराय नमः॥

(५) **ज्येष्ठा** (इन्द्र) : ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र हवे हवे सुह्व शूरमिन्द्रम् हयामि शक्रं पुरूहुंतमिन्द्र स्वस्तिनो मधवा धात्विंद्रः॥ ॐ शक्राय नमः॥

(६) **मूल** (राक्षस) : ॐ मातेव पुत्र पृथिवी पुरीष्यमणि स्वेयोनावभारूषा। तां विश्वेदेवर्क्रतुभिः संवदानः प्रजापतिविश्वकर्मा विमुच्चतु॥ ॐ निर्ऋतये नमः॥

## ✱☆ चन्द्रसूर्यादि-गोचरगणनाविषये-व्यवस्था ☆✱

● **पाणिग्रहे स्त्रीसुरतेऽभिषेके निषेके यात्रा व्रत बन्धने च। व्रतोपवासादिषु गर्ग पूर्वः शुभो द्वादशगो हिमांशुः॥** तथा च पुनरपि शास्त्रीय निबंध ग्रंथ विभेदे तु-**स्वर्क्षे स्वोच्चेऽष्टमित्रर्क्षे पूर्णो वा रजनीपतिः। गोचरे शुभमादत्ते निन्द्योऽप्यावश्यके विधौ॥** तथा च प्रकारान्ते ● **शुभांशेगुरूदृष्टोऽशुभोपिसन्।** भावार्थ - पुरूष वर्ग हेतु द्वादश १२वाँ चन्द्र गोचर गणना अनुसार शुभ ही मान्य है, पाणिग्रहण-विवाह-सुरत काम क्रिया, अभिषेक यात्रा में १२वाँ चन्द्र पुरूष हेतु शुभ। इस उपरान्त भी शास्त्रकारों ने "**नारीणां द्वादशश्चन्द्रः कष्टहानिकरस्तदा**"-अर्थात् स्त्री वर्ग हेतु १२वाँ चन्द्र कदापि मान्य नहीं तथा आवश्यकता विशेष में यदि गोचर गणना में ४-८-१२ चन्द्रमा अपनी राशि कर्क का, स्व उच्च वृषभ का, मित्र राशि का एवं पूर्ण बिम्ब-पूर्णिमा चन्द्र अशुभ गणना का भी व्यवहार योग्य है तथा गुरू-चन्द्र का नव पंचम दृष्टि सम्बंध बनना भी शुभ मान्य है।

### ☆ सूर्यस्य गोचरगणना विषये-व्यवस्था ☆

● **उच्च राशिगतो भानुरूच्चराशिगतो गुरूः रिष्फा १२ ऽष्ट ८ तुर्यगो ४ ऽपीष्टो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसत्॥** एवं ज्योतिनिर्बन्धग्रंथे सूत्रम्॥ **द्विरर्च्यो द्वादशस्तुर्यो १२-४ ऽथाष्टमास्त्रिगुणार्चनात् ८॥** तथा च बृहदैवज्ञरंजन निबन्ध-ग्रंथेऽपि-**अनिष्ट स्थानगे सूर्ये शुभराशिः पुरो भवेत्। त्रयोदशदिनं त्यक्त्वा शेषस्थं शुभमादिशेत्॥ अशुभ स्थानगे सूर्ये दद्याद्धेनुं सदक्षिणाम्॥**

भावार्थ - उच्च राशि मेष का सूर्य ४-८-१२ वाँ भी शुभ मान्य तथा नीच ७ तुला एवं वृषभ २ एवं मकर कुंभ १०-११ राशिगत गोचर गणना से शुभ भी विशेषकर जप-अनुष्ठान-पूज्यादि क्रम से समाधान योग्य एवं गौ दान-स्वर्ण अनुदान कार्य सर्वदा व्यवहार जनक है।

### ● गुरू-बृहस्पतिः गोचर गणना विषये ●

*स्वोच्चे गुरूः स्वभवने भवनेथ मित्रे मित्रांशके स्वभवनोच्चगतांशके वा। कर्मान्त्यजन्मनिधनारि-चतुस्त्रये वा पुत्रार्थसौख्यपतिवृद्धिकरो विवाहे॥ उच्चस्थः स्वगृही सुहृद्भवनगो वाचस्पतिर्नित्यशः। पूर्णायुर्विविधार्थ सौख्यजनको जन्माष्टगो वा भवेत्॥ झष १२ चाप ९ कुलीरस्थो ४ जीवोप्यशुभगोचरः। अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयादिषु॥* भावार्थ यह कि अपनी उच्च राशि कर्क ४ या स्वराशि धनु-मीन ९-१२ अथवा मित्र राशि मेष-कर्क-सिंह-वृश्चिक आदि का गोचर गमन बनते बृहस्पति ४-८-१२ वीं गणना का भी शुभ मान्य होता है। ● तथा वक्रातिचार गति स्थिति रहते जिस राशि में गुरू गतिशील रहें वहीं राशि गोचर गणना में मान्य रहना चाहिये यथा शास्त्र वचन - ● **वक्रातिचारे सुरराजमन्त्री यत्रागतस्तत्र फलं ददाति।** ☆ तथा गुरू अतिचारी अथवा वक्री गतिशील रहने पर - सभी राशियों वाली कन्या-बाला को शुभ ही मान्य है यथा शास्त्रीय वचन गर्गाचार्यः - **चारोतिचारे वक्रे वा तस्मिन्भे संस्थिति गुरूः। शुद्धिं दद्यात्स्वतंत्रेण योषितां पाणिपीडने॥** एवं गुरु की अतिचार अथवा वक्रगति बनते गोचर शुद्धि हेतु पूर्णतया स्वतंत्रता मान्य करने का भी समादेश बनता है। ● तथा वर-कन्या की जन्म नक्षत्र राशि का ज्ञान नहीं होने पर वर-कन्या के प्रचलित नाम राशि अनुसार ही गुण-गण मेलापक एवं सूर्य-चन्द्र-गुरू आदि की गोचर गणना शास्त्र सम्मत है। यथा शास्त्र वचन-**अज्ञातजन यिष्ये तु नामभादेव चिन्तयेत्। जायापत्योर्भकूटाद्यं गोचराद्यखिलं तथा। एकस्यापि तु दम्पत्योरज्ञाते जन्मभे तथा। जन्मभात्तु गुरूद्वयादि मेलनं नामभाद् द्वयोः॥** ♠ **गोचरे वा विलग्ने वा ये ग्रहारिष्ट सूचकाः। पूजयेत्तान् प्रयत्नेन पूजिता स्युः शुभप्रदाः॥**

**सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥**

**विश्व मान्य धर्मसूत्र** **१ सत्यं वद**-सत्य बोलो। **२.धर्मं चर**-धर्माचरण करो। **३.मातृदेवो भव**-जननी देव तुल्य **४.पितृ देवो भव**-जनक देव तुल्य। **५.आचार्य देवो भव**-गुरू वचन पर पूर्ण आस्था। **६.अतिथि देवो भव**-अतिथि देव तुल्य सर्वदा। **७.स्वाध्यायान्मा प्रमदः**-अहर्निश पठन-मननशील एवं प्रमाद आलस्य से सदा दूर। **८.श्रद्धया देयम्**-श्रद्धा से दान-अनुदान मान्य। इन सूत्रों पर जितने भी प्रतिशत निर्वाह क्रिया बनेगी, उतना ही उत्तम परमात्म तत्व प्राप्त होगा

## ♠ प्रगतिशील साधना ♠

नवनिर्माण के इस युग में भवन निर्माण तथा नवीन गृह प्रवेश अथवा तत्सम अन्य मुहूर्त्तों की आवश्यकता अधिक होती है तथा इस पक्ष हेतु बहुविध शास्त्र निर्णय मंथन किये जाते हैं। तदर्थ दोषाऽपवाद एवं बहुविध चक्रशुद्धि गणना अभाववश मुहूर्त्त शोधन न्यूनतम ही बन पाते हैं। एतदर्थ सुदक्ष लाक्षणिक ज्योतिर्विद् नाक्षत्रिक पंचांग शुद्धि, योगानुयोग तथा राजकुमारादि मुहूर्त्त कल्प सुयोग आदि तथा दोषसंघ विनाशक रवियोग सुयोग विशेष दिवस एवमेव सर्वार्थ-अमृतसिद्धि योग विशेष दिवसों का मंथन करते अन्य भी मुहूर्त्त का समयोचित समाधान कर सकते हैं। इस विषय पक्ष हेतु यदि विशेष मुहूर्त्त निर्णय एवं समाधान चाहें तो २००) रू. का मनीआर्डर तथा जन्मराशि नाम आदि भी लिखें तथा

▲ विशेषकर कौन मास में मुहूर्त्त शोधन चाहते हैं एवं विवरण लिखकर विशेष मुहूर्त्त निर्णय शोधन भी करा सकते हैं पत्र व्यवहार का पता -

**वैद्य आनन्द स्वरूप शास्त्री** निर्णयसागर पंचांग कार्यालय, मु.पो. नीमच छावनी (म.प्र.) फोन (०७४२३) २२०५२०

**ज्योतिर्विज्ञान के आदि-अनादि काल से सन्मान्य महर्षि-प्रणेता समुदाय-त्रिकालज्ञ अष्टादश संख्यक नामावली**

सूर्यः पितामहो व्यासो वसिष्ठोऽत्रिः पराशरः।
कश्यपो नारदो गर्गो मरीचिर्मुनुरङ्गिराः॥
लोमशः पौलिशश्चैव च्यवनो यवनो भृगुः।
शौनकोऽष्टादशाश्चैते ज्योतिःशास्त्र प्रवर्त्तकाः॥
सिद्धान्त-संहिता-होरारूपं स्कन्धत्रयात्मकम्।
वेदस्य निर्मलं चक्षुज्योतिः शास्त्रमकल्मषम्॥

## नव-वर्षीय विक्रमाब्दशाके मध्ये ईस्वीमासदिनांकोपरि दिनदशा ज्ञानार्थ सुगमसारिणी

| मेष | वृषभ | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३ अप्रैल से<br>शु.द.उ.सू.द.<br>दिन २० प्रवे. | १४ मई से<br>शु.द.उ.सू.द.<br>दिन २० प्रवे. | ३ अप्रैल से<br>रा.द.उ.शु.द.<br>दिन ७० प्रवे. | २२ मार्च से<br>गु.द.उ.रा.द.<br>दिन ४२ प्रवे. | २१ अप्रैल से<br>गु.द.उ.रा.द.<br>दिन ४२ प्रवे. | २४ मार्च से<br>श.द.उ.गु.द.<br>दिन ५८ प्रवेश | १८ मार्च से<br>बु.द.उ.श.द.<br>दिन ३६ प्रवे. | १७ अप्रैल से<br>बु.द.उ.श.द.<br>दिन ३६ प्रवे. | २२ मार्च से<br>भौ.द.उ.बु.द.<br>दिन ५६ प्रवे. | २४ मार्च से<br>चं.द.उ.भौ.द.<br>दिन २८ प्रवे. | २४ अप्रैल से<br>चं.द.उ.भौ.द.<br>दिन २८ प्रवे. | ३ अप्रैल से<br>सू.द.उ.चं.द.<br>दिन ५० प्रवे. |
| ४ मई से<br>सू.द.उ.चं.द.<br>दिन ५० प्रवे. | ४ जून से<br>सू.द.उ.चं.द.<br>दिन ५० प्रवे. | १५ जून से<br>शु.द.उ.सू.द.<br>दिन २० प्रवे. | ४ मई से<br>रा.द.उ.शु.द.<br>दिन ७० प्रवे. | ४ जून से<br>रा.द.उ.शु.द.<br>दिन ७० प्रवे. | २२ मई से<br>गु.द.उ.रा.द.<br>दिन ४२ प्रवे. | २३ अप्रैल से<br>श.द.उ.गु.द.<br>दिन ५८ प्रवे. | २४ मई से<br>श.द.उ.गु.द.<br>दिन ५८ प्रवे. | १८ मई से<br>बु.द.उ.श.द.<br>दिन ३६ प्रवे. | २१ अप्रैल से<br>भौ.द.उ.बु.द.<br>दिन ५६ प्रवे. | २२ मई से<br>भौ.द.उ.बु.द.<br>दिन ५६ प्रवे. | २४ मई से<br>चं.द.उ.भौ.द.<br>दिन २८ प्रवे. |
| २५ जून से<br>चं.द.उ.मं.द.<br>दिन २८ प्रवे. | २७ जुलाई से<br>चं.द.उ.भो.द.<br>दिन २८ प्रवे. | ६ जुलाई से<br>सू.द.उ.चं.द.<br>दिन ५० प्रवे. | १६ जुलाई से<br>शु.द.उ.सू.द.<br>दिन २० प्रवे. | १६ अगस्त से<br>शु.द.उ.सू.द.<br>दिन २० प्रवे. | ६ जुलाई से<br>रा.द.उ.शु.द.<br>दिन ७० प्रवे. | २४ जून से<br>गु.द.उ.रा.द.<br>दिन ४२ प्रवे. | २४ जुलाई से<br>गु.द.उ.रा.द.<br>दिन ४२ प्रवे. | २५ जून से<br>श.द.उ.गु.द.<br>दिन ५८ प्रवे. | १९ जून से<br>बु.द.उ.श.द.<br>दिन ३६ प्रवे. | २० जुलाई से<br>बु.द.उ.श.द.<br>दिन ३६ प्रवे. | २३ जून से<br>भौ.द.उ.बु.द.<br>दिन ५६ प्रवे. |
| २५ जुलाई से<br>भौ.द.उ.बु.द.<br>दिन ५६ प्रवे. | २५ अगस्त से<br>भौ.द.उ.बु.द.<br>दिन ५६ प्रवे. | २७ अगस्त से<br>चं.द.उ.भौ.द.<br>दिन २८ प्रवे. | ६ अगस्त से<br>सू.द.उ.चं.द.<br>दिन ५० प्रवे. | ६ सितम्बर से<br>सू.द.उ.चं.द.<br>दिन ५० प्रवे. | १७ सितम्बर से<br>शु.द.उ.सू.द.<br>दिन २० प्रवे. | ६ अगस्त से<br>रा.द.उ.शु.द.<br>दिन ७० प्रवे. | ६ सितम्बर से<br>रा.द.उ.शु.द.<br>दिन ७० प्रवे. | २५ अगस्त से<br>गु.द.उ.रा.द.<br>दिन ४२ प्रवे. | २६ जुलाई से<br>श.द.उ.गु.द.<br>दिन ५८ प्रवे. | २७ अगस्त से<br>श.द.उ.गु.द.<br>दिन ५८ प्रवे. | २१ अगस्त से<br>बु.द.उ.श.द.<br>दिन ३६ प्रवे. |
| २१ सित. से<br>बु.द.उ.श.द.<br>दिन ३६ प्रवे. | २२ अक्टू. से<br>बु.द.उ.श.द.<br>दिन ३६ प्रवे. | २५ सित. से<br>भौ.द.उ.बु.द.<br>दिन ५६ प्रवे. | २७ सित. से<br>चं.द.उ.भौ.द.<br>दिन २८ प्रवे. | २७ अक्टू. से<br>चं.द.उ.भौ.द.<br>दिन २८ प्रवे. | ७ अक्टू. से<br>सू.द.उ.चं.द.<br>दिन ५० प्रवे. | १७ अक्टू. से<br>शु.द.उ.सू.द.<br>दिन २० प्रवे. | १६ नव. से<br>शु.द.उ.सू.द.<br>दिन २० प्रवे. | ७ अक्टू. से<br>रा.द.उ.शु.द.<br>दिन ७० प्रवे. | २५ सितम्बर से<br>गु.द.उ.रा.द.<br>दिन ४२ प्रवे. | २५ अक्टू. से<br>गु.द.उ.रा.द.<br>दिन ४२ प्रवे. | २७ सित. से<br>श.द.उ.गु.द.<br>दिन ५८ प्रवे. |
| २७ अक्टू. से<br>श.द.उ.गु.द.<br>दिन ५८ प्रवे. | २६ नव. से<br>श.द.उ.गु.द.<br>दिन ५८ प्रवे. | २० नव. से<br>बु.द.उ.श.द.<br>दिन ३६ प्रवे. | २५ अक्टू. से<br>भौ.द.उ.बु.द.<br>दिन ५६ प्रवे. | २४ नव. से<br>भौ.द.उ.बु.द.<br>दिन ५६ प्रवे. | २६ नव. से<br>चं.द.उ.भौ.द.<br>दिन २८ प्रवे. | ६ नव. से<br>सू.द.उ.चं.द.<br>दिन ५० प्रवे. | ६ दिस. से<br>सू.द.उ.चं.द.<br>दिन ५० प्रवे. | १५ दिस. से<br>शु.द.उ.सू.द.<br>दिन २० प्रवे. | ६ नव. से<br>रा.द.उ.शु.द.<br>दिन ७० प्रवे. | ६ दिस. से<br>रा.द.उ.शु.द.<br>दिन ७० प्रवे. | २४ नव. से<br>गु.द.उ.रा.द.<br>दिन ४२ प्रवे. |
| २४ दिस. से<br>गु.द.उ.रा.द.<br>दिन ४२ प्रवे. | २२ जन. से<br>गु.द.उ.रा.द.<br>दिन ४२ प्रवे. | २५ दिसं. से<br>श.द.उ.गु.द.<br>दिन ५८ प्रवे. | १९ दिसं. से<br>बु.द.उ.श.द.<br>दिन ३६ प्रवे. | १८ जन. से<br>बु.द.उ.श.द.<br>दिन ३६ प्रवे. | २३ दिसं. से<br>भौ.द.उ.बु.द.<br>दिन ५६ प्रवे. | २५ दिसं. से<br>चं.द.उ.भौ.द.<br>दिन २८ प्रवे. | २४ जन. से<br>चं.द.उ.भौ.द.<br>दिन २८ प्रवे. | ४ जन. से<br>सू.द.उ.चं.द.<br>दिन ५० प्रवे. | १४ जन. से<br>शु.द.उ.सू.द.<br>दिन २० प्रवे. | १२ फर. से<br>शु.द.उ.सू.द.<br>दिन २० प्रवे. | ४ जन. से<br>रा.द.उ.शु.द.<br>दिन ७० प्रवे. |
| ३ फर. से<br>रा.द.उ.शु.द.<br>दिन ७० प्रवे. | ४ मार्च से<br>रा.द.उ.शु.द.<br>दिन ७० प्रवे. | २० फर. से<br>गु.द.उ.रा.द.<br>दिन ४२ प्रवे. | २४ जन. से<br>श.द.उ.गु.द.<br>दिन ५८ प्रवे. | २२ फर. से<br>श.द.उ.गु.द.<br>दिन ५८ प्रवे. | १७ फर. से<br>बु.द.उ.श.द.<br>दिन ३६ प्रवे. | २२ जन. से<br>भौ.द.उ.बु.द.<br>दिन ५६ प्रवे. | २० फर. से<br>भौ.द.उ.बु.द.<br>दिन ५६ प्रवे. | २२ फर. से<br>चं.द.उ.भौ.द.<br>दिन २८ प्रवे. | २ फर.से<br>सू.द.उ.चं.द.<br>दिन ५० प्रवे. | ४ मार्च से<br>सू.द.उ.चं.द.<br>दिन ५० प्रवे. | १४ मार्च से<br>शु.द.उ.सू.द.<br>दिन २० प्रवे. |

## दिनदशा-सूत्र

**जन्मना विंशतिः २० सूर्यः तृतीयेदश १० चन्द्रमा। चतुर्थे चाष्टमें ८ भौमः, षष्टे वेदो ४ बुधस्तथा ॥ सप्तमे दश १० मन्दस्य, नवमेष्ट ८ बृहस्पतेः। दशमे विंशति २० राहोः, शेषा भृगुदशा स्मृता ॥** सूत्रानुसार ज्ञान विधि - मेष राशि हेतु तारीख १३ अप्रैल से सूर्य की दिनदशा २० दिन की प्रारम्भ होगी। जो कि तारीख ३ मई को समाप्त होकर, आगे ४ मई से (सु.द.उ.चं.द.) सूर्यदशा उत्तर कर चन्द्रदशा ५० दिन चालू होंगी। इसी प्रकार आगे भी क्रमशः सभी राशियों की दशा का ज्ञान सुगम है। इनका शुभाशुभ फल वर्तमान वर्ष के प्रतिमासिक एवं इष्ट दिन पंचांग गोचर राशि ग्रह गणना नियमानुसार समझें क्रमशः प्रवास-सुख-दुःख-सुख-पीड़ा-धनहानि-शोक-सुख इत्यादि ८ प्रतिफल तथा गोचर ग्रह चलन-कलन अनुसार फल का विचार करना भी योग्य है। तथापि स्थूल दृष्टि से पाप ग्रह सूर्य-मंगल- शनि-राहु-केतु आदि का दिन-दशा का समय अशुभ फल प्रदायक तथा शुभ ग्रह चन्द्र-बुध-गुरू-शुक्र की दिनदशा का प्रतिफल शुभ फलसूचक। तथापि अपनी जन्मराशि से जन्म लग्न की तरह द्वादश १२ भावों को मानकर शुभ भाव के स्वामी की दशा में शुभ प्रतिफल तथा अशुभ भाव के स्वामी की दशा में अशुभ प्रतिफल विचारणीय विषय है।

● **A.M.(ए.एम.) और P.M. (पी.एम.) का सरलार्थ तथा भारतीय ज्योतिष गणना** - देश, काल और परिस्थितियों के अनुरूप समय को व्यक्त करने के पैमाने बदलते रहे हैं। वैज्ञानिक प्रगति और नवीनतम आविष्कारों के चलते आज परमाणु घड़ी भी है, जो सबसे सही समय बताती है। जब बात समय को व्यक्त करने की हो रही है, तो इसे व्यक्त करने के लिए प्रायः एएम और पीएम शब्दों का प्रयोग करते हैं। एएम दोपहर से पहले और पीएम दोपहर के बाद के समय के लिए प्रयोग किया जाता है। प्राचीनकाल में मनुष्य सूर्य की विभिन्न स्थितियों से समय का पता लगाते थे। रात्रि में समय का ज्ञान प्राप्त करने के लिए वह तारों की मदद लेते थे। सूर्य की स्थिति से ही एएम और पीएम शब्दों की उत्पत्ति हुई। दोपहर के समय जब सूर्य ठीक हमारे सिर के उपर होता है, हम उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर आकाश में एक काल्पनिक रेखा की कल्पना करते हैं। इस रेखा को मेरीडियन कहते हैं। जब सूर्य इस रेखा पर होता है, तब दोपहर का समय होता है। सूर्य जब इस रेखा के पूर्व की ओर होता है तो दोपहर से पहले का समय अर्थात् सुबह का और जब सूर्य इस रेखा से पश्चिम की ओर चला जाता है, तो दोपहर के बाद का समय होता है। मेरीडियन शब्द लेटिन भाषा के मेरीडीज शब्द से बना है, जिसका अर्थ है दिन का मध्य अर्थात् दोपहर। एएम शब्द एंटी-मेरीडियन का संक्षिप्त रूप है। जब सूर्य मेरीडियन रेखा के पूर्व की ओर होता है तब दोपहर से पहले का समय होता है और उसे एएम शब्द में व्यक्त करते हैं। इसी तरह सूर्य जब मेरीडियन रेखा के पश्चिम की ओर होता है, तो पीएम शब्द का प्रयोग करते हैं, जो पोस्ट मेरीडियन का संक्षिप्त रूप है। दिन के बारह बजे से लेकर रात के बारह बजे तक के समय के लिए पीएम तथा रात के बारह बजे से दिन के बारह बजे तक के समय के लिए एएम का प्रयोग होता है। भारतीय ज्योतिष गणना नियामक अनुसार नवीन वार प्रवृत्ति सूर्योदय से मान्य होती है तथा अंग्रेजी ईस्वी काल गणना नियामक से रात्रि 12 बजे से ही वार परिवर्तन एवं तारीख परिवर्तन का उद्बोधन बन पाता है। परन्तु भारतीय गणना पद्धति से ही जन्मपत्र जन्मकाल इष्टकाल आदि गणना हेतु वार प्रवृत्ति सूर्योदय काल से ही मान्य बनती है। तदनुसार अंग्रेजी ईस्वी तारीख का अंकन करना समुचित है

# चैत्र शुक्ल पक्षः संवत् २०८१ रा.शाकः १९४६

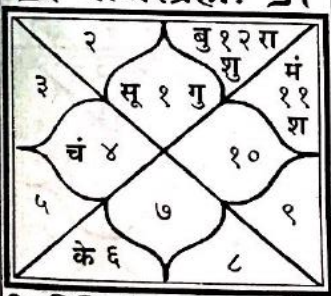
| रवियोगाः | तिथि | वार | घटी | पल | घं. | मि. | नक्षत्र | घटी | पल | घं. | मि. | योग | घटी | पल | करण | घटी | पल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शुभ | १ | मं | ३५ | १९ | २० | ३१ | रे | ०२/५६ | ५१/४७ | ०७/२९ | ३२/०७ | वै | १९ | ४६ | किं | ०९ | २३ |
| २७।०६ उ. | २ | बु | २७ | ५५ | १७ | ३२ | भ | ५१ | ४७ | २७ | ०६ | वि | १० | ३७ | बा | ०१ | ३० |
| २५।३८ या. | ३ | गु | २१ | ४४ | १५ | ०३ | कृ | ४८ | १० | २५ | ३८ | प्री | ०२/५५ | २३/१८ | ग | २१ | ४४ |
| २४।५१ उ. | ४ | शु | १७ | ०८ | १३ | १२ | रो | ४६ | १५ | २४ | ५१ | सौ | ४९ | ४० | वि | १७ | ०८ |
| २१।०४ या. २४।४९ उ. | ५ | श | १४ | २२ | १२ | ०४ | मृ | ४६ | १४ | २४ | ४९ | शो | ४५ | ३५ | बा | १४ | २२ |
| २५।३५ या. | ६ | र | १३ | ३३ | ११ | ४४ | आ | ४८ | १० | २५ | ३५ | अ | ४३ | ०५ | तै | १३ | ३३ |
| धूम्र | ७ | चं | १४ | ४५ | १२ | १२ | पुन | ५१ | ५९ | २७ | ०६ | सु | ४२ | ०६ | व | १४ | ४५ |
| २९।१६ उ. | ८ | मं | १७ | ४९ | १३ | २४ | पु | ५७ | २८ | २९ | १६ | धृ | ४२ | २९ | ब | १७ | ४९ |
| पूर्णरवि | ९ | बु | २२ | २६ | १५ | १४ | श्ले | ६० | ०० | — | — | शू | ४३ | ५७ | कौ | २२ | २६ |
| पूर्णरवि | १० | गु | २८ | १२ | १७ | ३२ | श्ले | ०४ | १५ | ०७ | ५७ | गं | ४६ | १० | ग | २८ | १२ |
| १०।५७ या. | ११ | शु | ३४ | ३८ | २० | ०५ | म | ११ | ४७ | १० | ५७ | वृ | ४८ | ४७ | व | ०१ | २३ |
| लुम्बक | १२ | श | ४१ | १२ | २२ | ४२ | पूफा | १९ | ३८ | १४ | ०४ | ध्रु | ५१ | २६ | ब | ०७ | ५७ |
| १७।०८ उ. | १३ | र | ४७ | २९ | २५ | ११ | उफा | २७ | २० | १७ | ०८ | व्या | ५३ | ४९ | कौ | १४ | २५ |
| २०।०१ या. | १४ | चं | ५३ | ०७ | २७ | २६ | ह | ३४ | ३१ | २० | ०१ | ह | ५५ | ४२ | ग | २० | २५ |
| पूर्णिमा | १५ | मं | ५७ | ५१ | २९ | १८ | चि | ४० | ५४ | २२ | ३२ | व | ५६ | ५५ | वि | २५ | ३७ |

| तिथि | दिनमान घटी | दिनमान पल | स्टेण्डर्ड टाइम सूर्योदय घं. | सूर्योदय मि. | सूर्यास्त घं. | सूर्यास्त मि. | विविध तारीखें बंग | मुस | भा | चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.घटी पल | घं.मि. | सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अं.क.वि. | गति | अंग्रेजी ता. | ✦अप्रैल सन् २०२४ ई. वसंत–ग्रीष्म ऋतुः रवि उत्तरायणे–उत्तरगोले✦ ♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ३१ | १७ | ६ | २४ | ६ | ५५ | २७ | २९ | २० | मेष ०२/५१ | ०७/३२ | [illegible] | [illegible] | ९ | पंचक ०७/३२ या.सर्वा. ०७/३२ उ. २९/०७ या.अमृत ०७/३२ उ. २९/०७ या.नवरात्रि प्रा.घट स्था.चंद्रदर्शन A |
| २ | ३१ | २१ | ६ | २३ | ६ | ५५ | २८ | १श | २१ | मेष | | [illegible] | [illegible] | १० | पूभायां भौमः ११/०९ सर्वा. २७/०६ उ. ३०/२२ या.सिंजारा शव्वाल मास १ ०मुस.मीठी ईद |
| ३ | ३१ | २५ | ६ | २२ | ६ | ५६ | २९ | २ | २२ | वृषभ ०५/४६ | ०८/४० | [illegible] | [illegible] | ११ | भ. २६/०३ उ.गणगौरी पूजा मेला. श्री मत्स्य ज. |
| ४ | ३१ | २८ | ६ | २१ | ६ | ५६ | ३० | ३ | २३ | वृषभ | | [illegible] | [illegible] | १२ | भ. १३/१२ या.श्रीगणेश दमनक चतुर्थी श्री पंचमी |
| ५ | ३१ | ३२ | ६ | २० | ६ | ५७ | वै१ | ४ | २४ | मिथुन १६/०१ | १२/४४ | [illegible] | [illegible] | १३ | अश्विन्यां रविः २१/०५ मेषेऽर्कः २१/०५ स्कंद षष्ठी B |
| ६ | ३१ | ३६ | ६ | १९ | ६ | ५७ | २ | ५ | २५ | मिथुन | | [illegible] | [illegible] | १४ | डॉ.अम्बेडकर ज. १ ३ ३ वीं |
| ७ | ३१ | ३९ | ६ | १८ | ६ | ५८ | ३ | ६ | २६ | कर्क ३५/५३ | २०/३९ | [illegible] | [illegible] | १५ | भ. १२/१२ उ. २४/४३ या.सर्वा. २७/०६ उ. ३०/१७ या.नवपद पूजा प्रा.जैन |
| ८ | ३१ | ४३ | ६ | १७ | ६ | ५८ | ४ | ७ | २७ | कर्क | | [illegible] | [illegible] | १६ | सर्वा. २९/१६ उ. ३०/१६ या.अशोकाष्टमी श्री दुर्गाष्टमी कृतिकायां १ गुरुः २६/०६ |
| ९ | ३१ | ४७ | ६ | १६ | ६ | ५९ | ५ | ८ | २८ | कर्क | | [illegible] | [illegible] | १७ | श्रीरामनवमी व्रत दुर्गा नवमी पूजा नवरात्रि विधान पूर्ण |
| १० | ३१ | ५० | ६ | १५ | ६ | ५९ | ६ | ९ | २९ | सिंह ०४/१४ | ०७/५७ | [illegible] | [illegible] | १८ | श्रीधर्मराज दशमी |
| ११ | ३१ | ५४ | ६ | १४ | ७ | ०० | ७ | १० | ३० | सिंह | | [illegible] | [illegible] | १९ | भ. ०६/४८ उ. २०/०५ या.कामदा ११ व्रतं सर्वे.वृषभे भानुः १९/३० ग्रीष्म ऋतु प्रा.C |
| १२ | ३१ | ५७ | ६ | १३ | ७ | ०० | ८ | ११ | ३१ | कन्या ३६/३५ | २०/५१ | [illegible] | [illegible] | २० | हरि दमनोत्सवः विष्णु द्वादशी |
| १३ | ३२ | ०१ | ६ | १२ | ७ | ०१ | ९ | १२ | वै१ | कन्या | | [illegible] | [illegible] | २१ | सर्वा. ०६/१२ उ. ३०/११ या.अमृत सिद्धि १७/०८ उ. ३०/११ या.प्रदोष व्रतं श्रीमहावीर जयंती जैन D |
| १४ | ३२ | ०४ | ६ | ११ | ७ | ०१ | १० | १३ | २ | कन्या | | [illegible] | [illegible] | २२ | भ. २७/२६ उ.शिवदमनक चतुर्दशी नृसिंह दोलोत्सवः विश्व पृथ्वी दिवस |
| १५ | ३२ | ०८ | ६ | ११ | ७ | ०२ | ११ | १४ | ३ | तुला ०७/५० | ०९/११ | [illegible] | [illegible] | २३ | भ. १६/२६ या.पूर्णिमाव्रतं श्रीहनुमान ज.वैशाख स्नान प्रा.संत पीपा ज.E |






## निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः




### अ. १ चैत्र शुक्ले ८ भौमे इष्ट ००।००

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ० | ३ | १० | ११ | ० | ११ | १० | ११ | ५ |
| अं. | ०२ | ०४ | २४ | २५ | २६ | १९ | २१ | २१ | २१ |
| क. | २० | ५८ | ३० | २० | २८ | १३ | ०१ | ०४ | ०४ |
| वि. | ०४ | ३१ | ०५ | ४२ | ४६ | २८ | २० | ०२ | ०२ |
| ग | ५८ | ७३१ | ४६ | ३९ | १३ | ७३ | ०६ | ३ | ३ |
| ति | ३९ | ४६ | ३० | ४५ व | ३६ | ५९ | ०५ | ११ | ११ |
| नक्षत्र | १ [illegible] | १ [illegible] | १ [illegible] | ३ [illegible] | ४ [illegible] | १ [illegible] | १ [illegible] | १ [illegible] | ४ [illegible] |

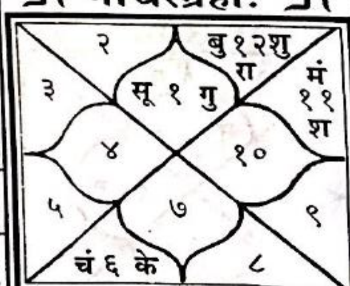
### ♣ मेष संक्रान्ति फलम् – भवन संभागीय ♣

चैत्र शुक्ले ५ शनौ मेषेऽर्कः प्र.वा. ३ न. ३ अम्य पुण्यकालः अद्यैव शनिवासरे सायंकालतः पुण्यप्रदः। वाग्नाम राक्षसी–श्रमजीवी, निर्धन परिवार, जनजाति, व्यवसाय हीन समुदाय हेतु मनोत्साह वर्धक सुखद प्रतिफल, नक्षत्र नाम मंदाकिनी–राजपत्रित अधिकारी, नीति निदशक, विविध दलपति–राजनेता–अधीक्षक वर्ग हेतु सुखद। रात्रि १ या.व्या.देशद्रोही, भ्रष्टपथी, आतंकवादी, विस्फोटक हिंसाप्रसारकगण हेतु कष्टद प्रभारक। पश्चिम गमनं, ईशान दृष्टि, कौलव करणे, वाहन वराह, उपवाहन–वृषभ, हरित वस्त्र, खड्गायुध, ताम्रपात्र, भिक्षान्न भक्षण, चंदन लेपन, सर्पजाति, बकुल पुष्पे, मुक्ताभूषण, हरित कंचुकी, गतालकावस्था, उत्तिष्ठा, मुहूर्त–३०, धान्य गल्ला स्थिर सम भाव, हरा वस्त्र, मोती, चंदन, इत्र, धनिया, सौंफ, हरे मूंग, मेहंदी, मिर्च, खोपरा गोला, ताम्बा, रसायन द्रव्य, घी, शक्कर उन्नत धारणा। शुक्रोदय पूर्वे, वत्स पश्चिमे, राहु दक्षिणे, मूल पाताले।

### अ. २ चैत्र शुक्ले १५ भौमे इष्ट ००।००

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ० | ५ | १० | ११ | ० | ११ | १० | ११ | ५ |
| अं. | ०९ | २८ | २९ | २२ | २८ | २७ | २१ | २० | २० |
| क. | ०९ | २५ | ५५ | ०२ | ०४ | ५१ | ४२ | ४९ | ४९ |
| वि. | ५५ | ३७ | १४ | ५६ | ४० | १० | ४६ | ४७ | ४७ |
| ग | ५८ | ७२६ | ४६ | १० | १३ | ७३ | ०५ | ३ | ३ |
| ति | २५ | २६ | २२ | ०३ व | ४९ | ५५ | ४२ | ११ | ११ |
| नक्षत्र | ३ [illegible] | १ [illegible] | ३ [illegible] | १ [illegible] | १ [illegible] | ४ [illegible] | १ [illegible] | १ [illegible] | ४ [illegible] |

## निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः




● **अभिजित वेला** ● शुभ मुहूर्तों में प्रायः अभिजित कार्यम् लिखा जाता है, उसके स्पष्ट समय ज्ञान हेतु सूत्र–इष्टदिन के दिनमान को आधा करके घण्टा मिनिट बनावें तथा इसे इष्टदेशीय सूर्योदयकाल में जोड़ें, यह योगफल स्टेण्डर्ड मध्यान्हकाल होगा, इस मध्यान्हकाल से मौलिक 24 मिनिट पहले तथा 24 मिनिट बाद अभिजित मुहूर्त का समय समझना चाहिए। बुधवार को अभिजित मुहूर्त माधना का निषेध है। स्व स्थानीय सूर्योदय स्टेण्डर्ड समय का लेवें। ● **अभिजित मुहूर्त विषये मान्यता** ● ब्रह्मक्षत्रिय वैश्यानां शूद्राणांचापि नित्यशः। सर्वेषामेव वर्णानां योगो मध्यन्दिनेऽभिजित ॥ शंकुमूले यदा छाया मध्यान्हे च प्रजायते। तदा चाभिजिदाख्याता घटिकैका स्मृताबुधैः ॥ ● **संकेत** ● चैत्रादि द्वादश मासों में सर्वदा प्रथम कोष्ठक में रवियोग दिवस गणना दी गई है। अर्थ यह कि दोष संघ विनाशक रवि योग दिवस विशेष कल्प समय साधना हेतु प्रमुख परिहार विषयक सूत्र गणना मानक मान्य होता है। यह सुयोग अनुभव सिद्ध है। **A** चैत्री नववर्ष प्रा.श्री गौतम ज.गुड़ी पड़वा ज्योतिष दिवस ध्वजारोपण चेटीचंड चांद्र संवत्सर आरंभ श्री झूलेलाल ज.वक्री रेवत्यां मीने बुधः १५।०७

**B** बं.वैशाख मास प्रा.खालसा ज.फसली सन् १९३१ प्रा. वैशाखी पर्व रेवत्यां शुक्र २८।३४ **C** लक्ष्मीकांत दोलोत्सव बुधोदयः पू. २६।५४ **D** रा.वैशाख मास प्रा.अनंग त्रयोदशी **E** मीने भौमः ०८।३९ नवपद पूजा पूर्ण जैन

# वैशाख कृष्ण पक्षः संवत् २०८१ रा.शाकः १९४६

## ✦अप्रैल–मई सन् २०२४ ई. ग्रीष्म ऋतुः रवि उत्तरायणे–उत्तरगोले✦

♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं♣








| रवियोगाः | तिथि | वार | घटी | पल | घं. | मि. | नक्षत्र | घटी | पल | घं. | मि. | योग | घटी | पल | करण | घटी | पल | दिनमान घटी | दिनमान पल | स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं. | सूर्योदय मि. | सूर्यास्त घं. | सूर्यास्त मि. | विविध तारीखें बंग | मुस | भा | चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.घटी पल | घं.मि. | सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अ.क.वि. | गति | अंग्रेजी ता. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| धूम | १ | बु | ६० | ०० | - | - | स्वा | ४६ | १९ | २४ | ४१ | सि | ५७ | १९ | बा | २९ | ५१ | ३२ | ११ | ६ | १० | ७ | ०२ | १२ | १५ | ४ | तुला | | [illegible] | [illegible] | २४ | श्री महावीर रथयात्रा जैन महावीर जी अश्विन्यां मेषे शुक्रः २३ ५९ |
| प्रवर्ध | १ | गु | ०१ | ३४ | ०६ | ४६ | वि | ५० | ३८ | २६ | २४ | व्य | ५६ | ५१ | कौ | ०१ | ३४ | ३२ | १५ | ६ | ०९ | ७ | ०३ | १३ | १६ | ५ | वृश्चि. ३४ ४० | २० ०१ | [illegible] | [illegible] | २५ | सर्वा. २६ २४ उ.मार्गी बुधः १८ २४ |
| राक्षस | २ | शु | ०४ | ०६ | ०७ | ४६ | अनु | ५३ | ५० | २७ | ४० | व | ५५ | २९ | ग | ०४ | ०६ | ३२ | १८ | ६ | ०८ | ७ | ०३ | १४ | १७ | ६ | वृश्चिक | | [illegible] | [illegible] | २६ | भ. २० ०६ उ.सर्वा. २७ ४० या. |
| चौ.व्रत | ३ | श | ०५ | २८ | ०८ | १८ | ज्ये | ५५ | ५३ | २८ | २८ | प | ५३ | ११ | वि | ०५ | २८ | ३२ | २२ | ६ | ०७ | ७ | ०४ | १५ | १८ | ७ | धनु ५५ ५३ | २८ २८ | [illegible] | [illegible] | २७ | भ. ०८ १८ या.भरण्यां रविः १२ ५७ वैशाखी चतुर्थी व्रतं चंद्रोदय रात्रि २२ ३३ उभायां भौमः १६ १० |
| सिद्धि | ४ | र | ०५ | ४० | ०८ | २२ | मू | ५६ | ४७ | २८ | ४९ | शि | ४९ | ५९ | बा | ०५ | ४० | ३२ | २५ | ६ | ०६ | ७ | ०४ | १६ | १९ | ८ | धनु | | [illegible] | [illegible] | २८ | सर्वा. ०६ ०६ उ. २८ ४९ या.शुक्रास्त पूर्वे २० ४९ ★ |
| २८।४३ उ. | ५ | चं | ०४ | ४० | ०७ | ५७ | पूषा | ५६ | ३३ | २८ | ४३ | सि | ४५ | ५१ | तै | ०४ | ४० | ३२ | २८ | ६ | ०६ | ७ | ०५ | १७ | २० | ९ | धनु | | [illegible] | [illegible] | २९ | श्री मलूकदासजी ज.वृन्दावने |
| २८।१० या. | ६ | मं | ०२ | ३२ | ०७ | ०५ | उषा | ५५ | १२ | २८ | १० | सा | ४० | ४९ | व | ०२ | ३२ | ३२ | ३२ | ६ | ०५ | ७ | ०५ | १८ | २१ | १० | मकर ११ २० | १० ३७ | [illegible] | [illegible] | ३० | भ. ०७ ०५ उ. १८ २९ या.श्रीजयंत सेन सूरि म.सा.पुण्य त्रिस्तु.जैन अगस्त्य अस्त २४ ५४ ★ |
| क्षय | ७ | मं | ५९ | १४ | २९ | ४६ | 0 | ० | ० | ० | ० | 0 | ० | ० | 0 | ० | ० | | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | | ० ० | ० | ० | A मई मास ५ता. ३१ प्रा.कृतिका २ वृषभे गुरुः १३ ०१ |
| छत्र | ८ | बु | ५४ | ५४ | २८ | ०१ | श्र | ५२ | ४८ | २७ | ११ | शु | ३४ | ५४ | बा | २७ | १३ | ३२ | ३५ | ६ | ०४ | ७ | ०६ | १९ | २२ | ११ | मकर | | [illegible] | [illegible] | म१ | शीतला पूजा–बूढ़ा बासोड़ा विश्व श्रम दि.A |
| श्रीवत्स | ९ | गु | ४९ | ३६ | २५ | ५३ | ध | ४९ | २४ | २५ | ४९ | शु | २८ | १० | तै | २२ | २३ | ३२ | ३८ | ६ | ०३ | ७ | ०६ | २० | २३ | १२ | कुंभ २१ १४ | १४ ३३ | [illegible] | [illegible] | २ | पंचक १४ ३३ उ. |
| सौम्य | १० | शु | ४३ | २५ | २३ | २४ | श | ४५ | १० | २४ | ०६ | ब्र | २० | ४१ | व | १६ | ३७ | ३२ | ४१ | ६ | ०३ | ७ | ०७ | २१ | २४ | १३ | कुंभ | | [illegible] | [illegible] | ३ | भ. १२ ४१ उ. २३ २४ या. B रेवत्यां १ राहुः हस्ते ३ केतुः ०९ ३६ |
| ए.ति | ११ | श | ३६ | ३३ | २० | ३९ | पूभा | ४० | १४ | २२ | ०७ | ऐं | १२ | ३४ | ब | १० | ०५ | ३२ | ४४ | ६ | ०२ | ७ | ०८ | २२ | २५ | १४ | मीन २६ ३१ | १६ ३८ | [illegible] | [illegible] | ४ | बरूथिनी ११ व्रतं सर्वे.श्री वल्लभाचार्य ज. C कवि टैगोर ज. |
| प्राष | १२ | र | २९ | १३ | १७ | ४२ | उभा | ३४ | ५१ | १९ | ५७ | वै | ०३ ५५ | ५९ ०६ | कौ | ०२ | ५७ | ३२ | ४७ | ६ | ०१ | ७ | ०८ | २३ | २६ | १५ | मीन | | [illegible] | [illegible] | ५ | सर्वा. ०६ ०१ उ. १९ ५७ या.प्रदोष व्रतं श्री सेन ज.७२४वीं भरण्यां शुक्रः १९ ४३ |
| मंग | १३ | चं | २१ | ४१ | १४ | ४० | रे | २९ | १७ | १७ | ४३ | प्री | ४६ | ११ | व | २१ | ४१ | ३२ | ५० | ६ | ०० | ७ | ०९ | २४ | २७ | १६ | मेष २९ १७ | १७ ४३ | [illegible] | [illegible] | ६ | भ. १४ ४० उ. २५ १० या.पंचक १७ ४३ या.मास शिवरात्रि B |
| मृत | १४ | मं | १४ | १४ | ११ | ४१ | अ | २३ | ५२ | १५ | ३३ | आ | ३७ | २८ | श | १४ | १४ | ३२ | ५४ | ६ | ०० | ७ | ०९ | २५ | २८ | १७ | मेष | | [illegible] | [illegible] | ७ | सर्वा. ०६ ०० उ. १५ ३३ या.अमृत ०६ ०० उ. [illegible] या.पितृकार्ये अमावस्या अस्तं गुरु प. १३ ५१ ★C |
| अमावस | ३० | बु | ०७ | १२ | ०८ | ५१ | भ | १८ | ५७ | १३ | ३४ | सौ | २९ | १५ | ना | ०७ | १२ | ३२ | ५६ | ५ | ५९ | ७ | १० | २६ | २९ | १८ | वृषभ ३२ ५० | ११ ०७ | [illegible] | [illegible] | ८ | सर्वा. १३ ३४ उ. २९ ५८ या.देवकार्ये अमावस्या श्रीशुकदेव ज.वि.रेडक्रास दिवस |

### निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः




### अ. ३ वैशाख कृष्णे ८ बुधे इष्ट ००।००

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ० | ९ | ११ | ११ | ० | ० | १० | ११ | ५ |
| अं. | १६ | ११ | ०६ | २२ | २९ | ०७ | २२ | २० | २० |
| क. | ५६ | ०५ | ०५ | ५९ | ५५ | ४२ | २६ | १६ | १६ |
| वि. | २७ | ४७ | ३९ | ३६ | ५७ | २३ | ३९ | २२ | २२ |
| ग | ५८ | ८३५ | ४६ | २७ ५५ | १४ | ७३ | ०५ | ३ | ३ |
| ति | १२ | ०० | १२ | मा | ०१ | ५३ | १२ | ११ | ११ |
| नक्षत्र | भरणी १ | श्रवण १ | उभा. १ | रेवती १ | कृति. १ | आर्द्रा ३ | पूभा. १ | रेवती २ | हस्त ४ |

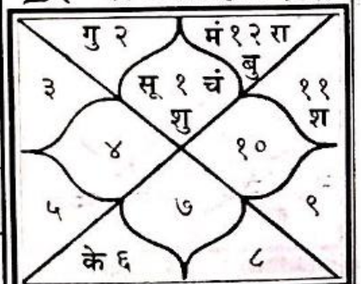
### ♣ ग्रह गोचरीय फलश्रुतिः ♣

वैशाख कृष्ण अमावस्या, रेवती पक्ष सुभिक्ष। रोहिणी योग दुभिक्ष का, मध्यम अश्विनी पक्ष ॥ भरणी व्याधि जानिये, कृतिका से जल अल्प। यान खान घटना विविध, निर्णय शकुन सुकल्प ॥ भरणी गत रवियोग जब, मेघ गाज आकाश। सुख सुभिक्ष की न्यूनता, निर्णय शकुन प्रकाश ॥ प्रातः चैत्र वैशाख में, वन पक्षी ध्वनि धीर। मधुर बोल सुहावने, श्रावण वर्षे नीर ॥ बिना ऋतुफल फूल हों, धरा मध्य जिम भाग। शकुन भवानी शास्त्र का, सुख सुभिक्ष नहीं राग ॥ कृष्ण पक्ष वैशाख का, एकादशी तिथि दक्ष। मेघ गाज से मानियें, भावी वर्ष सुभिक्ष ॥ कृष्ण पक्ष वैशाख का, तिथि आठम का मंग। मेघ गाज नभ बिजली, भावी सुखद सुरंग ॥ किसी राशि पर संक्रमण करे, भौम दिन सूर। तेल नमक, रस घी सहित, तेजी होय कपूर ॥

### अ. ४ वैशाख कृष्णे ३० बुधे इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ० | ० | ११ | ११ | १ | ० | १० | ११ | ५ |
| अं. | २३ | २२ | ११ | २७ | ०१ | १६ | २३ | १९ | १९ |
| क. | ४३ | ०५ | २८ | ३७ | ३४ | १९ | ०१ | ५४ | ५४ |
| वि. | २२ | ५५ | २९ | ०४ | २३ | २६ | ३९ | ०७ | ०७ |
| ग | ५८ | ८६२ | ४६ | ५३ | १४ | ७३ | ०४ | ३ | ३ |
| ति | ०२ | ४२ | ०१ | ५४ | ०७ | ५१ | ४३ | ११ | ११ |
| नक्षत्र | भरणी ३ | भरणी ४ | उभा. ३ | रेवती ४ | कृति. १ | भरणी १ | पूभा. १ | रेवती १ | हस्त ३ |

### निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः




● **जन्म समयपाद विवेक** ● जन्म लग्नतः चन्द्र १-६-११ स्थाने स्वर्णपाद, २-५-९ स्थाने चांदीपाद, ३-७-१० में तांबा, ४-८-१२ में लोह पाद समझें। ● **नक्षत्रानुसार पाद ज्ञान** ● आर्द्रा दश रूपाणां विशाखा नवताम्रका रेवती षट् स्वर्णश्च शेषाः लोहाः प्रकीर्त्तिताः ॥ भावार्थ – आर्द्रा से १० नक्षत्र चांदी पाया का जन्म तथा विशाखा से ९ गणना तक ताम्बा तथा रेवती से ६ गणना तक सोना का पाया एवं शेष गणना का लोह पाद। ● **नक्षत्र पाद गणना** ● में मतान्तर भी हैं, आर्द्रा से १० चांदी एवं विशाखा से ४ नक्षत्र लोहा, पूर्वाषाढ से अग्रिम ७ गणना ताम्बा तथा शेष स्वर्णपाद। परन्तु प्रथम लग्नतः चन्द्र स्थिति प्रमाण ही विशेष अनुभवयुक्त–प्रभावशील मान्य है।

# वैशाख शुक्ल पक्षः संवत् २०८१ रा.शाक: १९४६

### ✦मई सन् २०२४ ई. ग्रीष्म ऋतुः रवि उत्तरायणे–उत्तरगोले✦

♣सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं♣

| रवियोगाः | तिथि | वार | घटी | पल | घं. | मि. | नक्षत्र | घटी | पल | घं. | मि. | योग | घटी | पल | करण | घटी | पल | दिनमान घटी | दिनमान पल | स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं. | सूर्योदय मि. | सूर्यास्त घं. | सूर्यास्त मि. | विविध तारीखें बंग | मुस | भा | चन्द्रराशि प्रवेश काल रा. घटी पल | घं.मि. | सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अ.क.वि. | गति | अंग्रेजी ता. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लुम्बक | १ | गु | ०० | ५८ | ०६ | २१ | कृ | १४ | ५३ | ११ | ५६ | शो | २१ | ४७ | ब | ०० | ५८ | ३२ | ५९ | ५ | ५८ | ७ | १० | २७ | ३० | १९ | वृषभ | | [illegible] | [illegible] | ९ |
| क्षय | २ | गु | ५५ | ५० | २८ | १८ | 0 | ० | ० | ० | ० | 0 | ० | ० | 0 | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | | ० ० | ० | ० |
| १०।४७ उ. | ३ | शु | ५२ | १२ | २६ | ५० | रो | १२ | ०३ | १० | ४७ | अ | १५ | २२ | तै | २३ | ५० | ३३ | ०२ | ५ | ५८ | ७ | ११ | २८ | जि१ | २० | मिथुन $^{४१}_{११}$ | $^{२२}_{२६}$ | [illegible] | [illegible] | १० |
| ०७।०३ या. १०।१६ उ. | ४ | श | ५० | १८ | २६ | ०४ | मृ | १० | ४६ | १० | १६ | सु | १० | १४ | व | २१ | ०२ | ३३ | ०५ | ५ | ५७ | ७ | ११ | २९ | २ | २१ | मिथुन | | [illegible] | [illegible] | ११ |
| १०।२७ या. | ५ | र | ५० | १९ | २६ | ०४ | आ | ११ | १६ | १० | २७ | धृ | ०६ | ३२ | ब | २० | ०५ | ३३ | ०८ | ५ | ५७ | ७ | १२ | ३० | ३ | २२ | कर्क $^{५७}_{५२}$ | $^{२९}_{०५}$ | [illegible] | [illegible] | १२ |
| ११।२४ उ. | ६ | चं | ५२ | १६ | २६ | ५० | पुन | १३ | ३९ | ११ | २४ | शू | ०४ | २३ | कौ | २१ | ०४ | ३३ | ११ | ५ | ५६ | ७ | १२ | ३१ | ४ | २३ | कर्क | | [illegible] | [illegible] | १३ |
| १३।०५ या. | ७ | मं | ५६ | ०१ | २८ | १९ | पु | १७ | ५४ | १३ | ०५ | गं | ०३ | ४४ | ग | २३ | ५७ | ३३ | १३ | ५ | ५६ | ७ | १३ | ज्ये१ | ५ | २४ | कर्क | | [illegible] | [illegible] | १४ |
| राक्षस | ८ | बु | ६० | ०० | - | - | श्ले | २३ | ४६ | १५ | २५ | वृ | ०४ | २६ | वि | २८ | २७ | ३३ | १६ | ५ | ५५ | ७ | १३ | २ | ६ | २५ | सिंह $^{२३}_{४६}$ | $^{१५}_{२५}$ | [illegible] | [illegible] | १५ |
| १८।१४ उ. | ८ | गु | ०१ | १२ | ०६ | २३ | म | ३० | ४९ | १८ | १४ | ध्रु | ०६ | ११ | ब | ०१ | १२ | ३३ | १९ | ५ | ५५ | ७ | १४ | ३ | ७ | २६ | सिंह | | [illegible] | [illegible] | १६ |
| पूर्णरवि | ९ | शु | ०७ | १८ | ०८ | ४९ | पूफा | ३८ | ३१ | २१ | १८ | व्या | ०८ | ३७ | कौ | ०७ | १८ | ३३ | २१ | ५ | ५४ | ७ | १५ | ४ | ८ | २७ | कन्या $^{५५}_{२८}$ | $^{२८}_{०५}$ | [illegible] | [illegible] | १७ |
| २४।२३ या. | १० | श | १३ | ४४ | ११ | २३ | उफा | ४६ | १५ | २४ | २३ | ह | ११ | १८ | ग | १३ | ४४ | ३३ | २४ | ५ | ५४ | ७ | १५ | ५ | ९ | २८ | कन्या | | [illegible] | [illegible] | १८ |
| ए.व्रत | ११ | र | १९ | ५४ | १३ | ५० | ह | ५३ | २८ | २७ | १६ | व | १३ | ४८ | वि | १९ | ५४ | ३३ | २६ | ५ | ५३ | ७ | १६ | ६ | १० | २९ | कन्या | | [illegible] | [illegible] | १९ |
| २१।४६ उ. | १२ | चं | २५ | १६ | १५ | ५९ | चि | ५९ | ४४ | २९ | ४६ | सि | १५ | ४४ | बा | २५ | १६ | ३३ | २९ | ५ | ५३ | ७ | १६ | ७ | ११ | ३० | तुला $^{२६}_{४५}$ | $^{१६}_{३५}$ | [illegible] | [illegible] | २० |
| पूर्णरवि | १३ | मं | २९ | २९ | १७ | ४० | स्वा | ६० | ०० | - | - | व्य | १६ | ४९ | तै | २९ | २९ | ३३ | ३१ | ५ | ५२ | ७ | १७ | ८ | १२ | ३१ | तुला | | [illegible] | [illegible] | २१ |
| ०७।४७ या. | १४ | बु | ३२ | २१ | १८ | ४८ | स्वा | ०४ | ४७ | ०७ | ४७ | व | १६ | ५३ | ग | ०१ | ०६ | ३३ | ३३ | ५ | ५२ | ७ | १७ | ९ | १३ | १ज्ये | वृश्चि. $^{५२}_{४०}$ | $^{२६}_{५६}$ | [illegible] | [illegible] | २२ |
| पूर्णिमा | १५ | गु | ३३ | ४९ | १९ | २३ | वि | ०८ | २८ | ०९ | १५ | प | १५ | ५१ | वि | ०३ | १६ | ३३ | ३५ | ५ | ५२ | ७ | १८ | १० | १४ | २ | वृश्चिक | | [illegible] | [illegible] | २३ |

९ चंद्रदर्शन पाराशर ऋषि ज. मतांतरे श्रीशिवाजी ज.४१७ वीं

० **A** वर्षीतप पारणा पालीताणा जिल्कादमास ११ मुस.

१० श्रीपरशुराम ज.अक्षय तृतीया आखातीज अश्विन्यां मेषे बुधः $^{१८}_{४४}$ **A**

११ भद्रा $^{१४}_{२२}$ उ. $^{२६}_{०४}$ या.कृतिकायां रविः $^{०७}_{०३}$ पूभायां २ शनिः $^{२९}_{३०}$

१२ श्रीआद्यशंकराचार्य ज.१२३६वीं श्रीसूरदास ज.श्रीरामानुजाचार्य ज.**B**

१३ सर्वा. $^{११}_{२४}$ उ. $^{२९}_{५६}$ या. **B** विश्व मातृ दिवस

१४ भ. $^{२८}_{१९}$ उ.सर्वा. $^{१३}_{०५}$ उ. $^{२९}_{५५}$ या.वृषभेऽर्कः $^{१७}_{५४}$ बं.ज्येष्ठ मास प्रा.श्रीगंगा सप्तमी **C**

१५ भ. $^{१७}_{१८}$ या.देवी बगलामुखी ज.कृतिकायां ३ गुरूः $^{१७}_{१३}$

१६ श्रीजानकी नवमी कृतिकायां शुक्रः $^{१५}_{४१}$

१७ **C** रेवत्यां भौमः $^{२४}_{५०}$

१८ भ. $^{२४}_{३९}$ उ.श्रीमहावीर स्वामी कैवल ज्ञान जैन

१९ भ. $^{१३}_{५०}$ या.सर्वा. $^{०५}_{५३}$ उ. $^{२७}_{१६}$ या.अमृत सिद्धि $^{०५}_{५३}$ उ. $^{२७}_{१६}$ या.मोहिनी ११ व्रतं सर्वे.**D**

२० सोम प्रदोष व्रतं मिथुने भानुः $^{१८}_{३०}$ **D** वृषभे शुक्रः $^{०८}_{४३}$

२१ श्री नृसिंह जयंती भरण्यां बुधः $^{११}_{४२}$

२२ भ. $^{१८}_{४८}$ उ.रा.ज्येष्ठ मास प्रा. **E** श्रीकूर्म ज.देवयानी यात्रा सांभर लेक

२३ भ. $^{०७}_{१०}$ या.सर्वा. $^{०९}_{१५}$ उ.पीपल पूर्णिमा व्रतं वैशाख स्नान पूर्ण श्री बुद्ध ज.**E**



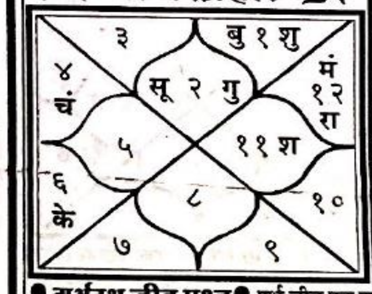








### 卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐




### अ.५ वैशाख शुक्ले ८ बुधे इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | १ | ३ | ११ | ० | १ | ० | १० | ११ | ५ |
| अं. | ०० | २५ | १६ | ०४ | ०३ | २४ | २३ | १९ | १९ |
| क. | २८ | १३ | ४९ | ५७ | १३ | ५६ | ३३ | ३१ | ३१ |
| वि. | ५९ | १४ | ४५ | ०६ | २० | १० | ०६ | ५२ | ५२ |
| ग | ५७ | ७२० | ४५ | ७३ | १४ | ७३ | ०४ | ३ | ३ |
| ति | ५० | २२ | ४४ | ५९ | ०९ | ४७ | ११ | ११ | ११ |
| नक्षत्र | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

### ♣ वृषभ संक्रान्ति फलम् – वन संभागीय ♣

वैशाख शुक्ल पक्षे ७ भौमे वृषभेऽर्कः प्र.वा. ४ न. ५ अस्य पुण्यकालः अद्यैव भौमवासरे मध्यान्ह कालतः पुण्यप्रदः। वार नाम महोदरी–तस्कर, लोभी–प्रलोभी, प्रवंचक, धूर्त, चौर्य कर्मशील, संग्राहक, ठग पक्ष हेतु दिशापथ सूचक शुभ फलद। नक्षत्र नाम राक्षसी–आदिवासीजन, सुदूर जंगल–पर्वत निवासी, जनजाति–अनुसूचित, अल्पसंख्यक वर्ग हेतु सुखद। दिवा ४ या.व्या.निर्धन, अल्पसंख्यक तथा जंगल पर्वतवासी, असहाय, वयोवृद्ध वर्ग हेतु कष्टद प्रभारक। दक्षिणे गमन, दृष्टि वायव्यां, वणिज करणे, वाहन महिष, उपवाहन–उष्ट्र, श्याम वस्त्र, तोमरायुध, खप्पर पात्र, दधि भक्षण, अलक्त लेपन, मृगजाति, अर्कपत्र पुष्प, मणि भूषण, पांडुकंचुकी, प्रगल्भावस्था, उपविष्ट, मुहूर्त–१५, धान्य–गल्ला उन्नत भाव, भेड़–बकरी, उंट, काले वस्त्र, दूध, दही, घी, लोहा–इस्पात, मशीनरी–कलपुर्जे, तिल, अफीम, जीरा, अजवाईन, कलौंजी, उड़द, काली मिर्च, विष पदार्थ–रसायन, तरल द्रव्य, कार्य व्यवसाय लाभद भावी उन्नत धारणा। शुक्रास्त पूर्वे, वत्स उत्तरे, राहु पश्चिमे, मूल पाताले।

### अ.६ वैशाख शुक्ले १५ गुरौ इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | १ | ७ | ११ | ० | १ | १ | १० | ११ | ५ |
| अं. | ०८ | ०१ | २२ | १५ | ०५ | ०४ | २४ | १९ | १९ |
| क. | १० | ३२ | ५४ | ५८ | ०६ | ४६ | ०४ | ०६ | ०६ |
| वि. | ५५ | ३८ | २८ | १२ | ३० | १८ | २१ | २७ | २७ |
| ग | ५७ | ७६७ | ४५ | ९३ | १४ | ७३ | ०३ | ३ | ३ |
| ति | ३८ | ३३ | २५ | २४ | ०८ | ४५ | ३२ | ११ | ११ |
| नक्षत्र | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

### 卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐




● **गर्भस्थ जीव प्रश्न** ● गर्भ जीव पुत्र या कन्या इस प्रश्नफल हेतु प्रश्न दिन की तिथि वार, नक्षत्र, योग एवं गर्भिणी नामाक्षर संख्या जोड़कर ७ का भाग देवें। शेष २-४-६ रहें तो कन्या अथवा १-३-५-७ शेष रहते पुत्र जन्म। विशेष–कृष्ण पक्ष में तिथि संख्या १५ से ३० तक की लेना चाहिए। एवमेव सूत्र यह भी कि शनि गोचर में प्रश्न दिवस पर १-३-५-७-११ विषम राशि गत गर्भ स्थित होते पुत्र समझें तथा यदि सम राशि २-४-६-८-१०-१२ में हो तो गर्भस्थ कन्या समझें। अन्य भी गणना नियामक यह कि गर्भिणी के नाम अक्षर को ३ गुणित करें, इसमें २ और जोड़ें तथा वर्तमान तिथि मिलाकर ८ का भाग देवें। शेष अंक सम अर्थात् २-४-६-० बचें तो कन्या और विषम १-३-५-७ आदि से पुत्र प्रजनन समझें। ● **युगोऽयं अर्थस्य–व्यवस्था सूत्रावली** ● यो नरः जन्मपर्यन्तं स्वयोदर पूरकः। न करोति हरेः पूजां स नरो गो वृषस्मृतः ॥ दानं भोगो नाशस्तिस्त्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य। यो न ददाति न भुंक्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति ॥ न देवाय न विप्राय न बन्धुभ्यो न चात्मने। कृपणस्य धनं याति वन्हितस्कर पार्थिवैः ॥ अधमाः धनमिच्छन्ति धनमानौ तु मध्यमा। उत्तमा मान मिछन्ति मानो हि महतां धनम् ॥

# ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः संवत् २०८१ रा.शाकः १९४६

**मई–जून सन् २०२४ ई. ग्रीष्म ऋतुः रवि उत्तरायणे–उत्तरगोले**

| रवियोगाः | तिथि | वार | घटी | पल | घं. | मि. | नक्षत्र | घटी | पल | घं. | मि. | योग | घटी | पल | करण | घटी | पल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राक्षस | १ | शु | ३३ | ५६ | १९ | २५ | अ | १० | ४८ | १० | ११ | शि | १३ | ४५ | बा | ०४ | ०२ |
| मुसल | २ | श | ३२ | ४९ | १८ | ५८ | ज्ये | ११ | ५४ | १० | ३६ | सि | १० | ३९ | तै | ०३ | ३१ |
| चौ.व्रत | ३ | र | ३० | ४१ | १८ | ०६ | मू | ११ | ५४ | १० | ३६ | सा | ०६ | ४१ | व | ०१ | ५३ |
| उत्पात | ४ | चं | २७ | ३९ | १६ | ५४ | पूषा | १० | ५९ | १० | १४ | शु | ०१ ५६ | ५६ ३४ | बा | २७ | ३९ |
| मानस | ५ | मं | २३ | ५५ | १५ | २४ | उषा | ०९ | १९ | ०९ | ३४ | ब्र | ५० | ४० | तै | २३ | ५५ |
| ०८।३१ उ. | ६ | बु | १९ | ३६ | १३ | ४० | श्र | ०७ | ०२ | ०८ | ३९ | ऐं | ४४ | २० | व | १९ | ३६ |
| ०७।३१ या. | ७ | गु | १४ | ४७ | ११ | ४४ | ध | ०४ | १४ | ०७ | ३१ | वै | ३७ | ३९ | ब | १४ | ४७ |
| सौम्य | ८ | शु | ०९ | ३३ | ०९ | ३८ | श | ०१ ५७ | ०२ २७ | ०६ २८ | १४ ४८ | वि | ३० | ३८ | कौ | ०९ | ३३ |
| धूम्र | ९ | श | ०३ | ५९ | ०७ | २४ | उभा | ५३ | ३७ | २७ | १६ | प्री | २३ | २२ | ग | ०३ | ५९ |
| क्षय | १० | श | ५८ | ०९ | २९ | ०५ | 0 | ० | ० | ० | ० | 0 | ० | ० | 0 | ० | ० |
| ए.व्रत | ११ | र | ५२ | १२ | २६ | ४१ | रे | ४९ | ३८ | २५ | ४१ | आ | १५ | ५५ | ब | २५ | ११ |
| राक्षस | १२ | चं | ४६ | १५ | २४ | १८ | अ | ४५ | ४० | २४ | ०५ | सौ | ०८ | २४ | कौ | १९ | १३ |
| प्रदोष | १३ | मं | ४० | ३२ | २२ | ०१ | भ | ४१ | ५५ | २२ | ३५ | शो | ०० ५३ | ५७ ४३ | ग | १३ | २१ |
| सिद्धि | १४ | बु | ३५ | १७ | १९ | ५५ | कृ | ३८ | ३९ | २१ | १६ | सु | ४६ | ५७ | वि | ०७ | ५० |
| अमावस | ३० | गु | ३० | ४७ | १८ | ०७ | रो | ३६ | १० | २० | १७ | धृ | ४० | ५१ | च | ०२ | ५५ |

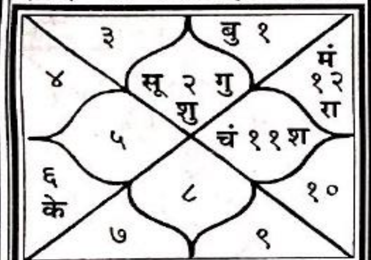
| रवियोगाः | दिनमान घटी | पल | स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं. | मि. | सूर्यास्त घं. | मि. | विविध तारीखें बंग | मुस | भा | चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.घटी पल | घं.मि. | सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अ.क.वि. | गति | अंग्रेजी ता. | सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राक्षस | ३३ | ३७ | ५ | ५१ | ७ | १८ | ११ | १५ | ३ | वृश्चिक | | [illegible] | [illegible] | २४ | सर्वा. १०/११ या. रोहिण्यां रविः २७/१७ रोहिणी तपन काल प्रा. जिनवर व्रत जैन |
| मुसल | ३३ | ४० | ५ | ५१ | ७ | १९ | १२ | १६ | ४ | धनु ११/५४ | १०/३६ | [illegible] | [illegible] | २५ | श्रीनारद ज. वीणादानं |
| चौ.व्रत | ३३ | ४२ | ५ | ५१ | ७ | १९ | १३ | १७ | ५ | धनु | | [illegible] | [illegible] | २६ | भ. ०६/३६ उ. १८/०६ या. सर्वा. ०५/५१ उ. १०/३६ या. ज्येष्ठ चतुर्थी व्रतं चंद्रोदय रात्रि २२/२३ |
| उत्पात | ३३ | ४४ | ५ | ५० | ७ | २० | १४ | १८ | ६ | मकर २५/३७ | १६/०५ | [illegible] | [illegible] | २७ | रोहिण्यां शुक्रः ११/५६ |
| मानस | ३३ | ४५ | ५ | ५० | ७ | २० | १५ | १९ | ७ | मकर | | [illegible] | [illegible] | २८ | |
| ०८।३१ उ. | ३३ | ४७ | ५ | ५० | ७ | २१ | १६ | २० | ८ | कुंभ ३५/४१ | २०/०६ | [illegible] | [illegible] | २९ | भ. १३/४० उ. २४/४४ या. पंचक २०/०६ उ. कृतिकायां बुधः १६/१५ कृतिकायां ४ गुरूः २०/५९ |
| ०७।३१ या. | ३३ | ४९ | ५ | ५० | ७ | २१ | १७ | २१ | ९ | कुंभ | | [illegible] | [illegible] | ३० | कालाष्टमी |
| सौम्य | ३३ | ५१ | ५ | ४९ | ७ | २२ | १८ | २२ | १० | मीन ४३/२२ | २३/१० | [illegible] | [illegible] | ३१ | उदयं गुरु पूर्वे २६/५१ ★ श्री दादूदयाल पुण्यः वृषभे बुधः १२/१३ |
| धूम्र | ३३ | ५२ | ५ | ४९ | ७ | २२ | १९ | २३ | ११ | मीन | | [illegible] | [illegible] | जू१ | भ. १८/१६ उ. २९/०५ या. अश्विन्यां मेषे भौमः १५/३७ जून मास ६ ता. ३० प्रा. |
| क्षय | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | | ० ० | ० | ० | |
| ए.व्रत | ३३ | ५४ | ५ | ४९ | ७ | २३ | २० | २४ | १२ | मेष ४९/३८ | २५/४१ | [illegible] | [illegible] | २ | सर्वा. २५/४१ उ. २९/४९ या. पंचक २५/४१ या. अपरा ११ व्रतं स्मार्त्त (गृहस्थ) |
| राक्षस | ३३ | ५५ | ५ | ४९ | ७ | २३ | २१ | २५ | १३ | मेष | | [illegible] | [illegible] | ३ | अपरा ११ व्रतं वैष्णव निम्बार्क बुधास्त पू. १८/१६ |
| प्रदोष | ३३ | ५७ | ५ | ४९ | ७ | २४ | २२ | २६ | १४ | वृषभ ५६/०३ | २८/१४ | [illegible] | [illegible] | ४ | भ. २२/०१ उ. सर्वा. २२/३५ उ. भौम प्रदोष व्रतं मास शिवरात्रि **A** रोहिण्यां बुधः १५/२२ |
| सिद्धि | ३३ | ५८ | ५ | ४९ | ७ | २४ | २३ | २७ | १५ | वृषभ | | [illegible] | [illegible] | ५ | भ. ०८/५७ या. सर्वा. २९/४९ या. विश्व पर्यावरण दि. सघना वृक्षारोपण संकल्पे देशे ग्रामे **A** |
| अमावस | ३३ | ५९ | ५ | ४९ | ७ | २४ | २४ | २८ | १६ | वृषभ | | [illegible] | [illegible] | ६ | देवपितृकार्ये अमावस्या वटसावित्री पूजा भावुका ३० श्री शनि ज. श्रीसंत ज्ञानेश्वर ज. |







### निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः




### अ.७ ज्येष्ठ कृष्णे ८ शुक्रे इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | १ | १० | ११ | ० | १ | १ | १० | ११ | ५ |
| अं. | १५ | १९ | २८ | २९ | ०६ | १४ | २४ | १८ | १८ |
| क. | ५१ | ४५ | ५६ | ३० | ५९ | ३६ | ३० | ४१ | ४१ |
| वि. | ३१ | ३४ | ३४ | १५ | १४ | १२ | १३ | ०१ | ०१ |
| ग | ५७ | ८५० | ४५ | १११ | १४ | ७३ | ०२ | ३ | ३ |
| ति | ३१ | ३७ | ०४ | ५० | ०२ | ४४ | ५० | ११ | ११ |
| नक्षत्र | रोहिणी | शत. | रेवती | कृतिका | कृतिका | रोहिणी | पू.भा. | रेवती | हस्त |

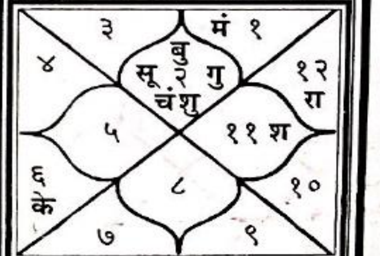
### ♣ ग्रह गोचरीय फलश्रुतिः ♣

ज्येष्ठ सुदी में आर्द्रा से, चित्र नखत विचार। मेघ गाज से आपदा, भारी कष्ट प्रहार।। रोहिणी पंथ रविचार का, तपन ताप सुखनंद। मेघ गाज वर्षा यदि, सुख सुभिक्ष हो मंद।। शेष चरण वर्षा गति, शकुन सूत्र सुख रंग। महिमा ऋतु विधान की, वाक्य भवानी संग।। मृगशिरा वायु का चलन, दिशाचार नभवात। मेघ गाज वर्षा भुवन, आर्द्रा सूर्य निपात।। श्री गणेश आर्द्रा रवि, मेघ गाज अधिरंग। निर्णय शकुन शास्त्र का, भावी समय कुरंग।। आर्द्रा बरसे स्वल्प भी, पुनर्वसु भरे तड़ाग। शकुन भवानी शास्त्र का, बहुविध करे प्रयाग।। वार पांच भृगु देव के, भौतिक बुद्धि अपार। वस्तु सुगंधी–गंध की, तेजी पंथ निहार।। रोग शोक व्याधि गति, संक्रामक अतिचार। स्वास्थ्य तंत्र में न्यूनता, पांच रूप शनिवार।।

### अ.८ ज्येष्ठ कृष्णे ३० गुरौ इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | १ | १ | ० | १ | १ | १ | १० | ११ | ५ |
| अं. | २१ | १४ | ०३ | ११ | ०८ | २१ | २४ | १८ | १८ |
| क. | ३६ | ५८ | २६ | १३ | २३ | ५८ | ४५ | २१ | २१ |
| वि. | २४ | २९ | ०९ | ४५ | १२ | ३९ | ५१ | ५६ | ५६ |
| ग | ५७ | ८२८ | ४४ | १२४ | १३ | ७३ | ०२ | ३ | ३ |
| ति | २६ | ५९ | ४५ | १८ | ५५ | ४४ | १७ | ११ | ११ |
| नक्षत्र | रोहिणी | रोहिणी | अश्वि. | रोहिणी | कृति. | रोहिणी | पू.भा. | रेवती | हस्त |

### निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः




● **रोगीणां मरण जीवनविचार** ● ज्येष्ठा, आश्लेषा, शतभिषा, आर्द्रा, तीनों पूर्वा, भरणी, विशाखा, घनिष्ठा, कृतिका नक्षत्र तथा शनि–मंगल–रविवार एवं ४-९-१४-१२-६ तिथि इनमें रोगी बने मनुष्य को दुःख रोग अधिक देखना होता है। इन तीनों नक्षत्र वार तिथि में एक भी कम होवे तब चिंता न करें। दशा–उपदशा गोचर ग्रह गति विचार भी योग्य। महामृत्युंजय जप–जाप तथा तुलादानतः विविध शारीरिक पीड़ा हित शांति सूत्र समझें। ● **काक स्पर्श प्रतिफल सूत्र** ● शकुन शास्त्रीय नियामक से कौआ–काक का मस्तक पर स्पर्श धनसम्पदा विनाशक तथा विविध जीवनीय समस्याओं में वृद्धि प्रदायक एवं कमर भाग तथा कन्धों पर काक स्पर्श भी शुभ सूचक नहीं होता है। यह काक स्पर्श प्रतिफल महिला जगत–स्त्री पक्ष पर विशेषकर प्रतिफल प्रदान करता है। तथापि यदि किसी वृक्ष के नीचे दही–खीर आदि पक्वान्न भोजन के कारण काक स्पर्श का शकुन प्रभाव नहीं बनता है तथा अकस्मात् यकायक स्पर्श का दोष कुफल सूचक एवं काक का मैथुन कर्म अवलोकन भी नेष्टफल सूचक बनता है। मुहूर्त्त गणपति ग्रन्थानुगत यह प्रतिफल है तथा दोष निवारण हेतु सवस्त्र स्नान करके इन वस्त्रों का अनुदान कर देना परिहार सूचक एवं शांति विधायक समझें। **व्हाट्सएप से जुड़ने हेतु नाम व शहर लिखकर मैसेज करें – 89640 98640**

# ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः संवत् २०८१ रा.शाकः १९४६

✦ जून सन् २०२४ ई. ग्रीष्म वर्षा ऋतुः रवि-उत्तरा.–दक्षिणायणे–उत्तरगोले ✦

♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣

| रवियोगाः | तिथि | वार | घटी | पल | घं. | मि. | नक्षत्र | घटी | पल | घं. | मि. | योग | घटी | पल | करण | घटी | पल | दिनमान घटी | दिनमान पल | स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं. | सूर्योदय मि. | सूर्यास्त घं. | सूर्यास्त मि. | विविध तारीखें बंग | मुस | भा | चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.घटी पल | घं.मि. | सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अ.क.वि. | गति | अंग्रेजी ता. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मानस | १ | शु | २७ | २२ | १६ | ४५ | मृ | ३४ | ४६ | १९ | ४३ | शू | ३५ | ४० | ब | २७ | २२ | ३४ | ०० | ५ | ४९ | ७ | २५ | २५ | २९ | १७ | मिथुन ०५/१९ | ०७/५६ | [illegible] | [illegible] | ७ | चंद्रदर्शन मृगशिरायां रविः २५/०६ करवीर व्रतं मृगशिरायां शुक्रः ०८/१८ |
| ११।४३ उ. | २ | श | २५ | १८ | १५ | ५६ | आ | ३४ | ४५ | १९ | ४३ | गं | ३१ | ३६ | कौ | २५ | १८ | ३४ | ०१ | ५ | ४९ | ७ | २५ | २६ | जि१ | १८ | मिथुन | | [illegible] | [illegible] | ८ | रम्भा तृतीया जिल्हज मास १२ मुस. |
| २०।२१ या. | ३ | र | २४ | ५१ | १५ | ४४ | पुन | ३६ | २० | २० | २१ | वृ | २८ | ५० | ग | २४ | ५१ | ३४ | ०२ | ५ | ४९ | ७ | २६ | २७ | २ | १९ | कर्क २०/४७ | १४/०७ | [illegible] | [illegible] | ९ | भ. २७/५५ उ. सर्वा. २०/२१ उ.रवि पुष्यः २०/२१ उ. २९/४९ या.महाराणा प्रताप ज. |
| २१।४० उ. | ४ | चं | २६ | ०७ | १६ | १५ | पु | ३९ | ३८ | २१ | ४० | ध्रु | २७ | २७ | वि | २६ | ०७ | ३४ | ०३ | ५ | ४९ | ७ | २६ | २८ | ३ | २० | कर्क | | [illegible] | [illegible] | १० | भ. १६/१५ या.सर्वा. २१/४० या. |
| २३।३९ या. | ५ | मं | २९ | ०८ | १७ | २७ | श्ले | ४४ | ३६ | २३ | ३९ | व्या | २७ | २६ | बा | २९ | ०८ | ३४ | ०४ | ५ | ४९ | ७ | २६ | २९ | ४ | २१ | सिंह ४४/३६ | २३/३९ | [illegible] | [illegible] | ११ | सर्वा. ०५/४९ उ. २३/३९ या.श्रुति पंचमी सांई टेऊंराम पुण्यः मृगशिरायां बुधः २२/१२ |
| चर | ६ | बु | ३३ | ४१ | १९ | १७ | म | ५० | ५९ | २६ | १२ | ह | २८ | ३६ | कौ | ०१ | १४ | ३४ | ०५ | ५ | ४९ | ७ | २७ | ३० | ५ | २२ | सिंह | | [illegible] | [illegible] | १२ | अरण्य षष्ठी विन्ध्यवासिनी पूजा मिथुने शुक्रः १८/३० रोहिण्यां १ गुरुः २९/३९ |
| २१।०९ उ. | ७ | गु | ३९ | २३ | २१ | ३३ | पूफा | ५८ | २० | २९ | ०९ | व | ३० | ४१ | ग | ०६ | २५ | ३४ | ०६ | ५ | ४९ | ७ | २७ | ३१ | ६ | २३ | सिंह | | [illegible] | [illegible] | १३ | भ. २१/३३ उ. C विश्व योग दिवस सं.चं.सू.स्त्री.पू.वाहन चातक वर्षा श्रेष्ठ |
| पूर्णरवि | ८ | शु | ४५ | ३९ | २४ | ०४ | उफा | ६० | ०० | — | — | सि | ३३ | १६ | वि | १२ | २९ | ३४ | ०६ | ५ | ४९ | ७ | २७ | आ१ | ७ | २४ | कन्या १५/१५ | ११/५५ | [illegible] | [illegible] | १४ | भ. १०/४८ या.मिथुनेऽर्कः २४/२७ बं.आषाढ़ मास प्रा.मिथुने बुधः २३/०५ |
| पूर्णरवि | ९ | श | ५१ | ५० | २६ | ३२ | उफा | ०६ | ०३ | ०८ | १४ | व्य | ३५ | ५३ | बा | १८ | ४७ | ३४ | ०७ | ५ | ४९ | ७ | २८ | २ | ८ | २५ | कन्या | | [illegible] | [illegible] | १५ | श्रीमहेश नवमी माहेश्वरी वंशीय |
| ११।१३ या. | १० | र | ५७ | १७ | २८ | ४४ | ह | १३ | २९ | ११ | १३ | व | ३८ | ०३ | तै | २४ | ४१ | ३४ | ०७ | ५ | ४९ | ७ | २८ | ३ | ९ | २६ | तुला ४६/५५ | २४/३५ | [illegible] | [illegible] | १६ | सर्वा. ०५/४९ उ. ११/१३ या.अमृत सिद्धि ०५/४९ उ. ११/१३ या.श्रीगंगा दशहरा A |
| मुद्गर | ११ | चं | ६० | ०० | — | — | चि | २० | ०३ | १३ | ५१ | प | ३९ | २३ | व | २९ | ३४ | ३४ | ०७ | ५ | ४९ | ७ | २८ | ४ | १० | २७ | तुला | | [illegible] | [illegible] | १७ | भ. १७/३९ उ.आर्द्रायां बुधः २४/१० आर्द्रायां शुक्रः २८/४३ |
| १५।५६ उ. | ११ | मं | ०१ | ३० | ०६ | २५ | स्वा | २५ | १७ | १५ | ५६ | शि | ३९ | ३४ | वि | ०१ | ३० | ३४ | ०८ | ५ | ४९ | ७ | २८ | ५ | ११ | २८ | तुला | | [illegible] | [illegible] | १८ | भ. ०६/२५ या.निर्जला ११ व्रतं सर्वे.गुरू अचलदास पुण्य जोधपुरे रानी झाँसी पुण्यः |
| १७।२३ या. | १२ | बु | ०४ | ०७ | ०७ | २८ | वि | २८ | ५५ | १७ | २३ | सि | ३८ | २५ | बा | ०४ | ०७ | ३४ | ०८ | ५ | ५० | ७ | २९ | ६ | १२ | २९ | वृश्चि. १३/१० | ११/०५ | [illegible] | [illegible] | १९ | सर्वा. १७/२३ उ.अमृत सिद्धि १७/२३ उ. २९/५० या.प्रदोष व्रतं वटसावित्री व्रतारंभः B |
| आनंद | १३ | गु | ०५ | ०२ | ०७ | ५० | अ | ३० | ५१ | १८ | १० | सा | ३५ | ५६ | तै | ०५ | ०२ | ३४ | ०८ | ५ | ५० | ७ | २९ | ७ | १३ | ३० | वृश्चिक | | [illegible] | [illegible] | २० | सर्वा. १८/१० या.कर्के भानुः २६/२१ रवि दक्षिणायन गति प्रा.वर्षा ऋतुः प्रा. |
| चर | १४ | शु | ०४ | १५ | ०७ | ३२ | ज्ये | ३१ | १२ | १८ | १९ | शु | ३२ | १० | व | ०४ | १५ | ३४ | ०८ | ५ | ५० | ७ | २९ | ८ | १४ | ३१ | धनु ३१/१२ | १८/१९ | [illegible] | [illegible] | २१ | भ. ०७/३२ उ. १९/०९ या.आर्द्रायां रविः २४/०६ पूर्णिमाव्रतं वटसावित्री व्रत पूर्ण C |
| पूर्णिमा | १५ | श | ०१ | ५९ | ०६ | ३७ | मू | ३० | ११ | १७ | ५५ | शु | २७ | १७ | ब | ०१ | ५९ | ३४ | ०८ | ५ | ५० | ७ | २९ | ९ | १५ | आ१ | धनु | | [illegible] | [illegible] | २२ | पूर्णिमा पुण्य रा.आषाढ मास प्रा.श्रीकबीर जयंती |

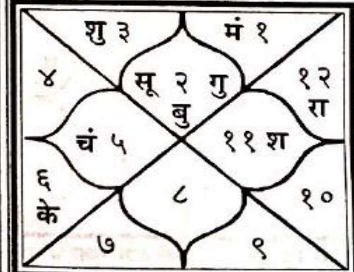








## निर्णयसागरीय 卐 गोचरग्रहाः 卐




## अ. ९ ज्येष्ठ शुक्ले ८ शुक्रे इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | १ | ४ | ० | १ | १ | २ | १० | ११ | ५ |
| अं. | २९ | २६ | ०९ | २८ | १० | ०१ | २५ | १७ | १७ |
| क. | १५ | ५९ | २२ | २४ | १३ | ४८ | ०१ | ५६ | ५६ |
| वि. | २९ | ५३ | २९ | ५९ | ४९ | ३० | २५ | ३० | ३० |
| ग | ५७ | ७०८ | ४४ | १३२ | १३ | ७३ | ०१ | ३ | ३ |
| ति | १९ | ४६ | १६ | ०१ | ४२ | ४३ | ३१ | ११ | ११ |
| नक्षत्र | मृ. २ | उफा. १ | अश्विनी ३ | मृ. २ | रोहिणी १ | मृ. ३ | पुष्य. २ | चित्रा १ | हस्त ३ |

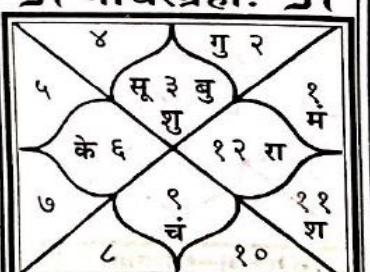
## ♣ मिथुन संक्रान्ति फलम् – तीर्थ संभागीय ♣

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे ८ शुक्रे मिथुनेऽर्कः प्र.वा. ४ न. ४ अस्य पुण्यकालः परदिने शनिवासरे सूर्योदय वेलातः पुण्यप्रदः। वार नाम मिश्रा–शासकीय पशुधन विकास योजना, पशु कल्याण केन्द्र वृद्धि, दुग्ध संग्राहक वर्ग को लाभद सुयोग। नक्षत्र नाम मंदा–वैज्ञानिक, शोध कार्यकर्ता, विद्वान जगत, साहित्यकार, प्राचार्य, ज्ञान प्रदाता हेतु सौख्यकारक। रात्रि २ या.व्या.हिंसाशील, आतंक प्रसारक, देशद्रोही, विस्फोटककर्ता, तमोगुण प्रधान वर्ग हेतु कष्टद प्रभारक, पूर्वे गमन, नैऋत्यां दृष्टि, बालव करणे, वाहन व्याघ्र, उपवाहन अश्व, पीत वस्त्र, गदायुध, रजत पात्र, पायस भक्षण, कुंकुम लेपन, भूतजाति, जाति पुष्प, कंकण भूषण, पर्ण कंचुकी, कुमार्यावस्था, उपविष्टा मुहूर्त–४५, धान्य–गल्ला स्थिर समभाव, सोना, चाँदी, तुवर, हल्दी, सरसों, दानामैथी, केसर, चंदन, रोली, चाय, तमाखु, सौंठ, गरम मसाला, सुगंधी पदार्थ उन्नत धारणा। शुक्रास्त पूर्वे, वत्स उत्तरे, राहु पश्चिमे, मूल स्वर्गे।

## अ. १० ज्येष्ठ शुक्ले १५ शनौ इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | २ | ८ | ० | २ | १ | २ | १० | ११ | ५ |
| अं. | ०६ | ०६ | १५ | १५ | १२ | ११ | २५ | १७ | १७ |
| क. | ५३ | २८ | १४ | ४१ | ०२ | ३८ | १० | ३१ | ३१ |
| वि. | ४० | ३८ | ५५ | ५२ | २२ | १५ | ४६ | ०४ | ०४ |
| ग | ५७ | ८२२ | ४३ | १२३ | १३ | ७३ | ०० | ३ | ३ |
| ति | १४ | ०२ | ४६ | ५९ | २४ | ४३ | ४३ | ११ | ११ |
| नक्षत्र | आर्द्रा १ | मृ. २ | भरणी १ | आर्द्रा ३ | रोहिणी १ | आर्द्रा २ | पुष्य. २ | चित्रा १ | हस्त ३ |

## निर्णयसागरीय 卐 गोचरग्रहाः 卐




● **सुभाषित नीति वचन** ● **यजमान** ● **आशीर्वाद वचन सूत्र** ● लक्ष्मीस्ते पंकजाक्षी निवसतु वदे भारती कण्ठदेशे। वर्धन्तां बन्धुवर्गाः प्रबलरिपुगणा यान्तु पाताल मूले॥ देशे देशे च कीर्त्तिः प्रसरतु भवतां कुन्द पूर्णन्दुशुभ्रा। जीवत्वं पुत्रपौत्रः सकलगुणयुतैर्भुज्यसे राज्यलक्ष्मीः॥ नास्ति कामसमो व्याधिर्नास्ति मोहसमो रिपुः। नास्ति कोपसमो वन्हिर्नास्ति ज्ञानात्परं सुखम्॥ निर्गुणस्य हतं रूप दुःशीलस्य हतं कुलम्। असिद्धस्य हता विद्या अभोगेन हतं धनम्॥ नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा। कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा॥ ● **सुभाषित नीति वचन सूत्र** ● यदि सन्ति गुणाः पुसां विकसन्त्येव ते स्वयम्। न हि कस्तूरिकामोदः शपथेन विभाव्यते॥ अनन्तशास्त्रं बहुला च विद्या अल्पश्च कालो बहुविघ्नता च। यत्सारभूतं तदुपासनीयं हंसो यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात्। धनहीनो न हीनश्च धनिकः स सुनिश्चयः। विद्यारत्नेन यो हीनः सर्ववस्तुषु॥ **A** बटुक भैरव ज.श्रीरामेश्वर प्रतिष्ठा श्रीराम शर्मा पुण्यः श्री शांति विजय म.सा.पुण्यः त्रि.स्तु.जैन **B** भरण्यां भौमः १४।५९

# आषाढ़ कृष्ण पक्षः संवत् २०८१ रा.शाकः १९४६

| रवियोगाः | तिथि | वार | घटी | पल | घं. | मि. | नक्षत्र | घटी | पल | घं. | मि. | योग | घटी | पल | करण | घटी | पल | दिनमान घटी | दिनमान पल | स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं. | सूर्योदय मि. | सूर्यास्त घं. | सूर्यास्त मि. | विविध तारीखें बंग | मुस | भा | चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.घटी पल | घं.मि. | सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अ.क.वि. | गति | अंग्रेजी ता. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्षय | १ | श | ५८ | २८ | २९ | १३ | 0 | ० | ० | ० | ० | 0 | ० | ० | 0 | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | | ० ० | ० | ० |
| शुभ | २ | र | ५४ | ०० | २७ | २६ | पूषा | २८ | ०४ | १७ | ०४ | ब्र | २१ | ३० | तै | २६ | २० | ३४ | ०८ | ५ | ५१ | ७ | ३० | १० | १६ | २ | मकर ४२:२४ | २२:४८ | २ ०७ ५० ५४ | ५७ १४ | २३ |
| मृत्यु | ३ | चं | ४८ | ५२ | २५ | २३ | उषा | २५ | ०९ | १५ | ५४ | ऐं | १५ | ०२ | व | २१ | ३० | ३४ | ०७ | ५ | ५१ | ७ | ३० | ११ | १७ | ३ | मकर | | २ ०८ ४८ ०८ | ५७ १३ | २४ |
| चौ.व्रत | ४ | मं | ४३ | २१ | २३ | ११ | श्र | २१ | ४४ | १४ | ३३ | वै | ०८ | ०७ | ब | १६ | ०८ | ३४ | ०७ | ५ | ५१ | ७ | ३० | १२ | १८ | ४ | कुंभ ४९:५६ | २५:४९ | २ ०९ ४५ २१ | ५७ १३ | २५ |
| मित्र | ५ | बु | ३७ | ४१ | २० | ५५ | ध | १८ | ०५ | १३ | ०५ | वि | ००:५३ | ५७:४३ | कौ | १० | ३१ | ३४ | ०७ | ५ | ५१ | ७ | ३० | १३ | १९ | ५ | कुंभ | | २ १० ४२ ३४ | ५७ १३ | २६ |
| ११।३७ उ. | ६ | गु | ३२ | ०१ | १८ | ४० | श | १४ | २३ | ११ | ३७ | आ | ४६ | ३१ | ग | ०४ | ५० | ३४ | ०६ | ५ | ५२ | ७ | ३० | १४ | २० | ६ | मीन ५६:४१ | २८:३२ | २ ११ ३९ ४७ | ५७ १३ | २७ |
| १०।११ या. | ७ | शु | २६ | २९ | १६ | २७ | पूभा | १० | ४७ | १० | ११ | सौ | ३९ | २७ | ब | २६ | २९ | ३४ | ०६ | ५ | ५२ | ७ | ३० | १५ | २१ | ७ | मीन | | २ १२ ३७ ०१ | ५७ १३ | २८ |
| धूम्र | ८ | श | २१ | ११ | १४ | २० | उभा | ०७ | २३ | ०८ | ५० | शो | ३२ | ३४ | कौ | २१ | ११ | ३४ | ०५ | ५ | ५२ | ७ | ३० | १६ | २२ | ८ | मीन | | २ १३ ३४ १४ | ५७ १४ | २९ |
| प्रवर्ध | ९ | र | १६ | ०८ | १२ | १९ | रे | ०४ | १४ | ०७ | ३४ | अ | २५ | ५५ | ग | १६ | ०८ | ३४ | ०४ | ५ | ५३ | ७ | ३० | १७ | २३ | ९ | मेष ०४:१४ | ०७:३४ | २ १४ ३१ २८ | ५७ १४ | ३० |
| राक्षस | १० | चं | ११ | २४ | १० | २६ | अ | ०१:५८ | २४:५६ | ०६:२९ | २६:२८ | सु | १९ | ३२ | वि | ११ | २४ | ३४ | ०३ | ५ | ५३ | ७ | ३० | १८ | २४ | १० | मेष | | २ १५ २८ ४२ | ५७ १४ | जु१ |
| ए.व्रत | ११ | मं | ०७ | ०४ | ०८ | ४२ | कृ | ५६ | ५७ | २८ | ४० | धृ | १३ | २८ | बा | ०७ | ०४ | ३४ | ०२ | ५ | ५३ | ७ | ३० | १९ | २५ | ११ | वृषभ १३:२३ | ११:१४ | २ १६ २५ ५६ | ५७ १४ | २ |
| प्रदोष | १२ | बु | ०३ | १३ | ०७ | १० | रो | ५५ | ३५ | २८ | ०८ | शू | ०७ | ५० | तै | ०३ | १३ | ३४ | ०१ | ५ | ५४ | ७ | ३० | २० | २६ | १२ | वृषभ | | २ १७ २३ १० | ५७ १४ | ३ |
| मृत्यु | १३ | गु | ०० | ०१ | ०५ | ५४ | मृ | ५५ | ०२ | २७ | ५५ | गं | ०२:५८ | ४४:२० | व | ०० | ०१ | ३४ | ०० | ५ | ५४ | ७ | ३० | २१ | २७ | १३ | मिथुन २५:११ | १५:५८ | २ १८ २० २४ | ५७ १४ | ४ |
| क्षय | १४ | गु | ५७ | ४१ | २८ | ५८ | 0 | ० | ० | ० | ० | 0 | ० | ० | 0 | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | | ० ० | ० | ० |
| अमावस | ३० | शु | ५६ | २२ | २८ | २७ | आ | ५५ | ३० | २८ | ०७ | ध्रु | ५४ | ४५ | च | २६ | ५२ | ३३ | ५९ | ५ | ५४ | ७ | ३० | २२ | २८ | १४ | मिथुन | | २ १९ १७ ३८ | ५७ १४ | ५ |

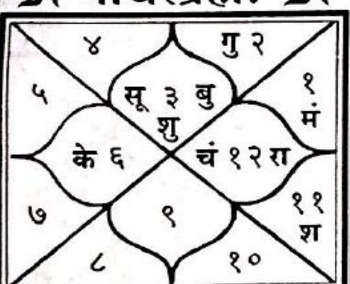
## ✦ जून–जुलाई सन् २०२४ ई. वर्षा ऋतुः रवि दक्षिणायणे–उत्तरगोले ✦

♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣

- २३ सर्वा. १७:०४ उ. २९:५१ या.
- २४ भ. १४:२७ उ. २५:२३ या.सर्वा. १५:५४ उ. २९:५१ या.पुनर्वसौ बुधः ०८:१४
- २५ पंचक २५:४९ उ.आषाढी चतुर्थी व्रतं चंद्रोदय रात्रि २२:४१ बुधोदय प. २८:१२
- २६
- २७ भ. १८:४० उ. २९:३३ या.रोहिण्यां २ गुरूः २६:०४
- २८ पुनर्वसौ शुक्रः २५:१३
- २९ कर्के बुधः १२:२७ वक्री शनिः २४:३६
- ३० भ. २३:२२ उ.सर्वा. ०७:३४ उ. २९:५३ या. पंचक ०७:३४ या.
- जु१ भ. १०:२६ या. पुष्ये बुध ०८:३५ जुलाई मास ७ ता. ३१ प्रा.
- २ सर्वा. ०५:५३ उ. २८:४० या.योगिनी ११ व्रतं सर्वे.
- ३ सर्वा. ०५:५४ उ. २९:५४ या.प्रदोष व्रतं
- ४ भ. ०५:५४ उ. १७:२४ या.मास शिवरात्रि विवेकानंद पुण्यः
- ० A पुनर्वसौ रविः २३:४० सं.चं.चं.स्त्री.स्त्री.वाहन गज वर्षा श्रेष्ठ
- ५ सर्वा. २८:०७ उ. २९:५५ या.देवपितृकार्ये अमावस्या शुक्रोदयः प. ०८:३७ ★A



### निर्णयसागरीय 卐 गोचरग्रहाः 卐




### अ. ११ आषाढ़ कृष्णे ८ शनौ इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | २ | ११ | ० | २ | १ | २ | १० | ११ | ५ |
| अं. | १३ | १४ | २० | २९ | १३ | २० | २५ | १७ | १७ |
| क. | ३४ | ५५ | १९ | २९ | ३५ | १४ | १३ | ०८ | ०८ |
| वि. | १४ | ५१ | ५६ | ४८ | १२ | १८ | ४५ | ४८ | ४८ |
| ग | ५७ | ८४४ | ४३ | ११० | १३ | ७३ | ०० | ३ | ३ |
| ति | १४ | ४२ | १८ | ११ | ०५ | ४४ | ०२ | ११ | ११ |
| नक्षत्र | आर्द्रा ३ | उभा. ४ | भरणी ३ | पुन. ३ | रोहिणी १ | पुन. १ | पूभा. १ | रेवती १ | हस्त ३ |

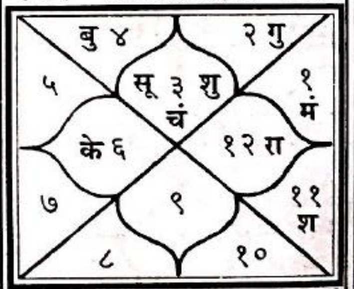
### ♣ ग्रह गोचरीय फलश्रुतिः ♣

किसी राशि पर संक्रमण करे, भौम दिन सूर। तेल नमक रस घी सहित, तेजी होय कपूर॥ आठे नवमी पूर्णिमा, शुक्ल पक्ष आषाढ़। मेघ गर्जना साथ हो, भावी सौख्य प्रगाढ़॥ यदि हो निर्मल चंद्रमा, भावी कष्ट निहार। चंद्रदेव यदि मेघ सह, सुख सुभिक्ष संचार॥ कृष्ण पक्ष की अष्टमी, आषाढ़ मास का कक्ष। चंदा बादल मध्य हो, भारी वर्षा लक्ष॥ मृगशिर वायु का चलन, दिशाचार नभवात। मेघ गाज वर्षा भुवन, आर्द्रा सूर्य निपात॥ श्री गणेश आर्द्रा रवि, मेघ गाज अधिरंग। निर्णय शकुन शास्त्र का, भावी समय कुरंग॥ आर्द्रा बरसे स्वल्प भी, पुनर्वसु भरे तड़ाग, शकुन भवानी शास्त्र का, बहुविध करे प्रयास॥ अदल बदल नेता करें, लोक तंत्र परिताप। वक्र रूप शनि देव का, नेता दल सन्ताप॥

### अ. १२ आषाढ़ कृष्णे ३० शुक्रे इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | २ | २ | ० | ३ | १ | २ | १० | ११ | ५ |
| अं. | १९ | ०७ | २४ | ०९ | १४ | २७ | २५ | १६ | १६ |
| क. | १७ | ४६ | ३८ | ५९ | ५२ | ३६ | १२ | ४९ | ४९ |
| वि. | ३८ | ३४ | ४२ | ०५ | ५३ | ४७ | २४ | ४३ | ४३ |
| ग | ५७ | ७१२ | ४२ | ९७ | १२ | ७३ | ०० ३४ | ३ | ३ |
| ति | १४ | ३२ | ५२ | २६ | ४५ | ४५ | व | ११ | ११ |
| नक्षत्र | आर्द्रा ४ | आर्द्रा १ | भरणी ४ | पुष्य १ | रोहिणी १ | पुन. ३ | पूभा. १ | रेवती १ | हस्त ३ |

### निर्णयसागरीय 卐 गोचरग्रहाः 卐

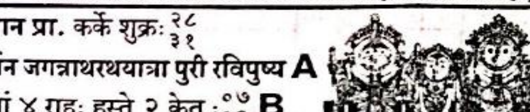



● **किमर्थम्–ब्राह्मणा पूज्याः** ● देवाधीनं जगत्सर्वं मन्त्राधीनश्च देवताः। ते मन्त्रा ब्राह्मणाधीनास्तस्माद् ब्राह्मण देवताः॥ आतुरे व्यसने प्राप्ते दुर्भिक्षे शत्रुसंकटे। राजद्वारे श्मशाने च यास्तिष्ठति स बान्धवः॥ यस्य पुत्रो वशीभूतो भार्या छन्दाऽनुगामिनी विभवे यश्च सन्तुष्टस्तस्य स्वर्ग इहैवहि॥ धन धान्य प्रयोगेषु विद्या संग्रहणे तथा। आहारे व्यवहारे च त्यक्त लज्जा सुखी भवेत्। जल बिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः। स हेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च॥ भारतीय कन्या महात्म्य–शतपुत्र समा कन्या गुणशीलां श्री समन्विता। अन्नदा धनदाश्चैव शक्ति रूपेण संस्थिता॥ ● **सुभाषित नीति वचन सूत्र** ● बलं विद्या हि विप्राणां, राज्ञां सैन्यं बलं तथा। बलं वित्तं च वैश्यानां शूद्राणां च कनिष्ठिका॥ बाहुवीर्यो बली राजा ब्राह्मणो ब्रह्मविद् बली। रूप यौवनमाधुर्यं स्त्रीणां बलमनुत्तमम्। न देवो विद्यते काष्ठे न पाषाणे न मृन्मये। भावो ही विद्यते देवस्तस्माद् भावो हि कारणम्॥ न निर्मिता नैव न दृष्टपूर्वा न श्रूयते हेममथी कुरंगी। तथापि तृष्णा रघुनन्दनस्य विनाशकाले विपरीतबुद्धि॥ काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेदः पिककाकयो। वसन्तसमये प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः॥

# आषाढ़ शुक्ल पक्षः संवत् २०८१ रा.शाकः १९४६

# ✦ जुलाई सन् २०२४ ई. वर्षा ऋतुः रवि दक्षिणायणे–उत्तरगोले ✦

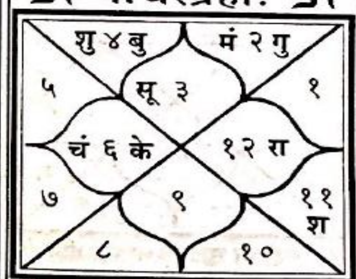
♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣






| रवियोगाः | तिथि | वार | घटी | पल | घं. | मि. | नक्षत्र | घटी | पल | घं. | मि. | योग | घटी | पल | करण | घटी | पल | दिनमान घटी | दिनमान पल | सूर्योदय घं. | सूर्योदय मि. | सूर्यास्त घं. | सूर्यास्त मि. | विविध तारीखें बंग | मुस | भा | चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.घटी पल | घं.मि. | सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अ.क.वि. | गति | अंग्रेजी ता. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| छत्र | १ | श | ५६ | १९ | २८ | २६ | पुन | ५७ | १३ | २८ | ४८ | व्या | ५२ | ११ | किं | २६ | १० | ३३ | ५८ | ५ | ५५ | ७ | ३० | २३ | २९ | १५ | कर्क ४१/३९ | २२/३५ | [illegible] | [illegible] | ६ | गुप्त नवरात्रि विधान प्रा. कर्के शुक्रः २८/३१ |
| श्रीवत्स | २ | र | ५७ | ४२ | २८ | ५९ | पु | ६० | ०० | - | - | ह | ५० | ४३ | बा | २६ | ४९ | ३३ | ५७ | ५ | ५५ | ७ | ३० | २४ | ३० | १६ | कर्क | | [illegible] | [illegible] | ७ | सर्वा. ०५/५५ उ.चंद्रदर्शन जगन्नाथरथयात्रा पुरी रविपुष्य A |
| धाता | ३ | चं | ६० | ०० | - | - | पु | ०० | १८ | ०६ | ०३ | व | ५० | २६ | तै | २८ | ५६ | ३३ | ५५ | ५ | ५६ | ७ | ३० | २५ | मो१ | १७ | कर्क | | [illegible] | [illegible] | ८ | सर्वा. ०६/०३ या.उभायां ४ राहुः हस्ते २ केतुः ०७/१६ B |
| ०७।५३ उ. | ३ | मं | ०० | ३३ | ०६ | ०९ | श्ले | ०४ | ५१ | ०७ | ५३ | सि | ५१ | १६ | ग | ०० | ३३ | ३३ | ५४ | ५ | ५६ | ७ | ३० | २६ | २ | १८ | सिंह ०४/५१ | ०७/५३ | [illegible] | [illegible] | ९ | भ. १८/५७ उ.सर्वा. ०५/५६ उ. ०७/५३ या.आश्लेषायां बुधः १२/२७ पुष्ये शुक्रः २१/३७ |
| १०।१५ या. | ४ | बु | ०४ | ५० | ०७ | ५२ | म | १० | ४७ | १० | १५ | व्य | ५३ | ०३ | वि | ०४ | ५० | ३३ | ५३ | ५ | ५७ | ७ | ३० | २७ | ३ | १९ | सिंह | | [illegible] | [illegible] | १० | भ. ०७/५२ या. A अहोरात्र कृतिकायां भौमः २५।५८ |
| १३।०४ उ. | ५ | गु | १० | १८ | १० | ०४ | पूफा | १७ | ४८ | १३ | ०४ | व | ५५ | ३० | बा | १० | १८ | ३३ | ५१ | ५ | ५७ | ७ | २९ | २८ | ४ | २० | कन्या ३४/४१ | १९/५० | [illegible] | [illegible] | ११ | स्कंदकुमार षष्ठी विश्व जनसंख्या दिवस सांई टेऊँराम जन्म |
| १६।०९ या. | ६ | शु | १६ | ३० | १२ | ३३ | उफा | २५ | २९ | १६ | ०९ | प | ५८ | १३ | तै | १६ | ३० | ३३ | ४९ | ५ | ५८ | ७ | २९ | २९ | ५ | २१ | कन्या | | [illegible] | [illegible] | १२ | महावीर स्वामी गर्भ कल्याणक विवस्वत सप्तमी वृषभे भौमः १८/५९ |
| मृत्यु | ७ | श | २२ | ५० | १५ | ०६ | ह | ३३ | १२ | १९ | १५ | शि | ६० | ०० | व | २२ | ५० | ३३ | ४८ | ५ | ५८ | ७ | २९ | ३० | ६ | २२ | कन्या | | [illegible] | [illegible] | १३ | भ. १५/०६ उ. २८/१९ या.चौमासी अष्टान्हिका विधान प्रा. जैन रोहिण्यां ३ गुरूः १९/२५ C |
| २२।०७ उ. | ८ | र | २८ | ४० | १७ | २६ | चि | ४० | २० | २२ | ०७ | शि | ०० | ४२ | ब | २८ | ४० | ३३ | ४६ | ५ | ५८ | ७ | २९ | ३१ | ७ | २३ | तुला ०६/५३ | ०८/४३ | [illegible] | [illegible] | १४ | C आचार्य विद्याचंद्र सूरि पुण्य त्रि.स्तु.जैन |
| पूर्णरवि | ९ | चं | ३३ | २२ | १९ | १९ | स्वा | ४६ | १८ | २४ | ३० | सि | ०२ | ३३ | बा | ०१ | ११ | ३३ | ४४ | ५ | ५९ | ७ | २८ | ३२ | ८ | २४ | तुला | | [illegible] | [illegible] | १५ | भड़ली नवमी |
| २६।१४ या. | १० | मं | ३६ | २७ | २० | ३४ | वि | ५० | ३६ | २६ | १४ | सा | ०३ | १८ | तै | ०५ | ०७ | ३३ | ४२ | ५ | ५९ | ७ | २८ | श्रा१ | ९ | २५ | वृश्चि. ३४/४२ | १९/५२ | [illegible] | [illegible] | १६ | कर्केऽर्कः ११/१९ बं.श्रावण मास प्रा. |
| ए.व्रत | ११ | बु | ३७ | ३८ | २१ | ०३ | अ | ५३ | ०२ | २७ | १३ | शु | ०२ | ४१ | व | ०७ | १७ | ३३ | ४० | ६ | ०० | ७ | २८ | २ | १० | २६ | वृश्चिक | | [illegible] | [illegible] | १७ | भ. ०८/५५ उ. २१/०३ या.सर्वा.अमृत सिद्धि ०६/०० उ. २७/१३ या.देवशयनी एकादशी व्रतं सर्वे. D |
| २७।२५ उ. | १२ | गु | ३६ | ५१ | २० | ४४ | ज्ये | ५३ | ३३ | २७ | २५ | शु | ००/५६ | ३१/४९ | ब | ०७ | २९ | ३३ | ३८ | ६ | ०० | ७ | २७ | ३ | ११ | २७ | धनु ५३/३३ | २७/२५ | [illegible] | [illegible] | १८ | D चातुर्मास प्रा.विष्णु शयनोत्सवः जिनदत्तसूरि पुण्यः दादामेला अजमेर ८७०वां |
| २३।११ या. २६।५५ उ. | १३ | शु | ३४ | १३ | १९ | ४१ | मू | ५२ | १६ | २६ | ५५ | ऐं | ५१ | ४० | कौ | ०५ | ४५ | ३३ | ३६ | ६ | ०१ | ७ | २७ | ४ | १२ | २८ | धनु | | [illegible] | [illegible] | १९ | पुष्येरविः २३/११ प्रदोष व्रतं सिंहे बुधः २०/४७ सं.चं.सू.स्त्री.पु.वाहन मंडूक वर्षा श्रेष्ठ मघायां |
| २५।४९ या. | १४ | श | २९ | ५७ | १८ | ०० | पूषा | ४९ | २९ | २५ | ४९ | वै | ४५ | १६ | ग | ०२ | १५ | ३३ | ३४ | ६ | ०१ | ७ | २७ | ५ | १३ | २९ | धनु | | [illegible] | [illegible] | २० | भ. १८/०० उ. २८/५७ या.पूर्णिमा व्रतं कोकिला व्रतं शिव शयनोत्सवः E |
| पूर्णिमा | १५ | र | २४ | २३ | १५ | ४७ | उषा | ४५ | ३२ | २४ | १४ | वि | ३७ | ५४ | ब | २४ | २३ | ३३ | ३१ | ६ | ०२ | ७ | २६ | ६ | १४ | ३० | मकर ०३/३४ | ०७/२७ | [illegible] | [illegible] | २१ | सर्वा. ०६/०२ उ. २४/१४ या.पूर्णिमा पुण्य गुरु पूर्णिमा व्यास पीठ पूजा |

## 卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐




## अ. १३ आषाढ शुक्ले ८ सूर्ये इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | २ | ५ | १ | ३ | १ | ३ | १० | ११ | ५ |
| अं. | २७ | २८ | ०१ | २३ | १६ | ०८ | २५ | १६ | १६ |
| क. | ५२ | ३८ | ०१ | १७ | ४५ | ४० | ०३ | २१ | २१ |
| वि. | ४९ | १२ | ३३ | ३२ | २३ | ३५ | ४२ | ०६ | ०६ |
| ग | ५७ | ७१८ | ४२ | ७७ | १२ | ७३ | ०१ | ३ | ३ |
| ति | १५ | ४१ | ०७ | २७ | १० | ४५ | २७ व | ११ | ११ |
| नक्षत्र | ३ पुन. | १ चित्रा | १ कृतिका | १ आश्ले. | ३ रोहिणी | १ पुष्य | १ पूभा. | ४ उभा. | १ हस्त |

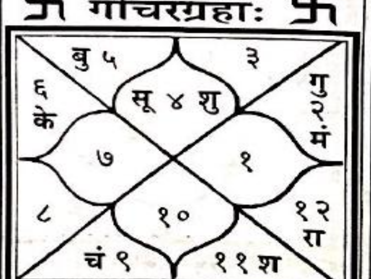
## ♣ कर्क संक्रान्ति फलम् – वन संभागीय ♣

आषाढ शुक्ले १० भौमे कर्केऽर्कः प्र.वा.५ न. ५ अम्य पुण्यकालः अद्यैव भौमवासरे प्रातःकालतः पुण्यप्रदः। वारनाम महोदरी–तस्कर, लोभी–प्रलोभी, प्रवंचक, धूर्त, चौर्यकर्मशील, संग्राहक, ठग पक्ष हेतु दिशा पथ सूचक शुभ फलद। नक्षत्र नाम मिश्रा–शासकीय पशुधन विकास योजना, पशुपालकों को सुविधा, डेयरी फार्म, दुग्ध उत्पादन पक्ष हेतु सुयोग। दिवा २ या.व्या.लेखक, पत्रकार, समाचार जगत, उपदेशक, विशिष्ट नीतिशील जन हेतु विकार कष्टद प्रभारक। दक्षिणे गमन, वायव्यां दृष्टि, गर करणे, वाहन गज, उपवाहन खर, रक्त वस्त्र, धनुषायुध, लौहपात्र, पयभक्षण, गोरोचन लेपन, पशु जाति, बिल्व पुष्प, कुक्कुट भूषण, श्वेत कंचुकी, प्रौढावस्था, उपविष्ट, मुहूर्त–४५, धान्य–गल्ला स्थिर समभाव, लाल वस्त्र, लोहा–इस्पात, सरिया, सुगंधित द्रव्य, सफेद रंग वस्तु, चांवल, सूत–कपास, पोस्ता, लहसुन, मिर्च, मसूर, हल्दी, कलपूर्जे, मशीनरी, सोना, चांदी, असगंध, कंदमूल पदार्थ कार्य व्यवसाय लाभद भावी उन्नत भाव गति, शुक्रोदय पश्चिमे, वत्स उत्तरे, राहु पश्चिमे, मूल भूमौ।

## अ. १४ आषाढ शुक्ले १५ सूर्ये इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ३ | ८ | १ | ४ | १ | ३ | १० | ११ | ५ |
| अं. | ०४ | २९ | ०५ | ०१ | १८ | १७ | २४ | १५ | १५ |
| क. | ३३ | ०९ | ५४ | २६ | ०८ | १६ | ५१ | ५८ | ५८ |
| वि. | ३४ | १९ | ३८ | ५६ | ५९ | ४६ | ३५ | ५० | ५० |
| ग | ५७ | ८५१ | ४१ | ५९ | ११ | ७३ | ०२ | ३ | ३ |
| ति | १६ | ३५ | ३१ | ०८ | ३८ | ४४ | ०६ व | ११ | ११ |
| नक्षत्र | १ पुष्य | १ उफा. | ३ कृतिका | १ मघा | ३ रोहिणी | १ आश्ले. | १ पूभा. | ४ उभा. | १ हस्त |

## 卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐




● **आषाढ़ी पूर्णिमा वायु प्रवाह फल** ● सूर्यास्तकाले पूर्व दिशा का वायु प्रवाह शुभ, आग्नेय कोण का रोगशोक कारक, दक्षिण का राष्ट्रचिंता, नैऋत्य का अल्पवर्षा, पश्चिम का वर्षाकारक, वायव्य का फसल न्यून, उत्तर तथा ईशान का सुभिक्षप्रद पूर्णिमा को वायु प्रवाह, मेघ शुभ, परन्तु वर्षा होना सम। बादल गाज से शीतकाल में मावठा। आषाढ वदी ८ को बादल गाज वर्षा होना भावी चातुर्मास में वर्षा विधायक। तथा आषाढी अमावस्या को मृगशिरा से पूर्वाफाल्गुनी तक ये ७ नक्षत्र सुभिक्षकारक। आषाढ सुदी ४-५ को बिजली गाज होना सम्पूर्ण धान्य उत्पादक गति रचना। आषाढ सुदी ५ को रवि–मंगल–शनिवार होने से कृषि हानि कुयोग तथा शुभ वार होने से सुभिक्ष। आषाढ सुदी ७ की वर्षा भाद्रपद में वर्षा विधायक सुदी नवमी की वर्षा शीतकाल मावठा कारक।

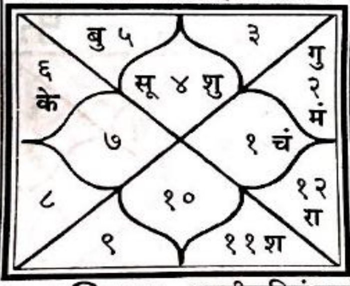
**B** मोहर्रम मास १ मुस.हिजरी साल १४४६ प्रा.    **E** वायु परीक्षा सन्यासी चातुर्मास प्रा.आश्लेषायां शुक्रः १८।०३

| श्रावण कृष्ण पक्षः संवत् २०८१ रा.शाकः १९४६ | | | | | | | | | | | | | | | | | दिन मान | | स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय | | सूर्यास्त | | विविध तारीखें | | | चन्द्रराशि प्रवेश काल | | सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट | | अंग्रेजी ता. | ✦जुलाई–अगस्त सन् २०२४ ई. वर्षा ऋतुः रवि दक्षिणायणे–उत्तरगोले✦ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रवियोगाः | तिथि | वार | घटी | पल | घं. | मि. | नक्षत्र | घटी | पल | घं. | मि. | योग | घटी | पल | करण | घटी | पल | घटी | पल | घं. | मि. | घं. | मि. | बंग | मुस | भा | रा.घटी पल | घं.मि. | रा.अ.क.वि. | गति | | ♣सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं♣ |
| सिद्धि | १ | चं | १७ | ५५ | १३ | १२ | श्र | ४० | ४७ | २२ | २१ | प्री | २९ | ५० | कौ | १७ | ५५ | ३३ | २९ | ६ | ०२ | ७ | २६ | ७ | १५ | ३१ | मकर | | [illegible] | [illegible] | २२ | सर्वा. ०६/०२ उ. २२/२१ या.अशून्य शयन व्रतारंभः सिंहे भानुः १३/१४ |
| उत्पात | २ | मं | १० | ५३ | १० | २३ | ध | ३५ | ३९ | २० | १८ | आ | २१ | २२ | ग | १० | ५३ | ३३ | २७ | ६ | ०३ | ७ | २५ | ८ | १६ | श्रा१ | कुंभ ०८/१४ | ०९/२१ | [illegible] | [illegible] | २३ | भ. २०/५७ उ.पंचक ०९/२१ उ.फलद्वितीया रा.श्रावण मास प्रा.A |
| चौ.व्रत | ३ | बु | ०३ | ३९ | ०७ | ३० | श | ३० | २८ | १८ | १५ | सौ | १२ | ४८ | वि | ०३ | ३९ | ३३ | २४ | ६ | ०३ | ७ | २५ | ९ | १७ | २ | कुंभ | | [illegible] | [illegible] | २४ | भ. ०७/३० या.श्रावणी चतुर्थी व्रतं चंद्रोदय रात्रि २१/५४ |
| क्षय | ४ | बु | ५६ | ३३ | २८ | ४० | 0 | ० | ० | ० | ० | 0 | ० | ० | 0 | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | | ० ० | ० | ० | A श्रीतिलक एवं आजाद ज. |
| मुद्गर | ५ | गु | ४९ | ४८ | २५ | ५८ | पूभा | २५ | ३२ | १६ | १७ | शो | ०४/५६ | २२/१६ | कौ | २३ | ०६ | ३३ | २२ | ६ | ०४ | ७ | २५ | १० | १८ | ३ | मीन ११/४४ | १०/४५ | [illegible] | [illegible] | २५ | नाग पंचमी मरूस्थली बंगालेऽपि |
| १४।३० उ. | ६ | शु | ४३ | ३७ | २३ | ३० | उभा | २१ | ०५ | १४ | ३० | सु | ४८ | ३९ | ग | १६ | ३७ | ३३ | १९ | ६ | ०४ | ७ | २४ | ११ | १९ | ४ | मीन | | [illegible] | [illegible] | २६ | भ. २३/३० उ.सर्वा.अमृतसिद्धि १४/३० उ. ३०/०५ या.रोहिण्यां भौमः २८/३८ |
| १३।०१ या. | ७ | श | ३८ | ०८ | २१ | १९ | रे | १७ | १८ | १३ | ०१ | धृ | ४१ | ३८ | वि | १० | ४६ | ३३ | १७ | ६ | ०५ | ७ | २३ | १२ | २० | ५ | मेष १७/१८ | १३/०१ | [illegible] | [illegible] | २७ | भ. १०/२३ या.पंचक १३/०१ या. |
| आनंद | ८ | र | ३३ | २७ | १९ | २८ | अ | १४ | १६ | ११ | ४८ | शू | ३५ | १५ | बा | ०५ | ४१ | ३३ | १४ | ६ | ०५ | ७ | २३ | १३ | २१ | ६ | मेष | | [illegible] | [illegible] | २८ | सर्वा. ०६/०५ उ. ११/४८ या.वन महोत्सव दिवस |
| चर | ९ | चं | २९ | ३६ | १७ | ५६ | भ | १२ | ०४ | १० | ५५ | गं | २९ | ३३ | तै | ०१ | २५ | ३३ | १२ | ६ | ०६ | ७ | २२ | १४ | २२ | ७ | वृषभ २६/३९ | १६/४५ | [illegible] | [illegible] | २९ | भ. २९/१८ उ. B सं.चं.चं.स्त्री.स्त्री.वाहन खर वर्षा मध्यम |
| गद | १० | मं | २६ | ३८ | १६ | ४५ | कृ | १० | ४३ | १० | २३ | वृ | २४ | ३४ | वि | २६ | ३८ | ३३ | ०९ | ६ | ०६ | ७ | २२ | १५ | २३ | ८ | वृषभ | | [illegible] | [illegible] | ३० | भ. १६/४५ या.सर्वा. ०६/०६ उ. १०/२३ या.रोहिण्यां ४ गुरूः २६/३९ |
| ए.व्रत | ११ | बु | २४ | ३३ | १५ | ५६ | रो | १० | १५ | १० | १३ | ध्रु | २० | १८ | बा | २४ | ३३ | ३३ | ०६ | ६ | ०७ | ७ | २१ | १६ | २४ | ९ | मिथुन ४०/२२ | २२/१६ | [illegible] | [illegible] | ३१ | सर्वा. ०६/०७ उ. ३०/०७ या.कामदा ११ व्रतं सर्वे.मघायां सिंहे शुक्रः १४/३३ |
| प्रदोष | १२ | गु | २३ | २६ | १५ | २९ | मृ | १० | ४२ | १० | २४ | व्या | १६ | ४७ | तै | २३ | २६ | ३३ | ०३ | ६ | ०७ | ७ | २१ | १७ | २५ | १० | मिथुन | | [illegible] | [illegible] | अ१ | प्रदोषव्रतं अगस्त मास ८ ता. ३१ प्रा. |
| पद्म | १३ | शु | २३ | १९ | १५ | २७ | आ | १२ | ०८ | १० | ५९ | ह | १४ | ०३ | व | २३ | १९ | ३३ | ०० | ६ | ०८ | ७ | २० | १८ | २६ | ११ | कर्क ५८/५५ | २९/४२ | [illegible] | [illegible] | २ | भ. १५/२७ उ. २७/३६ या.सर्वा. १०/५९ उ. ३०/०८ या.आश्लेषायां रविः २२/०६ मास शिवरात्रि B |
| छत्र | १४ | श | २४ | १७ | १५ | ५१ | पुन | १४ | ३७ | ११ | ५९ | व | १२ | ११ | श | २४ | १७ | ३२ | ५८ | ६ | ०८ | ७ | १९ | १९ | २७ | १२ | कर्क | | [illegible] | [illegible] | ३ | C नक्तव्रतारंभः |
| अमावस | ३० | र | २६ | २६ | १६ | ४३ | पु | १८ | १४ | १३ | २६ | सि | ११ | १३ | ना | २६ | २६ | ३२ | ५५ | ६ | ०९ | ७ | १९ | २० | २८ | १३ | कर्क | | [illegible] | [illegible] | ४ | सर्वा. ०६/०९ उ. १३/२६ या.रवि पुष्यः ०६/०९ उ. १३/२६ या.देवपितृकार्ये हरियाली अमावस्या C |






卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐




अ.१५ श्रावण कृष्णे ८ सूर्ये इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ३ | ० | १ | ४ | १ | ३ | १० | ११ | ५ |
| अं. | ११ | १० | १० | ०७ | १९ | २५ | २४ | १५ | १५ |
| क. | १४ | ०० | ४३ | १३ | २८ | ५२ | ३५ | ३६ | ३६ |
| वि. | ४४ | ४७ | २६ | ४० | ४२ | ५२ | ०४ | ३४ | ३४ |
| ग | ५७ | ८३३ | ४० | ३५ | ११ | ७३ | ०२/४२ | ३ | ३ |
| ति | २२ | १४ | ५४ | २३ | ०३ | ४४ | व | ११ | ११ |
| नक्षत्र | पुष्य ३ | आश्लेषा ४ | रोहिणी २ | मघा ३ | रोहिणी ३ | आर्द्रा ३ | पू.भा. २ | उ.भा. ४ | हस्त २ |

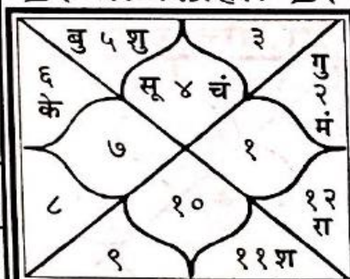
♣ ग्रह गोचरीय फलश्रुतिः ♣

षड़ाष्टक शनि सूर्य का, समसप्तक पशचक्र। आंदोलित जन साधना, सेनाकर्मी वक्र।। शासकीय सेवा विषय, गतिरोध संदेश। शासन सेवा मध्य में नहीं सुखद गणवेश।। शुभारंभ श्रावण दिवस, मेघ गाज यदि लक्ष। निर्णय शकुन शास्त्र का, वर्षा गति सुदक्ष।। चित्रा स्वाति विशाखा में, मेघ गाज गति रंग। सुख सुभिक्ष की धारणा, निर्णय शकुन प्रसंग।। अश्विनी कृतिका रोहिणी, बदी श्रावण आलक्ष। मेघ गाज वर्षा यदि, सुख सुभिक्ष का पक्ष।। शुक्ला श्रावण सप्तमी, मेघ गाज आकाश। लक्षण योग सुभिक्ष का, निर्णय शास्त्र विकास।। चलन कलन शनि सूर्य का, निर्धन जग अभिसार। सेवाकर्मी कोप से, शासन तंत्र विचार।। अर्थ पक्ष अभिनव गति, धनिक त्रास अभियोग। बैंक कोष मुद्रा विषय, नीति नव्य प्रयोग।।

अ.१६ श्रावण कृष्णे ३० सूर्ये इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ३ | ३ | १ | ४ | १ | ४ | १० | ११ | ५ |
| अं. | १७ | १२ | १५ | ०९ | २० | ०४ | २४ | १५ | १५ |
| क. | ५६ | ५२ | २७ | ५० | ४४ | २८ | १४ | १४ | १४ |
| वि. | ४२ | १५ | ३८ | ४० | ०१ | ५८ | ३० | १८ | १८ |
| ग | ५७ | ७४५ | ४० | ०३ | १० | ७३ | ०३/१५ | ३ | ३ |
| ति | २९ | १६ | ११ | ३० | २२ | ४३ | व | ११ | ११ |
| नक्षत्र | आश्ले. १ | पुष्य ३ | रोहिणी २ | मघा ३ | रोहिणी ४ | मघा २ | पू.भा. २ | उ.भा. ४ | हस्त २ |

卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐




**वत्स विचार** — भ्रमतीन्द्रदिशं वत्सो मासानां च त्रिकंत्रिकम्। आदौ भाद्रपदं कृत्वा सव्यतो दिक्चतुष्टयम्।। यात्राविवादसम्बंधे द्वारे च गृहहर्म्भयोः। भूपतेर्मिलने युद्धे वत्सस्याभिमुखेत्यजेत्।। नोट – यहां पर भाद्रपद मास से तीन तीन माह पूर्वादि दिशा सव्य क्रम से लिखी हैं, परन्तु मतांतर से सिंहादि संक्रान्ति क्रम से वत्सवास का विचार किया जाता है। ● **ज्वालामुखी योग–बिछुड़ा चन्द्र विषयक सूत्र** ● प्रतिपदा में मूल, पंचमी में भरणी, अष्टमी में कृतिका, नवमी में रोहिणी तथा दशमी में आश्लेषा नक्षत्र का योग–समय ज्वालामुखी योग का सूचक–यह कालांश नेष्टफल संज्ञा का उपलक्षक। तथापि रवियोग–सर्वार्थ अमृत सुयोग दिवस भी बनते यह कुयोग नगण्य बन जाता है ● तथा वृश्चिक नीच राशि का चन्द्र समय–काल बिछुड़ा संज्ञक माना जाता है। ● **सुभाषित नीतिवचन** ● अस्ति पुत्रो वशे यस्य भृत्यो भार्या तथैव च। अभावे सति सन्तोषः स्वर्गस्थोऽसौ महीतले।। किं जातैर्बुभिः पुत्रैः शोकसन्तापकारकैः। वरमेकः कुलालम्बी यत्र विश्राम्यते कुलम्।।

# श्रावण शुक्ल पक्षः संवत् २०८१ रा.शाकः १९४६

## ✦ अगस्त सन् २०२४ ई. वर्षा ऋतुः रवि दक्षिणायणे–उत्तरगोले ✦

♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣

| रवियोगाः | तिथि | वार | घटी | पल | घं. | मि. | नक्षत्र | घटी | पल | घं. | मि. | योग | घटी | पल | करण | घटी | पल | दिनमान घटी | दिनमान पल | स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं. | सूर्योदय मि. | सूर्यास्त घं. | सूर्यास्त मि. | विविध तारीखें बंग | मुस | भा | चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.घटी पल | घं.मि. | सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अं.क.वि. | गति | अंग्रेजी ता. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सौम्य | १ | चं | २९ | ४७ | १८ | ०३ | श्ले | २३ | ०१ | १५ | २२ | व्य | ११ | १२ | ब | २९ | ४७ | ३२ | ५२ | ६ | ०९ | ७ | १८ | २१ | २९ | १४ | सिंह २३/०१ | १५/२२ | [illegible] | [illegible] | ५ | चंद्रदर्शन वक्री बुधः १०/२६ |
| कालदंड | २ | मं | ३४ | १८ | १९ | ५२ | म | २८ | ५६ | १७ | ४४ | व | १२ | ०५ | बा | ०१ | ५३ | ३२ | ४९ | ६ | १० | ७ | १७ | २२ | स१ | १५ | सिंह | | [illegible] | [illegible] | ६ | सिंजारा श्री करपात्री ज.श्री देवपुरी पुण्यः कैलाश सीकर (राज.) सफर मास २ मुस. |
| १०।३१ उ. | ३ | बु | ३९ | ५० | २२ | ०६ | पूफा | ३५ | ५१ | २० | ३१ | प | १३ | ४८ | तै | ०६ | ५७ | ३२ | ४६ | ६ | १० | ७ | १६ | २३ | २ | १६ | कन्या ५२/४३ | २७/१५ | [illegible] | [illegible] | ७ | स्वर्ण गौरी–हरियाली तीज–मधुश्रवा तीज झुला तीज |
| २३।३४ या. | ४ | गु | ४६ | ०६ | २४ | ३७ | उफा | ४३ | २९ | २३ | ३४ | शि | १६ | १० | व | १२ | ५४ | ३२ | ४२ | ६ | ११ | ७ | १६ | २४ | ३ | १७ | कन्या | | [illegible] | [illegible] | ८ | भ. ११/२० उ. २४/३७ या.वरद विनायक दूर्वा चतुर्थी व्रतं |
| २६।४५ उ. | ५ | शु | ५२ | ३९ | २७ | १४ | ह | ५१ | २४ | २६ | ४५ | सि | १८ | ५५ | ब | १९ | २२ | ३२ | ३९ | ६ | ११ | ७ | १५ | २५ | ४ | १८ | कन्या | | [illegible] | [illegible] | ९ | नागपंचमी देशाचारीय राष्ट्रीय अगस्त क्रांति दि. |
| २९।४९ या. | ६ | श | ५८ | ५५ | २९ | ४५ | चि | ५९ | ०३ | २९ | ४९ | सा | २१ | ४० | कौ | २५ | ५१ | ३२ | ३६ | ६ | १२ | ७ | १४ | २६ | ५ | १९ | तुला २५/१७ | १६/१८ | [illegible] | [illegible] | १० | सर्वा. २९/४९ उ. २८/१२ या.वर्ण षष्ठी श्री कल्कि ज. |
| लुम्बक | ७ | र | ६० | ०० | — | — | स्वा | ६० | ०० | — | — | शु | २४ | ०१ | ग | ३१ | ४५ | ३२ | ३३ | ६ | १२ | ७ | १३ | २७ | ६ | २० | तुला | | [illegible] | [illegible] | ११ | श्री तुलसी ज.पूफायां शुक्रः ११/०८ बुधास्त प. १८/०७ शील सप्तमी सिंधु |
| छत्र | ७ | चं | ०४ | १८ | ०७ | ५५ | स्वा | ०५ | ५२ | ०८ | ३३ | शु | २५ | ३२ | व | ०४ | १८ | ३२ | ३० | ६ | १३ | ७ | १३ | २८ | ७ | २१ | वृश्चि. ५५/०७ | २८/१५ | [illegible] | [illegible] | १२ | भ. ०७/५५ उ. २०/४९ या.युवा दिवस दुर्वाष्टमी |
| १०।४५ उ. | ८ | मं | ०८ | १७ | ०९ | ३१ | वि | ११ | १९ | १० | ४५ | ब्र | २५ | ५१ | ब | ०८ | १७ | ३२ | २७ | ६ | १३ | ७ | १२ | २९ | ८ | २२ | वृश्चिक | | [illegible] | [illegible] | १३ | दुर्गाष्टमी सिंधु |
| पूर्णरवि | ९ | बु | १० | २७ | १० | २४ | अ | १४ | ५८ | १२ | १३ | ऐं | २४ | ४० | कौ | १० | २७ | ३२ | २३ | ६ | १४ | ७ | ११ | ३० | ९ | २३ | वृश्चिक | | [illegible] | [illegible] | १४ | सर्वा.अमृत सिद्धि ०६/१४ उ. १२/१३ या. |
| १२।५३ या. | १० | गु | १० | ३३ | १० | २७ | ज्ये | १६ | ३७ | १२ | ५३ | वै | २१ | ५१ | ग | १० | ३३ | ३२ | २० | ६ | १४ | ७ | १० | ३१ | १० | २४ | धनु १६/३७ | १२/५३ | [illegible] | [illegible] | १५ | भ. २२/१० उ.मृगशिरायां भौमः २८/३६ स्वतंत्रता दिवस ७८ वां |
| ए.व्रत | ११ | शु | ०८ | ३४ | ०९ | ४० | मू | १६ | १३ | १२ | ४४ | वि | १७ | २३ | वि | ०८ | ३४ | ३२ | १७ | ६ | १४ | ७ | ०९ | भा१ | ११ | २५ | धनु | | [illegible] | [illegible] | १६ | भ. ०९/४० या.सिंहेऽर्कः १९/४४ मघायां रविः १९/४४ पवित्रा ११ व्रतं सर्वे.बं.भाद्रपद मास प्रा. A |
| मातंग | १२ | श | ०४ | ३८ | ०८ | ०६ | पूषा | १३ | ५५ | ११ | ४९ | प्री | ११ | २१ | बा | ०४ | ३८ | ३२ | १३ | ६ | १५ | ७ | ०८ | २ | १२ | २६ | मकर २८/०५ | १७/२९ | [illegible] | [illegible] | १७ | शनि प्रदोष व्रतं विष्णु पवित्रर्पण पर्व A सं.चं.चं.स्त्री.पु.वाहन जम्बू वर्षा नेष्ट |
| क्षय | १३ | श | ५९ | ०२ | २९ | ५१ | 0 | ० | ० | ० | ० | 0 | ० | ० | 0 | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | | ० ० | ० | ० | B कोकिलाव्रत पूर्णता श्रावणी उपाकर्म संस्कृत दिवस अमरनाथ यात्रा पूर्ण प्रतापमल पुण्य स्था.जैन |
| १०।१५ उ. | १४ | र | ५२ | ०५ | २७ | ०५ | उषा | ०९ | ५९ | १० | १५ | आ | ०३/५५ | ५८/३२ | ग | २५ | ४१ | ३२ | १० | ६ | १५ | ७ | ०७ | ३ | १३ | २७ | मकर | | [illegible] | [illegible] | १८ | भ. २७/०५ उ. सर्वा. ०६/१५ उ. १०/१५ या.मरू.के.मिश्रीमल ज.स्था.जैन वक्री पूभायां १ शनिः २४/३३ |
| ०८।१० या. | १५ | चं | ४४ | १० | २३ | ५५ | श्र | ०४/५८ | ४७/४४ | ०८/२९ | १०/४५ | शो | ४६ | १८ | वि | १८ | १२ | ३२ | ०६ | ६ | १६ | ७ | ०६ | ४ | १४ | २८ | कुंभ ३१/५० | १९/०१ | [illegible] | [illegible] | १९ | भ. १३/३३ या.सर्वा. ०६/१६ उ. ०८/१० या.पंचक १९/०१ उ.रक्षाबंधन भद्रोपरांत पूर्णिमा व्रतं B |

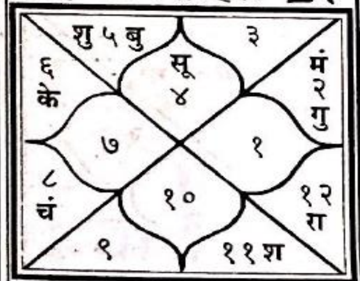








### निर्णयसागरीय 卐 गोचरग्रहाः 卐




### अ. १७ श्रावण शुक्ले ८ भौमे इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ३ | ७ | १ | ४ | १ | ४ | १० | ११ | ५ |
| अं. | २६ | ०१ | २१ | ०७ | २२ | १५ | २३ | १४ | १४ |
| क. | ३४ | ०० | २५ | १३ | १३ | ३२ | ४२ | ४५ | ४५ |
| वि. | ३९ | २२ | २५ | ५३ | २५ | १३ | ४९ | ४१ | ४१ |
| ग | ५७ | ७४१ | ३९ | ४१/३९ | ०९ | ७३ | ०३/५० | ३ | ३ |
| ति | ३८ | २० | १२ | व | २२ | ३९ | व | ११ | ११ |
| न क्षत्र | आश्ले. ३ | विशाखा ४ | रोहिणी ४ | मघा ३ | रोहिणी ४ | पूफा. ४ | पूभा. २ | उभा. ४ | हस्त २ |

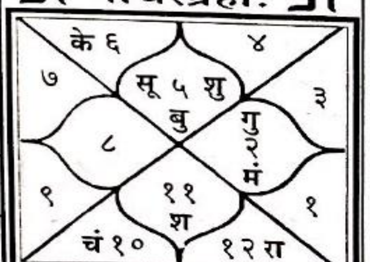
### ♣ सिंह संक्रान्ति फलम् – तीर्थ संभागीय ♣

श्रावण शुक्ले ११ शुक्र सिंहेऽर्कः प्र.वा.४ न. ५ अस्य पुण्यकालः अद्यैव शुक्रवासरे मध्यान्हवेलातः पुण्यप्रद। वारनाम मिश्रा–शामकीय पशु धन विकास योजना, पशु कल्याण केन्द्र वृद्धि, दुग्ध संग्राहक वर्ग को लाभद सुयोग। नक्षत्र नाम घोरा–आदिवासी, अल्पसंख्यक, निर्धन, असहाय, वयोवृद्ध, अनुसूचित जाति वर्ग हेतु शामकीय नवीन योजना लाभ। रात्रि १ वा.व्या.देशद्रोही, भ्रष्टपथी, आतंकवादी, विस्फोटक, हिंसा प्रसारकगण हेतु कष्टद प्रभावक। पूर्वे, नैऋत्यां दृष्टि, बव करणे, वाहन–सिंह, उपवाहन–गज, श्वेत वस्त्र, भुशुंडायुध, स्वर्णपात्र, अन्न भक्षण, कस्तूरी लेपन, देवजाति, पुन्नागपुष्प, पिंगज भूषण, विचित्र कंचुकी, बालावस्था, उपविष्ट मुहूर्त–३०, धान्य–गल्ला स्थिर समभाव, सफेद वस्त्र, सोना, चांदी, घृत, कपास, कंदमूल पदार्थ, चांवल, सुगंधी पदार्थ, सफेद रंग वस्तु, गहूँ, मक्का, ज्वार, बाजरा, चना, जौ, मूंग, मोठ, साबूदाना आदि वस्तु कार्य लाभद भावी तेज धारणा। शुक्रोदय पश्चिमे वत्स पूर्वे, राहु उत्तरे, मूल स्वर्गे।

### अ. १८ श्रावण शुक्ले १५ चंद्रे इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ४ | ९ | १ | ४ | १ | ४ | १० | ११ | ५ |
| अं. | ०२ | २२ | २५ | ०२ | २३ | २२ | २३ | १४ | १४ |
| क. | २० | ०९ | १८ | २६ | ०७ | ५४ | १९ | २६ | २६ |
| वि. | ३९ | ४२ | ५० | ०७ | ५० | ०० | ०१ | ३६ | ३६ |
| ग | ५७ | ८८१ | ३८ | ५०/४१ | ०८ | ७३ | ०४/०८ | ३ | ३ |
| ति | ४४ | ३१ | २९ | व | ३८ | ३६ | व | ११ | ११ |
| न क्षत्र | मघा २ | श्रवण ४ | मृग. १ | मघा १ | रोहिणी ४ | पूफा. ३ | पूभा. १ | उभा. ४ | हस्त २ |

### निर्णयसागरीय 卐 गोचरग्रहाः 卐



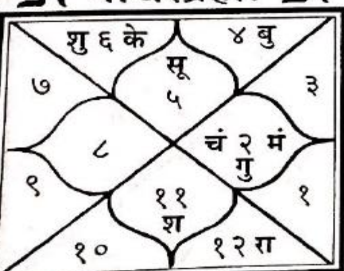

● **आयुवृद्धि सूत्र** ● अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेवितः। चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुविद्या यशोबलम्॥ ● **व्यवहार नीति सूत्र वचन** ● रे रे चातक ! सावधान मनसा मित्र ! क्षणं श्रूयतामम्भोदा बहवो वसन्ति गगने सर्वेऽपि नेतादृशाः। केचिद् वृष्टिभिराद्रयन्ति वसुधां गर्जन्ति केचिद् वृथा, यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः॥ ● **सुभाषित नीतिवचन सूत्र** ● यदि सन्ति गुणाः पुसां विकसन्त्येव ते स्वयम्। न हि कस्तूरिकामोदः शपथेन विभाव्यते॥ अनन्तशास्त्रं बहुला च विद्या अल्पश्च कालो बहुविघ्नता च। यत्सारभूतं तदुपासनीयं हंसो यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात्। धनहीनो न हीनश्च धनिकः स सुनिश्चयः। विद्यारत्नेन यो हीनः सः हीनः सर्ववस्तुषु॥

| भाद्रपद कृष्ण पक्षः संवत् २०८१ रा.शाकः १९४६ | | | | | | | | | | | | | | | | | | दिन मान | | स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय | | सूर्यास्त | | विविध तारीखें | | | चन्द्रराशि प्रवेश काल | | सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट | | अंग्रेजी ता. | ✦अगस्त-सितम्बर सन् २०२४ ई. वर्षा-शरद ऋतुः रवि दक्षिणायणे-उत्तरगोले✦ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रवियोगाः | तिथि | वार | घटी | पल | घं. | मि. | नक्षत्र | घटी | पल | घं. | मि. | योग | घटी | पल | करण | घटी | पल | घटी | पल | घं. | मि. | घं. | मि. | बंग | मुस | भा | रा.घटी पल | घं.मि. | रा.अ.क.वि. | गति | | ♣सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा-मिनटों में ही अंकित किये हैं♣ |
| मृत्यु | १ | मं | ३५ | ४२ | २० | ३३ | श | ५२ | १४ | २७ | १० | अ | ३६ | ३७ | बा | ०९ | ५८ | ३२ | ०३ | ६ | १६ | ७ | ०५ | ५ | १५ | २९ | कुंभ | | [illegible] | [illegible] | २० | मृगशिरायां १ गुरुः १६/१३ A अशून्य शयन व्रत पूर्ण |
| पद्म | २ | बु | २७ | ०६ | १७ | ०७ | पूभा | ४५ | ४२ | २४ | ३४ | सु | २६ | ५० | तै | ०१ | २४ | ३१ | ५९ | ६ | १७ | ७ | ०४ | ६ | १६ | ३० | मीन ३२/१८ | ११/१२ | [illegible] | [illegible] | २१ | भ. २७/२६ उ.कज्जली सातुड़ी तीज चंद्रोदय रात्रि २०/२५ फल द्वितीया A |
| चौ.व्रत | ३ | गु | १८ | ४४ | १३ | ४६ | उभा | ३९ | ३१ | २२ | ०६ | धृ | १७ | १३ | वि | १८ | ४४ | ३१ | ५६ | ६ | १७ | ७ | ०४ | ७ | १७ | ३१ | मीन | | [illegible] | [illegible] | २२ | भ. १३/४६ या.सर्वा. २२/०६ उ.बहुला चतुर्थी व्रतं चंद्रोदय रात्रि २१/०१ शरद ऋतु प्रा. B |
| श्रीवत्स | ४ | शु | १० | ५४ | १० | ३९ | रे | ३४ | ०२ | १९ | ५४ | शू | ०८/५९ | ०४/३७ | बा | १० | ५४ | ३१ | ५२ | ६ | १८ | ७ | ०३ | ८ | १८ | भा१ | मेष ३४/०२ | १९/५४ | [illegible] | [illegible] | २३ | सर्वा. ३०/१८ या.अमृतसिद्धि ०६/१८ उ. १९/५४ या.पंचक १९/५४ या.रा.भाद्रपद मास प्रा. |
| १८।०६ उ. | ५ | श | ०३ | ५६ | ०७ | ५२ | अ | २९ | ३० | १८ | ०६ | वृ | ५२ | ०१ | तै | ०३ | ५६ | ३१ | ४९ | ६ | १८ | ७ | ०२ | ९ | १९ | २ | मेष | | [illegible] | [illegible] | २४ | भ. २९/३१ उ.हलचंदनषष्ठी व्रतं चंद्रोदय रात्रि २२/१५ कन्यायां शुक्रः २५/१६ अगस्त्य उदय ०९/०१ |
| क्षय | ६ | श | ५८ | ०३ | २९ | ३१ | 0 | ० | ० | ० | ० | 0 | ० | ० | 0 | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | | ० ० | ० | ० | B उफायां शुक्रः ०८/०० वक्री आश्लेषायां कर्के बुधः ०६/३८ कन्यायां भानुः २०/२५ |
| १६।४५ या. | ७ | र | ५३ | २३ | २७ | ३९ | भ | २६ | ०७ | १६ | ४५ | ध्रु | ४५ | २६ | वि | २५ | ३३ | ३१ | ४५ | ६ | १८ | ७ | ०१ | १० | २० | ३ | वृषभ ४०/२८ | २२/३० | [illegible] | [illegible] | २५ | भ. १६/३२ या. C श्रीजाम्भोजी ज.विश्नोई पंथ मिथुन भौमः १५/२६ |
| सुस्थिर | ८ | चं | ५० | ०३ | २६ | २० | कृ | २४ | ०१ | १५ | ५५ | व्या | ३९ | ५४ | बा | २१ | ३२ | ३१ | ४२ | ६ | १९ | ७ | ०१ | ११ | २१ | ४ | वृषभ | | [illegible] | [illegible] | २६ | सर्वा. १५/५५ उ. ३०/१९ या.श्रीकृष्ण जन्माष्टमी C |
| मातंग | ९ | मं | ४८ | ०६ | २५ | ३३ | रो | २३ | १७ | १५ | ३८ | ह | ३५ | २९ | तै | १८ | ५४ | ३१ | ३८ | ६ | १९ | ६ | ५९ | १२ | २२ | ५ | मिथुन ५३/२६ | २७/४२ | [illegible] | [illegible] | २७ | गोगानवमी नन्द महोत्सवः बुधोदय पू. १४/१८ |
| अमृत | १० | बु | ४७ | ३१ | २५ | २० | मृ | २३ | ५३ | १५ | ५३ | व | ३२ | ०९ | व | १७ | ३८ | ३१ | ३५ | ६ | २० | ६ | ५८ | १३ | २३ | ६ | मिथुन | | [illegible] | [illegible] | २८ | भ. १३/२३ उ. २५/२० या.सर्वा. ०६/२० उ. १५/५३ या.मार्गी बुधः २६/४४ |
| ए.व्रत | ११ | गु | ४८ | १५ | २५ | ३८ | आ | २५ | ४९ | १६ | ४० | सि | २९ | ५३ | ब | १७ | ४३ | ३१ | ३१ | ६ | २० | ६ | ५७ | १४ | २४ | ७ | मिथुन | | [illegible] | [illegible] | २९ | सर्वा. १६/४० उ.अजा. ११ व्रतं स्मा.वै.राष्ट्रीय खेल दिवस |
| लुम्बक | १२ | शु | ५० | १३ | २६ | २५ | पुन | २८ | ५८ | १७ | ५६ | व्य | २८ | ३५ | कौ | १९ | ०४ | ३१ | २७ | ६ | २१ | ६ | ५६ | १५ | २५ | ८ | कर्क १३/०४ | ११/३४ | [illegible] | [illegible] | ३० | सर्वा. १७/५६ या.पूफायां रविः १५/४६ अजा ११ व्रतं निम्बा.गोवत्स पूजा बछ बारस D |
| प्रदोष | १३ | श | ५३ | २१ | २७ | ४१ | पु | ३३ | १७ | १९ | ४० | व | २८ | १३ | ग | २१ | ३८ | ३१ | २४ | ६ | २१ | ६ | ५४ | १६ | २६ | ९ | कर्क | | [illegible] | [illegible] | ३१ | भ २७/४१ उ.शनि प्रदोषव्रतं पर्युषण पर्व प्रा.जैन D सं.सू.चं.स्त्री.स्त्री वाहन मूषक वर्षा मध्यम |
| वज्र | १४ | र | ५७ | ३२ | २९ | २२ | श्ले | ३८ | ३८ | २१ | ४९ | प | २८ | ४१ | वि | २५ | १८ | ३१ | २० | ६ | २१ | ६ | ५३ | १७ | २७ | १० | सिंह ३८/३८ | २१/४९ | [illegible] | [illegible] | सि१ | भ. १६/२९ या.मास शिवरात्रि हस्ते शुक्रः २९/१३ सितंबर मास ९ ता. ३० प्रा. |
| अमावस | ३० | चं | ६० | ०० | - | - | म | ४४ | ५६ | २४ | २० | शि | २९ | ५५ | च | २९ | ५९ | ३१ | १६ | ६ | २२ | ६ | ५२ | १८ | २८ | ११ | सिंह | | [illegible] | [illegible] | २ | पितृकार्ये सोमवती अमावस्या कुशोत्पाटिनी अमावस्या पिठोरी ३० E |
| अमावस | ३० | मं | ०२ | ३८ | ०७ | २५ | पूफा | ५२ | ०१ | २७ | ११ | सि | ३१ | ४७ | ना | ०२ | ३८ | ३१ | १३ | ६ | २२ | ६ | ५१ | १९ | २९ | १२ | सिंह | | [illegible] | [illegible] | ३ | देवकार्ये भौमवती अमावस्या नक्त व्रत पूर्ण E सती पूजा अग्रवंशे लोहार्गल यात्रा |




निर्णयसागरीय

卐 गोचरग्रहाः 卐




अ. १९ भाद्रपद कृष्णे ८ चंद्रे इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ४ | १ | १ | ३ | १ | ५ | १० | ११ | ५ |
| अं. | ०९ | ०४ | २९ | २७ | २४ | ०१ | २२ | १४ | १४ |
| क. | ०५ | ३० | ४५ | ४४ | ०५ | २८ | ४९ | ०४ | ०४ |
| वि. | २० | ३० | ४३ | २० | ३३ | ५७ | ११ | २० | २० |
| ग | ५७ | ८१७ | ३७ | १८/१४ | ०७ | ७३ | ०४/२४ | ३ | ३ |
| ति | ५५ | ३१ | ३७ | व | ४२ | ३२ | व | ११ | ११ |
| नक्षत्र | मघा ३ | कृत्तिका १ | मृग. २ | आश्ले. ४ | मृगशिरा १ | उफा. २ | पूभा. १ | उभा. ४ | हस्त २ |

♣ ग्रह गोचरीय फलश्रुतिः ♣

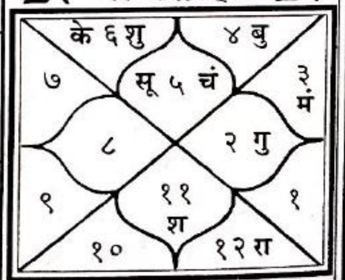
सम सप्तक शनि सूर्य का, षड़ाष्टक पशचक्र। आंदोलित जन साधना, सेवाकर्मी वक्र॥ शासकीय सेवा विषय, गतिरोध संदेश। शासन सेवा मध्य में, नहीं सुखद गणवेश॥ वक्रचाल शनि देव की, घटबढ़ बने विशेष। चतुरजीव लाभी बने, देख समय को शेष॥ क्रूर सौम्य वार घट बढ़ करे, मावस चंद्र भौम सुसंग। तेजी से मंदी-मंदी से तेजी बनें, वस्तु विविध प्रसंग॥ बुधादित्य की स्थिति, कोविद लाभ विशेष। शिक्षा शिक्षक पंथ में, लाभद रूप निवेश॥ अदल बदल नेता करें, लोक तंत्र परिताप। वक्र रूप शनि देव का, नेता दल संताप॥ राहु शुक्र सप्तम गति, भौतिक बुद्धि अपार। वस्तु सुगंधी गंध की, तेजी पंथ निहार॥ वस्तु द्रव्य रस वर्ग की, तरल-जलज का कक्ष। भाव ताव नूतन गति, पंथ तेज अभिलक्ष॥

अ. २० भाद्रपद कृष्णे ३० भौमे इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ४ | ४ | २ | ३ | १ | ५ | १० | ११ | ५ |
| अं. | १६ | १६ | ०४ | २९ | २५ | ११ | २२ | १३ | १३ |
| क. | ४९ | २० | ४२ | ०२ | ०३ | १६ | १३ | ३८ | ३८ |
| वि. | ३४ | ३४ | ४९ | १७ | ०८ | ५८ | १४ | ५३ | ५३ |
| ग | ५८ | ७१४ | ३६ | ४६/२६ | ०६ | ७३ | ०४/३५ | ३ | ३ |
| ति | १० | २३ | २९ | मा | ३१ | २७ | व | ११ | ११ |
| नक्षत्र | पूफा. २ | पूफा. १ | मृग. ४ | आश्ले. ४ | मृग. १ | हस्त १ | पूभा. १ | उभा. ४ | हस्त २ |

निर्णयसागरीय

卐 गोचरग्रहाः 卐




● **पशुगमनागमन प्रश्नफल** ● सूर्यनक्षत्रचार से वर्तमान प्रश्न नक्षत्र ९ स्थान गणना में बने तो पशु वन में, छठे स्थान गणना मार्ग विचरण, सप्तम ७ गणना से घर आवेगा, दूसरे-तीसरे गणनागत नहीं मिले, श्रम साध्य गतिविधि
● **गण्ड नक्षत्रादिफलम्** ● अश्विनी १ चरण पितृभय २ सौख्य ३ सुयोगद ४ मानद ● रेवती १ चरण सुखद २ सुयोगद ३ सम्पदा ४ कष्टद नेष्ट प्रतिफल इन ६ गण्डान्त नक्षत्र विषयक जन्म वश हवन शान्ति विधान क्रिया से शुभ प्रदाय बनें। संकेत – इन नक्षत्रों की वैदिक शांतिक्रिया से गण्डमूल शांति विधान पुस्तक मूल्य ७०/- रू. की प्राप्त है। **पता – निर्णयसागर पुस्तकालय, नीमच छावनी (म.प्र.) फोन : 9425974174**

# भाद्रपद शुक्ल पक्षः संवत् २०८१ रा.शाकः १९४६

## ✦ सितम्बर सन् २०२४ ई. शरद ऋतुः रवि दक्षिणायणे–उत्तरगोले ✦

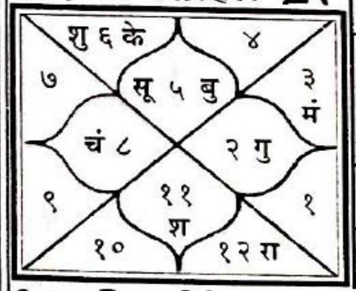
♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣

| रवियोगाः | तिथि | वार | घटी | पल | घं. | मि. | नक्षत्र | घटी | पल | घं. | मि. | योग | घटी | पल | करण | घटी | पल | दिनमान घटी | दिनमान पल | स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं. | सूर्योदय मि. | सूर्यास्त घं. | सूर्यास्त मि. | विविध तारीखें बंग | मुस | भा | चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.घटी पल | घं.मि. | सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अ.क.वि. | गति | अंग्रेजी ता. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प्रवर्ध | १ | बु | ०८ | ३२ | ०९ | ४७ | उफा | ५९ | ४० | ३० | १५ | सा | ३४ | १० | ब | ०८ | ३२ | ३१ | ०९ | ६ | २३ | ६ | ५० | २० | ३० | १३ | कन्या ०८ ५२ | ०९ ५६ | [illegible] | [illegible] | ४ | चंद्रदर्शनं सर्वा. ३० १५ उ. ३० २३ या.मघायां सिंहे बुधः ११ २४ |
| राक्षस | २ | गु | १४ | ५७ | १२ | २१ | ह | ६० | ०० | - | - | शु | ३६ | ५२ | कौ | १४ | ५७ | ३१ | ०५ | ६ | २३ | ६ | ४९ | २१ | १ | १४ | कन्या | | [illegible] | [illegible] | ५ | शिक्षक दि.बाबा रामदेव दूज ६३९ वाँ मेला रविउल अव्वल मास ३ मुस. |
| ०१।२५ उ. | ३ | शु | २१ | ३६ | १५ | ०१ | ह | ०७ | ३५ | ०९ | २५ | शु | ३९ | ३८ | ग | २१ | ३६ | ३१ | ०१ | ६ | २४ | ६ | ४८ | २२ | २ | १५ | तुला ४१ २३ | २३ ०१ | [illegible] | [illegible] | ६ | भ. २८ २१ उ.हरितालिका तीज व्रतं श्रीवराह ज.आर्द्रायां भौमः ११ ५० |
| १२।३४ या. | ४ | श | २८ | ०५ | १७ | ३७ | चि | १५ | २६ | १२ | ३४ | ब्र | ४२ | ११ | वि | २८ | ०५ | ३० | ५८ | ६ | २४ | ६ | ४७ | २३ | ३ | १६ | तुला | | [illegible] | [illegible] | ७ | भ. १७ ३७ या.सर्वा. १२ ३४ उ. ३० २४ या.श्रीगणेशचतुर्थी संवत्सरी पर्व जैन |
| १५।३१ उ. | ५ | र | ३३ | ५६ | १९ | ५८ | स्वा | २२ | ४७ | १५ | ३१ | ऐं | ४४ | ११ | ब | ०१ | ०७ | ३० | ५४ | ६ | २४ | ६ | ४६ | २४ | ४ | १७ | तुला | | [illegible] | [illegible] | ८ | ऋषिपंचमी व्रतं गर्ग अंगिरा ऋषि ज.पर्युषणपर्व प्रा.दिगम्बर A |
| १८।०४ या. | ६ | चं | ३८ | ४३ | २१ | ५३ | वि | २९ | ०९ | १८ | ०४ | वै | ४५ | १८ | कौ | ०६ | २९ | ३० | ५० | ६ | २५ | ६ | ४५ | २५ | ५ | १८ | वृश्चि. १२ ४० | ११ २९ | [illegible] | [illegible] | ९ | सर्वा. १८ ०४ उ. ३० २५ या.श्री बलदेव छठ सूर्यषष्ठी |
| वज्र | ७ | मं | ४१ | ५८ | २३ | १२ | अ | ३४ | ०७ | २० | ०४ | वि | ४५ | १४ | ग | १० | ३३ | ३० | ४६ | ६ | २५ | ६ | ४४ | २६ | ६ | १९ | वृश्चिक | | [illegible] | [illegible] | १० | भ. २३ १२ उ.मुक्ताभरण संतान सप्तमी महालक्ष्मी व्रतारंभः |
| २१।२२ उ. | ८ | बु | ४३ | २४ | २३ | ४७ | ज्ये | ३७ | २१ | २१ | २२ | प्री | ४३ | ४३ | वि | १२ | ५५ | ३० | ४२ | ६ | २६ | ६ | ४३ | २७ | ७ | २० | धनु ३७ २१ | २१ २२ | [illegible] | [illegible] | ११ | भ. ११ ३६ या.श्रीदधीचि ज. श्रीराधाष्टमी |
| पूर्णरवि | ९ | गु | ४२ | ३८ | २३ | ३३ | मू | ३८ | ३७ | २१ | ५३ | आ | ४० | ३७ | बा | १३ | २१ | ३० | ३९ | ६ | २६ | ६ | ४१ | २८ | ८ | २१ | धनु | | [illegible] | [illegible] | १२ | श्रीमहालक्ष्मी व्रत पूर्णता श्री भागवत सप्ताह प्रा.श्रीचंद्र नवमी अदुःख नवमी B |
| पूर्णरवि | १० | शु | ४० | ११ | २२ | ३० | पूषा | ३७ | ५३ | २१ | ३६ | सौ | ३५ | ५४ | तै | ११ | ४४ | ३० | ३५ | ६ | २६ | ६ | ४० | २९ | ९ | २२ | मकर ५२ २४ | २७ २४ | [illegible] | [illegible] | १३ | उफायां रविः ०९ ३५ तेजा दशमी मेला रामदेवजी धूप दशमी जैन C |
| २०।३३ या. | ११ | श | ३५ | ३८ | २० | ४१ | उषा | ३५ | १५ | २० | ३३ | शो | २९ | ३७ | व | ०८ | ०७ | ३० | ३१ | ६ | २७ | ६ | ३९ | ३० | १० | २३ | मकर | | [illegible] | [illegible] | १४ | भ. ०९ ४२ उ. २० ४१ या.सर्वा. २० ३३ उ. ३० २७ या.पद्मा जलझूलनी ११ व्रतं सर्वे.फूलडोल D |
| प्रदोष | १२ | र | २९ | २४ | १८ | १२ | श्र | ३० | ५५ | १८ | ४९ | अ | २१ | ५६ | ब | ०२ | ४२ | ३० | २७ | ६ | २७ | ६ | ३८ | ३१ | ११ | २४ | कुंभ ५८ १४ | २९ ४५ | [illegible] | [illegible] | १५ | पंचक २९ ४५ उ.प्रदोषव्रतं श्रीवामन ज.श्रवण द्वादशी बुधास्त पू. १९ ३५ |
| १६।३३ उ. | १३ | चं | २१ | ४८ | १५ | १० | ध | २५ | १४ | १६ | ३३ | सु | १३ | ०५ | तै | २१ | ४८ | ३० | २३ | ६ | २८ | ६ | ३७ | आ१ | १२ | २५ | कुंभ | | [illegible] | [illegible] | १६ | कन्यायांऽर्कः १९ ४३ बं.आश्विन मास प्रा. |
| १३।५३ या. | १४ | मं | १३ | १२ | ११ | ४४ | श | १८ | ३४ | १३ | ५३ | धृ | ०३ ५३ | २० ०३ | व | १३ | १२ | ३० | २० | ६ | २८ | ६ | ३६ | २ | १३ | २६ | मीन ५८ ११ | २९ ४४ | [illegible] | [illegible] | १७ | भ. ११ ४४ उ. २१ ५६ या.अनंत चतुर्दशीव्रतं पूर्णिमाव्रतं पूर्णिमा श्राद्ध महालय श्राद्धारंभः E |
| पूर्णिमा | १५ | बु | ०४ | ०० | ०८ | ०४ | पूभा | ११ | २० | ११ | ०० | गं | ४२ | ३१ | ब | ०४ | ०० | ३० | १६ | ६ | २८ | ६ | ३५ | ३ | १४ | २७ | मीन | | [illegible] | [illegible] | १८ | पूर्णिमा पुण्य प्रतिपदा श्राद्ध तुलायां शुक्रः १३ ५७ चंद्रग्रहण विदेशों में |





### 卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐




### अ. २१ भाद्रपद शुक्ले ८ बुधे इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ४ | ७ | २ | ४ | १ | ५ | १० | ११ | ५ |
| अं. | २४ | २२ | ०९ | ०८ | २५ | २१ | २१ | १३ | १३ |
| क. | ३५ | ०४ | ३० | २३ | ५० | ०४ | ३६ | १३ | १३ |
| वि. | ३५ | ४२ | २२ | ३७ | ४९ | १४ | २९ | २७ | २७ |
| ग | ५८ | ७६८ | ३५ | ९४ | ०५ | ७३ | ०४ ३५ | ३ | ३ |
| ति | २२ | ०८ | १३ | ५० | १३ | २० | व | ११ | ११ |
| नक्षत्र | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

### ♣ कन्या संक्रान्ति फलम् – दुर्ग रक्षा संभागीय ♣

भाद्रपद शुक्ले १३ चंद्रे कन्यायांऽर्क प्र.वा.४ न.५ अस्य पुण्यकालः परदिने भौमवासरे प्रातःकालतः पुण्यप्रदः। वारनाम ध्वांक्षी–आयात–निर्यातकर्ता, शेयर बाजार कम्पनी, उद्योगपति, वैश्य–व्यापारीगण हेतु मुखद। नक्षत्र नाम महोदरी–तस्कर–ठग, चौर्यकर्मशील, लोभी–प्रलोभी, संग्रहशील, स्टॉकिस्ट वर्ग हेतु मनोत्साहवर्धक–सुखद। रात्रि। या.व्या.देशद्रोही, भ्रष्टपथी, आतंकवादी, विस्फोटक, हिंसाप्रसारकगण हेतु कष्टद प्रभारक। पश्चिम गमन, ईशान दृष्टि, गर करणे, वाहन–गज, उपवाहन–खर, रक्त वस्त्र, धनुषायुध, लोहपात्र, पय भक्षण, गोरोचन लेपन, पशुजाति, बिल्व पुष्प, कुक्कुट भूषण, श्वेत कंचुकी, प्रौढावस्था, उपविष्ट, मुहूर्त–१५, धान्य–गल्ला उन्नत भाव, लाल वस्त्र, लोहा–इस्पात, सरिया, सुगंधित द्रव्य, सफेद रंग वस्तु, चांवल, सूत–कपास, पोस्ता, लहसुन, मिर्च, मसूर, हल्दी, कलपुर्जे, मशीनरी, सोना, चांदी, अश्वगंध, कंदमूल पदार्थ कार्य व्यवसाय लाभद भावी उन्नत भाव गति। शुक्रोदय पश्चिमे, वत्स पूर्वे, राहु उत्तरे, मूल स्वर्गे।

### अ. २२ भाद्रपद शुक्ले १५ बुधे इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ५ | ११ | २ | ४ | १ | ५ | १० | ११ | ५ |
| अं. | ०१ | ०० | १३ | २० | २६ | २९ | २१ | १२ | १२ |
| क. | २४ | २७ | ३३ | २७ | २३ | ३७ | ०४ | ५१ | ५१ |
| वि. | ४४ | ५२ | १९ | ०४ | ४५ | ११ | ३९ | ११ | ११ |
| ग | ५८ | १११ | ३४ | ११० | ०४ | ७३ | ०४ २८ | ३ | ३ |
| ति | ३४ | ४९ | ०१ | २६ | ०० | १२ | व | ११ | ११ |
| नक्षत्र | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

### 卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐




● **सुभाषित–नीति वचन सूत्र** ● घृतकुम्भसमा नारी तप्तांगारसमः पुमान्। तस्माद् घृतं च वन्हिं च नैकत्र स्थापयेद् बुधः ॥ असन्तुष्टा द्विजा नष्टाः सन्तुष्टाश्च महीभुजः। सलज्जा गणिका नष्टा निर्लज्जाश्च कुलांगनाः ॥ शान्तितुल्यं तपो नास्ति न सन्तोषात्परं सुखम्। न तृष्णायाः परो व्याधिः न च धर्मो दयासम् ॥ सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः। सत्येन वाति वायुश्च सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम् ॥ उद्योगे नास्ति दारिद्रयं जपतो नास्ति पातकम्। मौने च कलहो नास्ति–नास्ति जागरितो भयम् ॥ कामधेनुगुणा विद्या स्वकाले फलदायिनी। प्रवासे मातृसदृशी विद्या गुप्तं स्मृतम्। कोकिलानां स्वरो रूपं स्त्रीणां रूपं पतिव्रतम्। विद्या रूपं कुरूपाणां क्षमा रूपं तपस्विनाम् ॥ **A** जैन उभायां ३ राहुः हस्ते १ केतुः २८।५६ स्वामी शिवानन्द जन्म विश्व साक्षरता दि. **B** चित्रायां शुक्रः २६।५२ **C** सं.सू.चं.स्त्री.पु.वाहन गज वर्षा श्रेष्ठ **D** मेला चारभुजाजी मेवाड़ पूफायां बुधः ०६।४५ हिंदी दिवस **E** मांद्य चंद्रग्रहण विश्वकर्मा पूजा संध्या पूजा प्रा.

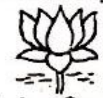
# आश्विन कृष्ण पक्षः संवत् २०८१ रा.शाकः १९४६

| रवियोगाः | तिथि | वार | घटी | पल | घं. | मि. | नक्षत्र | घटी | पल | घं. | मि. | योग | घटी | पल | करण | घटी | पल | दिनमान घटी | दिनमान पल | स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं. | सूर्योदय मि. | सूर्यास्त घं. | सूर्यास्त मि. | विविध तारीखें बंग | मुस | भा | चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.घटी पल | घं.मि. | सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अ.क.वि. | गति | अंग्रेजी ता. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्षय | १ | बु | ५४ | ३८ | २८ | १९ | 0 | ० | ० | ० | ० | 0 | ० | ० | 0 | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | | ० ० | ० ० | ० |
| छत्र | २ | गु | ४५ | २९ | २४ | ४० | उ | ०३/५६ | ५९/५६ | ०८/२९ | ०४/१५ | वृ | ३२ | ०४ | तै | २० | ०१ | ३० | १२ | ६ | २९ | ६ | ३४ | ४ | १५ | २८ | मेष ५६/५६ | २९/१५ | [illegible] | [illegible] | १९ |
| वज्र | ३ | शु | ३६ | ५६ | २१ | १५ | अ | ५० | ३४ | २६ | ४३ | ध्रु | २२ | ०४ | व | ११ | ०६ | ३० | ०८ | ६ | २९ | ६ | ३२ | ५ | १६ | २९ | मेष | | [illegible] | [illegible] | २० |
| चौ.व्रत | ४ | श | २९ | २२ | १८ | १४ | भ | ४५ | १६ | २४ | ३६ | व्या | १२ | ४६ | ब | ०३ | ०१ | ३० | ०४ | ६ | ३० | ६ | ३१ | ६ | १७ | ३० | वृषभ ५९/१० | ३०/०९ | [illegible] | [illegible] | २१ |
| २३।०३ उ. | ५ | र | २३ | ०५ | १५ | ४३ | कृ | ४१ | २१ | २३ | ०३ | ह | ०४/५७ | २८/२३ | तै | २३ | ०५ | ३० | ०० | ६ | ३० | ६ | ३० | ७ | १८ | ३१ | वृषभ | | [illegible] | [illegible] | २२ |
| २२।०८ या. | ६ | चं | १८ | २१ | १३ | ५० | रो | ३९ | ०३ | २२ | ०८ | सि | ५१ | ३९ | व | १८ | २१ | २९ | ५७ | ६ | ३० | ६ | २९ | ८ | १९ | आ१ | वृषभ | | [illegible] | [illegible] | २३ |
| राक्षस | ७ | मं | १५ | २१ | १२ | ३९ | मृ | ३८ | २९ | २१ | ५४ | व्य | ४७ | १९ | ब | १५ | २१ | २९ | ५३ | ६ | ३१ | ६ | २८ | ९ | २० | २ | मिथुन ०८/३२ | ०९/५६ | [illegible] | [illegible] | २४ |
| मुसल | ८ | बु | १४ | १० | १२ | ११ | आ | ३९ | ४१ | २२ | २४ | व | ४४ | २६ | कौ | १४ | १० | २९ | ४९ | ६ | ३१ | ६ | २७ | १० | २१ | ३ | मिथुन | | [illegible] | [illegible] | २५ |
| सिद्धि | ९ | गु | १४ | ४६ | १२ | २६ | पुन | ४२ | ३६ | २३ | ३४ | प | ४२ | ५३ | ग | १४ | ४६ | २९ | ४५ | ६ | ३२ | ६ | २६ | ११ | २२ | ४ | कर्क २६/४३ | १७/१३ | [illegible] | [illegible] | २६ |
| उत्पात | १० | शु | १७ | ०२ | १३ | २० | पु | ४७ | ०१ | २५ | २१ | शि | ४२ | ३३ | वि | १७ | ०२ | २९ | ४१ | ६ | ३२ | ६ | २५ | १२ | २३ | ५ | कर्क | | [illegible] | [illegible] | २७ |
| ए.व्रत | ११ | श | २० | ४४ | १४ | ५० | श्ले | ५२ | ४३ | २७ | ३८ | सि | ४३ | १५ | बा | २० | ४४ | २९ | ३७ | ६ | ३३ | ६ | २४ | १३ | २४ | ६ | सिंह ५२/४३ | २७/३८ | [illegible] | [illegible] | २८ |
| मुद्गर | १२ | र | २५ | ३८ | १६ | ४८ | म | ५९ | २५ | ३० | १९ | सा | ४४ | ४५ | तै | २५ | ३८ | २९ | ३३ | ६ | ३३ | ६ | २२ | १४ | २५ | ७ | सिंह | | [illegible] | [illegible] | २९ |
| प्रदोष | १३ | चं | ३१ | २४ | १९ | ०७ | पूफा | ६० | ०० | - | - | शु | ४६ | ५१ | व | ३१ | २४ | २९ | ३० | ६ | ३३ | ६ | २१ | १५ | २६ | ८ | सिंह | | [illegible] | [illegible] | ३० |
| धूम्र | १४ | मं | ३७ | ४५ | २१ | ३९ | पूफा | ०६ | ४६ | ०९ | १६ | शु | ४९ | १९ | वि | ०४ | ३१ | २९ | २६ | ६ | ३४ | ६ | २० | १६ | २७ | ९ | कन्या २३/४१ | १६/०२ | [illegible] | [illegible] | अ१ |
| अमावस | ३० | बु | ४४ | २२ | २४ | १९ | उफा | १४ | ३१ | १२ | २३ | ब्र | ५१ | ५७ | च | ११ | ०२ | २९ | २२ | ६ | ३४ | ६ | १९ | १७ | २८ | १० | कन्या | | [illegible] | [illegible] | २ |

## सितम्बर–अक्टूबर सन् २०२४ ई. शरद ऋतुः रवि दक्षिणायणे–उत्तर–दक्षिण गोले

सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं

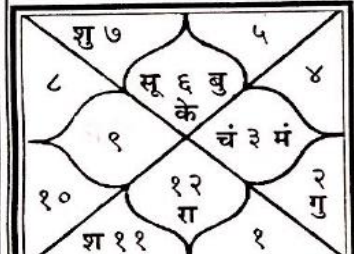
- ० **A** रा.आश्विन मास प्रा. कन्यायां बुधः १०/११ स्वात्यां शुक्रः २५/१२
- १९ सर्वा. ०८/०४ उ.**पंचक** २९/१५ या.**द्वितीया श्राद्ध** जिनचन्द्र सूरि दादा मेला बिलाड़ा
- २० भ. १०/५६ उ. २१/१५ या.सर्वा. २६/४३ या.**तृतीया श्राद्ध**
- २१ **चतुर्थीव्रतं चंद्रोदय रात्रि** २०/५१ **चतुर्थी श्राद्ध** उफायां बुधः १५/०६
- २२ पंचमी, षष्ठी श्राद्ध मृगशिरायां २ गुरुः १६/०६ तुलायां भानुः १८/१३ **रवि दक्षिण गोलीय गति प्रा.**
- २३ भ. १३/५० उ. २५/१० या.सर्वा. ०६/३० उ. ३०/३१ या.अमृतसिद्धि २२/०८ उ. ३०/३१ या.**सप्तमी श्राद्ध A**
- २४ **अष्टमी श्राद्ध** जीवित्पुत्रिका व्रतं
- २५ सौभाग्यवतीनां **नवमी श्राद्ध** श्रीलक्ष्मीव्रतं
- २६ भ. २४/४९ उ.सर्वा. ०६/३२ उ. ३०/३२ या.अमृत सिद्धि व गुरूपुष्य २३/३४ उ. ३०/३२ या.**दशमी श्राद्ध B**
- २७ भ. १३/२० या.**एकादशी श्राद्ध**
- २८ **इंदिरा ११ व्रतं सर्वे.** हस्ते बुधं २१/०९ **भगतसिंह ज.**
- २९ **द्वादशी श्राद्ध** सन्यासिनां श्राद्ध पुनर्वसौ भौमः २४/००
- ३० भ. १९/०७ उ.**प्रदोषव्रतं त्रयोदशी श्राद्ध मास शिवरात्रि** बैंक अर्ध लेखाबंदी
- अ१ भ. ०८/२२ या.**चतुर्दशी श्राद्ध** दग्धशस्त्रादिहतानां श्राद्ध **अक्टूबर मास १० ता. ३१ प्रा.**
- २ सर्वा. १२/२३ उ. ३०/३५ या.**देवपितृकार्ये सर्वपितृ अमावस्या श्राद्धं तर्पणंच C**







### निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः




### अ. २३ आश्विन कृष्णे ८ बुधे इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ५ | २ | २ | ५ | १ | ६ | १० | ११ | ५ |
| अं. | ०८ | ११ | १७ | ०३ | २६ | ०८ | २० | १२ | १२ |
| क. | १५ | २४ | २७ | २४ | ४७ | ०९ | ३३ | २८ | २८ |
| वि. | २७ | ०६ | २८ | ५९ | ५७ | १५ | ५९ | ५५ | ५५ |
| ग | ५८ | ७७६ | ३२ | ११० | ०२ | ७३ | ०४/१४ | ३ | ३ |
| ति | ४९ | ४१ | ४० | १८ | ४३ | ०५ | व | ११ | ११ |
| नक्षत्र | उफा. ४ | आर्द्रा १ | आर्द्रा ४ | उफा. ३ | मृ. २ | स्वाति १ | पूभा. १ | उभा. ३ | हस्त १ |

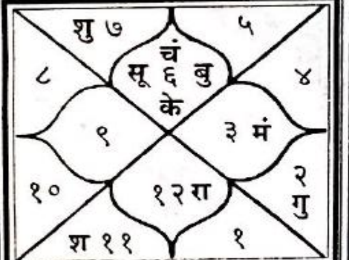
### ग्रह गोचरीय फलश्रुतिः

अमा पूर्णिमा वार शुभ, बना सुखद अधियोग। सुख सुभिक्ष की धारणा, निर्णय शास्त्र सुयोग ॥ वक्रचाल शनिदेव की, घट बढ़ बने विशेष। चतुर जीव लाभी बने, देख समय को शेष ॥ बुधादित्य की स्थिति कोविद लाभ विशेष। शिक्षा शिक्षक पंथ में, लाभद रूप निवेश ॥ चलन कलन शनि सूर्य का, निर्धन जग अभिसार ॥ सेवा कर्मी कोप से, शासन तंत्र विचार ॥ अर्थ पक्ष अभिनव गति, धनिक त्रास अभियोग। बैंक कोष मुद्रा विषय, नीति नव्य प्रयोग ॥ सौम्य वार मंदी करे, मावस बुध सुसंग। तेजी से मंदी बने, वस्तु विविध प्रसंग ॥ निर्यातक गति से अधिकता, आयात रूप नवदेश। दलहन तिलहन नित्य का, मंदी भाव निवेश ॥ आश्विन पूनम निर्मला, गगन स्वच्छ आकाश। मेघ गाज वर्षा यदि, तेजी धान्य प्रकाश ॥

### अ. २४ आश्विन कृष्णे ३० बुधे इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ५ | ५ | २ | ५ | १ | ६ | १० | ११ | ५ |
| अं. | १५ | ०७ | २१ | १६ | २७ | १६ | २० | १२ | १२ |
| क. | ०८ | ०८ | ११ | ०२ | ०२ | ४० | ०५ | ०६ | ०६ |
| वि. | ०० | ४९ | ३७ | ३७ | ५३ | ३२ | १५ | ३९ | ३९ |
| ग | ५९ | ७०७ | ३१ | १०५ | ०१ | ७२ | ०३/५४ | ३ | ३ |
| ति | ०५ | १३ | ०७ | ०७ | २१ | ५८ | व | ११ | ११ |
| नक्षत्र | हस्त १ | उफा. ४ | पुन. १ | हस्त १ | मृ. २ | स्वाति ४ | पूभा. १ | उभा. ३ | हस्त १ |

### निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः




● **भद्रा परिहार–विवेक सूत्र** ● कर्क, सिंह, कुंभ, मीन राशि के चन्द्र रहते भद्रा (मृत्युलोक) मेष, वृषभ, मिथुन, वृश्चिक चन्द्र में भद्रा (स्वर्गलोक) कन्या, तुला, धनु, मकर (पाताललोक) इस प्रकार मृत्यु लोक पर भद्रा रहते पूर्णतया अशुभ, शेष समय विशेष अशुभ नहीं। ● **पुनरपि परिहार** ● शुक्ल पक्षे ४–११ तिथि कृष्ण पक्ष में ३–१० तिथि वाली भद्रा दिन में शुभ। तथा शुक्ल पक्ष ८–१५ तथा कृष्ण पक्षे ७–१४ तिथि में रात्रि में भद्रा शुभ। तथा विशेषकर भद्रा–वैधृति मध्यान्ह काल के उपरान्त मान्य विशेष नहीं है तथा न्यायालय कार्य, विशिष्ट व्यक्ति से सम्पर्क, शत्रु–विरोधीगण हेतु कार्यरचना, चिकित्सा एवं वैद्य–डॉक्टर से सम्पर्क हेतु तथा स्त्री प्रसंग, विविध वाहन क्रय एवं उपयोग में भद्रा दोष नहीं। भद्रावास हेतु विविध मत हैं, परन्तु हमारे द्वारा मुहूर्त्त चिन्तामणि मतानुसार ही नियामक मान्य है।

**B** हस्ते रविः २५।१० सं.सू.चं.स्त्री स्त्री वाहन चातक वर्षा श्रेष्ठ

**C** श्राद्धपक्ष पूर्ण श्री गांधी व शास्त्री ज.सूर्यग्रहण विदेशों में

# आश्विन शुक्ल पक्षः संवत् २०८१ रा.शाकः १९४६

| रवियोगाः | तिथि | वार | घटी | पल | घं. | मि. | नक्षत्र | घटी | पल | घं. | मि. | योग | घटी | पल | करण | घटी | पल | दिनमान घटी | दिनमान पल | स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं. | सूर्योदय मि. | सूर्यास्त घं. | सूर्यास्त मि. | विविध तारीखें बंग | मुस | भा | चन्द्रराशि प्रवेश काल रा. घटी पल | घं.मि. | सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अ.क.वि. | गति | अंग्रेजी ता. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राक्षस | १ | गु | ५० | ५९ | २६ | ५८ | ह | २२ | २४ | १५ | ३२ | ऐं | ५४ | ३३ | किं | १७ | ४१ | २९ | १८ | ६ | ३५ | ६ | १८ | १८ | २९ | ११ | तुला ५६/१८ | २९/०६ | [illegible] | [illegible] | ३ |
| मुसल | २ | शु | ५७ | २० | २९ | ३१ | चि | ३० | ०७ | १८ | ३८ | वै | ५६ | ५५ | बा | २४ | १२ | २९ | १४ | ६ | ३५ | ६ | १७ | १९ | ३० | १२ | तुला | | [illegible] | [illegible] | ४ |
| २१।३३ उ. | ३ | श | ६० | ०० | - | - | स्वा | ३७ | २४ | २१ | ३३ | वि | ५८ | ५१ | तै | ३० | १७ | २९ | १० | ६ | ३६ | ६ | १६ | २० | २१ | १३ | तुला | | [illegible] | [illegible] | ५ |
| २४।११ या. | ३ | र | ०३ | ०४ | ०७ | ५० | वि | ४३ | ५८ | २४ | ११ | प्री | ६० | ०० | ग | ०३ | ०४ | २९ | ०७ | ६ | ३६ | ६ | १५ | २१ | २ | १४ | वृश्चि. २७/२४ | १७/३४ | [illegible] | [illegible] | ६ |
| २६।२५ उ. | ४ | चं | ०७ | ५८ | ०९ | ४८ | अ | ४९ | ३१ | २६ | २५ | प्री | ०० | ०८ | वि | ०७ | ५८ | २९ | ०३ | ६ | ३७ | ६ | १४ | २२ | ३ | १५ | वृश्चिक | | [illegible] | [illegible] | ७ |
| २५।०८ या. | ५ | मं | ११ | ४३ | ११ | १८ | ज्ये | ५३ | ४८ | २८ | ०८ | आ | ००/५९ | ३४/५९ | बा | ११ | ४३ | २८ | ५९ | ६ | ३७ | ६ | १३ | २३ | ४ | १६ | धनु ५३/४८ | २८/०८ | [illegible] | [illegible] | ८ |
| केतु | ६ | बु | १४ | ०३ | १२ | १४ | मू | ५६ | ३४ | २९ | १५ | शो | ५८ | ०८ | तै | १४ | ०३ | २८ | ५५ | ६ | ३८ | ६ | १२ | २४ | ५ | १७ | धनु | | [illegible] | [illegible] | ९ |
| धाता | ७ | गु | १४ | ४५ | १२ | ३२ | पूषा | ५७ | ३८ | २९ | ४१ | अ | ५४ | ५६ | व | १४ | ४५ | २८ | ५१ | ६ | ३८ | ६ | ११ | २५ | ६ | १८ | धनु | | [illegible] | [illegible] | १० |
| २१।२५ उ. | ८ | शु | १३ | ४१ | १२ | ०७ | उषा | ५६ | ५७ | २९ | २५ | सु | ५० | १९ | ब | १३ | ४१ | २८ | ४८ | ६ | ३९ | ६ | १० | २६ | ७ | १९ | मकर १२/३७ | ११/४१ | [illegible] | [illegible] | ११ |
| पूर्णरवि | ९ | श | १० | ५० | १० | ५८ | श्र | ५४ | ३१ | २८ | २८ | धृ | ४४ | १७ | कौ | १० | ५० | २८ | ४४ | ६ | ३९ | ६ | ०९ | २७ | ८ | २० | मकर | | [illegible] | [illegible] | १२ |
| २६।५२ या. | १० | र | ०६ | १४ | ०९ | ०९ | ध | ५० | ३० | २६ | ५२ | शू | ३६ | ५५ | ग | ०६ | १४ | २८ | ४० | ६ | ४० | ६ | ०८ | २८ | ९ | २१ | कुंभ २२/४१ | १५/४४ | [illegible] | [illegible] | १३ |
| अमृत | ११ | चं | ०० | ०४ | ०६ | ४१ | श | ४५ | ०७ | २४ | ४३ | गं | २८ | २२ | वि | ०० | ०४ | २८ | ३६ | ६ | ४० | ६ | ०७ | २९ | १० | २२ | कुंभ | | [illegible] | [illegible] | १४ |
| क्षय | १२ | चं | ५२ | ३७ | २७ | ४२ | 0 | ० | ० | ० | ० | 0 | ० | ० | 0 | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | | ० ० | ० | ० |
| २२।०१ उ. | १३ | मं | ४४ | ०७ | २४ | १९ | पूभा | ३८ | ४० | २२ | ०९ | वृ | १८ | ५२ | कौ | १८ | २८ | २८ | ३३ | ६ | ४१ | ६ | ०६ | ३० | ११ | २३ | मीन २५/२१ | १६/४९ | [illegible] | [illegible] | १५ |
| ११।१८ या. | १४ | बु | ३४ | ५९ | २० | ४१ | उभा | ३१ | ३२ | १९ | १८ | ध्रु | ०८/५८ | ४१/०८ | ग | ०९ | ३६ | २८ | २९ | ६ | ४१ | ६ | ०५ | ३१ | १२ | २४ | मीन | | [illegible] | [illegible] | १६ |
| पूर्णिमा | १५ | गु | २५ | ३७ | १६ | ५६ | रे | २४ | ०६ | १६ | २० | ह | ४७ | ३० | वि | ०० | १८ | २८ | २५ | ६ | ४२ | ६ | ०४ | का१ | १३ | २५ | मेष २४/०६ | १६/२० | [illegible] | [illegible] | १७ |

## ✦ अक्टूबर सन् २०२४ ई. शरद ऋतुः रवि दक्षिणायणे–दक्षिणगोले ✦

♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣

३ मातामह श्राद्ध शरद नवरात्रि प्रा.घट स्थापना श्रीअग्रसेन ज.५१४८ वीं A

४ चंद्रदर्शन विशाखायां शुक्रः २४/१३ A वक्री शतभिषायां ४ शनिः १५/०१

५ सर्वा. ०६/३६ उ. २१/३३ या.रविउल आखिर मास ४ मुस.

६ भ. २०/५२ उ.चित्रायां बुधः ११/४५



७ भ. ०९/४८ या.सर्वा. ०६/३७ उ. २६/२५ या.उपांग ललिता व्रतं





८ वायुसेना दि.

९ सरस्वती आव्हानं वक्री गुरुः १२/३५ विश्व डाक दि.



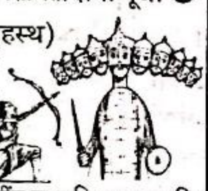
१० भ. १२/३२ उ. २४/२५ या.चित्रायां रविः १४/०६ सरस्वती पूजन नवपद पूजा जैन B

११ सर्वा. २९/२५ उ.सरस्वती बलिदान महाष्टमी दुर्गाष्टमी पूजा दुर्गानवमी पूजा

१२ सर्वा. २८/२८ या.सरस्वती विसर्जन विजया दशमी दशहरा अपराजिता शमी पूजा C

१३ भ. २०/०१ उ.पंचक १५/४४ उ.पापांकुशा ११ व्रतं स्मा.(गृहस्थ)

१४ भ. ६/४१ या.पापांकुशा ११ व्रतं वै.निम्बा.स्वात्यां बुधः १३/५६



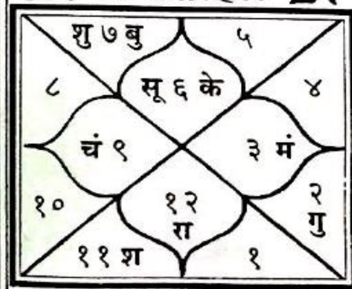
० C बौद्धावतारः वृश्चिके शुक्रः ३०/००

१५ सर्वा. २२/०९ उ. ३०/४१ या.भौम प्रदोषव्रतं अनुराधायां शुक्रः २४/०५

१६ भ. २०/४१ उ.शरद पूर्णिमा व्रतं क्षीरपान कोजागरी व्रत लक्ष्मींद्र पूजा विश्व खाद्य दि.

१७ भ. ६/४० या.सर्वा. ०६/४२ उ.पंचक १६/२० या.पूर्णिमा पुण्यः तुलायांऽर्कः ०७/४३ कार्तिक स्नान प्रा. D

### 卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐




### अ. २५ आश्विन शुक्ले ८ शुक्रे इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ५ | ८ | २ | ६ | १ | ६ | १० | ११ | ५ |
| अं. | २४ | २७ | २५ | ०१ | २७ | २७ | १९ | ११ | ११ |
| क. | ०० | ११ | ४२ | १९ | ०७ | ३६ | ३२ | ३८ | ३८ |
| वि. | ५२ | ४४ | ४२ | २० | ४९ | २८ | २४ | ०२ | ०२ |
| ग | ५९ | ८१० | २८ | ९७ | ००/२७ | ७२ | ०३/१९ | ३ | ३ |
| ति | २२ | २४ | ४९ | ५७ | व | ४६ | व | ११ | ११ |
| नक्षत्र | चित्रा | उषा. | पुन. | चित्रा | पूफा. | विशा. | शत. | उभा. | हस्त |

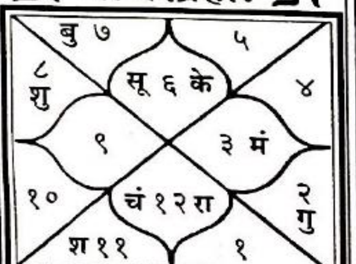
### ♣ तुला संक्रान्ति फलम् – देवालय संभागीय ♣

आश्विन शुक्ले १५ गुरौ तुलायांऽर्कः प्र.वा. ४ न. ४ अस्य पुण्यकालः अद्यैव गुरुवासरे प्रातःकालतः पुण्यप्रदः । वार नाम मंदा–धर्मोपदेशक, कथावाचक, व्याख्याता, लेखक, पत्रकार, शिक्षक, प्रोफेसर, प्रवचनकर्ता वर्ग हेतु सुखद मनोत्साह वर्धक । नक्षत्र नाम मंदाकिनी– राजपत्रित अधिकारी, नीति निदेशक, विविध दलपति–राजनेता–अधीक्षक वर्ग हेतु सुखद । दिवा १या.व्या.शिक्षक, लेखक, व्याख्याता, राष्ट्रीय विकास, सेनापति, आरक्षी, नायक, सुरक्षा अधिकारी, गुप्तचर, विभाग पद विशेष पर प्रभारक कष्टद, उत्तर गमन, आग्नेया दृष्टि, बव करणे, वाहन सिंह, उपवाहन–गज, श्वेत वस्त्र, भुशुण्डायुध, स्वर्णपात्र, अन्न भक्षण, कस्तूरीलेपन, देवजाति, पुन्नागपुष्प, पिरोजभूषण, विचित्र कंचुकी, बाल्यावस्था, उपविष्ट, मुहूर्त–३०, धान्य–गल्ला स्थिर समभाव, सफेद वस्त्र, सोना, चांदी, सूत, कपास, कंदमूल पदार्थ, चांवल, सुगंधी पदार्थ, सफेद रंग वस्तु, गेहूं, मक्का, ज्वार, बाजरा, चना, जौ, मूंग, मोठ, साबूदाना आदि वस्तु कार्य लाभद भावी तेज धारणा, शुक्रोदय पश्चिमे वत्स पूर्वे, राहु उत्तरे, मूल भूमौ ।

### अ. २६ आश्विन शुक्ले १५ गुरौ इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ५ | ११ | २ | ६ | १ | ७ | १० | ११ | ५ |
| अं. | २९ | २३ | २८ | १० | २७ | ०४ | १९ | ११ | ११ |
| क. | ५७ | ५३ | ३१ | ५६ | ०२ | ५२ | १३ | १८ | १८ |
| वि. | २९ | १७ | २० | २९ | ०३ | ३५ | ४२ | ५७ | ५७ |
| ग | ५९ | ११२ | २७ | ९३ | ०१/४० | ७२ | ०२/५० | ३ | ३ |
| ति | ३३ | ०३ | ०५ | ५१ | व | ३५ | व | ११ | ११ |
| नक्षत्र | चित्रा | चित्रा | पुन. | चित्रा | पूफा. | पूफा. | शत. | उभा. | हस्त |

### 卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐




● **सुभाषित सूत्रावली** ● न पश्यन्ति च जन्मान्धाः कामान्धो नैव पश्यति । मदोन्मत्ता न पश्यन्ति अर्थी दोषं न पश्यति ।। आपदर्थे धनं रक्षेद् धनैरपि । आत्मानं सततं रक्षेत् दारैरपि धनैरपि । भोज्यं भोजन शक्तिश्च रतिशक्तिर्वरांगना । विभवे दान शक्तिश्च नाल्पस्य तपसः फलम् ।। ते पुत्रा ये पितुर्भक्ताः स पिता यस्तु पोषकः । तन्मित्रं यत्र विश्वासः सा भार्या यत्र निवृत्तिः ।। गुणानां वा विशालानां, सत्काराणांच नित्यशः । कर्त्तारः सुलभालोके, विज्ञातारस्तु दुर्लभाः ।। ईर्ष्यी घृणी न सन्तुष्टः क्रोधिनो नित्य शंकितः । परभाग्योपजीवी च षड़ेते नित्यदुःखिता ।। अत्यन्तकोपः कटुका च वाणी, दरिद्रता च स्वजनेषु वैरम् । नीचप्रसंगः कुलहीनसेवा चिन्हानिदेहे नरक स्थितानाम् ।।

B तुलायां बुधः ११।२१ सं.सू.चं.स्त्री पु.वाहन महिष वर्षा श्रेष्ठ

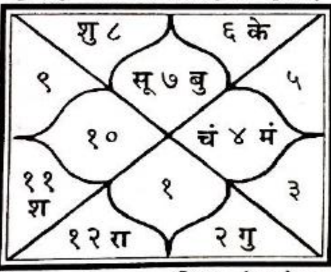
D पाराशर ऋषि ज.मतांतरे महाराजा अजमीढ ज., वाल्मिकी ज.बं.कार्तिक मास प्रा.

| कार्तिक कृष्ण पक्षः संवत् २०८१ रा.शाकः १९४६ | | | | | | | | | | | | | | | | | | दिन मान | | स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय | | सूर्यास्त | | विविध तारीखें | | | चन्द्रराशि प्रवेश काल | | सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट | | अंग्रेजी ता. | ✦ अक्टूबर-नवम्बर सन् २०२४ ई. शरद-हेमंत ऋतुः रवि दक्षिणायणे-दक्षिणगोले ✦ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रवियोगाः | तिथि | वार | घटी | पल | घं. | मि. | नक्षत्र | घटी | पल | घं. | मि. | योग | घटी | पल | करण | घटी | पल | घटी | पल | घं. | मि. | घं. | मि. | बंग | मुस | भा | रा.घटी पल | घं.मि. | रा.अ.क.वि. | गति | | ♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह - नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा-मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣ |
| वज्र | १ | शु | १६ | २४ | १३ | १५ | अ | १६ | ५० | १३ | २६ | व | ३७ | १० | कौ | १६ | २४ | २८ | २२ | ६ | ४२ | ६ | ०३ | २ | १४ | २६ | मेष | | [illegible] | [illegible] | १८ | सर्वा. १३/२६ या. कृषक भूमि पूजा |
| ध्वांक्ष | २ | श | ०७ | ४६ | ०९ | ४९ | भ | १० | १० | १० | ४७ | सि | २७ | २७ | ग | ०७ | ४६ | २८ | १८ | ६ | ४३ | ६ | ०२ | ३ | १५ | २७ | वृषभ २३/३९ | १६/१० | [illegible] | [illegible] | १९ | भ. २०/१४ उ. A कर्के भौमः १४/२४ बुधोदय प. २१/३७ |
| चौ.व्रत | ३ | र | ०० | ०८ | ०६ | ४६ | कृ | ०४ | ३१ | ०८ | ३२ | व्य | १८ | ४० | वि | ०० | ०८ | २८ | १४ | ६ | ४३ | ६ | ०१ | ४ | १६ | २८ | वृषभ | | [illegible] | [illegible] | २० | भ. ०६/४६ या. करक चतुर्थी व्रतं चंद्रोदय रात्रि २०/१८ A |
| क्षय | ४ | र | ५३ | ५५ | २८ | १७ | 0 | ० | ० | ० | ० | 0 | ० | ० | 0 | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | | ० ० | ० | ० | B सं.सू.चं.स्त्री.स्त्री.वाहन जम्बूक वर्षा नेष्ट |
| २१।५१ उ. | ५ | चं | ४९ | २५ | २६ | २९ | रो | ००/५७ | १६/४८ | ०६/२९ | ५१/५१ | व | ११ | ०८ | कौ | २१ | २५ | २८ | ११ | ६ | ४४ | ६ | ०० | ५ | १७ | २९ | मिथुन २८/४८ | १८/१५ | [illegible] | [illegible] | २१ | सर्वा. ०६/४४ उ. २९/५१ या. अमृत सि. ०६/५१ उ. २९/५१ या. |
| २१।३१ या. | ६ | मं | ४६ | ५२ | २५ | २९ | आ | ५७ | १६ | २९ | ३९ | प | ०५ | ०३ | ग | १७ | ५२ | २८ | ०७ | ६ | ४५ | ५ | ५९ | ६ | १८ | ३० | मिथुन | | [illegible] | [illegible] | २२ | भ. २५/२९ उ. विशाखायां बुधः २८/०० वृश्चिके भानुः २७/४४ हेमंत ऋतु प्रा. |
| २४।४२ उ. ३०।१६ या. | ७ | बु | ४६ | २५ | २५ | १९ | पुन | ५८ | ४७ | ३० | १६ | शि | ००/५७ | ३५/४७ | वि | १६ | २२ | २८ | ०३ | ६ | ४५ | ५ | ५८ | ७ | १९ | का१ | कर्क ४३/१२ | २४/०२ | [illegible] | [illegible] | २३ | भ. १३/१८ या. स्वात्यां रविः २४/४२ रा. कार्तिक मास प्रा. B |
| शुभ | ८ | गु | ४८ | ०३ | २५ | ५८ | पु | ६० | ०० | - | - | सा | ५६ | ३१ | बा | १६ | ५८ | २८ | ०१ | ६ | ४६ | ५ | ५८ | ८ | २० | २ | कर्क | | [illegible] | [illegible] | २४ | सर्वा. अमृत सिद्धि ०६/४६ उ. ३०/४६ या. अहोईअष्टमी चंद्रोदय रात्रि २४/१८ गुरु पुष्यः अहोरात्र C |
| उत्पात | ९ | शु | ५१ | ३२ | २७ | २३ | पु | ०२ | १४ | ०७ | ४० | शु | ५६ | ४० | तै | १९ | ३४ | २७ | ५६ | ६ | ४६ | ५ | ५७ | ९ | २१ | ३ | कर्क | | [illegible] | [illegible] | २५ | वक्री मृगशिरायां १ गुरुः ३०/४० |
| मानस | १० | श | ५६ | ३३ | २९ | २४ | श्ले | ०७ | २७ | ०९ | ४६ | शु | ५७ | ५६ | व | २३ | ५२ | २७ | ५३ | ६ | ४७ | ५ | ५६ | १० | २२ | ४ | सिंह ०७/२७ | ०९/४६ | [illegible] | [illegible] | २६ | भ. १६/२० उ. २९/२४ या. आचार्य श्रीरामशर्मा जन्म ज्येष्ठायां शुक्रः २५/०७ |
| मुद्गर | ११ | र | ६० | ०० | - | - | म | १४ | ०२ | १२ | २४ | ब्र | ५९ | ५९ | ब | २९ | २९ | २७ | ४९ | ६ | ४८ | ५ | ५५ | ११ | २३ | ५ | सिंह | | [illegible] | [illegible] | २७ | C संयुक्त राष्ट्र दि. श्री विश्नोई पंथ स्था. दिवस |
| ए.व्रत | ११ | चं | ०२ | ३८ | ०७ | ५१ | पूफा | २१ | ३० | १५ | २४ | ऐं | ६० | ०० | बा | ०२ | ३८ | २७ | ४६ | ६ | ४८ | ५ | ५४ | १२ | २४ | ६ | कन्या ३८/२७ | २२/११ | [illegible] | [illegible] | २८ | रमा ११ व्रतं सर्वे. गौवत्स द्वादशी गौसेवा संकल्प दिवस पुष्ये भौमः १६/०१ |
| प्रदोष | १२ | मं | ०९ | १८ | १० | ३२ | उफा | २९ | २३ | १८ | ३४ | ऐं | ०२ | २८ | तै | ०९ | १८ | २७ | ४२ | ६ | ४९ | ५ | ५४ | १३ | २५ | ७ | कन्या | | [illegible] | [illegible] | २९ | भौम प्रदोष व्रतं धनतेरस यमदीपदानं धन्वंतरी ज. वृश्चिके बुधः २२/३९ |
| आनंद | १३ | बु | १६ | ०६ | १३ | १६ | ह | ३७ | १५ | २१ | ४४ | वै | ०५ | ०४ | व | १६ | ०६ | २७ | ३९ | ६ | ४९ | ५ | ५३ | १४ | २६ | ८ | कन्या | | [illegible] | [illegible] | ३० | भ. १३/१६ उ. २६/३६ या. सर्वा. ०६/४९ उ. २१/४४ या. मास शिवरात्रि नरक चतुर्दशी निमित्त दीपदानं |
| चर | १४ | गु | २२ | ३८ | १५ | ५३ | चि | ४४ | ४७ | २४ | ४५ | वि | ०७ | ३१ | श | २२ | ३८ | २७ | ३५ | ६ | ५० | ५ | ५२ | १५ | २७ | ९ | तुला ११/०४ | ११/१६ | [illegible] | [illegible] | ३१ | रूप चतुर्दशी अरूणोदयः स्नान अनुराधायां बुधः ३०/३९ इंदिरा गांधी पुण्य सरदार पटेल ज. D |
| अमावस | ३० | शु | २८ | ३६ | १८ | १७ | स्वा | ५१ | ४१ | २७ | ३१ | प्री | ०९ | ३५ | ना | २८ | ३६ | २७ | ३२ | ६ | ५१ | ५ | ५२ | १६ | २८ | १० | तुला | | [illegible] | [illegible] | न१ | देवपितृकार्ये अमावस्या श्रीमहालक्ष्मी पूजा दीपावली पर्व दीपोत्सव (देखें पृ. २३) E |





निर्णयसागरीय
卐 गोचरग्रहाः 卐




अ. २७ कार्तिक कृष्णे ८ गुरौ इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ६ | ३ | ३ | ६ | १ | ७ | १० | ११ | ५ |
| अं. | ०६ | ०३ | ०१ | २१ | २६ | १३ | १८ | १० | १० |
| क. | ५५ | ३५ | ३४ | ४० | ४६ | २० | ५५ | ५६ | ५६ |
| वि. | ०५ | ५८ | ११ | ३६ | १६ | ०२ | ३७ | ४१ | ४१ |
| ग | ५९ | ७५६ | २४ | ८९ | ०३ | ७२ | ०२ | ३ | ३ |
| ति | ४८ | १५ | ४६ | ३९ | ०३ व | २२ | १४ व | ११ | ११ |
| नक्षत्र | स्वाति १ | पुष्य १ | पुन. ४ | विशाखा | मृग. २ | अनु. ४ | शत. ४ | उभा. ३ | हस्त १ |

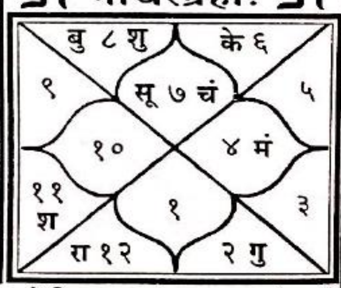
♣ ग्रह गोचरीय फलश्रुतिः ♣

अमा पूर्णिमा वार शुभ, बना सुखद अधियोग। सुख सुभिक्ष की धारणा, निर्णय शास्त्र सुयोग॥ वक्रचाल शनिदेव की, घटबढ़ बने विशेष। चतुरजीव लाभी बने, देख समय को शेष॥ सौम्यवार मंदी करे, मावस शुक्र सुसंग। तेजी से मंदी बने, वस्तु विविध प्रसंग॥ निर्यातक गति से अधिकता, आयात रूप नवदेश। दलहन तिलहन नित्य का, मंदी भाव निवेश। कार्तिकी आर्द्रावार भौम, तेजी पशु आहार। मंत्रिमण्डल आपदा, नेता नायक भार॥ पवन वेग दीपोत्सव, नहीं शकुन सुख पक्ष। वायु शून्यता मानिये, भावी सुखद सुलक्ष॥ दीपमालिका सांध्य में, कोविद पवन विचार वायु वेग की शून्यता, निर्णय सौख्य विस्तार॥ कार्तिक बदी एकादशी, जो नभ बादल छाये। तो आगे आषाढ़ में, उत्तम जल बरसाये॥

अ. २८ कार्तिक कृष्णे ३० शुक्रे इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ६ | ६ | ३ | ७ | १ | ७ | १० | ११ | ५ |
| अं. | १४ | ०९ | ०४ | ०३ | २६ | २२ | १८ | १० | १० |
| क. | ५४ | ४१ | ४१ | २० | १६ | ५८ | ४० | ३१ | ३१ |
| वि. | ३३ | ३६ | ४७ | ३९ | ३४ | ०७ | २६ | १४ | १४ |
| ग | ६० | ७१८ | २१ | ८४ | ०४ | ७२ | ०१ | ३ | ३ |
| ति | ०५ | ५० | ३९ | ३१ | ३३ व | ०६ | २८ व | ११ | ११ |
| नक्षत्र | स्वाति ३ | स्वाति १ | पुष्य १ | अनु. १ | मृग. १ | ज्येष्ठा १ | शत. ४ | उभा. ३ | हस्त १ |

निर्णयसागरीय
卐 गोचरग्रहाः 卐




● **शकुन सूत्रावली** ● बदी २ से ७ तथा ११ से ३० एवं सुदी ३ से ८ तथा ११ से १५ मध्य मानसून गति पथ संचार प्रवर्षण मेघ गाज रचना। ● **नीति वचन सूत्र — भावी महिमा** ● तादृशी जायते बुद्धिर्व्यवसायोऽपि तादृशः। सहायास्तादृशा एवं यादृशी भवितव्यता॥ आदितस्य नमस्कारं ये कुर्वन्ति दिने दिने। जन्मान्तर सहस्रेशु दारिद्रं नोपजायते॥ अनालोक्यं व्ययं कुर्त्ता अनाथः कलहप्रियः। आतुरः सर्वकार्येषु नरः शीघ्रं विनश्यति॥ ● रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पंकजालिः। इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे, हा हन्त हन्त! नलिनीं गज उज्जहार॥ कार्त्तिक्यां कृतिका योगे यः कुर्यात् स्वामी दर्शनम्। सप्तजन्म भवेद् विप्रो धनाढ्यो वेदपारगः॥ ● सुनहु भरत भावी प्रबल, विलख कह्यो मुनि नाथ॥ हानि लाभ जीवन मरण, यश अपयश विधि हाथ॥

D राष्ट्रीय एकता दि. हनुमान ज. देशाचारीय    E महर्षि दयानंद पुण्य १४१ वीं महावीर स्वामी निर्वाण नवंबर मास ११ ता. ३० प्रा.

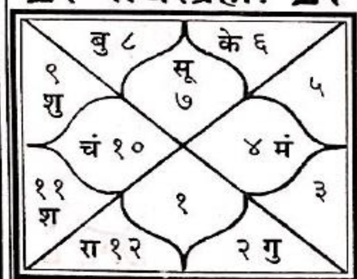
# कार्तिक शुक्ल पक्षः संवत् २०८१ रा.शाकः १९४६

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | दिन मान | | स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय | | सूर्यास्त | | विविध तारीखें | | | चन्द्रराशि प्रवेश काल | | सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट | | अंग्रेजी ता. | ✦ नवंबर सन् २०२४ ई. हेमंत ऋतुः रवि दक्षिणायणे–दक्षिणगोले ✦ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रवियोगा: | तिथि | वार | घटी | पल | घं. | मि. | नक्षत्र | घटी | पल | घं. | मि. | योग | घटी | पल | करण | घटी | पल | घटी | पल | घं. | मि. | घं. | मि. | बंग | मुस | भा | रा.घटी पल | घं.मि. | रा.अ.क.वि. | गति | | सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं |
| शुभ | १ | श | ३३ | ४७ | २० | २२ | वि | ५७ | ४८ | २९ | ५९ | आ | ११ | ०७ | किं | ०१ | १७ | २७ | २८ | ६ | ५१ | ५ | ५१ | १७ | २९ | ११ | वृश्चि. ४१/२० | २३/२४ | [illegible] | [illegible] | २ | अन्नकूट गोवर्धन पूजा बलिपूजा जैन महावीर सं. २५५१ प्रा.गुजराती नववर्ष प्रा. |
| मृत्यु | २ | र | ३८ | ०४ | २२ | ०५ | अ | ६० | ०० | - | - | सौ | ११ | ५९ | बा | ०६ | ०२ | २७ | २५ | ६ | ५२ | ५ | ५० | १८ | ३० | १२ | वृश्चिक | | [illegible] | [illegible] | ३ | चंद्रदर्शन भाईदूज यमद्वितीया विश्वकर्मापूजा चित्रगुप्तपूजा |
| ०८।०४ उ. | ३ | चं | ४१ | २० | २३ | २४ | अ | ०२ | ५८ | ०८ | ०४ | शो | १२ | ०६ | तै | ०९ | ४९ | २७ | २२ | ६ | ५३ | ५ | ५० | १९ | ज१ | १३ | वृश्चिक | | [illegible] | [illegible] | ४ | सर्वा. ०६/५३ उ. ०८/०४ या.जमादिल अव्वल मास ५ मुस. |
| ०९।४५ या. | ४ | मं | ४३ | ३० | २४ | १७ | ज्ये | ०७ | १० | ०९ | ४५ | अ | ११ | २५ | व | १२ | ३२ | २७ | १९ | ६ | ५३ | ५ | ४९ | २० | २ | १४ | धनु ०७/१० | ०९/४५ | [illegible] | [illegible] | ५ | भ. ११/०४ उ. २४/१७ या. |
| ०८।४७ उ. ११।०० या. | ५ | बु | ४४ | २८ | २४ | ४१ | मू | १० | १६ | ११ | ०० | सु | ०९ | ५२ | ब | १४ | ०७ | २७ | १५ | ६ | ५४ | ५ | ४८ | २१ | ३ | १५ | धनु | | [illegible] | [illegible] | ६ | विशाखायां रविः ०८/४७ सौभाग्य ज्ञान पांडव लाभ पंचमी मूले धनुषी शुक्रः २७/३१ |
| ११।४७ उ. | ६ | गु | ४४ | ११ | २४ | ३५ | पूषा | १२ | ११ | ११ | ४७ | धृ | ०७ | २१ | कौ | १४ | २९ | २७ | १२ | ६ | ५५ | ५ | ४८ | २२ | ४ | १६ | मकर २७/२८ | १७/५४ | [illegible] | [illegible] | ७ | सूर्यषष्ठी डाला छठ **A** आचार्य जिन उदयसागर पुण्यः चौमासी अष्टान्हिका प्रा. |
| १२।०३ या. | ७ | शु | ४२ | ३४ | २३ | ५६ | उषा | १२ | ५० | १२ | ०३ | शू | ०३/५९ | ५०/१७ | ग | १३ | ३२ | २७ | ०९ | ६ | ५६ | ५ | ४७ | २३ | ५ | १७ | मकर | | [illegible] | [illegible] | ८ | भ. २३/५६ उ.सर्वा. १२/०३ उ.सहस्त्रार्जुन ज.श्रीमाधवानंदपुरी पुण्यः जाडन पाली **A** |
| सुस्थिर | ८ | श | ३९ | ३४ | २२ | ४५ | श्र | १२ | ०९ | ११ | ४८ | वृ | ५३ | ३७ | वि | ११ | १३ | २७ | ०६ | ६ | ५६ | ५ | ४७ | २४ | ६ | १८ | कुंभ ४१/१९ | २३/२८ | [illegible] | [illegible] | ९ | भ. ११/२५ या.सर्वा. ११/४८ या.पंचक २३/२८ उ.गोपाष्टमी |
| ११।०१ उ. | ९ | र | ३५ | १२ | २१ | ०१ | ध | १० | ०७ | ११ | ०१ | ध्रु | ४६ | ५२ | बा | ०७ | ३२ | २७ | ०३ | ६ | ५७ | ५ | ४६ | २५ | ७ | १९ | कुंभ | | [illegible] | [illegible] | १० | अक्षय आँवला नवमी ज्येष्ठायां बुधः ३०/२२ उभायां २ राहुः उफायां ४ केतुः २६/३६ |
| पूर्णरवि | १० | चं | २९ | ३३ | १८ | ४७ | श | ०६ | ४७ | ०९ | ४० | व्या | ३९ | ०६ | तै | ०२ | ३१ | २७ | ०१ | ६ | ५८ | ५ | ४६ | २६ | ८ | २० | मीन ४८/३० | २६/२२ | [illegible] | [illegible] | ११ | भ. २९/२९ उ.भीष्म पंचक व्रतारंभः **B** चातुर्मास पूर्णता |
| ०७।५२ या. | ११ | मं | २२ | ४७ | १६ | ०५ | पूभा | ०२/५६ | १५/४८ | ०७/२९ | ५२/४० | ह | ३० | २७ | वि | २२ | ४७ | २६ | ५७ | ६ | ५८ | ५ | ४५ | २७ | ९ | २१ | मीन | | [illegible] | [illegible] | १२ | भ. १६/०५ या.सर्वा. ०७/५२ उ. २०/४० या.देवप्रबोधिनी ११ व्रतं सर्वे.तुलसी विवाह **B** |
| २७।११ उ. | १२ | बु | १५ | ०७ | १३ | ०१ | रे | ५० | ३० | २७ | ११ | व | २१ | ०५ | बा | १५ | ०७ | २६ | ५४ | ६ | ५९ | ५ | ४५ | २८ | १० | २२ | मेष ५०/३० | २७/११ | [illegible] | [illegible] | १३ | पंचक २७/११ या.प्रदोषव्रतं **C** बाल दि.नेहरु ज. |
| ११।१५ या. | १३ | गु | ०६ | ५० | ०९ | ४३ | अ | ४३ | ५३ | २४ | ३३ | सि | ११ | १५ | तै | ०६ | ५० | २६ | ५१ | ७ | ०१ | ५ | ४४ | २९ | ११ | २३ | मेष | | [illegible] | [illegible] | १४ | भ. ३०/१९ उ. सर्वा. ०७/०१ उ. २४/२३ या.वैकुण्ठ चतुर्दशी जैन दिवाकर चौथमल ज.जैन **C** |
| क्षय | १४ | गु | ५८ | १९ | ३० | १९ | 0 | ० | ० | ० | ० | 0 | ० | ० | 0 | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | | ० ० | ० | ० | **D** मेला पुष्करराज गढ़ गंगा तीर्थ भीष्म पंचक व्रत पूर्ण मार्गी शनिः १९/५१ |
| पूर्णिमा | १५ | शु | ४९ | ५५ | २६ | ५८ | भ | ३७ | १७ | २१ | ५५ | व्य | ०१/५१ | १४/२२ | वि | २४ | ०४ | २६ | ४८ | ७ | ०१ | ५ | ४४ | ३० | १२ | २४ | वृषभ ५०/४१ | २७/१७ | [illegible] | [illegible] | १५ | भ. १६/३८ या.पूर्णिमा व्रतं गुरुनानक ज.५५६ वीं कार्तिक स्नान पूर्ण **D** |





## निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः




### अ. २९ कार्तिक शुक्ले ८ शनौ इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ६ | ९ | ३ | ७ | १ | ८ | १० | ११ | ५ |
| अं. | २२ | २० | ०७ | १४ | २५ | ०२ | १८ | १० | १० |
| क. | ५६ | ३४ | २२ | ११ | ३५ | ३३ | ३१ | ०५ | ०५ |
| वि. | ०३ | ४६ | २३ | १३ | २४ | ४५ | ३६ | ४७ | ४७ |
| ग | ६० | ८२४ | १७ | ७६ | ०५/५३ | ७१ | ००/३८ | ३ | ३ |
| ति | १८ | २० | ५७ | ०६ | व | ४४ | व | ११ | ११ |
| नक्षत्र | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

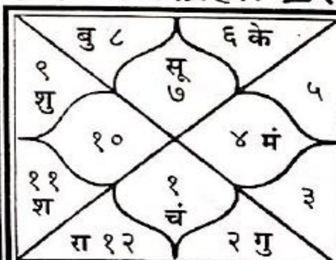
### ग्रह गोचरीय फलश्रुतिः

कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा, मेघ घटा आकाश। तिलहन घी तेल में, तेजी का प्रकाश ॥ षड़ाष्टकी गुरू शुक्र की, सम सप्तम परिवेश। चक्रवात आँधी पवन, जन धन क्षति प्रदेश॥ कार्तिक शुक्ला एकादशी, मेघ गाज आकाश आषाढ़ मास वर्षा विपुल, निर्णय शकुन प्रकाश॥ वक्र रूप शनि देव का, नेता दल संताप। अदल बदल नेता करें, लोक तंत्र परिताप॥ देव गुरु की वक्रता, राशि वृषभ गति कक्ष। वस्तु नियंत्रण देश में, समकल वितरण दक्ष॥ चलन कलन गुरु भौम का, एकादश त्रय अभिलक्ष। शांति विश्व की भावना, संधि सूत्रता दक्ष॥ अर्थ कोष मुद्रा विषय, लाभ योग विस्तार उन्नत देशज सम्पदा, उत्पादन अभिसार॥ योग कुयोग लिखे सभी, पाठक गुण गण देखें। निर्णय गणना शास्त्र की, ग्रह गति की मेख॥

### अ. ३० कार्तिक शुक्ले १५ शुक्रे इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ६ | ० | ३ | ७ | १ | ८ | १० | ११ | ५ |
| अं. | २८ | १७ | ०९ | २१ | २४ | ०९ | १८ | ०९ | ०९ |
| क. | ५८ | २२ | ०२ | १९ | ५७ | ४३ | २९ | ४६ | ४६ |
| वि. | १५ | ०९ | २३ | ४२ | ५९ | १६ | २१ | ४२ | ४२ |
| ग | ६० | ८१६ | १४ | ६३ | ०६/४३ | ७१ | ००/०१ | ३ | ३ |
| ति | २७ | ५६ | ४८ | ०५ | व | २२ | व | ११ | ११ |
| नक्षत्र | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

## निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः




● **कार्य सिद्धि की समय मर्यादा** ● कार्य कब होगा, ऐसे प्रश्न होने पर प्रश्न दिवस की तिथि, वार, नक्षत्र की संख्या का योग करें तथा योग संख्या में ३ का गुणा करें और ६ और जोड़ें। योगफल में ९ का भाग देवें, १ शेष में पक्ष, २ शेष में मास, ३ शेष में ऋतु, ४ शेष रहते ६ मास, ५ में एक दिन, ६ में १ रात, ७ में ३ घण्टा, ८ में यथा समय में और ९-० शेष बचते शीघ्र कार्य समाधान बनें।

● **अंकप्रश्न प्रतिफलम्** ● पृच्छक के प्रश्न समय पर १०८ संख्या के भीतर कोई अंक कहावे, इस अंक संख्या को १२ से भाग देवें तथा शेष १-७-९ रहे तो विलम्ब से कार्य, ४-५-८-१० बचे तो निष्फल गति, ११ शेष बचे तो सिद्धि ०-२-३-६-१२ शेष रहे तो कार्यसिद्धि योग। ● **चोर स्त्री या पुरूष नपुंसक** ● प्रश्न दिवस पर आर्द्रा से स्वाति तक १० नक्षत्र रहते स्त्री वर्ग चोर विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा नक्षत्र रहते नपुंसक वर्ग तत्व तथा शेष नक्षत्र मूल से रेवती तक तथा अश्विनी से मृगशिरा नक्षत्र के रहते पुरूष वर्ग चोर संज्ञक यह प्रश्न फल विचार उपलक्षण सूचक फलद अनुभव में आये हैं।

# मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षः संवत् २०८१ रा.शाकः १९४६

## ✦नवंबर–दिसंबर सन् २०२४ ई. हेमंत ऋतुः रवि दक्षिणायणे–दक्षिणगोले✦

♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣

| रवियोगाः | तिथि | वार | घटी | पल | घं. | मि. | नक्षत्र | घटी | पल | घं. | मि. | योग | घटी | पल | करण | घटी | पल | दिनमान घटी | दिनमान पल | स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं. | सूर्योदय मि. | सूर्यास्त घं. | सूर्यास्त मि. | विविध तारीखें बंग | मुस | भा | चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.घटी पल | घं.मि. | सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अं.क.वि. | गति | अंग्रेजी ता. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| केतु | १ | श | ४२ | ०४ | २३ | ५० | कृ | ३१ | ०७ | १९ | २८ | प | ४१ | ५६ | बा | १५ | ५३ | २६ | ४५ | ७ | ०१ | ५ | ४४ | मा१ | १३ | २५ | वृषभ | | [illegible] | [illegible] | १६ | सर्वा.अमृत सिद्धि १९/२८ उ. ३१/०२ या.वृश्चिकेऽर्कः ०७/३२ श्रीनिम्बार्क ज. A |
| धाता | २ | र | ३५ | १२ | २१ | ०६ | रो | २५ | ५२ | १७ | २३ | शि | ३३ | १८ | तै | ०८ | २८ | २६ | ४३ | ७ | ०२ | ५ | ४३ | २ | १४ | २६ | मिथुन ५३/४३ | २८/३१ | [illegible] | [illegible] | १७ | A वं.मार्गशीर्ष मास प्रा. B पुषायां शुक्रः ०८/०१ |
| चौ.व्रत | ३ | चं | २९ | ४४ | १८ | ५६ | मृ | २१ | ५५ | १५ | ४९ | सि | २५ | ४७ | व | ०२ | १५ | २६ | ४० | ७ | ०३ | ५ | ४३ | ३ | १५ | २७ | मिथुन | | [illegible] | [illegible] | १८ | भ. ०७/५७ उ. १८/५६ या.सर्वा.अमृतसिद्धि ०७/०३ उ. १५/४९ या.चतुर्थीव्रतं चंद्रोदय रात्रि १९/५८ B |
| चर | ४ | मं | २६ | ०३ | १७ | २८ | आ | १९ | ४१ | १४ | ५६ | सा | १९ | ४१ | बा | २६ | ०३ | २६ | ३७ | ७ | ०४ | ५ | ४३ | ४ | १६ | २८ | मिथुन | | [illegible] | [illegible] | १९ | अनुराधायां रविः १४/५३ इंदिरा गांधी ज. |
| गद | ५ | बु | २४ | २४ | १६ | ४९ | पुन | १९ | २५ | १४ | ५० | शु | १५ | १० | तै | २४ | २४ | २६ | ३५ | ७ | ०४ | ५ | ४२ | ५ | १७ | २९ | कर्क ०४/१७ | ०८/४७ | [illegible] | [illegible] | २० | श्री ॐ मायानंद चैतन्य ज. |
| १५।३६ उ. | ६ | गु | २४ | ५६ | १७ | ०३ | पु | २१ | १६ | १५ | ३६ | शु | १२ | २० | व | २४ | ५६ | २६ | ३२ | ७ | ०५ | ५ | ४२ | ६ | १८ | ३० | कर्क | | [illegible] | [illegible] | २१ | भ. १७/०३ उ. २९/३० या.सर्वा.अमृत सिद्धि ०७/०५ उ. १५/३६ या.गुरू पुष्यः ०७/०५ उ. १५/३६ या. C |
| १७।१० या. | ७ | शु | २७ | ३६ | १८ | ०८ | श्ले | २५ | ११ | १७ | १० | ब्र | ११ | १० | ब | २७ | ३६ | २६ | ३० | ७ | ०६ | ५ | ४२ | ७ | १९ | मा१ | सिंह २५/११ | १७/१० | [illegible] | [illegible] | २२ | रा.मार्गशीर्ष मास प्रा.जिनकांति सूरिः पुण्यः खरगच्छ मांडवला मेला राज. |
| पद्म | ८ | श | ३२ | ०७ | १९ | ५७ | म | ३० | ५२ | १९ | २७ | ऐं | ११ | २८ | कौ | ३२ | ०७ | २६ | २८ | ७ | ०७ | ५ | ४२ | ८ | २० | २ | सिंह | | [illegible] | [illegible] | २३ | श्रीकालभैरवाष्टमी–भैरव समुत्पत्तिः C धनुषी भानुः २५/२६ |
| छत्र | ९ | र | ३८ | ०२ | २२ | २० | पूफा | ३७ | ५३ | २२ | १७ | वै | १२ | ५६ | तै | ०४ | ५६ | २६ | २५ | ७ | ०७ | ५ | ४१ | ९ | २१ | ३ | कन्या ५४/४८ | २९/०२ | [illegible] | [illegible] | २४ | सर्वा. २२/१७ उ. ३१/०८ या.श्रीजाम्भोजी पुण्य दिवसः विश्नोई पंथ |
| श्रीवत्स | १० | चं | ४४ | ४५ | २५ | ०२ | उफा | ४५ | ४० | २५ | २४ | वि | १५ | ०९ | व | ११ | १९ | २६ | २३ | ७ | ०८ | ५ | ४१ | १० | २२ | ४ | कन्या | | [illegible] | [illegible] | २५ | भ. ११/४० उ. २५/०२ या.श्रीमहावीर स्वामी दीक्षा कल्याणक |
| ए.व्रत | ११ | मं | ५१ | ३८ | २७ | ४८ | ह | ५३ | ३५ | २८ | ३५ | प्री | १७ | ४२ | ब | १८ | १२ | २६ | २१ | ७ | ०९ | ५ | ४१ | ११ | २३ | ५ | कन्या | | [illegible] | [illegible] | २६ | उत्पत्ति ११ व्रतं सर्वे. वक्री बुधः ०८/१३ |
| कालदंड | १२ | बु | ५८ | ०७ | ३० | २४ | चि | ६० | ०० | - | - | आ | २० | ०९ | कौ | २४ | ५६ | २६ | १९ | ७ | १० | ५ | ४१ | १२ | २४ | ६ | तुला २७/२४ | १८/०७ | [illegible] | [illegible] | २७ | |
| प्रदोष | १३ | गु | ६० | ०० | - | - | चि | ०१ | ०४ | ०७ | ३६ | सौ | २२ | ०८ | ग | ३१ | ०३ | २६ | १७ | ७ | १० | ५ | ४१ | १३ | २५ | ७ | तुला | | [illegible] | [illegible] | २८ | प्रदोषव्रतं वक्री रोहिण्यां ४ गुरुः १४/३३ |
| गद | १३ | शु | ०३ | ४३ | ०८ | ४० | स्वा | ०७ | ४७ | १० | १८ | शो | २३ | २५ | व | ०३ | ४३ | २६ | १५ | ७ | ११ | ५ | ४१ | १४ | २६ | ८ | वृश्चि ५७/२० | ३०/०३ | [illegible] | [illegible] | २९ | भ. ०८/४० उ. २१/३९ या.मास शिवरात्रि उषायां शुक्रः १५/२९ बुधास्त प. ३०/४४ |
| शुभ | १४ | श | ०८ | १६ | १० | ३० | वि | १३ | २७ | १२ | ३५ | अ | २३ | ५१ | श | ०८ | १६ | २६ | १३ | ७ | १२ | ५ | ४१ | १५ | २७ | ९ | वृश्चिक | | [illegible] | [illegible] | ३० | पितृकार्ये अमावस्या |
| अमावस | ३० | र | ११ | ३७ | ११ | ५१ | अ | १७ | ५८ | १४ | २४ | सु | २३ | २२ | ना | ११ | ३७ | २६ | ११ | ७ | १३ | ५ | ४१ | १६ | २८ | १० | वृश्चिक | | [illegible] | [illegible] | दि१ | देवकार्ये अमावस्या दिसम्बर मास १२ ता. ३१ प्रा. |

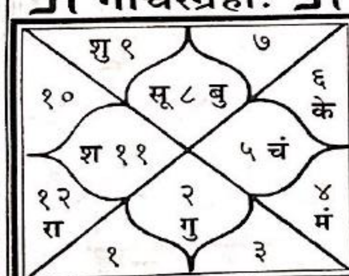








### निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः




### अ. ३१ मार्गशीर्ष कृष्णे ८ शनौ इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ७ | ४ | ३ | ७ | १ | ८ | १० | ११ | ५ |
| अं. | ०७ | ०७ | १० | २७ | २४ | १९ | १८ | ०९ | ०९ |
| क. | ०२ | ०६ | ४४ | ४६ | ०१ | १२ | ३२ | २१ | २१ |
| वि. | ४१ | ४१ | १५ | २९ | ०५ | १३ | १५ | १५ | १५ |
| ग | ६० | ७२१ | ०९ | २२ | ०७ ३४ | ७० | ०० ५० | ३ | ३ |
| ति | ४१ | ५१ | ५५ | १६ | व | ४७ | मा | ११ | ११ |
| नक्षत्र | अनु. २ | मघा ३ | पुष्य ३ | ज्येष्ठा ४ | मृ. १ | पू.षा. २ | शत. ४ | उभा. २ | उफा. ४ |

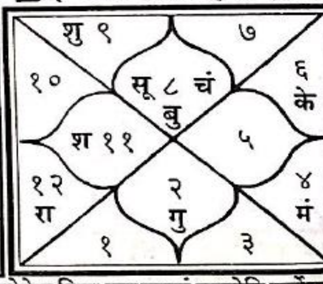
### ♣ वृश्चिक संक्रान्ति फलम् – भवन संभागीय ♣

मार्गशीर्ष कृष्णे १ शनौ वृश्चिकेऽर्कः प्र.वा.३ न.४ अस्य पुण्यकालः अद्यैव शनिवासरे प्रातःकालतः पुण्यप्रदः। वार नाम राक्षसी–श्रमजीवी, निर्धन परिवार, जनजाति, व्यवसायहीन समुदाय हेतु मनोत्साह वर्धक सुखद प्रतिफल। नक्षत्र नाम मिश्रा–शासकीय पशुधन विकास योजना, पशुपालकों की सुविधा, डेयरी फार्म, दुग्ध उत्पादन पक्ष हेतु सुयोग। दिवा १ या. व्या.शिक्षक, लेखक, व्याख्याता, राष्ट्रीय विकास, सेनापति, आरक्षी नायक, सुरक्षा अधिकारी, गुप्तचर विभाग पद विशेष पर प्रभारक कष्टद, पश्चिमे गमन, ईशान दृष्टि, बालव करणे, वाहन–व्याघ्र, उपवाहन अश्व, पीतवस्त्र, गदायुध, रजतपात्र, पायस भक्षण, कुंकुम लेपन, भूतजाति, जाति पुष्प, कंकण भूषण, पर्ण कंचुकी, कुमार्यावस्था, उपविष्टा, मुहूर्त–३०, धान्य–गल्ला स्थिर समभाव, सोना, चाँदी, चना, तुवर, हल्दी, सरसों, दानामैथी, केसर, चंदन, रोली, चाय, तमाखु, सौंठ, गरम मसाला, सुगंधी पदार्थ उन्नत धारणा, शुक्रोदय पश्चिमे, वत्स दक्षिणे, राहु पूर्वे, मूल पाताले।

### अ. ३२ मार्गशीर्ष कृष्णे ३० सूर्ये इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ७ | ७ | ३ | ७ | १ | ८ | १० | ११ | ५ |
| अं. | १५ | १२ | ११ | २६ | २२ | २८ | १८ | ०८ | ०८ |
| क. | ०८ | ५५ | ४४ | १८ | ५८ | ३६ | ४१ | ५५ | ५५ |
| वि. | ५१ | ४८ | १३ | ३५ | २९ | ०८ | ५५ | ४८ | ४८ |
| ग | ६० | ७५३ | ०४ | ५७ ५३ | ०८ ०५ | ७० | ०१ | ३ | ३ |
| ति | ५२ | १७ | १४ | व | व | ०४ | ४१ | ११ | ११ |
| नक्षत्र | अनु. ४ | अनु. ३ | पुष्य ३ | ज्येष्ठा ३ | रोहिणी ४ | उषा. १ | शत. ४ | उभा. २ | उफा. ४ |

### निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः




● **सुभाषित–सन्तोष धनं परमं सुखम्** ● गन्धाढ्यां नवमाल्लिकां मधुकरस्त्यक्त्वागतो यूथिकां। तां दृष्ट्वाशुगतः स चन्दनवनं पश्चात्सरोजं गतः॥ बद्धस्तत्र निशाकरणे सहसा रोदित्यसौ मन्दधीः सन्तोषेण विना पराभवप्रदं प्राप्नोति सर्वोजनः ● **पुण्य–धर्म संग्रह सूत्र** ● अनित्यानि शरीराणि विभवो नैव शाश्वतः। नित्यं सन्निहितो मृत्युः कर्त्तव्यो धर्मसंग्रह॥ ● **सुभाषित नीति वचन सूत्र** ● बलं विद्या हि विप्राणां, राज्ञां सैन्यं बलं तथा। बलं वित्तं च वैश्यानां शूद्राणां च कनिष्टिका॥ बाहुवीर्यो बली राजा ब्राह्मणो ब्रह्मविद् बली। रूप यौवनमाधुर्यं स्त्रीणां बलमनुत्तमम्॥ न देवो विद्यते काष्ठे न पाषाणे न मृन्मये। भावो ही विद्यते देवस्तस्माद् भावो हि कारणम्॥ न निर्मिता नैव न दृष्टपूर्वा न श्रूयते हेममथी कुरंगी। तथापि तृष्णा रघुनन्दनस्य विनाशकाले विपरीतबुद्धि॥ काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेदः पिककाकयो। वसन्तसमये प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः॥

# मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षः संवत् २०८१ रा.शाकः १९४६

## ✦ दिसम्बर सन् २०२४ ई. हेमंत ऋतुःरवि दक्षिणायणे–दक्षिणगोले ✦

| रवियोगाः | तिथि | वार | घटी | पल | घं. | मि. | नक्षत्र | घटी | पल | घं. | मि. | योग | घटी | पल | करण | घटी | पल | दिनमान घटी | दिनमान पल | सूर्योदय घं. | सूर्योदय मि. | सूर्यास्त घं. | सूर्यास्त मि. | बंग | मुस | भा | चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.घटी पल | घं.मि. | सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अं.क.वि. | गति | अंग्रेजी ता. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पद्म | १ | चं | १३ | ४६ | १२ | ४३ | ज्ये | २१ | २१ | १५ | ४६ | धृ | २१ | ५९ | ब | १३ | ४६ | २६ | ०९ | ७ | १३ | ५ | ४१ | १७ | २९ | ११ | धनु २१ २१ | १५ ४६ | ७ १६ ०९ ४४ | ६० ५४ | २ |
| छत्र | २ | मं | १४ | ४९ | १३ | ०९ | मू | २३ | ४० | १६ | ४२ | शू | १९ | ४५ | कौ | १४ | ४९ | २६ | ०८ | ७ | १४ | ५ | ४१ | १८ | ज१ | १२ | धनु | | ७ १७ १० ३७ | ६० ५५ | ३ |
| १७।१५ उ. | ३ | बु | १४ | ५० | १३ | १० | पूषा | २५ | ०१ | १७ | १५ | गं | १६ | ४४ | ग | १४ | ५० | २६ | ०६ | ७ | १५ | ५ | ४१ | १९ | २ | १३ | मकर ४० १३ | २३ २० | ७ १८ ११ ३२ | ६० ५६ | ४ |
| १७।२७ या. | ४ | गु | १३ | ५६ | १२ | ४९ | उषा | २५ | २८ | १७ | २७ | वृ | १३ | ०१ | वि | १३ | ५६ | २६ | ०५ | ७ | १५ | ५ | ४१ | २० | ३ | १४ | मकर | | ७ १९ १२ २७ | ६० ५६ | ५ |
| १७।१८ उ. | ५ | शु | १२ | १० | १२ | ०८ | श्र | २५ | ०६ | १७ | १८ | ध्रु | ०८ | ३७ | बा | १२ | १० | २६ | ०३ | ७ | १६ | ५ | ४१ | २१ | ४ | १५ | कुंभ ५४ ३७ | २९ ०७ | ७ २० १३ २४ | ६० ५७ | ६ |
| १६।५१ या. | ६ | श | ०९ | ३४ | ११ | ०६ | ध | २३ | ५५ | १६ | ५१ | व्या | ०३ ५७ | ३४ ५२ | तै | ०९ | ३४ | २६ | ०२ | ७ | १७ | ५ | ४२ | २२ | ५ | १६ | कुंभ | | ७ २१ १४ २१ | ६० ५८ | ७ |
| राक्षस | ७ | र | ०६ | ०८ | ०९ | ४४ | श | २१ | ५४ | १६ | ०३ | व | ५१ | ३० | व | ०६ | ०८ | २६ | ०१ | ७ | १८ | ५ | ४२ | २३ | ६ | १७ | कुंभ | | ७ २२ १५ १९ | ६० ५८ | ८ |
| १४।५६ उ. | ८ | चं | ०१ | ५३ | ०८ | ०३ | पूभा | १९ | ०५ | १४ | ५६ | सि | ४४ | २८ | ब | ०१ | ५३ | २६ | ०१ | ७ | १८ | ५ | ४२ | २४ | ७ | १८ | मीन ०४ ५२ | ०९ १५ | ७ २३ १६ १७ | ६० ५९ | ९ |
| क्षय | ९ | चं | ५६ | ५० | ३० | ०२ | 0 | ० | ० | ० | ० | 0 | ० | ० | 0 | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | | ० ० | ० | ० |
| पूर्णरवि | १० | मं | ५१ | ०१ | २७ | ४३ | उभा | १५ | २९ | १३ | ३० | व्य | ३६ | ५० | तै | २४ | ०१ | २५ | ५९ | ७ | १९ | ५ | ४२ | २५ | ८ | १९ | मीन | | ७ २४ १७ १६ | ६१ ०० | १० |
| ११।४८ या. | ११ | बु | ४४ | ३६ | २५ | ०९ | रे | ११ | ११ | ११ | ४८ | व | २८ | ४० | व | १७ | ५२ | २५ | ५८ | ७ | २० | ५ | ४३ | २६ | ९ | २० | मेष ११ ११ | ११ ४८ | ७ २५ १८ १६ | ६१ ०१ | ११ |
| मानस | १२ | गु | ३७ | ४६ | २२ | २६ | अ | ०६ | २१ | ०९ | ५३ | प | २० | ०७ | ब | ११ | १२ | २५ | ५७ | ७ | २० | ५ | ४३ | २७ | १० | २१ | मेष | | ७ २६ १९ १६ | ६१ ०१ | १२ |
| ०७।५० उ. २९।४८ या. | १३ | शु | ३० | ४९ | १९ | ४० | भ | ०१ ५६ | १३ ०८ | ०७ २९ | ५० ४८ | शि | ११ | २३ | कौ | ०४ | १७ | २५ | ५६ | ७ | २१ | ५ | ४३ | २८ | ११ | २२ | वृषभ १४ ५६ | १३ १९ | ७ २७ २० १६ | ६१ ०१ | १३ |
| श्रीवत्स | १४ | श | २४ | ०४ | १६ | ५९ | रो | ५१ | २३ | २७ | ५५ | सि | ०२ ५४ | ४२ २४ | व | २४ | ०४ | २५ | ५५ | ७ | २१ | ५ | ४४ | २९ | १२ | २३ | वृषभ | | ७ २८ २१ १८ | ६१ ०२ | १४ |
| पूर्णिमा | १५ | र | १७ | ५४ | १४ | ३१ | मृ | ४७ | २५ | २६ | २० | शु | ४६ | ४३ | ब | १७ | ५४ | २५ | ५५ | ७ | २२ | ५ | ४४ | पौ१ | १३ | २४ | मिथुन १९ १६ | १५ ०४ | ७ २९ २२ २० | ६१ ०३ | १५ |

♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣

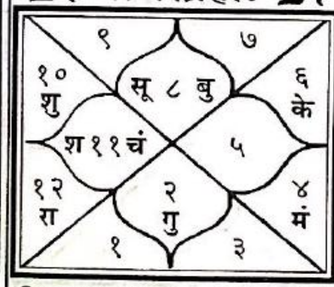






- २ चंद्रदर्शन ज्येष्ठायां रविः १९/०९ मकरे शुक्रः ११/५७
- ३ जमादिउल आखिर मास ६ मुस
- ४ भ. २५/०३ उ.नौसेना दिवस
- ५ भ. १२/४९ या.
- ६ सर्वा. ०७/१६ उ. १७/१८ या.पंचक २९/०७ उ.श्रीरामजानकी विवाहोत्सवः वक्री भौमः २९/०३
- ७ चम्पाषष्ठी स्कंद गुहषष्ठी मित्रसप्तमी A
- ८ भ. ०९/४४ उ. २०/५७ या. नरसी मेहता ज. वक्री अनुराधायां बुधः २४/४६
- ९ जैन दिवाकर चौथमलजी पुण्य स्था.जैन
- ० A अभिजिति शुक्रः २९/४९ सशस्त्र सेना झंडा दि.
- १० सर्वा. ०७/१९ उ. १३/३१ या.श्रवणे शुक्रः २७/१९ विश्व मानव अधिकार दि.
- ११ भ. १४/२८ उ. २५/०९ या.पंचक ११/४८ या.मोक्षदा ११ व्रतं स्मा.(गृहस्थ) वै.श्रीगीता ज.मौन ११
- १२ सर्वा. ०७/२० उ. ०९/५३ या.मोक्षदा ११ व्रतं निम्बा.बुधोदय पू. ०९/४०
- १३ प्रदोषव्रतं B श्रीदत्त महाप्रभु ज. C मार्गी बुधः २६/२६ सरदार पटेल पुण्यः
- १४ भ. १६/५९ उ. २७/४३ या.सर्वा अमृत सिद्धि ०७/२१ उ. २७/५५ या.पूर्णिमाव्रतं पिशाचमोचन श्राद्ध B
- १५ धनुष्यऽर्कः २२/११ मूले रविः २२/११ पूर्णिमा पुण्यः मलमास प्रा.बं.पौष मास प्रा. C

### निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः




### अ. ३३ मार्गशीर्ष शुक्ले ८ चंद्रे इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ७ | १० | ३ | ७ | १ | ९ | १० | ११ | ५ |
| अं. | २३ | २८ | ११ | १६ | २१ | ०७ | १८ | ०८ | ०८ |
| क. | १६ | ५१ | ५६ | १९ | ५३ | ५३ | ५८ | ३० | ३० |
| वि. | १७ | ५१ | ११ | ४७ | १४ | २७ | १६ | २१ | ११ |
| ग | ६० | ८४७ | ०२ ०६ | ६६ ४५ | ०८ १० | ६९ | ०२ | ३ | ३ |
| ति | ५९ | ३४ | व | व | व | ०५ | ३० | ११ | ११ |
| नक्षत्र | ज्येष्ठा २ | पूभा. ३ | पुष्य ३ | अनु. ४ | रोहिणी ४ | अभि. २ | शत. ४ | उभा. २ | उफा. ४ |

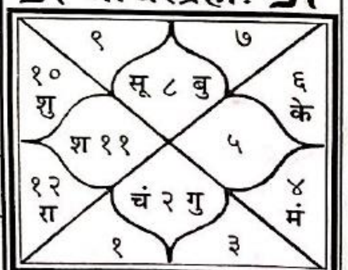
### ♣ धनु संक्रान्ति फलम् – रण संभागीय ♣

मार्गशीर्ष शुक्ले १५ सूर्ये धनुष्यऽर्कः प्र.वा. २ न. ३ अस्य पुण्यकालः परदिने सोमवासरे प्रातःकालतः पुण्यप्रदः। वार नाम घोरा–सुद्दूर जंगल–पर्वत निवासी, आदिवासी निर्धन, वयोवृद्ध, अनुसूचित जनजाति हेतु शासकीय सुलाभ, नवीन योजना। नक्षत्र नाम मंदाकिनी–राजपत्रित अधिकारी, नीति निदेशक, विविध दलपति–राजनेता, अधीक्षक वर्ग हेतु सुखद। रात्रि २ या.व्या.हिंसाशील, आतंक प्रसारक, देशद्रोही, विस्फोटककर्ता, तमोगुण प्रधान वर्ग हेतु कष्टद प्रभारक। पूर्वे गमन, नैऋत्यां दृष्टि, बालव करणे, वाहन व्याघ्र, उपवाहन अश्व, पीतवस्त्र, गदायुध, रजतपात्र, पायस भक्षण, कुंकुम लेपन, भूतजाति, जाति पुष्प, कंकण भूषण, पर्णकंचुकी, कुमायावस्था, उपविष्टा मुहूर्त–३०, धान्य–गल्ला स्थिर समभाव, सोना, चांदी, चना, तुवर, हल्दी, सरसों, दानामेथी, केसर, चंदन, रोली, चाय, तमाखु, सौंठ, गरम मसाला, सुगंधी पदार्थ उन्नत धारणा। शुक्रोदय पश्चिमे, वत्स दक्षिणे, राहु पूर्वे, मूल भूमौ।

### अ. ३४ मार्गशीर्ष शुक्ले १५ सूर्ये इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ७ | १ | ३ | ७ | १ | ९ | १० | ११ | ५ |
| अं. | २९ | २५ | ११ | १२ | २१ | १४ | १९ | ०८ | ०८ |
| क. | २२ | २४ | ३१ | १४ | ०४ | ४५ | १४ | ११ | ११ |
| वि. | २० | १२ | १० | ४० | ३४ | ३८ | ४४ | १६ | १६ |
| ग | ६१ | ८५३ | ०७ ०५ | ०३ ०१ | ०७ ५९ | ६८ | ०३ | ३ | ३ |
| ति | ०३ | ४० | व | व | व | ०७ | ०५ | ११ | ११ |
| नक्षत्र | ज्येष्ठा ४ | मृग. १ | पुष्य ३ | अनु. ३ | रोहिणी ४ | श्रवण २ | शत. ४ | उभा. २ | उफा. ४ |

### निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः




● **यात्रा प्रश्नफल** ● यात्रा के दिन की तिथि, नक्षत्र तथा वारों की संख्या जोड़कर तीन स्थान पर अलग–अलग रखें व क्रमशः ७ – ८ – ३ से भाग देवें। यदि तीनों स्थानों पर कोई अंक आवे तो यात्रा शुभ रहेगी, परन्तु प्रथम पर ० बचे तो अपव्यय, व्यर्थ भ्रमण और तीसरे में ० बचे तो विवाद विग्रह, दूसरी जगह ० रहते कष्ट, धनहानि समझें। **धवाड़ योग** – सूर्य नक्षत्र चार से दिन नक्षत्र तक की संख्या को ३ से गुणा करें, इसमें तिथि संख्या जोड़ें तथा ७ का भाग देवें। शेष यदि ३ बचे तो इसे घबाड़ योग दिवस बनता है। इन योग दिवस को सर्वकार्य में शुभ फलद मान्य किया है। **विशेष प्रश्नफल कथन** हेतु ये साहित्य पठन मनन योग्य–**प्रश्न भुवन दीपक** मू. १००/– रू., **प्रश्न ज्ञान** मू. १००/– रू. तथा **गुप्त प्रश्नोत्तरी** १५०/– रू., **प्रश्न चन्द्र प्रकाश** ३००/– रू. का प्राप्त है। यथायोग्य मनीआर्डर भेजकर मंगा लेवें। पता – **निर्णयसागर पुस्तकालय** – नीमच (म.प्र.) फोन – ०७४२३-२२०५२०, मो. ९४२५९७४१७४

# पौष कृष्ण पक्षः संवत् २०८१ रा.शाकः १९४६

| रवियोगाः | तिथि | वार | घटी | पल | घं. | मि. | नक्षत्र | घटी | पल | घं. | मि. | योग | घटी | पल | करण | घटी | पल | दिनमान घटी | दिनमान पल | स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं. | सूर्योदय मि. | सूर्यास्त घं. | सूर्यास्त मि. | विविध तारीखें बंग | मुस | भा | चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.घटी पल | घं.मि. | सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अ.क.वि. | गति | अंग्रेजी ता. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कालदंड | १ | चं | १२ | ४३ | १२ | २७ | आ | ४४ | ३७ | २५ | १४ | शू | ३९ | ५९ | कौ | १२ | ४३ | २५ | ५४ | ७ | २३ | ५ | ४४ | २ | १४ | २५ | मिथुन | | ८ ०० २३ २२ | ६१ ०३ | १६ |
| सुस्थिर | २ | मं | ०८ | ५४ | १० | ५६ | पुन | ४३ | २२ | २४ | ४४ | ब्र | ३४ | २९ | ग | ०८ | ५४ | २५ | ५४ | ७ | २३ | ५ | ४५ | ३ | १५ | २६ | कर्क २८/३१ | १८/४८ | ८ ०१ २४ २५ | ६१ ०४ | १७ |
| चौ.व्रत | ३ | बु | ०६ | ४७ | १० | ०६ | पु | ४३ | ५७ | २४ | ५८ | ऐं | ३० | २५ | वि | ०६ | ४७ | २५ | ५३ | ७ | २४ | ५ | ४५ | ४ | १६ | २७ | कर्क | | ८ ०२ २५ २९ | ६१ ०५ | १८ |
| अमृत | ४ | गु | ०६ | ३८ | १० | ०३ | श्ले | ४६ | २९ | २६ | ०१ | वै | २७ | ५४ | बा | ०६ | ३८ | २५ | ५३ | ७ | २४ | ५ | ४६ | ५ | १७ | २८ | सिंह ४६/२९ | २६/०१ | ८ ०३ २६ ३४ | ६१ ०५ | १९ |
| २७।४७ उ. | ५ | शु | ०८ | ३१ | १० | ४९ | म | ५० | ५६ | २७ | ४७ | वि | २६ | ५६ | तै | ०८ | ३१ | २५ | ५३ | ७ | २५ | ५ | ४६ | ६ | १८ | २९ | सिंह | | ८ ०४ २७ ४० | ६१ ०६ | २० |
| ३०।१४ या. | ६ | श | १२ | २१ | १२ | २१ | पूफा | ५७ | ०२ | ३० | १४ | प्री | २७ | २३ | व | १२ | २१ | २५ | ५३ | ७ | २५ | ५ | ४६ | ७ | १९ | ३० | सिंह | | ८ ०५ २८ ४६ | ६१ ०७ | २१ |
| मित्र | ७ | र | १७ | ४६ | १४ | ३२ | उफा | ६० | ०० | - | - | आ | २८ | ५५ | ब | १७ | ४६ | २५ | ५३ | ७ | २६ | ५ | ४७ | ८ | २० | पौ१ | कन्या १३/४५ | १२/५६ | ८ ०६ २९ ५३ | ६१ ०८ | २२ |
| श्रीवत्स | ८ | चं | २४ | १५ | १७ | ०८ | उफा | ०४ | १७ | ०९ | ०९ | सौ | ३१ | १० | कौ | २४ | १५ | २५ | ५३ | ७ | २६ | ५ | ४८ | ९ | २१ | २ | कन्या | | ८ ०७ ३१ ०० | ६१ ०८ | २३ |
| सौम्य | ९ | मं | ३१ | ०५ | १९ | ५२ | ह | १२ | ०६ | १२ | १७ | शो | ३३ | ३७ | ग | ३१ | ०५ | २५ | ५३ | ७ | २७ | ५ | ४८ | १० | २२ | ३ | तुला ४६/०१ | २५/५१ | ८ ०८ ३२ ०९ | ६१ ०९ | २४ |
| कालदंड | १० | बु | ३७ | ३६ | २२ | २९ | चि | १९ | ४७ | १५ | २२ | अ | ३५ | ४८ | व | ०४ | २५ | २५ | ५४ | ७ | २७ | ५ | ४९ | ११ | २३ | ४ | तुला | | ८ ०९ ३३ १८ | ६१ ०९ | २५ |
| ए.व्रत | ११ | गु | ४३ | १२ | २४ | ४४ | स्वा | २६ | ४५ | १८ | १० | सु | ३७ | १९ | ब | १० | ३२ | २५ | ५४ | ७ | २८ | ५ | ४९ | १२ | २४ | ५ | तुला | | ८ १० ३४ २७ | ६१ १० | २६ |
| मातंग | १२ | शु | ४७ | २८ | २६ | २७ | वि | ३२ | ३२ | २० | २९ | धृ | ३७ | ५३ | कौ | १५ | ३० | २५ | ५४ | ७ | २८ | ५ | ५० | १३ | २५ | ६ | वृश्चि. १६/१२ | १३/५७ | ८ ११ ३५ ३७ | ६१ १० | २७ |
| प्रदोष | १३ | श | ५० | १२ | २७ | ३३ | अ | ३६ | ५२ | २२ | १३ | शू | ३७ | १७ | ग | १९ | ०१ | २५ | ५५ | ७ | २८ | ५ | ५० | १४ | २६ | ७ | वृश्चिक | | ८ १२ ३६ ४७ | ६१ ११ | २८ |
| काण | १४ | र | ५१ | २३ | २८ | ०२ | ज्ये | ३९ | ४४ | २३ | २२ | गं | ३५ | ३१ | वि | २० | ५८ | २५ | ५६ | ७ | २९ | ५ | ५१ | १५ | २७ | ८ | धनु ३९/४४ | २३/२२ | ८ १३ ३७ ५८ | ६१ ११ | २९ |
| अमावस | ३० | चं | ५१ | ०९ | २७ | ५६ | मू | ४१ | ११ | २३ | ५८ | वृ | ३२ | ३८ | च | २१ | २६ | २५ | ५७ | ७ | २९ | ५ | ५२ | १६ | २८ | ९ | धनु | | ८ १४ ३९ ०९ | ६१ ११ | ३० |

✦दिसम्बर सन् २०२४ ई. हेमंत–शिशिर ऋतुःरवि दक्षिणा–उत्तरायणे–दक्षिणगोले✦

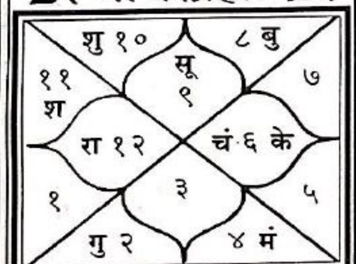
♣सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा. घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं♣

- १६
- १७ भ. २२/२६ उ.
- १८ भ. १०/०६ या.चतुर्थी व्रतं चंद्रोदय रात्रि २०/५०
- १९ श्रीदीपनारायण पुरी पुण्यः (खाटू बड़ी) राज.
- २०
- २१ भ. १२/२१ उ. २५/२३ या.मकरेभानुः १४/५० रवि उत्तरायणे शिशिर ऋतुः प्रा.
- २२ सर्वा. ०७/२६ उ. ३१/२६ या.रा.पौष मास प्रा.कालाष्टमी धनिष्ठायां शुक्रः २२/१९
- २३ वक्री रोहिण्यां ३ गुरुः ३५/४२ किसान दि.
- २४ ज्येष्ठायां बुधः ०८/३१
- २५ भ. ०९/१३ उ. २२/२९ या.पौषी १० जैन श्रीपार्श्वनाथ ज. **A**
- २६ सफला ११ व्रतं सर्वे. **A** क्रिसमस डे पं.मदनमोहन मालवीय ज.
- २७ सर्वा. २०/२९ उ. ३१/२८ या.पूभायां १ शनिः २०/१७
- २८ भ. २७/३३ उ.शनि प्रदोष व्रत पूषायां रविः २४/२५ कुम्भे शुक्रः २३/४१
- २९ भ. १५/५२ या.सर्वा. २३/२२ उ. ३१/२९ या.मासशिवरात्रि श्रीजयप्रभ विजय पुण्यः त्रि.स्तु.जैन
- ३० देवपितृकार्ये सोमवती अमावस्या





## 卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐




## अ. ३५ पौष कृष्णे ८ चंद्रे इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ८ | ५ | ३ | ७ | १ | ९ | १० | ११ | ५ |
| अं. | ०७ | ०९ | १० | १५ | २० | २३ | १९ | ०७ | ०७ |
| क. | ३१ | ०९ | ११ | ४३ | ०२ | ४५ | ४१ | ४५ | ४५ |
| वि. | ०० | १९ | ०८ | ०२ | ३३ | २२ | ५९ | ४९ | ४९ |
| ग | ६१ | ७०८ | १३/४२ | ५४/२२ | ०७/२४ | ६६ | ०३ | ३ | ३ |
| ति | ०८ | ०४ | व | मा | व | ३३ | ४९ | ११ | ११ |
| नक्षत्र | मूल ३ | उफा.४ | पुष्य ३ | अनु.४ | रोहिणी ४ | धनिष्ठा १ | शत.४ | उभा.२ | उफा.४ |

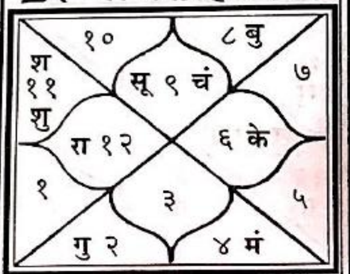
## ♣ ग्रह गोचरीय फलश्रुतिः ♣

अमा पूर्णिमा वार शुभ बना सुखद अधियोग। सुख सुभिक्ष की धारणा, निर्णय शास्त्र सुयोग।। बुधादित्य की स्थिति, कोविद लाभ विशेष। शिक्षा शिक्षक पंथ में, लाभद रूप निवेश।। ज्येष्ठा पौष अमावस को, पूर्वा उत्तरा नेष्ट। नखत मूल से मानिये, सुख सम्पदा श्रेष्ठ।। साते आठे पौष वदी, बरसे नभ सह गाज। वर्षा ऋतु में श्रेष्ठता, निर्णय शकुन सुराज।। चलन कलन गुरु भौम का, एकादश त्रय अभिलक्ष। शांति विश्व की भावना संधि सूत्रता दक्ष।। अर्थ कोष मुद्रा विषय, लाभ योग विस्तार। उन्नत देशज सम्पदा, उत्पादन अभिसार।। अणुशक्ति विज्ञान की, प्रभुता नित्य विहार। योग सुयोग उपलक्षणा, भारत देश विहार।। तेल किराणा धान्य हित, नीति नव संदेश। गरिमा निर्णय शास्त्र की, वस्तु प्रबंधन देश।।

## अ. ३६ पौष कृष्णे ३० चंद्रे इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ८ | ८ | ३ | ७ | १ | १० | १० | ११ | ५ |
| अं. | १४ | ०४ | ०८ | २३ | १९ | ०१ | २० | ०७ | ०७ |
| क. | ३९ | २२ | १९ | १४ | १३ | २६ | १० | २३ | २३ |
| वि. | ०९ | ०३ | १८ | ५५ | ०४ | १९ | ३१ | ३३ | ३३ |
| ग | ६१ | ७८६ | १८/४८ | ७४ | ०६/३५ | ६४ | ०४ | ३ | ३ |
| ति | ११ | १७ | व | ४७ | व | ५० | २५ | ११ | ११ |
| नक्षत्र | पूषा.१ | मूल २ | पुष्य २ | ज्येष्ठा २ | रोहिणी ३ | धनिष्ठा ३ | पूभा.१ | उभा.२ | उफा.४ |

## 卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐




● **इन्द्रधनुष दर्शन प्रतिफलम्** ● वायु वेग के सम्पर्क में आयी सूर्य किरणें जो जल के अन्तर्गत प्रविष्ट होती हैं, उससे सात वर्ण वाले धनुष की रचना बनती है। यही इन्द्र धनुष संज्ञा सूचक उपलक्षण रचना। वर्षा होने पर इन्द्र धनुष बने तो वर्षा बन्द होवे तथा पहले हो तो वर्षा करे। पश्चिम दिशा का इन्द्रधनुष वर्षा करे। पूर्व दिशा का इन्द्रधनुष पहले वर्षा नहीं होवे तो वर्षाकारक तथा बरसते दिखे तो वर्षा बन्द होवे। संध्या समय से पूर्व–पहले समय का वर्षा प्रदायक, उत्तर दिशा का अचानक शीघ्र वर्षा सूचक। दक्षिण दिशा का धनुष वर्षा नहीं होवे तो विशेष वर्षा रचना का सूचक। आकाश मध्य भाग का वर्षाकारक तथा शनि–शुक्र–सोम–मंगल–गुरूवार का इन्द्रधनुष दर्शन भावी ४–५ दिनों में वर्षाकारक बनें। सूर्य अस्त के समय पश्चिम दिशा का इन्द्रधनुष वर्षाकारक। **संध्या प्रकाश विषये सूत्र** – दिन तथा रात के सन्धिकाल समय पर २ या ३ घड़ी अर्थात् १ घन्टा समय पर्यन्त तारा दर्शन स्थिति काल को संध्याकाल गणितागत मान्य किया है। प्रातःकाल एवं सायंकालिक संध्या की मेघ रचना प्रवर्षण कारक बनती है। ●**ईस्वी सन् २०२५ निर्णयसागर कालदर्शक** ● नित्य उपयोगी विविध शास्त्रीय विचार व मुहूर्त्त फल सहित नजदीकी पुस्तक विक्रेता से प्राप्त करें।

# पौष शुक्ल पक्षः संवत् २०८१ रा.शाकः १९४६

| रवियोगाः | तिथि | वार | घटी | पल | घं. | मि. | नक्षत्र | घटी | पल | घं. | मि. | योग | घटी | पल | करण | घटी | पल | दिनमान घटी | दिनमान पल | स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं. | सूर्योदय मि. | सूर्यास्त घं. | सूर्यास्त मि. | विविध तारीखें बंग | मुस | भा | चन्द्रराशि | प्रवेश काल रा.घटी पल | घं.मि. | सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अं.क.वि. | गति | अंग्रेजी ता. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मित्र | १ | मं | ४९ | ४३ | २७ | २२ | पूषा | ४१ | २६ | २४ | ०४ | ध्रु | २८ | ४५ | किं | २० | ३४ | २५ | ५७ | ७ | २९ | ५ | ५२ | १७ | २९ | १० | मकर | ५६।२० | ३०।०१ | ८।१५।४०।२० | ६१।११ | ३१ |
| वज्र | २ | बु | ४७ | १७ | २६ | २४ | उषा | ४० | ४१ | २३ | ४६ | व्या | २४ | ०२ | बा | १८ | ३६ | २५ | ५८ | ७ | ३० | ५ | ५३ | १८ | ३० | ११ | मकर | | | ८।१६।४१।३१ | ६१।११ | ज१ |
| २३।११ उ. | ३ | गु | ४४ | ०७ | २५ | ०८ | श्र | ३९ | १२ | २३ | ११ | ह | १८ | ४० | तै | १५ | ४७ | २५ | ५९ | ७ | ३० | ५ | ५४ | १९ | १ | १२ | मकर | | | ८।१७।४२।४२ | ६१।११ | २ |
| २२।२२ या. | ४ | शु | ४० | २५ | २३ | ४० | ध | ३७ | ०९ | २२ | २२ | व | १२ | ४८ | व | १२ | १९ | २६ | ०१ | ७ | ३० | ५ | ५४ | २० | २ | १३ | कुंभ | ०८।१४ | १०।४८ | ८।१८।४३।५३ | ६१।११ | ३ |
| २१।२४ उ. | ५ | श | ३६ | १८ | २२ | ०१ | श | ३४ | ४३ | २१ | २४ | सि | ०६ | ३४ | ब | ०८ | २४ | २६ | ०२ | ७ | ३० | ५ | ५५ | २१ | ३ | १४ | कुंभ | | | ८।१९।४५।०४ | ६१।१० | ४ |
| २०।१८ या. | ६ | र | ३१ | ५३ | २० | १५ | पूभा | ३१ | ५८ | २० | १८ | व्य | ००।५३ | ०४।२० | कौ | ०४ | ०७ | २६ | ०३ | ७ | ३१ | ५ | ५६ | २२ | ४ | १५ | मीन | १७।४१ | १४।३५ | ८।२०।४६।१४ | ६१।१० | ५ |
| गद | ७ | चं | २७ | १३ | १८ | २४ | उभा | २८ | ५९ | १९ | ०७ | प | ४६ | २६ | व | २७ | १३ | २६ | ०५ | ७ | ३१ | ५ | ५७ | २३ | ५ | १६ | मीन | | | ८।२१।४७।२४ | ६१।०९ | ६ |
| १७।५० उ. | ८ | मं | २२ | २१ | १६ | २७ | रे | २५ | ४८ | १७ | ५० | शि | ३९ | २२ | ब | २२ | २१ | २६ | ०६ | ७ | ३१ | ५ | ५७ | २४ | ६ | १७ | मेष | २५।४८ | १७।५० | ८।२२।४८।३४ | ६१।०९ | ७ |
| पूर्ण रवि | ९ | बु | १७ | १८ | १४ | २६ | अ | २२ | २७ | १६ | ३० | सि | ३२ | १० | कौ | १७ | १८ | २६ | ०८ | ७ | ३१ | ५ | ५८ | २५ | ७ | १८ | मेष | | | ८।२३।४९।४३ | ६१।०८ | ८ |
| १५।०७ या. | १० | गु | १२ | १० | १२ | २२ | भ | १९ | ०० | १५ | ०७ | सा | २४ | ५५ | ग | १२ | १० | २६ | ०९ | ७ | ३१ | ५ | ५९ | २६ | ८ | १९ | वृषभ | ३३।०८ | २०।४६ | ८।२४।५०।५१ | ६१।०८ | ९ |
| ए.व्रत | ११ | शु | ०७ | ०२ | १० | २० | कृ | १५ | ३६ | १३ | ४६ | शु | १७ | ४३ | वि | ०७ | ०२ | २६ | ११ | ७ | ३१ | ६ | ०० | २७ | ९ | २० | वृषभ | | | ८।२५।५१।५९ | ६१।०७ | १० |
| प्रदोष | १२ | श | ०२ | ०७ | ०८ | २२ | रो | १२ | २६ | १२ | २९ | शु | १० | ४३ | बा | ०२ | ०७ | २६ | १३ | ७ | ३१ | ६ | ०० | २८ | १० | २१ | मिथुन | ४१।०१ | २३।५५ | ८।२६।५३।०६ | ६१।०७ | ११ |
| क्षय | १३ | श | ५७ | ३८ | ३० | ३४ | 0 | ० | ० | ० | ० | 0 | ० | ० | 0 | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | | | ० ० | ० | ० |
| ११।२५ उ. | १४ | र | ५३ | ५१ | २९ | ०३ | मृ | ०९ | ४३ | ११ | २५ | ब्र | ०४।५८ | ०५।०३ | ग | २५ | ३८ | २६ | १५ | ७ | ३१ | ६ | ०१ | २९ | ११ | २२ | मिथुन | | | ८।२७।५४।१३ | ६१।०६ | १२ |
| १०।३८ या. | १५ | चं | ५१ | ०४ | २७ | ५६ | आ | ०७ | ४७ | १० | ३८ | वै | ५२ | ४९ | वि | २२ | १९ | २६ | १७ | ७ | ३१ | ६ | ०२ | ३० | १२ | २३ | कर्क | ५२।०१ | २८।१९ | ८।२८।५५।१९ | ६१।०६ | १३ |

## ✦ दिसम्बर–जनवरी सन् २०२४–२५ ई. शिशिर ऋतुःरवि उत्तरायणे–दक्षिणगोले ✦

♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣

- ३१ — **A** रज्जब मास ७ मुस
- ज१ — **चंद्रदर्शन जनवरी मास १ ता. ३१सन् २०२५ प्रा.**
- २ — श्रीयतींद्र सूरीश्वर पुण्यःत्रि.स्तु.जैन मेला ख्वाजा सा.अजमेर श.**A**
- ३ — भ. १२/२६ उ. २३/४० या.पंचक १०/४८ उ.शतभिषायां शुक्रः २८/४०
- ४ — मूले धनुषी बुधः १२/०४
- ५ — सर्वा. २०/१८ उ. ३१/३१ या.
- ६ — भ. १८/२४ उ. २९/२६ या.गुरुगोविन्दसिंह ज.गुरू राजेन्द्र सूरीश्वर जन्म व पुण्यः जैन
- ७ — सर्वा.अमृत सिद्धि १७/५० उ. ३१/३१ या.पंचक १७/५० या.
- ८ —
- ९ — भ. २३/२१ उ.आचार्य जिनानंद सागर पुण्यः खर.गच्छ जैन
- १० — भ. १०/२० या.उषायां रविः २६/२२ पुत्रदा ११ व्रतं सर्वे.
- ११ — सर्वा.अमृत सिद्धि ०७/३१ उ. १२/२९ या.शनि प्रदोष व्रतं
- ० — **B** वक्री पुनर्वसौ भौमः २४/१८ उभायां १ राहुः उफायां ३ केतुः २४/१८
- १२ — भ. २९/०३ उ.स्वामी विवेकानंद जन्म रा.युवा दिवस मरुधरकेसरी मिश्रीमल पु.स्था.जैन **B**
- १३ — भ. १६/२७ या.लोहड़ी पर्व पंजाब पूर्णिमाव्रतं माघमास स्नान प्रा.शाकंभरी ज.पूषायां बुधः २०/३६



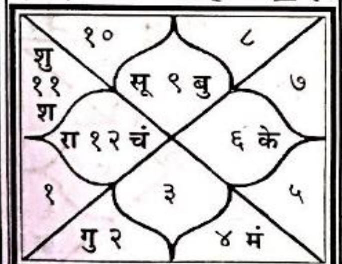









### 卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐




### अ. ३७ पौष शुक्ले ८ भौमे इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ८ | ११ | ३ | ८ | १ | १० | १० | ११ | ५ |
| अं. | २२ | २३ | ०५ | ०३ | १८ | ०९ | २० | ०६ | ०६ |
| क. | ४८ | ५६ | ३३ | ५२ | २४ | ५६ | ४८ | ५८ | ५८ |
| वि. | ३४ | २३ | १७ | ५२ | २५ | २२ | ०६ | ०७ | ०७ |
| ग | ६१ | ८४६ | २२।४७ | ८४ | ०५।२३ | ६२ | ०५ | ३ | ३ |
| ति | ०९ | २५ | व | ३८ | व | १४ | ०३ | ११ | ११ |
| नक्षत्र | पूषा. ३ | रेवती ३ | पुष्य १ | मूल २ | रोहिणी ३ | शत. १ | पूभा. १ | उभा. २ | उफा. ४ |

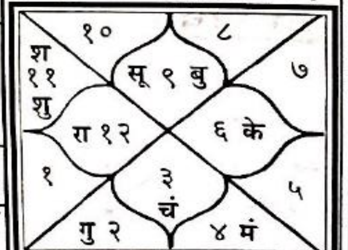
### ♣ ग्रह गोचरीय फलश्रुतिः ♣

पौष शुक्ला सप्तमी, आठम नवमी गाज। मेघ संग या बिजली, निर्णय सुखद समाज॥ सुदी पौष की पंचमी, हिम प्रपात संचार। निर्णय वर्षाकाल में, वर्षा बने अपार॥ युति योग शनि शुक्र का, गोचर पंथ निवेश। वस्तु श्रृंगारिक सभी, गंध सुगंध विशेष॥ नही मंदी की धारणा, तेजी रूप अधिशेष। निर्णय गणना शास्त्र की, भौतिक सौख्य प्रवेश॥ पड़वा दोयज पौष सुदी, बिजली बादल देख। वर्षा से खेती बढ़े, उपजै अन्न विशेष॥ पौष सुदी में चौथ को, ना बादल ना गाज। आगे वर्षा काल हो, वर्षा का अभाव॥ पौष उजेरी सप्तमी, आठे नोमी गाज। बादल वर्षा होय तो, साजै सुंदर साज॥ पौष सुदी तेरस दिना, मंगल या शनिवार। वर्षा ना हो तो भरो, गेहूँ के भंडार॥

### अ. ३८ पौष शुक्ले १५ चंद्रे इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ८ | २ | ३ | ८ | १ | १० | १० | ११ | ५ |
| अं. | २८ | १८ | ०३ | १२ | १७ | १६ | २१ | ०६ | ०६ |
| क. | ५५ | १३ | १२ | ३१ | ५४ | ०३ | १९ | ३९ | ३९ |
| वि. | १९ | २७ | ४८ | ३८ | ४२ | ३९ | २५ | ०२ | ०२ |
| ग | ६१ | ८१३ | २३।५१ | ८८ | ०४।२० | ५९ | ०५ | ३ | ३ |
| ति | ०६ | ५४ | व | ४६ | व | ४२ | २८ | ११ | ११ |
| नक्षत्र | उषा. १ | आर्द्रा ४ | पुन. ४ | मूल ४ | रोहिणी ३ | शत. ३ | पूभा. १ | उभा. १ | उफा. ३ |

### 卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐




● **शकुन सूत्रावली** ● बदी ४ से १० तथा १३ से ३० एवं सुदी ५ से ९ एवं १२ से १४ मध्य न्यूनाधिक मेघ गाज रचना तपन ताप सहित मानसून गति पथ। ● **नीति वचन सूत्र** ● अर्थां भाग्योदये जन्तुं विशन्ति शतशः स्वयम्। दिग्भ्योऽभ्युपेत्य सर्वाभ्यः सायं तरूनिवाण्डजाः॥ भावार्थ – संध्या होते ही जैसे सभी पशु–पक्षी विभिन्न दिशाओं से आकर वृक्षों पर रेन–बसेरा लेने पहुंच जाते हैं। एवमेव जब मनुष्य का भाग्योदय काल बनता है, तब सभी दिशाओं से विविध प्रकार की सम्पदा अनायास भाग्यशाली व्यक्ति के पास पहुंच जाती है। – तुष्टो ही राजा यदि सेवकेभ्यः। भाग्यात् परं नैव ददाति किंचित्। अहर्निशं वर्षतिवारिवाहः। तथापि पत्रं तृतीयं पलाशः॥ पत्रं नैव यदा करीरविटपे दोषो वसन्तय किम्? नोलूकोऽप्यवलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम्? धारा नैव पतन्ति चातकमुखे मेघस्य किं दूषणम्? यत्पूर्वं विधिना ललाटलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः? अत्रैव नरकः इति माता प्रचक्षते या यातना वै नारक्यास्ता इहाप्युलक्षिताः॥ आचार्यश्री कपिलोक्तिः॥

# माघ कृष्ण पक्षः संवत् २०८१ रा.शाकः १९४६

## ✦ जनवरी सन् २०२५ ई. शिशिर ऋतुः रवि उत्तरायणे–दक्षिणगोले ✦

♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣

| रवियोगाः | तिथि | वार | घटी | पल | घं. | मि. | नक्षत्र | घटी | पल | घं. | मि. | योग | घटी | पल | करण | घटी | पल | दिनमान घटी | दिनमान पल | सूर्योदय घं. | सूर्योदय मि. | सूर्यास्त घं. | सूर्यास्त मि. | बंग | मुस | भा | चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.घटी पल | घं.मि. | सूर्य स्पष्ट रा.अ.क.वि. | गति | अंग्रेजी ता. | विवरण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सुस्थिर | १ | मं | ४९ | ३६ | २७ | २१ | पुन | ०६ | ५४ | १० | १७ | वि | ४८ | ३८ | बा | २० | ०९ | २६ | १९ | ७ | ३१ | ६ | ०३ | मा१ | १३ | २४ | कर्क | | ८ २९ ५६ २५ | ६१ ०५ | १४ | मकरेऽर्कः ०८/५६ मकर संक्रान्ति पुण्यःकाल बं.माघ मास प्रा. |
| मातंग | २ | बु | ४९ | ४१ | २७ | २३ | पु | ०७ | २२ | १० | २८ | प्री | ४५ | ३८ | तै | १९ | २७ | २६ | २१ | ७ | ३१ | ६ | ०३ | २ | १४ | २५ | कर्क | | ९ ०० ५७ ३० | ६१ ०५ | १५ | थल सेना दिवस |
| अमृत | ३ | गु | ५१ | २९ | २८ | ०६ | श्ले | ०९ | २४ | ११ | १७ | आ | ४३ | ५७ | व | २० | २२ | २६ | २३ | ७ | ३१ | ६ | ०४ | ३ | १५ | २६ | सिंह ०९/२४ | ११/१७ | ९ ०१ ५८ ३५ | ६१ ०४ | १६ | भ. १५/४० उ. २८/०६ या. |
| चौ.व्रत | ४ | शु | ५४ | ५९ | २९ | ३० | म | १३ | ०५ | १२ | ४५ | सौ | ४३ | ३५ | ब | २३ | ०२ | २६ | २५ | ७ | ३१ | ६ | ०५ | ४ | १६ | २७ | सिंह | | ९ ०२ ५९ ३९ | ६१ ०४ | १७ | संकष्ट–तिल चतुर्थी व्रतं चंद्रोदय रात्रि २१/२८ पूभायां शुक्रः ०७/४३ |
| लुम्बक | ५ | श | ६० | ०० | - | - | पूफा | १८ | २२ | १४ | ५२ | शो | ४४ | २३ | कौ | २७ | २० | २६ | २७ | ७ | ३१ | ६ | ०६ | ५ | १७ | २८ | कन्या ३४/५५ | २१/२९ | ९ ०४ ०० ४३ | ६१ ०४ | १८ | A कुंभे भानुः २५/३० बुधास्त पू. २९/४४ |
| १७।३० उ. | ५ | र | ०० | ०२ | ०७ | ३१ | उफा | २४ | ५९ | १७ | ३० | अ | ४६ | ०७ | तै | ०० | ०२ | २६ | ३० | ७ | ३१ | ६ | ०७ | ६ | १८ | २९ | कन्या | | ९ ०५ ०१ ४७ | ६१ ०३ | १९ | सर्वा. ०७/३१ उ. ३१/३० या.अमृत सिद्धि १७/३० उ. ३१/३० या. A |
| २०।३० या. | ६ | चं | ०६ | १२ | ०९ | ५९ | ह | ३२ | २९ | २० | ३० | सु | ४८ | २४ | व | ०६ | १२ | २६ | ३२ | ७ | ३० | ६ | ०७ | ७ | १९ | ३० | कन्या | | ९ ०६ ०२ ५० | ६१ ०३ | २० | भ. ०९/५९ उ. २३/१९ या.अभिजिति रविः २२/०७ |
| ध्वांक्ष | ७ | मं | १२ | ५५ | १२ | ४० | चि | ४० | १६ | २३ | ३७ | धृ | ५० | ४८ | ब | १२ | ५५ | २६ | ३५ | ७ | ३० | ६ | ०८ | ८ | २० | मा१ | तुला ०६/२३ | १०/०४ | ९ ०७ ०३ ५३ | ६१ ०२ | २१ | श्रीरामानंदाचार्य ज.रामानंदः स्वयं रामः प्रादुर्भूतो महीतले रा.माघ मास प्रा. B |
| धूम्र | ८ | बु | १९ | ३२ | १५ | १८ | स्वा | ४७ | ४१ | २६ | ३४ | शू | ५२ | ४९ | कौ | १९ | ३२ | २६ | ३७ | ७ | ३० | ६ | ०९ | ९ | २१ | २ | तुला | | ९ ०८ ०४ ५५ | ६१ ०२ | २२ | उषायां बुधः १४/५० B वक्री मिथुन भौमः १०/०५ |
| प्रवर्ध | ९ | गु | २५ | २१ | १७ | ३८ | वि | ५४ | ०६ | २९ | ०८ | गं | ५४ | ०२ | ग | २५ | २१ | २६ | ४० | ७ | ३० | ६ | १० | १० | २२ | ३ | वृश्चि ३७/३७ | २२/३३ | ९ ०९ ०५ ५७ | ६१ ०१ | २३ | भ. ३०/३६ उ.सर्वा. २९/०८ उ.श्रवणे रविः २८/४५ नेताजी सुभाषचंद्र बोस ज. |
| राक्षस | १० | शु | २९ | ५० | १९ | २५ | अ | ५९ | ०६ | ३१ | ०८ | वृ | ५४ | ०७ | वि | २९ | ५० | २६ | ४३ | ७ | २९ | ६ | १० | ११ | २३ | ४ | वृश्चिक | | ९ १० ०६ ५८ | ६१ ०१ | २४ | भ. १९/२५ या.सर्वा. ३१/०८ या.अभिजिति निर्गम रविः २५/४४ मकरे बुधः १७/३९ |
| ए.व्रत | ११ | श | ३२ | ३८ | २० | ३२ | ज्ये | ६० | ०० | - | - | ध्रु | ५२ | ५२ | ब | ०१ | २८ | २६ | ४५ | ७ | २९ | ६ | ११ | १२ | २४ | ५ | वृश्चिक | | ९ ११ ०७ ५९ | ६१ ०० | २५ | षट्तिला ११ व्रतं सर्वे. |
| काण | १२ | र | ३३ | ३६ | २० | ५५ | ज्ये | ०२ | २४ | ०८ | २६ | व्या | ५० | १२ | कौ | ०३ | २२ | २६ | ४८ | ७ | २९ | ६ | १२ | १३ | २५ | ६ | धनु ०२/२४ | ०८/२६ | ९ १२ ०८ ५९ | ६० ५९ | २६ | सर्वा. ०८/२६ उ. ३१/२८ या.गणतंत्र दिवस ७६ वां |
| प्रदोष | १३ | चं | ३२ | ४७ | २० | ३५ | मू | ०३ | ५५ | ०९ | ०२ | ह | ४६ | १२ | ग | ०३ | २५ | २६ | ५१ | ७ | २८ | ६ | १३ | १४ | २६ | ७ | धनु | | ९ १३ ०९ ५८ | ६० ५९ | २७ | भ. २०/३५ उ.सोम प्रदोष व्रतं मास शिवरात्रि मीने शुक्रः ३१/०३ मेरूत्रयोदशी जैन |
| मित्र | १४ | मं | ३० | २१ | १९ | ३६ | पूषा | ०३ | ४७ | ०८ | ५९ | व | ४० | ५८ | वि | ०१ | ४६ | २६ | ५४ | ७ | २८ | ६ | १४ | १५ | २७ | ८ | मकर १८/३० | १४/५२ | ९ १४ १० ५७ | ६० ५८ | २८ | भ. ०८/१० या.अभिजिति बुधः २१/१६ C प्रयागराज त्रिवेणी संगम स्नान कुंभ पर्व पुण्यः |
| अमावस | ३० | बु | २६ | ३६ | १८ | ०५ | उषा | ०२/५९ | १३/३० | ०८/३१ | २१/१५ | सि | ३४ | ४५ | ना | २६ | ३६ | २६ | ५७ | ७ | २८ | ६ | १४ | १६ | २८ | ९ | मकर | | ९ १५ ११ ५५ | ६० ५७ | २९ | देवपितृकार्ये माघी मौनी अमावस्या पुण्यः श्रीकुम्भमहापर्व सुयोगः C |



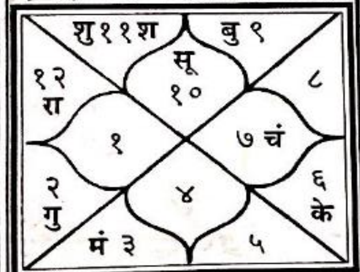








### 卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐




### अ.३९ माघ कृष्णे ८ बुधे इष्ट ०|०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ९ | ६ | २ | ८ | १ | १० | १० | ११ | ५ |
| अं. | ०८ | १० | २९ | २६ | १७ | २४ | २२ | ०६ | ०६ |
| क. | ०४ | ३३ | ३९ | ११ | २२ | ४२ | १० | १० | १० |
| वि. | ५५ | १५ | २९ | १७ | २७ | २३ | ५१ | २५ | २५ |
| ग | ६१ | ७१३ | २२ | ९३ | ०२ | ५४ | ०६ | ३ | ३ |
| ति | ०२ | ५६ | ४० व | ५५ | ३७ व | ४७ | ०१ | ११ | ११ |
| नक्षत्र | उषा.२ | स्वाति.२ | पुन.३ | पूषा.४ | रोहिणी.३ | पूभा.२ | पूभा.१ | उभा.१ | उफा.३ |

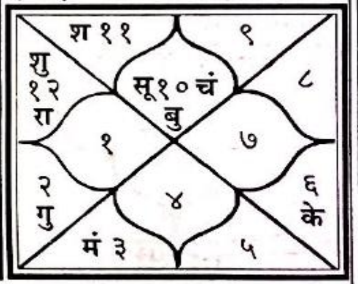
### ♣ मकर संक्रान्ति फलम् – वन संभागीय ♣

माघ कृष्णे १ भौमे मकरेऽर्कः प्र.वा.३ न.३ अस्य पुण्यकालः अद्यैव भौमवासरे प्रातःकालतः पुण्यप्रदः। वार नाम महोदरी–तस्कर, लोभी–प्रलोभी, प्रवंचक, धूर्त्त, चौर्य कर्मशील, संग्राहक, ठग पक्ष हेतु दिशापथ सूचक शुभ फलद। नक्षत्र नाम महोदरी–तस्कर–ठग, चौर्य कर्मशील, लोभी–प्रलोभी, संग्रहशील, स्टॉकिस्ट वर्ग हेतु मनोत्साहवर्धक सुखद। दिवा १ या. व्या.शिक्षक, लेखक, व्याख्याता, राष्ट्रीय विकास, सेनापति, आरक्षी नायक, सुरक्षा अधिकारी, गुप्तचर विभाग पद विशेष पर प्रभारक कष्टद। दक्षिणे गमन, वायव्यां दृष्टि, बालव करणे, वाहन–व्याघ्र, उपवाहन अश्व, पीतवस्त्र, गदायुध, रजतपात्र, पायस भक्षण, कुंकुम लेपन, भूतजाति, जाति पुष्प, कंकण भूषण, पर्ण कंचुकी, कुमार्यावस्था, उपविष्टा, मुहूर्त–४५, धान्य–गल्ला स्थिर समभाव, सोना, चाँदी, चना, तुवर, हल्दी, सरसों, दानामैथी, केसर, चंदन, रोली, चाय, तमाखु, सौंठ, गरम मसाला, सुगंधी पदार्थ उन्नत धारणा, शुक्रोदय पश्चिमे, वत्स दक्षिणे, राहु पूर्वे, मूल स्वर्गे।

### अ.४० माघ कृष्णे ३० बुधे इष्ट ०|०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ९ | ९ | २ | ९ | १ | ११ | १० | ११ | ५ |
| अं. | १५ | ०९ | २७ | ०७ | १७ | ०० | २२ | ०८ | ०८ |
| क. | ११ | २९ | ०९ | २१ | ०८ | ५१ | ५४ | ४८ | ४८ |
| वि. | ५५ | २४ | ५२ | २७ | २१ | २५ | ०८ | १० | १० |
| ग | ६० | ८३७ | ११ | ९८ | ०१ | ४९ | ०६ | ३ | ३ |
| ति | ५७ | २७ | १८ व | १६ | १२ व | ४३ | २३ | ११ | ११ |
| नक्षत्र | श्रवण.२ | उषा.३ | पुन.३ | उषा.४ | रोहिणी.३ | पूभा.४ | पूभा.१ | उभा.१ | उफा.३ |

### 卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



# माघ शुक्ल पक्षः संवत् २०८१ रा.शाकः १९४६

## ✦ जनवरी–फ़रवरी सन् २०२५ ई. शिशिर ऋतुःरवि उत्तरायणे–दक्षिणगोले ✦

♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣

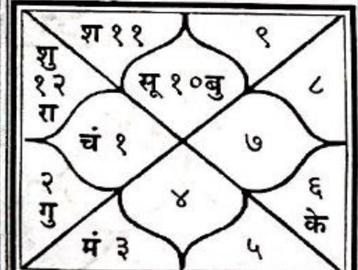
| रवियोगाः | तिथि | वार | घटी | पल | घं. | मि. | नक्षत्र | घटी | पल | घं. | मि. | योग | घटी | पल | करण | घटी | पल | दिनमान घटी | दिनमान पल | सूर्योदय घं. | सूर्योदय मि. | सूर्यास्त घं. | सूर्यास्त मि. | विविध तारीखें बंग | मुस | भा | चन्द्रराशि प्रवेश काल रा. घटी पल | घं.मि. | सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अं.क.वि. | गति | अंग्रेजी ता. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| श्रीवत्स | १ | गु | २१ | ५० | १६ | ११ | ध | ५५ | ५९ | २९ | ५१ | व्य | २७ | ४५ | ब | २१ | ५० | २७ | ०१ | ७ | २७ | ६ | १५ | १७ | २९ | १० | कुंभ २७ ५० | १८ ३५ | [illegible] | [illegible] | ३० | चंद्रदर्शन पंचक १८ ३५ उ.गुप्त नवरात्रि विधान प्रा.श्रवणे बुधः २२ ०४ A |
| १८।१४ उ. | २ | शु | १६ | २२ | १३ | ५९ | श | ५१ | ५९ | २८ | १४ | व | २० | १४ | कौ | १६ | २२ | २७ | ०३ | ७ | २७ | ६ | १६ | १८ | शा१ | ११ | कुंभ | | [illegible] | [illegible] | ३१ | बाबा रामदेव बीज शाबान मास ८ मुस.A गांधी पुण्य दि. |
| १६।३३ या. | ३ | श | १० | ३१ | ११ | ३८ | पूभा | ४७ | ४७ | २६ | ३३ | प | १२ | २६ | ग | १० | ३१ | २७ | ०६ | ७ | २६ | ६ | १७ | १९ | २ | १२ | मीन ३३ ५१ | २० ५९ | [illegible] | [illegible] | फ१ | भ. २२ ०७ उ.गौरी तृतीया वरदविनायक तिल चतुर्थी उभायां शुक्रः ०८ २७ B |
| २४।५२ उ. | ४ | र | ०४ | ३३ | ०९ | १४ | उभा | ४३ | ३७ | २४ | ५२ | शि | ०४ ५६ | ३१ ४० | वि | ०४ | ३३ | २७ | ०९ | ७ | २६ | ६ | १७ | २० | ३ | १३ | मीन | | [illegible] | [illegible] | २ | भ. ९ १४ या.सर्वा ०७ २६ उ. २४ ५२ या.बसंत पंचमी श्रीपंचमी सरस्वती ज.श्री राधा C |
| क्षय | ५ | र | ५८ | ३९ | ३० | ५३ | 0 | ० | ० | ० | ० | 0 | ० | ० | 0 | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | | ० ० | ० | ० | B फरवरी मास २ ता. २८ प्रा.C श्यामसुंदर पंचमी वृन्दावने पूभायां २ शनिः ०७ २९ |
| २३।१७ या. | ६ | चं | ५३ | ०१ | २८ | ३७ | रे | ३९ | ३९ | २३ | १७ | सा | ४९ | ०३ | कौ | २५ | ४८ | २७ | १२ | ७ | २५ | ६ | १८ | २१ | ४ | १४ | मेष ३९ ३९ | २३ १७ | [illegible] | [illegible] | ३ | पंचक २३ १७ या. D श्री नर्मदा ज.देवनारायण ज.गुर्जर वंशे मार्गी गुरूः १५ ११ |
| अमृत | ७ | मं | ४७ | ४६ | २६ | ३१ | अ | ३६ | ०२ | २१ | ५० | शु | ४१ | ४४ | ग | २० | २१ | २७ | १६ | ७ | २५ | ६ | १९ | २२ | ५ | १५ | मेष | | [illegible] | [illegible] | ४ | भ. २६ ३१ उ.सर्वा.अमृत सिद्धि ०७ २५ उ. २१ ५० या.अचला रथ आरोग्य सप्तमी D |
| २०।३३ उ. | ८ | बु | ४३ | ०१ | २४ | ३६ | भ | ३२ | ५३ | २० | ३३ | शु | ३४ | ४७ | वि | १५ | २० | २७ | १९ | ७ | २४ | ६ | २० | २३ | ६ | १६ | वृषभ ४७ १० | २६ १६ | [illegible] | [illegible] | ५ | भ. १३ ३२ या. सर्वा. २० ३३ उ. २१ २३ या.भीष्माष्टमी |
| ०७।५० या. १९।२९ उ. | ९ | गु | ३८ | ४६ | २२ | ५३ | कृ | ३० | १५ | १९ | २९ | ब्र | २८ | १६ | बा | १० | ४९ | २७ | २२ | ७ | २३ | ६ | २० | २४ | ७ | १७ | वृषभ | | [illegible] | [illegible] | ६ | घनिष्ठायां रविः ०७ ५० |
| पूर्णरवि | १० | शु | ३५ | १० | २१ | २६ | रो | २८ | १३ | १८ | ४० | ऐं | २२ | १४ | तै | ०६ | ५४ | २७ | २६ | ७ | २३ | ६ | २१ | २५ | ८ | १८ | मिथुन ५७ २६ | ३० २१ | [illegible] | [illegible] | ७ | घनिष्ठायां बुधः १८ ३२ |
| १८।०७ या. | ११ | श | ३२ | १५ | २० | १६ | मृ | २६ | ५२ | १८ | ०७ | वै | १६ | ४५ | व | ०३ | ३८ | २७ | २९ | ७ | २२ | ६ | २२ | २६ | ९ | १९ | मिथुन | | [illegible] | [illegible] | ८ | भ. ८ ४९ उ. २० १६ या.जया ११ व्रतं सर्वे. वेणेश्वर मेला प्रा.डूंगरपुर राज. |
| ध्वांक्ष | १२ | र | ३० | १० | १९ | २५ | आ | २६ | १८ | १७ | ५३ | वि | ११ | ५३ | ब | ०१ | ०७ | २७ | ३२ | ७ | २२ | ६ | २३ | २७ | १० | २० | मिथुन | | [illegible] | [illegible] | ९ | भीष्म द्वादशी |
| १८।०१ उ. | १३ | चं | २९ | ०२ | १८ | ५७ | पुन | २६ | ४० | १८ | ०१ | प्री | ०७ | ४४ | तै | २९ | ०२ | २७ | ३६ | ७ | २१ | ६ | २३ | २८ | ११ | २१ | कर्क ११ २९ | ११ ५७ | [illegible] | [illegible] | १० | सर्वा. १८ ०१ उ. ३१ २० या.सोम प्रदोष व्रतं विश्वकर्मा ज.गुरु गोरखनाथ ज. |
| १८।३४ या. | १४ | मं | २८ | ५९ | १८ | ५६ | पु | २८ | ०५ | १८ | ३४ | आ | ०४ | २४ | व | २८ | ५९ | २७ | ३९ | ७ | २० | ६ | २४ | २९ | १२ | २२ | कर्क | | [illegible] | [illegible] | ११ | भ. १८ ५६ उ. ३१ ०६ या. सर्वा. १८ ३४ उ. ३१ २० या.रामचरण रामस्नेही जन्म E |
| पूर्णिमा | १५ | बु | ३० | १० | १९ | २३ | श्ले | ३० | ४० | १९ | ३६ | सौ | ०१ | ५८ | ब | ३० | १० | २७ | ४३ | ७ | २० | ६ | २५ | फा१ | १३ | २३ | सिंह ३० ४० | १९ ३६ | [illegible] | [illegible] | १२ | पूर्णिमा व्रतं कुम्भेऽर्कः २१ ५७ बं.फाल्गुन मास प्रा.F |







### 卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐




### अ.४१ माघ शुक्ले ८ बुधे इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ९ | ० | २ | ९ | १ | ११ | १० | ११ | ५ |
| अं. | २२ | १८ | २५ | १९ | १७ | ०६ | २३ | ०५ | ०५ |
| क. | १८ | ५७ | ०८ | ०४ | ०४ | २० | ३९ | २५ | २५ |
| वि. | ०६ | ४९ | ४६ | ०१ | १६ | २५ | ५१ | ५५ | ५५ |
| ग | ६० | ८४१ | १४ २६ | १०३ | ०० १४ | ४३ | ०६ | ३ | ३ |
| ति | ४७ | ०७ | व | १६ | मा | ०१ | ४२ | ११ | ११ |
| नक्षत्र | श्रवण ४ | भरणी २ | पु. २ | श्रवण ३ | रोहिणी ३ | उभा. २ | पूभा. २ | उभा. २ | उफा. ३ |

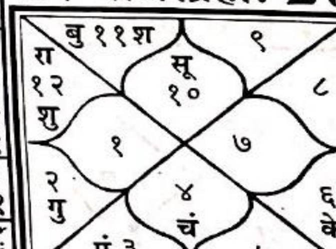
### ♣ कुम्भ संक्रान्ति फलम् – वापी कूप संभागीय ♣

माघ शुक्ले १५ बुधे कुम्भेऽर्कः प्र.वा. २ न.४ अस्य पुण्यकालः अद्यैव बुधवासरे अपरान्हवेलातः पुण्यप्रदः। वारनाम मंदाकिनी–राजनेता, दलपति, सचिव, राजपत्रित अधिकारी, नीति निदेशक, अर्धीक्षक हेतु मनोत्साह वर्धक सुखद। नक्षत्र नाम घोरा–आदिवासी, अल्पसंख्यक, निर्धन, असहाय, वयोवृद्ध, अनुमूचित जाति वर्ग हेतु शासकीय नवीन योजना लाभ। रात्रि २ या.व्या.हिंसाशील, आतंकप्रसारक, देशद्रोही, विस्फोटककर्ता, तमोगुण प्रधान वर्ग हेतु कष्टद प्रभारक, दक्षिणे गमन, वायव्यां दृष्टि, बालव करणे, वाहन व्याघ्र, उपवाहन–अश्व, पीतवस्त्र, गदायुध, रजतपात्र, पायस भक्षण, कुंकुम लेपन, भूतजाति, जाति पुष्प, कंकण भूषण, पर्ण कंचुकी, कुमार्यावस्था, उपविष्टा, मुहूर्त–३०, धान्य–गल्ला स्थिर समभाव, सोना–चाँदी, चना, तुवर, हल्दी, सरसों, दानामैथी, केसर, चंदन, रोली, चाय, तमाखु, सौंठ, गरम मसाला, सुगंधी पदार्थ उन्नत धारणा। शुक्रोदय पश्चिमे, वत्स पश्चिमे, राहु दक्षिणे, मूल पाताले।

### अ.४२ माघ शुक्ले १५ बुधे इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ९ | ३ | २ | १० | १ | ११ | १० | ११ | ५ |
| अं. | २९ | २३ | २३ | ०१ | १७ | १० | २४ | ०५ | ०५ |
| क. | २३ | २९ | ४३ | २२ | १० | ५६ | २७ | ०३ | ०३ |
| वि. | ०५ | ४६ | ५८ | ४७ | ११ | १३ | ३३ | ४९ | ४९ |
| ग | ६० | ७५९ | ०८ ५८ | १०८ | ०१ | ३४ | ०६ | ३ | ३ |
| ति | ३७ | २९ | व | २९ | ३९ | ०८ | ५७ | ११ | ११ |
| नक्षत्र | धनिष्ठा २ | आर्द्रा ३ | पु. २ | धनिष्ठा ३ | रोहिणी ३ | उभा. ३ | पूभा. २ | उभा. २ | उफा. ३ |

### 卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐




● **शकुन सूत्रावली** ● बदी ३ से ८ तथा १२ से ३० एवं सुदी ५ से ९ तथा १२ से १५ मध्य मेघ गाज रचना, मानसून गति पथ संचार न्यूनाधिक प्रतियोग। ● **सुभाषितं** ● अहो भुवः सप्त समुद्रवत्या द्वीपेषु वर्षष्वपिपुयमेतत् । गायन्ति यत्रत्य जना मुरारेः कर्माणि भद्राण्यवतारवन्ति ॥ यथा ही एकेन चक्रेण न रथस्यगतिर्भवेत् एवं पुरूषकारेण विना देवं न सिध्यति ॥ न दैवमपि संचिन्त्य त्येजेदुद्योगमात्मनः। अनुद्योगेन तैलानि तिलेभ्यो नाप्तुमर्हति ॥ पूर्वजन्म कृतं कर्म तद्दैवमिति कथ्यते। तस्मात् पुरूषकारेण यत्नं कुर्यादतन्द्रितः ॥ मुहूर्त्तज्वलितं श्रेय न तु धूमायितं चिरम् ॥ भैषज्यमेतद् दुःखस्य यदेतद्न्नानु चिन्तयेत् ॥ ● सुदी चैत्र की प्रतिपदा, दशमी तक दिन लक्ष। मेघ गाज वर्षा यदि, ऋतुवर्षा नहीं दक्ष ॥ शुक्ल चैत्र की प्रतिपदा, वर्षा बादल गाज। भावी श्रावण भादवा, न्यून वृष्टि का साज ॥ बिना ऋतु फल–फूल हो, धरा मध्य जिस भाग। शकुन भवानी शास्त्र का, सुख सुभिक्ष नहीं राग ॥ अपने–अपने देश में, देख आम फल–फूल, ज़ा दिशि डार सु निर्फली, वा दिशि मेघ न मूल ॥

E स्वामी श्रीकरपात्रीजी पुण्यः कुम्भे बुधः १२।५४

F गुरु रविदास ज. ६१२ वीं माघ स्नान पूर्णता माही नदी स्नान मेला श्री ललिता ज.

# फाल्गुन कृष्ण पक्षः संवत् २०८१ रा.शाकः १९४६

✦फरवरी सन् २०२५ ई. शिशिर–वसंत ऋतुः रवि उत्तरायणे–दक्षिणगोले✦

♣सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा. घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं♣

| रवियोगाः | तिथि | वार | घटी | पल | घं. | मि. | नक्षत्र | घटी | पल | घं. | मि. | योग | घटी | पल | करण | घटी | पल | दिनमान घटी | पल | स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं. | मि. | सूर्यास्त घं. | मि. | विविध तारीखें बंग | मुस | भा | चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.घटी पल | घं.मि. | सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अं.क.वि. | गति | अंग्रेजी ता. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुसल | १ | गु | ३२ | ३९ | २० | २२ | म | ३४ | ३१ | २१ | ०७ | शो | ०० | ३१ | बा | ०१ | १५ | २७ | ४६ | ७ | १९ | ६ | २५ | २ | १४ | २४ | सिंह | | १० ०० २३ ४१ | ६० ३५ | १३ |
| सिद्धि | २ | शु | ३६ | २७ | २१ | ५२ | पूफा | ३९ | ३८ | २३ | ०९ | अ | ०० | ०५ | तै | ०४ | २४ | २७ | ५० | ७ | १८ | ६ | २६ | ३ | १५ | २५ | कन्या ५६/०६ | २९/४५ | १० ०१ २४ १७ | ६० ३४ | १४ |
| उत्पात | ३ | श | ४१ | २९ | २३ | ५२ | उफा | ४५ | ५५ | २५ | ३९ | सु | ०० | ३८ | व | ०८ | ५० | २७ | ५३ | ७ | १७ | ६ | २७ | ४ | १६ | २६ | कन्या | | १० ०२ २४ ५१ | ६० ३३ | १५ |
| चौ.व्रत | ४ | र | ४७ | ३० | २६ | १६ | ह | ५३ | ०७ | २८ | ३१ | धृ | ०२ | ०३ | ब | १४ | २४ | २७ | ५७ | ७ | १७ | ६ | २७ | ५ | १७ | २७ | कन्या | | १० ०३ २५ २३ | ६० ३१ | १६ |
| मुद्गर | ५ | चं | ५४ | ०५ | २८ | ५३ | चि | ६० | ०० | - | - | शू | ०४ | ०७ | कौ | २० | ४६ | २८ | ०१ | ७ | १६ | ६ | २८ | ६ | १८ | २८ | तुला २६/५७ | १८/०३ | १० ०४ २५ ५४ | ६० ३० | १७ |
| ०७।३६ उ. | ६ | मं | ६० | ०० | - | - | चि | ०० | ५१ | ०७ | ३६ | गं | ०६ | ३२ | ग | २७ | २८ | २८ | ०४ | ७ | १५ | ६ | २९ | ७ | १९ | २९ | तुला | | १० ०५ २६ २४ | ६० २९ | १८ |
| १०।४० या. १२।२७ उ. | ६ | बु | ०० | ४७ | ०७ | ३२ | स्वा | ०८ | ३४ | १० | ४० | वृ | ०८ | ५५ | व | ०० | ४७ | २८ | ०८ | ७ | १४ | ६ | २९ | ८ | २० | ३० | वृश्चि ५८/५९ | ३०/५० | १० ०६ २६ ५३ | ६० २७ | १९ |
| १३।३० या. | ७ | गु | ०६ | ५४ | ०९ | ५८ | वि | १५ | ४२ | १३ | ३० | ध्रु | १० | ५१ | ब | ०६ | ५४ | २८ | १२ | ७ | १३ | ६ | ३० | ९ | २१ | फा१ | वृश्चिक | | १० ०७ २७ २० | ६० २६ | २० |
| राक्षस | ८ | शु | ११ | ५४ | ११ | ५८ | अ | २१ | ४४ | १५ | ५४ | व्या | ११ | ५६ | कौ | ११ | ५४ | २८ | १५ | ७ | १२ | ६ | ३१ | १० | २२ | २ | वृश्चिक | | १० ०८ २७ ४६ | ६० २५ | २१ |
| मुसल | ९ | श | १५ | २१ | १३ | १९ | ज्ये | २६ | १२ | १७ | ४० | ह | ११ | ५१ | ग | १५ | २१ | २८ | १९ | ७ | १२ | ६ | ३१ | ११ | २३ | ३ | धनु २६/१२ | १७/४० | १० ०९ २८ १० | ६० २३ | २२ |
| सिद्धि | १० | र | १६ | ५४ | १३ | ५६ | मू | २८ | ५० | १८ | ४३ | व | १० | २० | वि | १६ | ५४ | २८ | २३ | ७ | ११ | ६ | ३२ | १२ | २४ | ४ | धनु | | १० १० २८ ३३ | ६० २२ | २३ |
| ए.व्रत | ११ | चं | १६ | २९ | १३ | ४५ | पूषा | २९ | ३३ | १८ | ५९ | सि | ०७ | १८ | बा | १६ | २९ | २८ | २६ | ७ | १० | ६ | ३२ | १३ | २५ | ५ | मकर ४४/२५ | २४/५६ | १० ११ २८ ५५ | ६० २० | २४ |
| प्रदोष | १२ | मं | १४ | ०८ | १२ | ४७ | उषा | २८ | २५ | १८ | ३१ | व्य | ०२/५६ | ४५/४५ | तै | १४ | ०८ | २८ | ३० | ७ | ०९ | ६ | ३३ | १४ | २६ | ६ | मकर | | १० १२ २९ १५ | ६० १९ | २५ |
| छत्र | १३ | बु | १० | ०२ | ११ | ०८ | श्र | २५ | ३८ | १७ | २३ | प | ४९ | ३४ | व | १० | ०२ | २८ | ३४ | ७ | ०८ | ६ | ३४ | १५ | २७ | ७ | कुंभ ५३/४३ | २८/३७ | १० १३ २९ ३४ | ६० १७ | २६ |
| अमावस | १४ | गु | ०४ | ३० | ०८ | ५५ | ध | २१ | ३२ | १५ | ४४ | शि | ४१ | २४ | श | ०४ | ३० | २८ | ३८ | ७ | ०७ | ६ | ३४ | १६ | २८ | ८ | कुंभ | | १० १४ २९ ५१ | ६० १५ | २७ |
| क्षय | ३० | गु | ५७ | ४९ | ३० | १४ | 0 | ० | ० | ० | ० | 0 | ० | ० | 0 | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | | ० ० | ० | ० |



१४ शतभिषायां बुधः २९/०५

१५ भ. १०/४९ उ. २३/५२ या.

१६ सर्वा.अमृतसिद्धिः ०७/१७ उ. २८/३१ या.फाल्गुनी चतुर्थीव्रतं चंद्रोदय रात्रि २१/५४



१८ मीने भानुः १५/३७ ऋतुराज बसंतऋतु प्रा.

१९ भ. ०७/३२ उ. २०/४८ या.शतभिषायां रविः १२/२७

२० सर्वा. १३/३० उ.रा.फाल्गुन मास प्रा.



२१ सर्वा. १५/५४ या.सीताष्टमी पर्व



२२ भ. २५/४४ उ.समर्थ रामदास नवमी पूभायां बुधः ०९/५०

२३ भ. १३/५६ या.सर्वा. ०७/११ उ. १८/४३ या.अस्तं शनि प. १४/५३

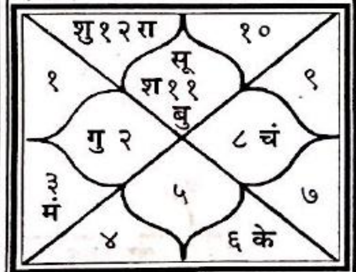
२४ विजया एकादशी व्रतं सर्वे.मार्गी भौमः ७/३०

२५ भौम प्रदोष व्रतं बुधोदयः प. १३/३७

२६ भ. ११/०८ उ. २२/०६ या.पंचक २८/३७ उ.महाशिवरात्रि व्रतं एवं जागरणं रुद्राभिषेकंच

२७ देवपितृकार्ये अमावस्या स्वामी दयानंद बोधोत्सवः शिव खप्पर पूजा मीने बुधः २३/४७

## 卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐




### अ.४३ फाल्गुन कृष्णे ८ शुक्रे इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | १० | ७ | २ | १० | १ | ११ | १० | ११ | ५ |
| अं. | ०८ | १२ | २२ | १७ | १७ | १५ | २५ | ०४ | ०४ |
| क. | २७ | १४ | ५१ | ५६ | ३२ | ०५ | ३१ | ३५ | ३५ |
| वि. | ४६ | ३८ | ४८ | ४२ | ०१ | ३५ | १० | ०५ | ०५ |
| ग | ६० | ७३७ | ०१/५४ | १११ | ०३ | १८ | ०७ | ३ | ३ |
| ति | २५ | २४ | व | ०७ | २३ | ४८ | १२ | ११ | ११ |
| नक्षत्र | शत.१ | अनु.३ | पुन.१ | शत.४ | रोहिणी ३ | उभा.४ | पूभा.२ | उभा.१ | उफा.३ |

### ♣ ग्रह गोचरीय फलश्रुतिः ♣

अमा पूर्णिमा वार शुभ, बना सुखद अधियोग। सुख सुभिक्ष की धारणा, निर्णय शास्त्र सुयोग ।। पूनम फाल्गुन मास की, मेघ गाज गति लक्ष । भावी तेजी मानिये, गल्ला धान्य के पक्ष ।। फागुन में बादल रहे, किन्तु न बरसे नीर। तो फिर वर्षाकाल में, वर्षा चले प्रवीर ।। तृतीया फाल्गुन कृष्णा की, देखो बादल बात। शुक्ला आश्विन तीज को, निर्णय हो बरसात ।। चलन कलन शनि सूर्य का, निर्धन जग अभिसार। सेवाकर्मी कोप से, शासन तंत्र विचार ।। अर्थ पक्ष अभिनव गति, धनिक त्रास अभियोग। बैंक कोष मुद्रा विषय, नीति नव्य प्रयोग ।। फाल्गुन शुक्ला सप्तमी, ना बादल ना बाय। तो तृण संज्ञक धान्य की, पैदावार सिवाय ।। होली जलने के समय यदि बादल हो जाये। जो गेहूं रोली लगे, महंगे भाव बिकाय ।।

### अ.४४ फाल्गुन कृष्णे १४ गुरौ इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | १० | १० | २ | १० | १ | ११ | १० | ११ | ५ |
| अं. | १४ | ०१ | २२ | २८ | १७ | १६ | २६ | ०४ | ०४ |
| क. | २९ | २९ | ५१ | ४८ | ५५ | २७ | १४ | १६ | १६ |
| वि. | ५१ | ३८ | ३९ | ४३ | ०५ | ०६ | ३९ | ०१ | ०१ |
| ग | ६० | ८६१ | ०२/३२ | १०२ | ०४ | ०५ | ०७ | ३ | ३ |
| ति | १५ | ३४ | मा | ३७ | २९ | ५२ | ११ | ११ | ११ |
| नक्षत्र | शत.३ | धनिष्ठा ३ | पुन.१ | पूभा.३ | रोहिणी ३ | उभा.४ | पूभा.२ | उभा.१ | उफा.३ |

## 卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐




● **विवाहे त्रिज्येष्ठ विचार** ● यदि वर कन्या दोनों ज्येष्ठ हों तो उनके जन्म–मास–जन्म नक्षत्र–जन्मतिथि दिवस पर विवाह नेष्टसूचक तथा यह विचार केवल ज्येष्ठ वर–कन्या हेतु ही है एवं द्वितीय गर्भादि जन्म वालों हेतु मान्य नहीं तथा ज्येष्ठ मास–ज्येष्ठ वर–ज्येष्ठ कन्या ये तीन ३ त्रिज्येष्ठ संज्ञक होते है एवं इन तीन की गणना रचना स्थिति पर ही ज्येष्ठ मास का विवाह शुभ सूचक नहीं तथा २ पक्ष रहते यथा ज्येष्ठ मास और ज्येष्ठ (कन्या या वर) मध्यम माने गये हैं, इस स्थिति में ज्येष्ठ मास विवाह का निषेध नहीं है तथा ज्येष्ठ मास में भी कृतिकायां रविः नक्षत्र चार समय त्यागकर ज्येष्ठ मास में भी विवाह करना शुभ है, यह भी परिहार समाधान मान्य है। ● **मूलादि जन्म नक्षत्र फलम्** ● विशाखा नक्षत्र की कन्या देवर हेतु प्रभारक कष्टद परन्तु विशाखा ४ चरण मात्र अशुभ तथा आश्लेषा मूल नक्षत्र उत्पन्न वर+कन्या क्रमशः सास एवं श्वसुर हेतु कष्टद। परन्तु मूल ४ चरण एवं आश्लेषा १ चरण नेष्ट मात्र।

# फाल्गुन शुक्ल पक्षः संवत् २०८१ रा.शाकः १९४६

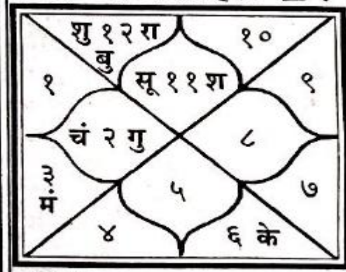
| रवियोगाः | तिथि | वार | घटी | पल | घं. | मि. | नक्षत्र | घटी | पल | घं. | मि. | योग | घटी | पल | करण | घटी | पल | दिनमान घटी | दिनमान पल | स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं. | मि. | सूर्यास्त घं. | मि. | विविध तारीखें बंग | मुस | भा | चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.घटी पल | घं.मि. | सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अ.क.वि. | गति | अंग्रेजी ता. | ✦फरवरी–मार्च सन् २०२५ ई. बसंत ऋतुःरवि उत्तरायणे–दक्षिणगोले✦ ♣सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं♣ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सौम्य | १ | शु | ५० | २७ | २७ | १६ | श | १६ | २६ | १३ | ४० | सि | ३२ | ३४ | किं | २४ | १३ | २८ | ४२ | ७ | ०६ | ६ | ३५ | १७ | २९ | ९ | मीन ५७/१० | २९/५८ | १०।१५।३०।०७ | ६०।१४ | २८ | सिद्धार्थी संवत्सरः क्र.५३ प्रवेश ०८/१८ रा.विज्ञान दिवस A उभायां बुधः २४/१७ |
| कालदंड | २ | श | ४२ | ४२ | २४ | ०९ | पूभा | १० | ४४ | ११ | २३ | सा | २३ | १९ | बा | १६ | ३७ | २८ | ४५ | ७ | ०५ | ६ | ३५ | १८ | ३० | १० | मीन | | १०।१६।३०।२० | ६०।१२ | मा१ | चंद्रदर्शन फुलेरा दूज रामकृष्ण परमहंस ज.मार्च मास ३ ता. ३१ प्रा.A |
| ०८।५९ उ. ३०।३९ या. | ३ | र | ३४ | ५६ | २१ | ०२ | उभा | ०४/५८ | ४८/५८ | ०८/३० | ५९/३९ | शु | १३ | ५७ | तै | ०८ | ४९ | २८ | ४९ | ७ | ०४ | ६ | ३६ | १९ | र१ | ११ | मेष ५८/५८ | ३०/३९ | १०।१७।३०।३२ | ६०।१० | २ | सर्वा. ०७/०४ उ. ०८/५९ या.एवं ३०/३९ उ. ३१/०३ या. पंचक ३०/३९ या.वक्री शुक्रः ३०/०६ B |
| २८।३० उ. | ४ | चं | २७ | २९ | १८ | ०२ | अ | ५३ | ३६ | २८ | ३० | शु | ०४/५५ | ४५/५३ | व | ०१ | १० | २८ | ५३ | ७ | ०३ | ६ | ३६ | २० | २ | १२ | मेष | | १०।१८।३०।४२ | ६०।०८ | ३ | भ. ०७/३१ उ. १८/०२ या. |
| १८।४१ या. २६।३८ उ. | ५ | मं | २० | ३७ | १५ | १७ | भ | ४८ | ५९ | २६ | ३८ | ऐं | ४७ | ४१ | बा | २० | ३७ | २८ | ५७ | ७ | ०२ | ६ | ३७ | २१ | ३ | १३ | मेष | | १०।१९।३०।५० | ६०।०६ | ४ | पूभायां रविः १८/४१ सर्वा. २६/३८ उ. |
| २५।०८ या. | ६ | बु | १४ | ३७ | १२ | ५१ | कृ | ४५ | १८ | २५ | ०८ | वै | ४० | १५ | तै | १४ | ३७ | २९ | ०१ | ७ | ०१ | ६ | ३८ | २२ | ४ | १४ | वृषभ ०३/०१ | ०८/१३ | १०।२०।३०।५५ | ६०।०४ | ५ | सर्वा. ३१/०० या. |
| उत्पात | ७ | गु | ०९ | ३८ | १० | ५१ | रो | ४२ | ४४ | २४ | ०६ | वि | ३३ | ४२ | व | ०९ | ३८ | २९ | ०५ | ७ | ०० | ६ | ३८ | २३ | ५ | १५ | वृषभ | | १०।२१।३०।५९ | ६०।०१ | ६ | भ. १०/५१ उ. २२/०२ या. |
| २३।३२ उ. | ८ | शु | ०५ | ५० | ०९ | १९ | मृ | ४१ | २२ | २३ | ३२ | प्री | २८ | ०८ | ब | ०५ | ५० | २९ | ०९ | ६ | ५९ | ६ | ३९ | २४ | ६ | १६ | मिथुन ११/५५ | ११/४५ | १०।२२।३१।०० | ५९।५९ | ७ | होलाष्टक प्रा.श्रीदादूदयाल ज.होली अष्टान्हिका विधान प्रा.जैन |
| पूर्णरवि | ९ | श | ०३ | १७ | ०८ | १६ | आ | ४१ | १६ | २३ | २९ | आ | २३ | ३५ | कौ | ०३ | १७ | २९ | १२ | ६ | ५८ | ६ | ३९ | २५ | ७ | १७ | मिथुन | | १०।२३।३०।५९ | ५९।५७ | ८ | विश्व महिला दिवस |
| २३।५५ या. | १० | र | ०२ | ०१ | ०७ | ४५ | पुन | ४२ | २५ | २३ | ५५ | सौ | २० | ०३ | ग | ०२ | ०१ | २९ | १६ | ६ | ५७ | ६ | ४० | २६ | ८ | १८ | कर्क २७/०२ | १७/४६ | १०।२४।३०।५६ | ५९।५५ | ९ | भ. १९/४२ उ.सर्वा. २३/५५ उ.रवि पुष्यः २३/५५ उ. ३०/५६ या. |
| ए.व्रत | ११ | चं | ०२ | ०३ | ०७ | ४५ | पु | ४४ | ४८ | २४ | ५१ | शो | १७ | ३१ | वि | ०२ | ०३ | २९ | २० | ६ | ५६ | ६ | ४० | २७ | ९ | १९ | कर्क | | १०।२५।३०।५१ | ५९।५३ | १० | भ. ०७/४५ या.सर्वा २४/५१ या.आमलकी ११ व्रतं सर्वे.मेला खाटू श्यामजी प्रा. C |
| २६।१५ उ. | १२ | मं | ०३ | १८ | ०८ | १४ | श्ले | ४८ | २१ | २६ | १५ | अ | १५ | ५६ | बा | ०३ | १८ | २९ | २४ | ६ | ५५ | ६ | ४१ | २८ | १० | २० | सिंह ४८/२१ | २६/१५ | १०।२६।३०।४४ | ५९।५१ | ११ | सर्वा. ०६/५५ उ. २६/१५ या.भौम प्रदोष व्रतं |
| २८।०६ या. | १३ | बु | ०५ | ४५ | ०९ | १२ | म | ५२ | ५९ | २८ | ०६ | सु | १५ | १५ | तै | ०५ | ४५ | २९ | २८ | ६ | ५४ | ६ | ४१ | २९ | ११ | २१ | सिंह | | १०।२७।३०।३४ | ५९।४९ | १२ | |
| गद | १४ | गु | ०९ | १९ | १० | ३६ | पूफा | ५८ | ३७ | ३० | २० | धृ | १५ | २४ | व | ०९ | १९ | २९ | ३२ | ६ | ५३ | ६ | ४२ | ३० | १२ | २२ | सिंह | | १०।२८।३०।२३ | ५९।४६ | १३ | भ. १०/३६ उ. २३/२८ या.पूर्णिमा व्रतं होलिका दहन रात्रि ११/२८ उ. १२/०६ या. |
| पूर्णिमा | १५ | शु | १३ | ५२ | १२ | २४ | उफा | ६० | ०० | - | - | शू | १६ | १९ | ब | १३ | ५२ | २९ | ३६ | ६ | ५२ | ६ | ४२ | चै१ | १३ | २३ | कन्या १५/११ | १२/५६ | १०।२९।३०।०९ | ५९।४५ | १४ | पूर्णिमा पुण्य मीनेऽर्कः १८/५१ बं.चैत्र मास प्रा. छारंडी वसंतोत्सवः D |







## 卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐




### अ.४५ फाल्गुन शुक्ले ८ शुक्रे इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | १० | १ | २ | ११ | १ | ११ | १० | ११ | ५ |
| अं. | २२ | २७ | २३ | १० | १८ | १६ | २७ | ०३ | ०३ |
| क. | ३१ | १६ | ३१ | ३६ | ३५ | ०५ | १३ | ५० | ५० |
| वि. | ०० | ५८ | ११ | ४६ | ४९ | ५९ | २७ | ३६ | ३६ |
| ग | ५९ | ८१३ | ०७ | ६३ | ०५ | १३/५२ | ०७ | ३ | ३ |
| ति | ५९ | १६ | ५३ | ३७ | ५१ | व | २३ | ११ | ११ |
| नक्षत्र | पूभा. १ | मृ. २ | पु. १ | उभा. ३ | रोहिणी ३ | उभा. ४ | पूभा. ३ | उभा. १ | उफा. ३ |

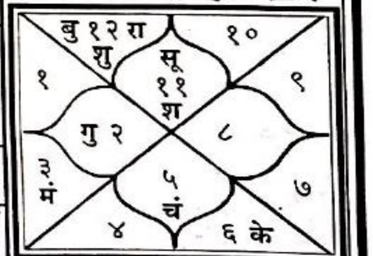
### ♣ मीन संक्रान्ति फलम् – तीर्थ संभागीय ♣

फाल्गुन शुक्ले १५ शुक्रे मीनेऽर्कः प्र.वा. ३ न.३ अस्य पुण्यकालः परदिने शनिवासरे प्रातःकालतः पुण्यप्रदः। वारनाम मिश्रा–शासकीय पशुधन विकास योजना, पशु कल्याण केन्द्र वृद्धि, दुग्ध संग्राहक वर्ग को लाभद सुयोग। नक्षत्र नाम मंदा–वैज्ञानिक, शोधकार्यकर्ता, विद्वान जगत, साहित्यकार, प्राचार्य, ज्ञान प्रदाता हेतु सौख्य कारक। रात्रि ९ या.व्या.देशद्रोही, भ्रष्टपथी, आतंकवादी, विस्फोटक, हिंसाप्रसारकगण हेतु कष्टद प्रभारक पूर्वे गमन, नैऋत्यां दृष्टि, बालव करणे, वाहन व्याघ्र, उपवाहन अश्व, पीतवस्त्र, गदायुध, रजतपात्र, पायस भक्षण, कुंकुम लेपन, भूतजाति, जाति पुष्प, कंकण भूषण, पर्ण कंचुकी, कुमार्यावस्था, उपविष्टा, मुहूर्त–४५, धान्य–गल्ला स्थिर, समभाव, सोना, चाँदी, चना, तुवर, हल्दी, सरसों, दानामेथी, केसर, चंदन, रोली, चाय, तमाखु, सौंठ, गरम मसाला, सुगंधी पदार्थ उन्नत धारणा। शुक्रोदय पश्चिमे, वत्स पश्चिमे, राहु दक्षिणे, मूल भूमौ।

### अ.४६ फाल्गुन शुक्ले १५ शुक्रे इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | १० | ४ | २ | ११ | १ | ११ | १० | ११ | ५ |
| अं. | २९ | २६ | २४ | १५ | १९ | १३ | २८ | ०३ | ०३ |
| क. | ३० | ५६ | ३८ | १६ | २० | ३९ | ०५ | २८ | २८ |
| वि. | ०९ | १६ | ४४ | २० | ०८ | ०४ | १३ | २१ | २१ |
| ग | ५९ | ७२२ | ११ | ०६ | ०६ | २९/३७ | ०७ | ३ | ३ |
| ति | ४५ | ०६ | ५३ | १४ | ५७ | व | २४ | ११ | ११ |
| नक्षत्र | पूभा. ३ | उफा. १ | पु. १ | उभा. ४ | रोहिणी ३ | उभा. ४ | पूभा. ३ | उभा. १ | उफा. ३ |

## 卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐




● **होलिका वायु प्रवाह शकुन सूत्र फलम्** ● होली दीपन के समय पूर्व दिशा का वायु प्रवाह सुखद, अग्निकोणीय आगजनी कारक, दक्षिण का दुर्भिक्ष एवं पशुपीड़ाकारक, नैऋत्य का फसल में हानिप्रदायक, पश्चिम का सामान्य सूचक एवं उन में तेजीप्रद, वायव्य कोण का चक्रवात–पवन वेग आंधीकारक, उत्तर एवं ईशानकोणीय मेघ गाज सूचक, चारों दिशा कोणीय राष्ट्रसंकट परिचायक, वायु शान्त होवे तथा होली की झल उंचे आकाश की गति में जावे तो उत्पात सूचक, फाल्गुन पूर्णिमा के दिन मेघ गाज वर्षा आंधी वायु वेग होने से भावी रूप में धान्य गल्ला कार्य व्यवसाय लाभदायक बनें। पूनम फागुन मास की, मेघ गाज गति लक्ष। भावी तेजी मानिये, गल्ला धान्य के पक्ष॥ इति वायु प्रवाह शकुनसूत्रम् ● **व्यवहार प्रसंग–शाश्वत नीति** ● लालयेत् पंचवर्षाणि दशवर्षाणि ताड़येत्। प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रे मित्रत्वमाचरेत्॥ लालनाद् बहवोदोषास्ताडनाद बहवो गुणाः। तस्मात्पुत्रं च शिष्यं च ताडयेन्नतु लालयेत्॥ विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्। पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनाद् धर्मः ततः सुखम्॥

**B** पूभायां ३ शनिः १८।०७ रमजान मास.९ मुस.पाक रोजे शुरू **C** रामस्नेही फूलडोल शाहपुरा मेवाड़ **D** चंद्रग्रहण विदेशों में चैतन्यमहाप्रभु ज.

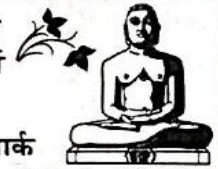
# चैत्र कृष्ण पक्षः संवत् २०८१ रा.शाकः १९४६

✦ मार्च सन् २०२५ ई. बसंत ऋतुःरवि उत्तरायणे–दक्षिण–उत्तरगोले ✦

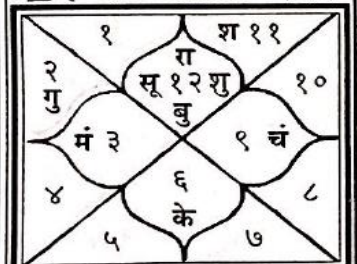
♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣

| रवियोगाः | तिथि | वार | घटी | पल | घं. | मि. | नक्षत्र | घटी | पल | घं. | मि. | योग | घटी | पल | करण | घटी | पल | दिनमान घटी | दिनमान पल | सूर्योदय घं. | सूर्योदय मि. | सूर्यास्त घं. | सूर्यास्त मि. | विविध तारीखें बंग | मुस | भा | चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.घटी पल | घं.मि. | सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अ.क.वि. | गति | अंग्रेजी ता. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उत्पात | १ | श | १९ | १७ | १४ | ३३ | उफा | ०५ | ०९ | ०८ | ५४ | गं | १७ | ५२ | कौ | १९ | १७ | २९ | ४० | ६ | ५१ | ६ | ४३ | २ | १४ | २४ | कन्या | | ११ ०० २९ ५४ | ५९ ४३ | १५ | वक्री बुधः १२/१६ A पूभायां ४ राहुः उफायां २ केतुः २१/५६ बुधास्त प. २४/०८ |
| मानस | २ | र | २५ | २२ | १६ | ५८ | ह | १२ | १९ | ११ | ४५ | वृ | १९ | ५७ | ग | २५ | २२ | २९ | ४४ | ६ | ५० | ६ | ४३ | ३ | १५ | २५ | तुला ४६/०४ | २५/१५ | ११ ०१ २९ ३६ | ५९ ४१ | १६ | भ. ३०/१५ उ.सर्वा.अमृत सिद्धि ०६/५० उ. ११/४५ या.संत तुकाराम जन्म A |
| चौ.व्रत | ३ | चं | ३१ | ५२ | १९ | ३३ | चि | १९ | ५६ | १४ | ४७ | ध्रु | २२ | २१ | वि | ३१ | ५२ | २९ | ४८ | ६ | ४९ | ६ | ४४ | ४ | १६ | २६ | तुला | | ११ ०२ २९ १७ | ५९ ३९ | १७ | भ. १९/३३ या.उभायां रविः २७/१३ चैत्री चतुर्थी व्रतं चंद्रोदय रात्रि २१/३२ |
| केतु | ४ | मं | ३८ | २५ | २२ | ०९ | स्वा | २७ | ४१ | १७ | ५२ | व्या | २४ | ५० | ब | ०५ | ११ | २९ | ५१ | ६ | ४८ | ६ | ४४ | ५ | १७ | २७ | तुला | | ११ ०३ २८ ५६ | ५९ ३७ | १८ | B रोहिण्यां ४ गुरुः १८/१२ |
| धाता | ५ | बु | ४४ | ३७ | २४ | ३७ | वि | ३५ | ०९ | २० | ५० | ह | २७ | ०८ | कौ | ११ | ३७ | २९ | ५५ | ६ | ४७ | ६ | ४५ | ६ | १८ | २८ | वृश्चि. १८/२१ | १४/०७ | ११ ०४ २८ ३३ | ५९ ३५ | १९ | सर्वा. २०/५० उ.अमृतसिद्धि २०/५० उ. ३०/४५ या.श्रीरंग पंचमी शुक्रास्त प. १८/४१ ★B |
| २३।३१ उ. | ६ | गु | ५० | ०१ | २६ | ४५ | अ | ४१ | ५५ | २३ | ३२ | व | २८ | ५५ | ग | १७ | २८ | २९ | ५९ | ६ | ४५ | ६ | ४५ | ७ | १९ | २९ | वृश्चिक | | ११ ०५ २८ ०८ | ५९ ३३ | २० | भ. २६/४५ उ.सर्वा. २३/३२ या.एकनाथषष्ठी मेषे भानुः १४/३२ रविउत्तरगोलीय गति प्रा.महाविषुवदिनम् |
| २५।४६ या. | ७ | शु | ५४ | १० | २८ | २४ | ज्ये | ४७ | ३४ | २५ | ४६ | सि | २९ | ५२ | वि | २२ | १८ | ३० | ०३ | ६ | ४४ | ६ | ४६ | ८ | २० | ३० | धनु ४७/३४ | २५/४६ | ११ ०६ २७ ४१ | ५९ ३२ | २१ | भ. १५/३९ या.शीतला सप्तमी बासोड़ा शील रंग सप्तमी C ऋषभदेव जन्म+दीक्षा |
| गद | ८ | श | ५६ | ४१ | २९ | २३ | मू | ५१ | ४१ | २७ | २४ | व्य | २९ | ४२ | बा | २५ | ४० | ३० | ०७ | ६ | ४३ | ६ | ४६ | ९ | २१ | चै१ | धनु | | ११ ०७ २७ १३ | ५९ ३० | २२ | शीतलाष्टमी रा. चैत्र मास प्रा.केसरियाजी मेला मेवाड़ वर्षीतप प्रा.जैन C |
| शुभ | ९ | र | ५७ | २१ | २९ | ३८ | पूषा | ५४ | ०० | २८ | १८ | व | २८ | ११ | तै | २७ | १७ | ३० | ११ | ६ | ४२ | ६ | ४७ | १० | २२ | २ | धनु | | ११ ०८ २६ ४३ | ५९ २८ | २३ | सर्वा. २८/१८ उ. ३०/४१ या.शहीद दि.शुक्रोदय पू. १९/२५ ★ |
| मृत्यु | १० | चं | ५६ | ०१ | २९ | ०५ | उषा | ५४ | २४ | २८ | २७ | प | २५ | ०८ | व | २६ | ५७ | ३० | १५ | ६ | ४१ | ६ | ४७ | ११ | २३ | ३ | मकर ०९/१९ | १०/२५ | ११ ०९ २६ १२ | ५९ २७ | २४ | भ. १७/२८ उ. २९/०५ या.सर्वा. २८/२७ उ. ३०/४० या.दशामाता व्रतं |
| ए.व्रत | ११ | मं | ५२ | ४५ | २७ | ४५ | श्र | ५२ | ५४ | २७ | ५० | शि | २० | ३२ | ब | २४ | ३८ | ३० | १९ | ६ | ४० | ६ | ४८ | १२ | २४ | ४ | मकर | | ११ १० २५ ३८ | ५९ २५ | २५ | पापमोचिनी ११ व्रतं स्मार्त्त (गृहस्थ) |
| मित्र | १२ | बु | ४७ | ४१ | २५ | ४३ | ध | ४९ | ३७ | २६ | ३० | सि | १४ | २६ | कौ | २० | २७ | ३० | २३ | ६ | ३९ | ६ | ४८ | १३ | २५ | ५ | कुंभ २१/२९ | १५/१५ | ११ ११ २५ ०३ | ५९ २३ | २६ | पंचक १५/१५ उ.पापमोचिनी ११ व्रतं वैष्णव निम्बार्क |
| प्रदोष | १३ | गु | ४१ | ०५ | २३ | ०३ | श | ४४ | ४९ | २४ | ३४ | सा | ०६/५८ | ५७/१६ | ग | १४ | ३४ | ३० | २७ | ६ | ३८ | ६ | ४९ | १४ | २६ | ६ | कुंभ | | ११ १२ २४ २६ | ५९ २१ | २७ | भ. २३/०३ उ.प्रदोष व्रतं रंगतेरस मास शिवरात्रि श्रीप्रकाशपुरी निर्वाण मंडोर जोधपुर |
| ध्वांक्ष | १४ | शु | ३३ | १७ | १९ | ५५ | पूभा | ३८ | ५२ | २२ | १० | शु | ४८ | ४५ | वि | ०७ | २० | ३० | ३० | ६ | ३७ | ६ | ४९ | १५ | २७ | ७ | मीन २५/२७ | १६/४८ | ११ १३ २३ ४७ | ५९ १९ | २८ | भ. ०९/३३ या. D पूभायां ४ मीने शनिः २१/४६ उदयं शनि पू. २१/३० सूर्यग्रहण विदेशों में |
| अमावस | ३० | श | २४ | ४० | १६ | २७ | उभा | ३२ | ०७ | १९ | २७ | ब्र | ३८ | ३९ | ना | २४ | ४० | ३० | ३४ | ६ | ३६ | ६ | ५० | १६ | २८ | ८ | मीन | | ११ १४ २३ ०६ | ५९ १७ | २९ | देवपितृ कार्ये शनैश्चरी अमावस्या चांद्र संवत्सर २०८१ पूर्णता D |





## निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः




### अ.४७ चैत्र कृष्णे ८ शनौ इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ११ | ८ | २ | ११ | १ | ११ | १० | ११ | ५ |
| अं. | ०७ | ०२ | २६ | १२ | २० | ०९ | २९ | ०३ | ०३ |
| क. | २७ | ३३ | २७ | ३० | १९ | ०४ | ०४ | ०२ | ०२ |
| वि. | १३ | ०८ | ४९ | ४४ | ४७ | ०९ | १६ | ५६ | ५६ |
| ग | ५९ | ७५१ | १५ | ४७/३० | ०८ | ३७/४५ | ०७ | ३ | ३ |
| ति | ३० | ४७ | ४६ | व | ०५ | व | २१ | ११ | ११ |
| नक्षत्र | उभा.२ | मूल.१ | पुन.२ | उभा.३ | रोहिणी ४ | उभा.२ | पूभा.३ | पूभा.४ | उफा.२ |

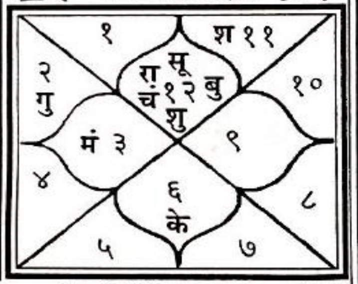
### ♣ ग्रह गोचरीय फलश्रुतिः ♣

बदी चैत्र की सप्तमी, मेघ गाज का लक्ष। वस्तु लाल मंदी वने, निर्णय गणना दक्ष ॥ लगते एकम चौथ को, वर्षा बादल गाज। सावन भादव में नहीं, फिर वर्षा का राज ॥ चैत्र सुदी पांचे दिवस, बादल वर्षे तोय। तो फिर सावन मास में, कुछ वर्षा न होय। चैत उजेरी पंचमी, दिन भर बादल छांव। गेहूँ का संग्रह करो, सावन दुगुणा भाव ॥ युति योग बुध सूर्य का, पवन वेग प्रस्तार। उत्पादन क्षमता भली, कृषि खेत विस्तार ॥ चैत्र बदी की प्रतिपदा, सातम तक आकाश। मेघ गाज वर्षा यदि, भावी वर्षा नाश ॥ कृष्ण पक्ष की पंचमी, मेघ गाज आकाश। व्यापार गति मंदता, निर्णय शकुन प्रकाश ॥ चार पांच ग्रह का बने, युतिचार गतिचार। भूक्रन्दन जन धन क्षति, विश्व मंच अभिसार ॥

### अ.४८ चैत्र कृष्णे ३० शनौ इष्ट ०।०

| ग्रह | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ११ | ११ | २ | ११ | १ | ११ | १० | ११ | ५ |
| अं. | १४ | ०८ | २८ | ०६ | २१ | ०४ | २९ | ०२ | ०२ |
| क. | २३ | ३६ | २७ | ३५ | १९ | ४९ | ५५ | ४० | ४० |
| वि. | ०६ | ०१ | ०८ | १३ | ०९ | ४९ | २५ | ४२ | ४२ |
| ग | ५९ | ९०५ | १८ | ४५/३५ | ०८ | ३२/१८ | ०७ | ३ | ३ |
| ति | १७ | ०४ | ४१ | व | ५९ | व | १५ | ११ | ११ |
| नक्षत्र | उभा.४ | उभा.२ | पुन.३ | उभा.१ | रोहिणी ४ | उभा.१ | पूभा.३ | पूभा.४ | उफा.२ |

## निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः






☐ **होलोग्राम चित्र देखकर ही पंचांग लेवें।** शुभाऽभिलाषी **निर्णयसागर पंचांग कार्यालय, मु.पो.नीमच** – 458 441 (म.प्र.) फोन : 07423 - 220520 ✆ 94259 74174
✆ **व्हाट्सएप से जुड़ने हेतु नाम व शहर लिखकर मैसेज करें** – 89640 98640 Email : nspkn1@gmail.com f Nirnay Sagar Panchang Prakashan

## ♣ संक्रांतिवाहनं-व्याघ्र संक्रान्त्युपवाहनं- अश्व ♣



**♠ अथ मकर संक्रान्ति प्रतिफलम् -** श्रीमन्नृपति विक्रमार्क २०८१ शाके १९४६ एवं श्री कालयुक-सिद्धार्थी नामके संवत्सरे रवि सौम्यायने-शिशिर ऋतौ माघ मासे कृष्ण पक्षे १ भौमवासरे ४९ घटी ३६ पल पुनर्वसु नक्षत्रे ०६ घटी ५४ पल विष्कुंभ योगे ४८ घटी ३८ पल बालव करणे २० घटी ०९ पल दिनमान २६ घटी १९ पल एवं पंचांग शुद्धावत्र-दिनेष्टः घटिका ०३ पल ३२ प्रातः काले मकरराशौ सूर्य संक्रमणं स्यात् तदा देवानां रात्र्युद्गमः अस्य पुण्यकालः धर्म शास्त्रीय वचनानुगते अद्यैत्र भौमवासरे प्रातः वेलातः सूर्यास्तपर्यन्तः शुभपुण्यप्रदः।

**♣ वाहनादि प्रकार विषये**-वार नाम महोदरी-तस्कर, लोभी-प्रलोभी, प्रवंचक, धूर्तः चौर्यकर्मशील, संग्राहक, ठग पक्ष हेतु दिशापथ सूचक शुभ फलद। नक्षत्र नाम महोदरी-तस्कर-ठग, चौर्यकर्मशील, प्रवंचक, धूर्त, संग्राहक, ठग, लोभी-प्रलोभी, स्टाकिस्ट वर्ग हेतु मनोत्साहवर्धक सुखद फलद। दिवा १ याम व्यापिनी शिक्षक, लेखक, व्याख्याता राष्ट्रीय विकास, सेनापति, आरक्षी नायक, सुरक्षा अधिकारी, गुप्तचर विभाग पद विशेष पर प्रभारक कष्टद। दक्षिणे गमन, वायव्यां दृष्टि, बालव करणे, वाहन-व्याघ्र, उपवाहन-अश्व, पीतवस्त्र, गदायुध, रजतपात्र, पायस भक्षण, कुंकुमलेपन, भूतजाति, जातिपुष्प, कंकण भूषण, पर्ण कंचुकी, कुमार्यावस्था, उपविष्टा, मुहूर्त-४५, धान्य-गल्ला स्थिर सम भाव, सोना, चांदी, चना, तुवर, हल्दी, सरसों, दाना मैथी, केसर, चंदन, रोली, चाय, तम्बाकू, सौंठ, गरम मसाला, सुगंधी पदार्थ उन्नत धारणा। वासनिवास रवि संक्रमण, कुम्हार गति दक्ष। उत्पति उद्योग में, जन सुविधा अभिलक्ष।। किसी राशि पर संक्रमण करे भौम दिन सूर। तेल, नमक, रस, घी सहित, तेजी होय कपूर। इतीदं मकर संक्रमणं फलाशय सूत्रं पंचांगे निर्णयसागरे - नीमच नगरस्थे।। शुभं भूयात् सर्वदा श्रीरस्तु - विविध कल्याणमस्तु - सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वेसंतु निरामयाः।। इत्यादि सुमंगलकामना सर्वेषां कृते।। ♣

**♠ शनिचार एवं गुरु-बृहस्पति गतिचार फलाशय सूत्रावली ♠** श्री कालयुक् सिद्धार्थी नामक संवत्सर कालांश में शनिदेव का चलन-कलन मूलतया कुम्भराशि में चरितार्थ रहेगा। संहिताशास्त्र अनुसार कुंभ राशि गत शनि का कालांश सामाजिक-राजनैतिक-आर्थिक दृष्टिकोण से नवीन गतिपथ तथा स्थिर सुख-सम्पदा का विधायक होता है। नाक्षत्रिक नियामक अनुसार शतभिषा पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में गतिमान बनेगा। **बृहद्ध संहितामध्ये तत् फलम् - साजे शतभिषजि भिषक्कविशोण्डिकपण्यनीतिकृतीनाम।। मेघमालाग्रन्थानुसार श्री शिवपार्वती सम्बाद - मध्ये तु - मेदिन्यां पच्यते नैव राजयुद्धं परस्परं धान्यरसादीनां महर्घं जायते ध्रुवं । दुर्भिक्षं रसनाक्षं विषयस्तु प्रणश्यति। पदान्त्ये शतभे मन्देपूर्वाभाद्रपदे।।** भावार्थ यह कि वैद्य- चिकित्सक - कवि - साहित्यविद् मादक द्रव्य विक्रेता, नीति विशेष के विज्ञाता पर बहुविधि प्रभार कष्टद अनुभूति । निष्प्रयोजन प्रजा में अन्तोष विवाद -आन्दोलन की गतिविधि विशेष कर बन पावे। विभिन्न राजनेता-दलपति-अधिनायक वर्ग में द्वन्द वैचारिक विभेद की मनोवृत्ति विशेषकर, जागृत होवे। नेता-दलपति-अधिनायक वर्ग में द्वन्द, वैज्ञानिक विभेद की मनोवृत्ति विशेषकर जागृत होवे। सांवत्सरी पद्धति **मध्येऽपि-शनौ गते कुम्भराशौद्वन्दगतिमीतटे। उपद्रवौ भवेद भूमौ बहुरोगो महीतले।। कादम्बिनी वृष्टिविद्याबोधकशास्त्रानुसारे तु- सुभिक्षं मकर कुम्भे- कुम्भे तु पश्चिमो देशः पीड्यते गौतमी तटः ।।** मेघमहोदय वर्षचरितार्थबोध संहिता शास्त्रानुसारेऽपि **- लक्ष्मी प्रकार सौख्यं धनकणसहितं देशसौख्ये नृपाणां, धर्मा धर्मो विद्यते सुखनिरत जनो मेघपूर्णा धरित्री। माङ्गल्ये सर्वलोके प्रभवति बहुशः सस्यनिष्पति हर्षा, भूमिरम्याविवाहैर्जन सुखसमयः कुम्भगे सूर्यपुत्रे ।।** भाव यह कि गौतमी, नदी तट संभाग विशेषकर प्रपीड़ित साथ ही पश्चिम दिशि संभाग भी वस्तु बन पावे। जन आन्दोलन, यातायात अवरोध, तथा बहुविध विकास कामना हित जन आक्रोश चरितार्थ होवे। कुम्भ शनिचार दुर्भिक्ष का परिचायक नहीं होवे, विगत वर्षों में कुम्भ राशिगत शनि रहते मानसून प्रवर्षण का गतिक्रम सार्थक ही रहा। राष्ट्रीय व्यक्तिगत आर्थिक-वित तंत्र में सुधार बने, बैंकिंग- मुद्राकोष प्रणाली में सुधार तथा आर्थिक विकास हेतु अर्थशास्त्रियों द्वारा अभिनव योजना का सुत्रपात। निर्यातक गति में अभिवृद्धि एवं उत्पत्ति- उत्पादन हेतु शासकीय योगदान लक्ष्य साधना विशेष कर बने। मद लोलुप स्वार्थ परायण जीवों का नाश तथा राष्ट्रीय विचारक जीवों का अभ्युदय विकास होवे। जन कल्याण-मङ्गल संरचना हेतु सत्तानायकों द्वारा विशेष प्रयास बने। धर्म-अधर्म की व्याख्या मीमांसा हेतु स्पष्ट रूप से होवे, राजनीति धर्म सम्बन्ध पक्ष में स्पष्टता का रूप सार्थक होवे। दक्षिण सम्भाग में राजनैतिक ध्रुवीकरण, गेहूं-चणा-मसूर, जुवार, चावल, उड़द, तुवर-अरहर, चंवला, बाजरा, ऊन उद्योग आदि का कारोबार लाभदायी बने। **द्वे नक्षत्रेयदा सौरिर्वषेण चरते यदा। राज्ञामन्योन्य भेदश्च शस्त्रकोश्च जायते।।** सूत्रानुसार सेना का चलन-कलन विशेष बनते सुरक्षा पद पर व्ययभार विशेष, अस्त्र-शस्त्र हानि का कुयोग।

**✷ बृहस्पति गुरुदेव का गतिचार मेष + वृषभ राशि में तदर्थ- मेषराशौयदाजीवश्चैत्रसम्वत्सरस्तदा। प्रबुद्धोनामजलदः वर्षाचसर्वतोमुखी।। वृषराशौयदाजीवोवैशाखोवत्सरस्तदा। नंदशालोभवेन्मेघः सर्वधान्यसमर्घता।। वैशाखेआश्विनेमासेस्त्रीणांरोगाश्वदन्तिनाम। अश्वानां-चमहापीडागृहवैरं परस्परम्।। गोधूमशालिचणकामुद्गामाषास्तथातिलाः। महर्घाःश्रावणेज्येष्ठेर्मद्यानांनम-हाजलम्।। श्रृंगालकेमालवेचउत्पातोराजविग्रहः। देशभंगाद्धयंशशून्यंघृतधान्यमहर्घता।। आषाढेश्रावणेवर्षा-नवर्षाभाद्रपादके। अश्वरोगश्चतुष्पादनाशः पीडागमः क्वचित्।।**

**✷ गुरुचार विचार** - बृहस्पति गुरुदेव का वार्षिक परिभ्रमण चैत्री वर्ष प्रारंभ से मेष राशि संज्ञा का तथा दिनांक ०१.०५.२४ से वृषभ राशि विषयक गति संचार गणना तथा वृषभ राशि मध्य दिनांक ०९-१०-२०२४ से वक्र गतिचार प्रारंभ होकर दिनांक ०४-०२-२०२५ से मार्गी गति प्रारंभ होगी तथा नक्षत्र गतिचार नियामक अनुसार भरणी-कृतिका-रोहिणी-मृगशिरा इन ४ नक्षत्र मध्य चलन-कलन रहेगा। संहिता शास्त्रानुसार राशि स्थिति प्रतिफल यह कि मेष राशि में बृहस्पति होतो उसे चैत्र सम्वत सर जानना उसमें प्रबुद्ध नाम का मेघ चारों ओर जल वर्षाता है। वृषराशि में बृहस्पति होतो उसे वैशाख वत्सर जानना। उसमें नंदशाल नामक मेघ वर्षा करता है और सब रस सस्ते होते है। वैशाख और आश्विन में स्त्री वर्ग को पीड़ा हो परस्पर विरोध हो। गेहूं, चावल, चने, मूंग, उड़द, तिल यह श्रावण तथा जेठ में महँगे होते हैं। वर्षा कम हो । श्रृंगाल मालवा इनमें उत्पात हो, राजाओं में विग्रह हो, देश भंग हो, घी और धान्य वस्तु में बिक्री का अभाव रहे।

**✷ राहु केतु गतिचार** - इस वर्ष के पूरे समय में राहु मीन राशि का तथा केतु कन्या तत्व का गतिशील रहेगा। इस नियामक अनुसार पत्रकार समाचार जगत वैज्ञानिक वर्ग - शिक्षक व्याख्याता - धर्माचार्य उपदेशक न्याय प्रदाता - न्यायकारक एवं बुद्धि विशेष जीविक वर्ग हेतु प्रभारक कष्टद रचना। साथ ही सरकार प्रजा के मध्य असन्तोष विद्वेष की मनोवृत्ति का चलन-कलन सहज बन पावे। जन व्यापी राष्ट्रीय आन्दोलन मार्ग अवरोध आदि बनें तथापि परराष्ट्रीय राजनयिक सम्बन्धों में अभिवृद्धि बन पाती है। यव (जौ), चावल, मक्का, ज्वार, बाजरी, गेहूँ, तिल, पोहा, साबूदाना, फलिहारी धान्य वस्तु में विशेष तेजी का प्रतिफल बन पाता है।

● यह ज्योतिर्विज्ञान का प्रालेख संहिता मैदिनी शास्त्रानुगत अभिव्यक्ति होता है। तदुपरांत प्रकृति प्रधान विजनित मायावी तंत्र सृष्टि संरचना का विधान नियामक एवं गौ-प्रजा की भाग्य रचना का प्रारूप वर्चस्व भी सतत् सबल प्रबल रहता है। यह नैसर्गिक शाश्वत बिंदु प्राधार भी स्पष्ट गतिक विचारणीय अवशेष रहता है।। श्रीस्तु।।

## 卐 दिन का चौघड़िया 卐

| र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उ | अ | रो | ला | शु | चं | का |
| चं | का | उ | अ | रो | ला | शु |
| ला | शु | चं | का | उ | अ | रो |
| अ | रो | ला | शु | चं | का | उ |
| का | उ | अ | रो | ला | शु | चं |
| शु | चं | का | उ | अ | रो | ला |
| रो | ला | शु | चं | का | उ | अ |
| उ | अ | रो | ला | शु | चं | का |

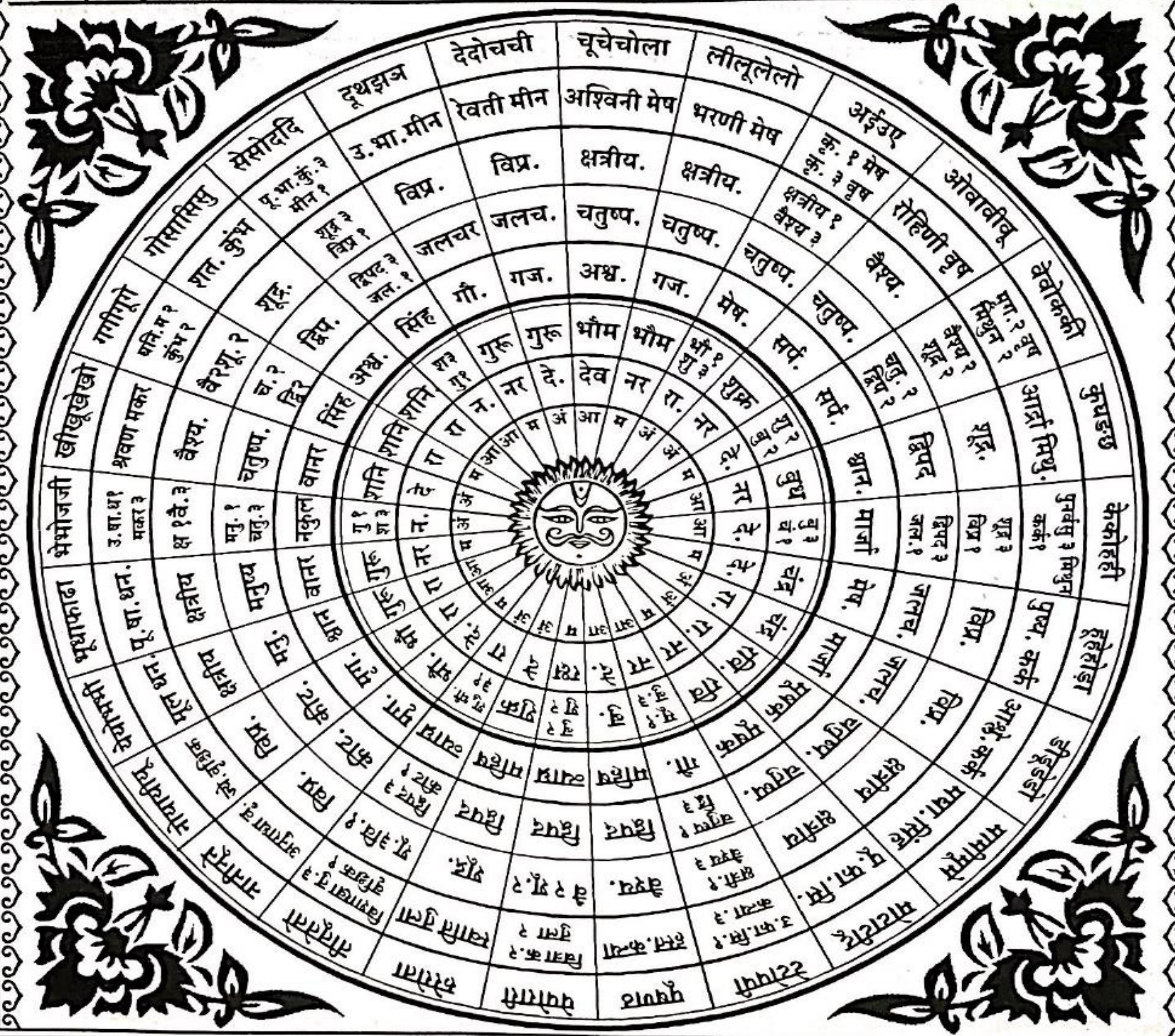
## 卐 रात्रि का चौघड़िया 卐

| र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शु | चं | का | उ | अ | रो | ला |
| अ | रो | ला | शु | चं | का | उ |
| चं | का | उ | अ | रो | ला | शु |
| रो | ला | शु | चं | का | उ | अ |
| का | उ | अ | रो | ला | शु | चं |
| ला | शु | चं | का | उ | अ | रो |
| उ | अ | रो | ला | शु | चं | का |
| शु | चं | का | उ | अ | रो | ला |

### 卐 चौघड़ियामुहूर्त्त 卐

८ दिन के तथा ८ रात के होते हैं। उ.से उत्पात। चं. से चंचल। ला. से लाभ। अ. से अमृत। का. से काल। शु. से शुभ। रो. से रोग का बोध समझें। मध्यममानत: १ चौघड़िया का मान १॥ घंटे का होता है। गणितागत सूत्र - इष्ट दिन के दिनमान में ८ का भाग देने से १ का मान आवेगा। दिन का सूर्योदय में तथा रात्रि का सूर्यास्त में योग करने से गणना होती है।

## अवकहडाचक्रसहितवरवधूमेलापकोपयोगिशतपदचक्रम्




## अथ खातचक्रम् - राहुपृष्ठीय

| संक्रा. | विवाहे | देवालये | राहुपृष्ठ कोण |
|---|---|---|---|
| सूर्य | २।३।४ | १२।१।२ | आग्नेये खातं |
| सूर्य | ११।१२।१ | ९।१०।११ | नैऋत्ये खातं |
| सूर्य | ८।९।१० | ६।७।८ | वायव्ये खातं |
| सूर्य | ५।६।७ | ३।४।५ | ईशाने खातं |
| **संक्रा.** | **जलाशये** | **गृहारंभे** | **राहुपृष्ठ कोण** |
| सूर्य | १०।११।१२ | ५।६।७ | आग्नेये खातं |
| सूर्य | ७।८।९ | २।३।४ | नैऋत्ये खातं |
| सूर्य | ४।५।६ | ११।१२।१ | वायव्ये खातं |
| सूर्य | १।२।३ | ८।९।१० | ईशाने खातं |

### अथ श्री महामृत्युंजय ▲ जपनीय मंत्र ▲

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः। ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्धनम् उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्यो र्मुक्षीयमामृतात् भूर्भुवः स्वरों सः जूं हौं ॐ।

त्र्यक्षरी मंत्र - ॐ जूं सः

रक्षार्थमंत्र - ॐ जूं सः (अमुकं -नामोच्चारणं) पालय पालय सः जूं ॐ ▲ शत्रुनाश एवं रोगनिवृत्ति ॐ जूं सः (शत्रुनाम वा रोग नामोच्चारणं) नाशय नाशय सः जूं ॐ

मंत्र सरलार्थ - हम परमेश्वर त्रयम्बक की आराधना करते हैं वह परम सुखप्रदायक एवं पुष्टिवर्धक है। यथा तरबूज आदि फल (परिपाक होने से स्वयं ही) बेल से मुक्त होते हैं, वैसे ही (पूर्ण आयु भोगकर) मैं मृत्युमय जीवन से (बिनाकष्ट) मुक्त होउं, परन्तु अमृतमय जीवन से मुक्त नहीं होउं। ▲ ▲

# अथ वरकन्ययोर्नक्षत्रमेलापके वर्णादिनाड्यन्तानामष्टकूटानां गुणस्य संख्या पञ्चाङ्गे निर्णयसागरे

## (१) वर्णगुणज्ञानचक्र

वर ➤ ▲ परस्पर कार्यक्षमता

| कन्या | वर | ब्रा. | क्ष. | वै. | शू. |
|---|---|---|---|---|---|
| कन्या | ब्राह्मण | १ | ० | ० | ० |
| | क्षत्रिय | १ | १ | ० | ० |
| | वैश्य | १ | १ | १ | ० |
| | शुद्र | १ | १ | १ | १ |

## (६) गणमैत्रीगुणज्ञानचक्र

वर ➤ परस्पर अभिरूचि

| कन्या | गण | देव | नर. | राक्षस |
|---|---|---|---|---|
| कन्या | देव. | ६ | ५ | १ |
| | नर. | ५ | ६ | ० |
| | राक्षस. | १ | ० | ६ |

## (२) वश्यगुणज्ञानचक्र

वर ➤ परस्पर प्रीति संबंध

| कन्या | वश्य | च. | नर. | ज. | वन | की. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कन्या | चतु. | २ | १ | १ | ॥ | १ |
| | नर. | १ | २ | १ | ० | ० |
| | जल | १ | ॥ | २ | १ | २ |
| | वन | ० | ० | २ | २ | ० |
| | कीट | १ | ० | १ | ० | २ |

## (८) नाड़ीगुणज्ञानचक्र

शारीरिक संबंध तथा सन्तति

| वर | नाड़ी | आ. | म. | अं. |
|---|---|---|---|---|
| कन्या | आदि | ० | ८ | ८ |
| | मध्य | ८ | ० | ८ |
| | अन्त्य | ८ | ८ | ० |

## (३) तारागुणबोधकचक्र

परस्पर एक दूसरे को समझने की शक्ति

| वर | तारा | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कन्या | १ | ३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |
| | २ | ३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |
| | ३ | १॥ | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | १॥ |
| | ४ | ३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |
| | ५ | १॥ | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | १॥ |
| | ६ | ३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |
| | ७ | १॥ | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | १॥ |
| | ८ | ३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |
| | ९ | ३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |

❀ तारा ज्ञान सूत्र कन्या के नक्षत्र से वर नक्षत्र तक तथा वर के नक्षत्र से कन्या नक्षत्र तक गणना करें। अलग २ दोनों में ९ के भाग से शेष ३-५-७ बचते तारा अशुभ। शेष अंक १-२-४-६-८-० में शुभ अर्थात् ३ गुण की मान्यता।

## (४) योनि गुणज्ञानचक्र

परस्पर दिमागी सम्बन्ध सन्तुलन विवेक

| वर | योनि | अश्व | गज | मेष | सर्प | श्वा. | मा. | मूष. | गौ. | महि | व्या. | मृग | वान | नकु | सिं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कन्या | अश्व | ४ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ३ | १ | १ | ३ | ३ | २ | १ |
| | गज | २ | ४ | ३ | २ | २ | २ | २ | २ | ३ | २ | २ | २ | २ | ० |
| | मेष | ३ | ३ | ४ | ३ | २ | ३ | २ | ३ | ३ | १ | ३ | ० | ३ | १ |
| | सर्प | २ | २ | ३ | ४ | २ | २ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | ० | २ |
| | श्वान | २ | २ | २ | २ | ४ | १ | १ | २ | २ | १ | ० | २ | २ | १ |
| | मार्जा | २ | २ | ३ | २ | १ | ४ | ० | २ | २ | १ | २ | २ | २ | २ |
| | मूषक | २ | ३ | २ | १ | १ | ० | ४ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | १ |
| | गौ | ३ | २ | ३ | १ | २ | २ | २ | ४ | ३ | ० | ३ | २ | ३ | १ |
| | महि | १ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ | ३ | ४ | १ | २ | २ | २ | ३ |
| | व्याघ्र | १ | २ | १ | २ | १ | १ | २ | ० | १ | ४ | १ | १ | २ | २ |
| | मृग | ३ | २ | ३ | २ | ० | २ | २ | ३ | २ | १ | ४ | २ | २ | २ |
| | वानर | २ | ३ | ० | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ४ | २ | ३ |
| | नकुल | २ | २ | ३ | ० | २ | २ | २ | ३ | २ | २ | २ | २ | ४ | २ |
| | सिंह | १ | ० | १ | २ | १ | २ | १ | १ | ३ | २ | २ | ३ | २ | ४ |

## (५) ग्रहमैत्रीगुणचक्र

वर ➤ परस्पर प्रकृति स्वभाव

| कन्या | ग्रह | सू | चं | मं | बु | बृ | शु | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कन्या | सू. | ५ | ५ | ५ | ४ | ५ | ० | ० |
| | चं. | ५ | ५ | ४ | १ | ४ | ॥ | ॥ |
| | मं. | ५ | ४ | ५ | ॥ | ५ | ३ | ॥ |
| | बु. | ४ | १ | ॥ | ५ | ॥ | ५ | ४ |
| | बृ. | ५ | ४ | ५ | ॥ | ५ | ॥ | ३ |
| | शु. | ० | ॥ | ३ | ५ | ॥ | ५ | ५ |
| | श. | ० | ॥ | ॥ | ४ | ३ | ५ | ५ |

## ▲ मंगल का परिहार ▲

यदि कन्या के जो मंगल होवे और वर के उपरोक्त स्थानों में मंगल के बदले में शनि सूर्य राहु, केतु होवे तो मंगल का दोष दूर करता है। पाप क्रान्त शुक्र तथा सप्तम भावपति की नेष्ट स्थिति भी मंगल तुल्य ही समझना चाहिए।

⌘ पगड़ी मंगल चुनड़ी मंगल जिस वर या कन्या के जन्म कुंडली में मंगल लग्न से या चन्द्र से तथा वर के शुक्र से भी १।४।७।८।१२ स्थान भावों में मंगल होवे तो मांगलिक गुणधर्म की कुण्डली समझें।

## (७) राशिकूट गुणज्ञान चक्र

परस्पर दैनिक जीवनचर्या अनुक्रम-व्यवहार

| वर | राशि | मेष | वृष. | मिथु | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चि | धनु | मकर | कुंभ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कन्या | मेष | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० |
| | वृषभ | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ |
| | मिथु | ७ | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ |
| | कर्क | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० |
| | सिंह | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० |
| | कन्या | ० | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ |
| | तुला | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० |
| | वृश्चि | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० |
| | धनु | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ७ | ७ |
| | मकर | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ७ |
| | कुंभ | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ० |
| | मीन | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० | ७ |

| वर्णादि | वर | गुण | कन्या |
|---|---|---|---|
| वर्ण | विप्र | १ | क्षत्रिय |
| वैश्य | जल | १ | मनुष्य |
| तारा | शेष २ | ३ | शेष ९ |
| योनि | गज | २ | श्वान |
| ग्रहमै | गुरू | ५ | गुरू |
| गणमै | देव | ० | राक्षस |
| भकूट | चार | ७ | दश |
| नाड़ी | अन्त्य | ८ | आदि |
| एवं | गुण | २७ | योग |

## ✣ अथ गुणानयन उदाहरण ✣

● वर का नाम चन्द्र चूड़ कन्या का नाम भवानी वर का जन्म नक्षत्र रेवती कन्या का जन्म नक्षत्र मूल इनके गुण २७ हुये। अत: एवं विवाह शुभ है। गण नहीं मिला उसके परिहार में राशि मैत्री उत्तम बनी है। अत: दोष विशेष नहीं। गुण १८ से अधिकाधिक शुभ रहते हैं तथा १८ से कम हीन हैं। किन्हीं दोषों के रहते यदि परिहार वाक्य अच्छे बनते हों तो दोष नगण्य होंगे तथा गुण वृद्धि में सहायक होंगे।

## ❁ अपने नामाक्षर से वैर वर्ग ज्ञान कोष्ठक ❁

अपने नाम के वर्ग से पंचम ५ गणना का वर्ग शत्रु-वैरी समझें। तृतीय ३ गणना का सम मित्र तथा चतुर्थ गणना का मित्र वर्ग समझना चाहिए।

| अ इ उ ए | क ख ग घ ङ | च छ ज झ ञ | ट ठ ड ढ ण | त थ द ध न | प फ ब भ म | य र ल व | श ष स ह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गरूड़ | मार्जार | सिंह | श्वान | सर्प | मूषक | मृग | मेढा-मेष |



| ▲ जन्माक्षररचनामध्ये ▲ | | | हंसकतत्व विवेचना |
|---|---|---|---|
| मेष | सिंह | धनु | अग्नि तत्व |
| वृषभ | कन्या | मकर | भूमि तत्व |
| मिथुन | तुला | कुम्भ | वायु तत्व |
| कर्क | वृश्चिक | मीन | जल तत्व |

## ❁ जन्माक्षर रचनामध्ये ❁ ❁ युंजा-विवेक ❁

| | |
|---|---|
| ❀ पूर्व युंजा | अश्विनी-भरणी-कृतिका-रोहिणी-मृगशिरा-रेवती। |
| ❀ मध्य युंजा | आर्द्रा-पुनर्वसु-पुष्य-आश्लेषा-मघा-पूर्वा फाल्गुनी-उत्तरा फाल्गुनी-हस्त-चित्रा-स्वाति-विशाखा-अनुराधा। |
| ❀ अन्त्य युंजा | ज्येष्ठा - मूल - पूर्वाषाढ - उत्तराषाढ - श्रवण - घनिष्ठा - शतभिषा - पूर्वाभाद्रपद - उत्तराभाद्रपद। |

उर्ध्वाधरस्थान्यपि भानि पुंसां
पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम।

# वरवधू गुणमेलापक सारिणी

संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वं
शुभं तत्स्मृतितोऽधिकं यत् ।।



| | ● वर | | मेष | | | वृष | | | मिथुन | | | कर्क | | | सिंह | | | कन्या | | | तुला | | | वृश्चिक | | | धनु | | | मकर | | | कुम्भ | | | मीन | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | चू चे चो ला | लि लू ले लो | अ | इ उ ए | ओ वा वि वु | वे वो | क कि | कू घ ङ छ | के को ह | ही | हु हे हो डा | डी डू डे डो | म मी मू मे | मो टा टी टू | टे | टो प पी | पू ष ण ठ | पे पो | र री | रू रे रो ता | ति तू ते | तो | न नी नू ने | नो या यी यू | ये यो भ भी | भू धा फा ढा | भे | भो ज जी | खि खू खे खो | ग गि | गु गे | गो सा सी सू | से सो द | दी | दू थ झ ञ | दे दो चा ची | |
| ● वधू | | | अ४ | भ४ | कृ१ | कृ३ | रो४ | मृ२ | मृ२ | आ४ | पु३ | पु१ | पु४ | आ४ | म४ | पू४ | उ१ | उ३ | ह४ | चि२ | चि२ | स्वा४ | वि३ | वि१ | अनु४ | ज्ये४ | मू४ | पू४ | उ१ | उ३ | श्र४ | ध२ | ध२ | श४ | पू३ | पू१ | उ४ | रे४ | |
| मेष | चू चे चो ला | अ४ | २८<br>३ | ३३<br>० | २८॥ | १८॥<br>४ | २१॥<br>-४ | २२॥<br>-४ | २६ | १७<br>३ | १९<br>३ | २३॥<br>३ | ३१॥ | २८ | २१<br>+५ | २५<br>+५ | १५॥<br>३५ | ११<br>३६ | ९<br>२३६ | १३<br>६ | २२॥ | २६॥<br>-२ | २२॥ | १८॥<br>-६ | २५॥<br>-६ | १४<br>३६ | १३<br>३५ | २५<br>+५ | २३॥<br>+५ | २५ | २६ | २० | २० | १५<br>३ | १६<br>३ | १४॥<br>३४ | २४॥<br>+४ | २६<br>+४ | अ४ |
| | लि लू ले लो | भ४ | ३४ | २८<br>३ | २९<br>०१ | १९<br>०४१ | २२॥<br>-४ | १४॥<br>३४ | १८<br>३ | २६ | २७ | ३१॥ | २३॥<br>३ | २५॥<br>१ | २०<br>-१५ | १८<br>३५ | २६<br>+५ | २१॥<br>६ | २०<br>६ | ४<br>१३६ | १३॥<br>१३ | २९॥ | २१॥<br>-१ | १७॥<br>-१६ | १७॥<br>३६ | १९<br>-१६ | २०<br>-१५ | १८<br>३५ | २६<br>+५ | २७॥ | २६ | १०<br>१३२ | १०<br>१३२ | २०<br>-१ | २४<br>-२ | २२॥<br>-२४ | १७॥<br>३४ | २६॥<br>+४ | भ४ |
| | अ | कृ१ | २७॥ | २९<br>१ | २८<br>३ | १८<br>३४ | १०<br>१३४० | १६॥<br>४ | २० | २०<br>१ | २१ | २५॥ | २६॥ | २३॥<br>३ | १६॥<br>३५ | २०<br>१५ | २०<br>१५ | १५॥<br>१६ | १५॥<br>६ | १८<br>६ | २७॥ | १५॥<br>३ | १९॥<br>३ | १५॥<br>३६ | १९॥<br>-६ | २५॥<br>-६ | २४॥<br>+५ | १८<br>१२५ | १२<br>३१५ | १३॥<br>१३ | ११॥<br>२३ | २५ | २५ | २७ | १९<br>१ | १७॥<br>१४ | १९॥<br>१४ | ११॥<br>३४ | कृ१ |
| वृष | इ उ ए | कृ३ | १८॥<br>४ | २०<br>१४ | १९<br>३४ | २८<br>३ | २०<br>१३ | २६॥ | १७॥<br>+४ | १७॥<br>१४ | १८॥<br>+४ | २२ | २३ | २०<br>३ | १८॥<br>३ | २२<br>१ | २२<br>१ | २१<br>१५ | २१<br>+५ | २३॥<br>+५ | २२॥<br>-६ | १०॥<br>३६ | १४॥<br>३६ | २०॥<br>३ | २४॥ | ३०॥ | २०<br>६ | १३॥<br>१२६ | ७॥<br>१३६ | १२<br>१३५ | १०<br>३५२ | २३॥<br>+५ | २१॥ | ३१॥ | २३॥<br>१ | २०<br>१ | २२<br>१ | १४<br>३ | कृ३ |
| | ओ वा वि वु | रो४ | २३॥<br>-४ | २३॥<br>४ | ११<br>३४१ | २०<br>३१ | २८<br>३ | ३६<br>० | २५॥<br>०४ | २३॥<br>+४ | २२॥<br>+४ | २६ | २७ | १२<br>३१ | १०॥<br>३१ | २४॥ | २७ | २६<br>+५ | २६<br>+५ | २०<br>-१५ | १९<br>-१६ | १५॥<br>३६ | ९॥<br>३१६ | १५॥<br>३१ | २९॥ | २३॥<br>१ | १४<br>१ | १९<br>६ | ११॥<br>३२६ | १६<br>३५२ | १७<br>३५ | २०<br>-१५ | २४॥<br>-१ | २४॥<br>-१ | ३०॥ | २७ | २७ | १९<br>३ | रो४ |
| | वे वो | मृ२ | २३॥<br>-४ | १४॥<br>३४ | १८॥<br>-४ | २७॥ | ३५ | २८<br>३ | १९<br>३४ | २४<br>०४ | २२॥<br>+४ | २६ | १९<br>३ | २१ | १९॥ | १५॥<br>३ | २४॥ | २३॥<br>+५ | २६<br>+५ | १३<br>३५ | १२<br>३६ | २५<br>-६ | १८॥<br>-६ | २४॥ | २१॥<br>३ | २४॥ | १५<br>६ | १०<br>३६ | १७<br>२६ | २१॥<br>-२५ | २५<br>+५ | १३<br>३५ | १९<br>३ | २७ | २९॥ | २६ | १८<br>३ | २७ | मृ२ |
| मिथुन | क कि | मृ२ | २७ | १८<br>३ | २२ | १९॥<br>+४ | २७<br>+४ | २०<br>३४ | २८<br>३ | ३३<br>० | ३१॥ | १९<br>-४ | १२<br>३४ | १४<br>४ | २३॥ | १९॥<br>३ | २८॥ | ३१॥ | ३४ | २१<br>३ | १४<br>३५ | २७<br>+५ | २०॥<br>+५ | १४<br>६ | ११<br>३६ | १४<br>६ | २३ | १८<br>३ | २५<br>+२ | २०<br>-२६ | २३॥<br>-६ | ११॥<br>३६ | १३<br>३५ | २१<br>+५ | २३॥<br>+५ | २५॥ | १७॥<br>३ | २६॥ | मृ२ |
| | कू घ ङ छ | आ४ | १९<br>३ | २७ | २१<br>१ | १८॥<br>-१४ | २४॥<br>+४ | २६<br>+४ | ३४ | २८<br>३ | २५<br>३० | १२॥<br>०३४ | २०<br>-४ | १३<br>१४ | २३॥<br>१ | २९॥ | २१॥<br>३ | २४॥<br>३ | २४॥<br>३ | २८<br>१ | २१<br>-१५ | २७<br>+५ | २१<br>-१५ | १४॥<br>१६ | १७<br>२६ | ६<br>१३२६ | १६<br>१३ | २८ | २८ | २३<br>-६ | २३<br>-६ | १७॥<br>-१६ | १९<br>-१५ | १२<br>१३५ | १७<br>३५ | १९<br>३ | २६॥ | २६॥ | आ४ |
| | के को ह | पु३ | २०<br>३ | २७ | २३ | २०॥<br>+४ | २२॥<br>+४ | २३॥<br>+४ | ३१॥ | २४<br>३ | २८<br>३ | १५॥<br>-३४ | २२॥<br>४० | १७<br>-४ | २२॥<br>+२ | २६॥<br>+२ | २१॥<br>३ | २४॥<br>३ | २५॥<br>३ | २७॥ | २०॥<br>+५ | २८<br>+५ | २२<br>+५ | १५॥<br>६ | २१॥<br>६ | ७<br>३६ | १४<br>३ | २७ | २७ | २२<br>-६ | २३<br>-६ | १७<br>-६ | १८॥<br>+५ | १४<br>३५ | १६<br>३५ | १८<br>३ | २८ | २७॥ | पु३ |
| कर्क | ही | पु१ | २२॥<br>३ | २९॥ | २५॥ | २२ | २४ | २५ | १८<br>४ | १०॥<br>३४ | १४॥<br>३४ | २८<br>३ | ३५<br>० | २९॥ | १६॥<br>-२४ | २०॥<br>२४ | १५॥<br>३४ | १८<br>३ | १९<br>३ | २१ | २०॥ | २८ | २२ | २०<br>+५ | २६<br>+५ | ११॥<br>३५ | ८<br>३६ | २१<br>-६ | २१<br>-६ | २६ | २७ | २१ | १२॥<br>६ | ८<br>३६ | १०<br>३६ | १६<br>३५ | २६<br>+५ | २५॥<br>+५ | पु१ |
| | हु हे हो डा | पु४ | ३०॥ | २१॥<br>३ | २६॥ | २३ | २५ | १८<br>३ | ११<br>३४ | १८<br>४ | २१॥<br>४ | ३५ | २८<br>३ | ३०<br>० | १९॥<br>+४ | १५॥<br>३४ | २३॥<br>+४ | २६ | २७ | १२<br>३ | ११॥<br>३ | २६॥ | २१ | १७<br>+५ | १८<br>३५ | २१<br>-५ | १७<br>६ | ११<br>२३६ | २१<br>६ | २६ | २५<br>-२ | १३<br>३ | ४॥<br>३६ | १४॥<br>६ | १८<br>६ | २४<br>+५ | १८<br>३५ | २७<br>+५ | पु४ |
| | डी डू डे डो | श्ले४ | २६॥ | २४॥<br>१ | २२॥<br>३ | १९<br>३ | ११<br>३१ | १९ | १२<br>४ | १२<br>१४ | १५<br>४ | २८॥ | २९ | २८<br>३ | १५<br>०३४२ | १५॥<br>१४२ | १८॥<br>१४ | २१<br>१ | २१ | २६ | २५॥ | १२॥<br>३ | १७॥<br>३ | १५॥<br>३५ | २०<br>+५ | २६<br>-५ | २२॥<br>६ | १६<br>१६ | ८<br>३१६ | १३<br>१३ | १३<br>३ | २६ | १७॥<br>६ | १९॥<br>६ | ११॥<br>१६ | १७॥<br>१५ | २१<br>१५ | १३<br>३५ | श्ले४ |
| सिंह | म मी मू मे | म४ | २०<br>+५ | २०<br>१५ | १६॥<br>३५ | १७॥<br>३ | ९॥<br>३१ | १७॥ | २१॥ | २२॥<br>१ | २०॥<br>-२ | १६॥<br>-२४ | १९<br>+४ | १६<br>३४२ | २८<br>३ | ३०<br>०१ | २७॥<br>१ | १६॥<br>१४ | १६॥<br>+४ | २१॥<br>४ | २४॥ | ११॥<br>३ | १६॥<br>३ | २२॥<br>३ | २५॥ | ३३ | २५<br>+५ | १९<br>१५ | ८॥<br>१३५ | ३॥<br>३१६ | ४॥<br>३६ | १८॥<br>६ | २४॥ | २५॥ | १८॥<br>१ | १८॥<br>-१६ | १९॥<br>१६ | १३<br>३६ | म४ |
| | मो टा टी टू | पू४ | २६<br>+५ | १८<br>३५ | २०<br>-१५ | २१<br>१ | २३॥ | १५॥<br>३ | १९॥<br>३ | २८॥ | २६॥<br>-२ | २२॥<br>-२४ | १७॥<br>३४ | १६॥<br>१२४ | ३०<br>-१ | २८<br>३ | ३५<br>० | २२॥<br>०४ | २२॥<br>+४ | ७॥<br>१३४ | १०॥<br>१३ | २५॥ | १८॥<br>१ | २४॥<br>-१ | २३॥<br>३ | २५॥<br>-१ | १९<br>-१५ | १७<br>३५ | २४<br>+५ | १७॥<br>६ | १८॥<br>६ | ४॥<br>१३६ | १०॥<br>१३ | १९॥<br>१ | २४॥ | २४॥<br>-६ | १७॥<br>३६ | २५॥<br>-६ | पू४ |
| | टे | उ१ | १५॥<br>३५ | २६<br>+५ | २०<br>-१५ | २१<br>१ | २६ | २४॥ | २८॥ | २०॥<br>३ | २१॥<br>३ | १०॥<br>३४ | २५॥<br>+४ | १९॥<br>-१४ | २७॥<br>-१ | ३५ | २८<br>३ | १७<br>३४ | १६<br>०३४ | १३॥<br>१४२ | १६॥<br>१२ | २५॥ | १६॥<br>१२ | २२॥<br>-१२ | ३१॥ | १७॥<br>१३ | ९॥<br>१३५ | २५<br>+५ | २५<br>+५ | २०<br>६ | २०<br>६ | ११॥<br>१६ | १७॥<br>१ | ११॥<br>१३ | १५॥<br>३ | १५॥<br>३६ | २६॥<br>-६ | २५॥<br>-६ | उ१ |
| कन्या | टो प पी | उ३ | ११<br>३६ | २२॥<br>६ | १६॥<br>१६ | २१<br>-१५ | २६<br>+५ | २४॥<br>+५ | ३१॥ | २३॥<br>३ | २४॥<br>३ | २०<br>३ | २८ | २२<br>१ | १७॥<br>१४ | २५<br>+४ | १८<br>३४ | २८<br>३ | २७<br>३० | २४॥<br>-१२ | १६॥<br>१२४ | २५॥<br>+४ | १६॥<br>१२४ | १८<br>१२ | २७ | १३<br>१३ | १४<br>१३ | २९॥ | २९॥ | २४॥<br>+५ | २४॥<br>+५ | १६<br>-१५ | १६॥<br>-१६ | १०॥<br>३१६ | १४॥<br>३६ | १७॥<br>३ | २८॥ | २७॥ | उ३ |
| | पू ष ण ठ | ह४ | ९<br>२३६ | २०<br>६ | १७॥<br>६ | २२<br>+५ | २५<br>+५ | २६<br>+५ | ३३ | २२॥<br>३ | २४॥<br>३ | २०<br>३ | २८ | २३ | १८॥<br>+४ | २२॥<br>+४ | १६<br>३४ | २६<br>३ | २८<br>३ | २८<br>० | २०<br>०४ | २६॥<br>+४ | १८॥<br>+४ | २० | २६ | १३<br>३ | १५<br>३ | २७ | २८॥ | २३॥<br>+५ | २४॥<br>+५ | १८॥<br>+५ | १९<br>-६ | ८॥<br>३६२ | १३॥<br>३६ | १६॥<br>३ | २६॥ | २७॥ | ह४ |
| | पे पो | चि२ | १३<br>६ | ५<br>१३६ | १९<br>६ | २३॥<br>+५ | २०<br>१५ | १२<br>३५ | १९<br>३ | २७<br>१ | २५॥ | २१ | १२<br>३ | २७ | २२॥<br>४ | ८॥<br>१३४ | १४॥<br>१२४ | २४॥<br>१२ | २७ | २८<br>३ | २०<br>३४ | १९<br>०४ | २६॥<br>+४ | २८ | ११<br>३ | २५ | २८ | १४<br>१३ | २२<br>१ | १७<br>१५ | १८॥<br>+५ | १५॥<br>३५ | १६<br>३६ | २४<br>-६ | १६॥<br>१६ | १९॥<br>१ | १०॥<br>१३२ | १९॥ | चि२ |
| पंचांगे निर्णयसागरे नीमचनगरस्थे | | | अ४ | भ४ | कृ१ | कृ३ | रो४ | मृ२ | मृ२ | आ४ | पु३ | पु१ | पु४ | आ४ | म४ | पू४ | उ१ | उ३ | ह४ | चि२ | चि२ | स्वा४ | वि३ | वि१ | अनु४ | ज्ये४ | मू४ | पू४ | उ१ | उ३ | श्र४ | ध२ | ध२ | श४ | पू३ | पू१ | उ४ | रे४ | |

इस वर वधू मेलापक (वर्ण वश्यादि) नक्षत्र जनित गुण मेलापक ० सारिणी की स्पष्टता यह कि उपर की पंक्ति में वर के नक्षत्र तथा वाम बायीं खड़ी पंक्ति में कन्या के नक्षत्र दिये हैं। गुण संख्या उपरी भाग में तथा नीचे दी गयी संख्या में दोषों का संकेत चिह्न है। चिह्न संख्या का विवरण यह कि नाड़ी दोष की जगह ३ अंक। गण दोष हेतु १ अंक। तथा भकूट दोष (षडाष्टक) में ६ अंक एवं (नव पंचम) हेतु ५ अंक। तथा द्विर्द्वादश में ४ अंक। वैर योनि में २ अंक का लेखन है। तथा जिस स्थान पर ० शून्य अंक यह नृदूर (वर के नक्षत्र से पहले वधू का नक्षत्र होना) यदि कोई दोष नहीं है तो संपात में शुद्ध गुण संख्या का अंकन किया गया है। मूलतया वर-कन्या राशि स्वामी मैत्री सुयोग बनने पर गण-ग्रहशत्रुता-भकूट आदि का परिहार मान्य होता है। तथा अल्प दोष विकार अथवा शास्त्रीय परिहार समाधान वचन बनने के विचार स्थल पर ऋण (-) अथवा (+) धन आदिक चिह्न मात्र का संकेत है। इन चिह्न हेतु मेलापक शास्त्रीय ग्रन्थों से समाधान लेना व्यावहारिक विषय है। ● **निर्णयसागर पंचांग कार्यालय**, मु.पो. नीमच छावनी ४५८ ४४१ (म.प्र.)

| • वर / • वधू | | | मेष | | | वृष | | | मिथुन | | | कर्क | | | सिंह | | | कन्या | | | तुला | | | वृश्चिक | | | धनु | | | मकर | | | कुम्भ | | | मीन | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | चू चे चो ला | लि लू ले लो | अ | इ उ ए | ओ वा वि वु | वे वो | क कि | कू घ ङ छ | के को ह | ही | हु हे हो डा | डी डू डे डो | म मी मू मे | मो टा टी टू | टे | टो प पी | पू ष ण ठ | पे पो | र री | रू रे रो ता | ति तू ते | तो | न नी नू ने | नो या यी यू | ये यो भ भी | भू धा फा ढा | भे | भो ज जी | खि खू खे खो | ग गि | गु गे | गो सा सी सू | से सो द | दी | दू थ झ ञ | दे दो चा ची | |
| | | | अ४ | भ४ | कृ१ | कृ३ | रो४ | मृ२ | मृ२ | आ४ | पु३ | पु१ | पु४ | आ४ | म४ | पू४ | उ१ | उ३ | ह४ | चि२ | चि२ | स्वा४ | वि३ | वि१ | अनु४ | ज्ये४ | मू४ | पू४ | उ१ | उ३ | श्र४ | ध२ | ध२ | श४ | पू३ | पू१ | उ४ | रे४ | |
| तुला | र री | चि२ | २२॥ | १४॥ १३ | २८॥ | २३॥ +६ | २० १६ | १२ ३६ | १३ ३५ | २१ १५ | १९॥ +५ | २०॥ | ११॥ ३ | २६॥ | २५॥ | ११॥ १३ | १७॥ १२ | १७॥ १२४ | २० +४ | २१ ३४ | २८ ३ | २७ ० | ३४॥ | २३॥ ४ | ६॥ ३४ | २०॥ ४ | २८ | १४ १३ | २२ १ | २५ +१ | २६॥ | २३॥ ३ | १८ ३५ | २६ +५ | १८॥ १५ | १२॥ १६ | ३॥ ६२१३ | १२॥ ६ | चि२ |
| | रू रे रो ता | स्वा४ | २७॥ +२ | २९॥ | १७॥ -३ | १२॥ ३६ | १५॥ ३६ | २६ -६ | २७ +५ | २६ +५ | २८ +५ | २९ | २७॥ | १४॥ ३ | १३॥ ३ | २५॥ | २५॥ | २५॥ +४ | २७॥ +४ | २१ +४ | २८ | २८ ३ | २० ३० | ९ ३४० | २१॥ ४ | १६॥ ४ | २३ | २७ | १९ ३ | २२ ३ | २३ ३ | २६॥ | २१ +५ | २० -५२ | २५ +५ | १९ ६ | १९॥ ६ | १२॥ ३६ | स्वा४ |
| | ति तू ते | वि३ | २२॥ | २२॥ १ | २०॥ ३ | १५॥ ३६ | १०॥ १३६ | १८॥ -६ | १९॥ +५ | २१ १५ | २१ +५ | २२ | २१ | १८॥ ३ | १७॥ ३ | १९॥ १ | १७॥ १२ | १७॥ १४२ | १८॥ +४ | २७॥ +४ | ३४॥ | १९ ३ | २८ ३ | १७ ३४ | १६ ०४ | २०॥ ४ | २८ | २२ १ | १४ १३ | १७ १३ | १७ ३ | ३० | २४॥ +५ | २६ +५ | २० १५ | १४ १६ | १३ १६२ | ४॥ ३६ | वि३ |
| वृश्चिक | तो | वि१ | १६॥ +६ | १६॥ १६ | १४॥ ३६ | १९॥ ३ | १४॥ १३ | २२॥ | १२ ६ | १३॥ १६ | १३॥ ६ | १९ -५ | १८ -५ | १५॥ -५ | २१॥ ३ | २३॥ १ | २१॥ १२ | १७ १२ | १८ | २७ | २२॥ ४ | ७ ३४ | १६ ३४ | २८ ३ | २७ ० | ३१॥ | २२॥ +४ | १६॥ ४१ | ८॥ १३४ | १२ १३ | १२ ३ | २५ | २४ | २५॥ | १९॥ १ | १९ १५ | १८ १५ | ९॥ ३२५ | वि१ |
| | न नी नू ने | अनु४ | २४॥ -६ | १५॥ ३६ | १९॥ -६ | २४॥ | २७॥ | २०॥ ३ | १० ३६ | १५ २६ | २०॥ ६ | २६ -५ | १८ ३५ | २१ -५ | २४॥ | २०॥ ३ | २९॥ | २५ | २५ | ११ ३ | ६॥ ३४ | २०॥ ४ | १६ ४ | २८ | २८ ३ | ३१॥ ० | १५॥ -२४ | १३॥ ३४ | २१॥ +४ | २५ | २६ | १२ ३ | ११ ३ | २१ | २४॥ | २४ +५ | १८ ३५ | २७ +५ | अनु४ |
| | नो या यी यू | ज्ये४ | १२ ३६ | १८॥ १६ | २४॥ -६ | २९॥ | २२॥ १ | २२॥ | १२ ६ | २ ३१२६ | ५ ६३ | १०॥ ५३ | २० +५ | २६ -५ | ३१ | २३॥ १ | १६॥ १३ | १२ १३ | ११ ३ | २४ | १९॥ ४ | १४॥ | १९॥ ४ | ३१॥ | ३० | २८ ३ | १४ ०२३४ | १६॥ १४ | १६॥ १४ | २० १ | २० | २५ | २४ | १८ ३ | १० १३ | ९॥ १३५ | २१ १५ | २१ +५ | ज्ये४ |
| धनु | ये यो भ भी | मू४ | १२ ३५ | २० १५ | २४॥ +५ | १९ ६ | १३ १६ | १६ ६ | २१ | १५ १३ | १२ ३ | ८ ३६ | १७ ६ | २३॥ ६ | २५ +५ | १९ १५ | ९॥ १५३ | १३ ३१ | १३ ३ | २७ | २७ | २१ | २६ | २३॥ +४ | १५॥ -२४ | १५ ३४२ | २८ ३ | २८ ०१ | २६॥ १ | १५ १४ | १५ ४ | २० ४ | २८॥ | २१॥ ३ | १४॥ १३ | १६ १३ | २५ १ | २६॥ | मू४ |
| | भू धा फा ढा | पू४ | २६ +५ | १८ ३५ | १८ १२५ | १२॥ १६२ | १८ ६ | १० ३६ | १८ ३ | २७ | २७ | २३ ६ | १३ २३६ | १७ १६ | १९ -१५ | १७ ३५ | २५ +५ | २८॥ | २७ | १३ १३ | १३ १३ | २७ | २१ १ | १७॥ -१४ | १५ ३४ | १७॥ -१४ | २८ +१ | २८ ३ | ३४ ० | २२॥ ०४ | २३ ४ | ६ १३४ | १४॥ १३ | २३॥ १ | २८॥ | ३० | २३ ३ | ३१ | पू४ |
| | भे | उ१ | २४॥ +५ | २६ +५ | १२ १३५ | ६॥ १३६ | १०॥ २३६ | १७ २६ | २५ +२ | २७ | २७ | २३ ६ | २३ ६ | ९ १६३ | ८॥ १५३ | २४ +५ | २५ +५ | २८॥ | २८॥ | २१ १ | २१ १ | १९ ३ | १३ १३ | ९॥ १३४ | २३॥ +४ | १७॥ -१४ | २६॥ -१ | ३४ | २८ ३ | १६॥ ३४ | १४॥ ३४० | १५ १४ | २३॥ १ | २३॥ १ | २९॥ | ३१ | ३१ | २३ ३ | उ१ |
| मकर | भो ज जी | उ३ | २७ | २८॥ | १४॥ १३ | १२ १३५ | १६ २३५ | २३॥ -२५ | २० -२६ | २२ -६ | २२ -६ | २८ | २८ | १४ १३ | ४॥ १३६ | २० ६ | २१ ६ | २४॥ +५ | २४॥ १५ | १७ १५ | २४ -१ | २२ ३ | १६ १३ | १३ ३१ | २७ | २१ १ | १६ १४ | २३॥ ४ | १७॥ ३४ | २८ ३ | २६ ३० | २६॥ +१ | १७ -१४ | १७ -१४ | २३ +४ | ३०॥ | ३०॥ | २२॥ ३ | उ३ |
| | खि खू खे खो | श्र४ | २७ | २६ | १३॥ ३२ | ११ ३५२ | १६ ३५ | २५ +५ | २२॥ -६ | २१ -६ | २२ -६ | २८ | २६ +२ | १५ ३ | ६॥ ३६ | १८॥ ६ | २० ६ | २३॥ +५ | २४॥ +५ | १९॥ ५ | २६॥ | २२ ३ | १७ ३ | १४ ३ | २७ | २२ | १७ ४ | २३ ४ | १४॥ ३४ | २५ ३ | २८ ३ | २८ -० | १८॥ ०४ | १८ +४ | २१ +४ | २८॥ | २९॥ | २२॥ ३ | श्र४ |
| | ग गि | ध२ | २० | ११ १३२ | २६ | २३॥ +५ | २० १५ | १२ ३५ | ९॥ ३६ | १६॥ १६ | १५ -६ | २१ | १३ ३ | २७ | १९॥ ६ | ५॥ १३६ | १२॥ १६ | १५ १५ | १७॥ +५ | १५॥ ३५ | २२॥ ३ | २४॥ | २९ | २६ | १२ ३ | २६ | २१ ४ | ७ ३४१ | १६ ४१ | २६॥ १ | २७ | २८ ३ | १८॥ ३४ | २३॥ ४० | १९ ४ | २६॥ १ | १५॥ १३ | २२॥ +२ | ध२ |
| कुम्भ | गु गे | ध२ | २० | ११ १३२ | २६ | ३०॥ | २७ १ | १९ ३ | १२ ३५ | १९ १५ | १७॥ +५ | १२॥ ६ | ४॥ ३६ | १८॥ ६ | २५॥ | ११॥ १३ | १८॥ १ | १७॥ १६ | १९ +६ | १७ ३६ | १८ ३५ | २० -५ | २४॥ -५ | २५ | ११ ३ | २५ | २९॥ | १५॥ १३ | २४॥ १ | १८ १४ | १८॥ +४ | १९॥ ३४ | २८ ३ | ३३ ० | २८॥ १ | १८ १४ | ७ १३४ | १४ ४२ | ध२ |
| | गो सा सी सू | श४ | १५ ३ | २१ १ | २८ | ३२॥ | २५ १ | २७ | २० +५ | १२ १३५ | १३ ३५ | ६॥ ३६ | १४॥ ६ | २०॥ ६ | २६॥ | २०॥ १ | १२॥ १३ | ११॥ १३६ | ८॥ १३६ | २५ ६ | २५ +५ | १९ +५ | २६ +५ | २६॥ | २१ | १९ ३ | २२॥ ३ | २४॥ १ | २४॥ १ | १८ १४ | १८ +४ | २४॥ +४ | ३३ | २८ ३ | १९ ०१३ | ८॥ १३४० | १७ १४ | १६ ४ | श४ |
| | से सो द | पू३ | १८ ३ | २५ +२ | २० -१ | २४॥ -१ | ३१॥ | ३१॥ | २४॥ +५ | १७ ३५ | १७ ३५ | १२ ३६ | २० ६ | १२॥ १६ | १९॥ १ | २५॥ | १६॥ ३ | १५॥ ३६ | १५॥ -३६ | १७॥ १६ | १८॥ -१५ | २६ +५ | २० -१५ | २०॥ १ | २६॥ | ११ १३ | १५॥ १३ | २९॥ | ३०॥ | २४ +४ | २३ +४ | २० -१४ | २८॥ -१ | १९ १३ | २८ ३ | १७॥ ३४ | २२॥ ०४ | २० ४२ | पू३ |
| मीन | दी | पू१ | १४॥ ३४ | २१॥ -४२ | १६ -१४ | १९ १ | २६ | २६ | २५॥ | १८ ३ | १८ ३ | १७ ३५ | २५ ५ | १७॥ १५ | १७ -१६ | २३॥ +६ | १४॥ ३६ | १६॥ ३ | १६॥ ३ | १८॥ +१ | ११॥ १६ | १९ +६ | १३ १६ | १९ -१५ | २५ +५ | ९॥ १३५ | १५ १३ | २९ | ३० | २९॥ | २८॥ | २५॥ १ | १७ १४ | ७॥ १३४ | १६॥ ३४ | २८ ३ | ३३ ० | ३०॥ +२ | पू१ |
| | दू थ झ ञ | उ४ | २४॥ +४ | १६॥ ३४ | १८॥ -१४ | २१ १ | २६ | १८ ३ | १७॥ ३ | २५॥ | २८ | २७ ५ | १९ ३५ | २१ १५ | १८॥ -१६ | १६॥ ३६ | २५॥ +६ | २७॥ | २६॥ | ९॥ १३२ | २॥ ३२१६ | १९॥ ६ | १२ १६२ | १८ १५२ | १९ ३५ | २१ -१५ | २४ -१ | २२ ३ | ३० | २९॥ | २९॥ | १४॥ १३ | ६ १३४ | १६ १४ | २१॥ ४ | ३३ | २८ ३ | ३५ ० | उ४ |
| | दे दो चा ची | रे४ | २५ +४ | २४॥ +४ | ११॥ ३४ | १४ ३ | १७ ३ | २६ | २५॥ | २४॥ | २६॥ | २५॥ ५ | २७ ५ | १४ ३५ | १३ ३६ | २३॥ +६ | २३॥ +६ | २५॥ | २६॥ | १९॥ | १२॥ ६ | ११॥ ३६ | ४॥ ३६ | १०॥ ३५ | २७ -५ | २२ +५ | २६॥ | २९ | २१ | २०॥ ३ | २१॥ ३ | २२॥ -२ | १४ ४२ | १६ ४ | १८ ४२ | २९॥ +२ | ३४ | २८ ३ | रे४ |
| पंचांगे निर्णयसागरे नीमचनगरस्थे | | | अ४ | भ४ | कृ१ | कृ३ | रो४ | मृ२ | मृ२ | आ४ | पु३ | पु१ | पु४ | आ४ | म४ | पू४ | उ१ | उ३ | ह४ | चि२ | चि२ | स्वा४ | वि३ | वि१ | अनु४ | ज्ये४ | मू४ | पू४ | उ१ | उ३ | श्र४ | ध२ | ध२ | श४ | पू३ | पू१ | उ४ | रे४ | |

# शास्त्रीय मांगलिक योग
# कुयोग-सुयोग संरचना सूत्रावली
## ❊ तथा च विविध परिहार-समाधान वचन मीमांसा ❊

**नर-नारी के दाम्पत्य जीवन को सुख-सम्पदायुक्त अथवा दुःख दुःविधायुक्त बनाने के लिये केवल मात्र मंगल ग्रह ही उत्तरदायी नहीं । मांगलिक योग सदैव मांगलिक संज्ञा का ही नहीं होता है - सुमंगल पक्ष की संरचना भी बन पाती है। अतः जन्मकुण्डली में केवल मंगल की स्थिति को ही आधारभूत नहीं मानें । दाम्पत्य जनजीवन को कष्टद बनाने वाले शनि-राहु-केतु-सूर्य तथा शुक्र की भाव विषम स्थिति रचना पर भी ध्यान देना चाहिये ।**

(१) कुजदोष-मंगल का स्थान न्यास जन्मकुण्डली.के १-४-७-८-१२ भाव स्थान पर होने से वर-कन्या की पत्रिका मांगलिक संज्ञा की कही जाती है यथा सूत्र-**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे । कन्याभर्तुविनाशः स्याद्भर्तुर्भार्याविनाशनम् ।।** (२) यदि वर-कन्या की पत्रिका में जिस स्थान भाव पर मंगल हो तथा अन्य कोई प्रबल पाप ग्रह भी उस स्थान पर ही रहते कुज-भौम दोष नहीं रहता है एवं परिहार रचना बन जाती है । यथा सूत्र-**शनि भौमोऽथवा कश्चित्पापो वा तादृशोभवेत् । तेष्वेव भवनष्वेव भौम दोष विनाश कृत ।। भौम तुल्यो यदा भौमः पापो वा तादृशो भवेत् । उद्वाहः शुभदः प्रोक्ताश्चियुश्च सुखप्रदः ।।** भावार्थ यह कि उष्णमुष्णेन शम्यते तुल्य सूचक संज्ञा परिहार बन जाता है । (३) वर-कन्या की पत्रिका में १-४-७-८-१२ स्थान भाव में शनि हो तो भी भौमदोष शान्त हो जाता है यथासूत्र - **यामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने च हिबुके तथा । अष्टमे द्वादशे चैव भौमदोषो न विद्यते ।।** (४) एक विशेष सूत्र रचना यह भी कि वर-कन्या के जन्मलग्न तथा चन्द्रलग्न दोनों से भाव गणना करना चाहिये । यथा - **चन्द्राल्लग्न व्ययाष्टमे मदसुखे राहुः कुजार्की तथा । कन्याश्चेद्वरनाश-कृद्वरवधूहानिर्ध्रुवं जायतेति ।।** (५) मांगलिक कन्या का विवाह मांगलिक वर के साथ करना यह भी शास्त्र नियामक प्रचलित है यथा सूत्र - **कुजदोषवती देया कुजदोषवते किल । नास्ति न चानिष्टं दम्पत्योः सुखवर्धनम् ।।** (६) तथापि वर-कन्या मांगलिक वर्ग-संज्ञा में मान्य है भी या नहीं ? इस पक्ष पर भी विचार मंथन कर लेना योग्य विषय है । मंगल रचना में यदि निम्न वचन शास्त्र नियामक भी प्रतीत होवे तो मांगलिक-कुजदोष नहीं बनेगा । यथासूत्र-**सप्तमस्थो यदा भौमो गुरूणा च निरीक्षितः । तदा तु सर्व सौख्यं स्याद्भोम दोषो विनश्यति ।।** अर्थात् मंगल पर गुरू की पूर्ण दृष्टि बनते मंगलकृत दोष नहीं रहे । (७) पुनरपि शास्त्रीय समाधान सूत्र यह भी कि मेषराशि का मंगल लग्न में अथवा वृश्चिक राशि का मंगल चतुर्थ ४ सुखभाव में अथवा मकर राशि का सप्तम ७ वें तथा कर्कराशि का अष्टम ८ वें अथवा धनुराशि का मंगल द्वादश १२ वें भाव स्थान में रहते भौम दोष नहीं बनेगा । यथा शास्त्र वचन-**अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे । द्यूने मृगे कर्किचाष्टौ भौमदोषो न विद्युते ।।** (८) यदि वर कन्या के मंगल की स्थिति वक्री-नीच-अस्त-तथा शत्रु राशि की १-४-७-८-१२ वें भाव में हो तथा गुरू-शुक्र लग्न केन्द्रादि में बलवान राशि रचना के हो तो भी भौम दोष नगण्य माना जाता है । यथा शास्त्रीय वचन-**वक्रिणि-नीचारिगृहस्थे वाऽर्कस्थेऽपिवा न कुज दोषः । सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनगेऽपिवाऽथवा भौमे ।।** (९) इस भौम दोष समाधान हेतु और भी शास्त्र वचन है कि गुरू-शुक्र केन्द्र स्थान १-४-७-१० वें भाव में स्थित एवं स्वनवमांश वर्ग का अथवा चन्द्र पर गुरू-शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो अथवा शुभ ग्रहों के साथ सम्बंधशील मंगल तथा कर्क लग्न का मंगल अपनी नीच राशि का अथवा शत्रुराशि मिथुन-कन्या का अथवा अस्तगत स्थिति का रहते भी अनिष्टसूचक नहीं होता है यथाशास्त्रीय सूत्र-**जीवोऽथवा भृगु-सुतश्च स्वकेन्द्र संस्थस्तौ शीत भानुमपि पूर्णतया सुदृष्ट्या । नीचः स्वभागगमितौ यदि वीर्यवन्तौ भौमोत्थ दोषजभयं नयतो विनाशम् ।। पुनरपि ग्रन्थान्तरीय सूत्र रचना - शुभयोगादिकर्त्तत्वे नाऽशुभं कुरूते कुजः । कुजः कर्कटलग्नस्थो न कदाचन दोषकृत ।। नीचराशिगतः सोऽयं शत्रुक्षेत्र गतोऽपि च । शुभाऽशुभफलं नैव दद्यादस्तं-गतोऽपि च ।। अस्तगे नीचगेभौमेशत्रुक्षेत्र गतेऽपिवा । कुजाष्टमोद्भवो दोषो न किंचदपि विद्यते ।।** (१०) मंगल दोष परिहार विषयक समाधान वचन यह भी कि यदि वर-कन्या मांगलिक होवे तथा यदि सूर्य ३-६-१०-११ भाव स्थान में होवे एवं गुरू कर्क उच्चराशि तथा शुक्र उच्च मीन राशि तत्व संज्ञा के होवें तथा चन्द्रमा २-५-९-११ स्थान भाव में हो तो मंगल दोष विनाशक अर्थात् मांगलिक संज्ञा नहीं बनेगी । यथाशास्त्रीय वचन-**त्र्यायारिदिक्षु मार्त्तण्डो स्वोच्चगौ जीवभार्गवौ । पक्षेषु नवरूद्रेषु शीतगुश्चेत्तदा शुभः ।।** (११) वर कन्या के मांगलिक स्थिति रचना उपरान्त यदि मंगल मकर उच्च राशि का अथवा स्वगृही मेष-वृश्चिक राशि का हो अथवा स्वनवमांश राशि वर्ग का हो एवमेव ३-६-१०-११ स्थान भाव में प्रभावशील रहते भी मंगलदोष नहीं बनता । यथा शास्त्रीय प्रमाण सूत्र-**स्वगृहे स्वोच्चगे भौमे वर्गोत्तमगतेऽपिवा । बलाढ्योऽपचय स्थाने भौमस्तस्य न दोष कृत ।। तनु धन सुखमदना युर्लाभव्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम् । विघटयति तद्गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहे वा ।।** भावार्थ यह विशेष भी कि मित्र राशि सिंह-कर्क-धनु-मीन का मंगल मंगली दोष कारक नहीं बनता है । (१२) वर कन्या के अष्टकूट गुणादि मेलापक जन्मराशि नक्षत्र अनुसार यदि २५ से ३० संख्या के गुण प्राप्त होवें तथा राशिपति मित्रता एवं परस्पर गण एकसमान वर्ग के होवें तो भी भौम-कुजदोष का निवारण होता है । यथा **राशिमैत्रं यदा याति गणैक्यं वा यदा भवेत् । अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते ।।** (१३) जिस वर-कन्या की पत्रिका में प्रथम भावादि १-४-७-८-१२ में स्थित मंगल यदि चन्द्र अथवा गुरू के साथ युतिकारक अथवा चन्द्रमा केन्द्र स्थान १-४-७-१० भाव में होवें तथा सप्तम ७ भावेश अपने सप्तम स्थान में हो एवं केन्द्र-त्रिकोण भाव में शुभग्रह तथा ३-६-११ भाव स्थानों में पापग्रह हो इस रचना स्थिति के बनते भी मांगलिक दोष मान्य नहीं होगा । यथा शास्त्रीय वचन-**केन्द्रे कोणे शुभाढ्याश्चेत् त्रिषडायेऽप्य सद्ग्रहाः । तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा ।। कुजो जीवसमायुक्तो युक्तो वा शशिना यदा । चन्द्रः केन्द्रगतो वाऽपि तस्य दोषो न मंगली ।।** (१४) यदि वर-कन्या की पत्रिका में लग्न से-चन्द्रमा से-तथा शुक्र से १-२-४-७-८-१२ इन भाव स्थानों में किसी एक स्थान पर ही अर्थात् जिस भाव राशि में वर के स्थित हो उसी भाव राशि स्थान में कन्या के भी होवें तो भी मांगलिक परिहार बन पाता है तथा दाम्पत्य जीवन सुखद रहता है । परन्तु यदि वर-कन्या में से दोनों के मंगल अलग-अलग स्थानों पर हो तो उपर्युक्त सुफल नहीं प्राप्त होगा । यथा-**दम्पत्योर्जन्मकाले व्ययधनहिबुके सप्तमे रन्ध्रलग्ने । लग्नाच्च शुक्रादपि खलु निवसन् भूमिपुत्रस्तयोश्च । दाम्पत्यं दीर्घकालं सुतधनबहुलं पुत्रलाभश्च सौख्यं । दद्यादेकत्र हीनौ मृतिमखिलभयं पुत्रनाशं करोति ।।** (१५) मंगल आदि अन्य तत्सम पापक ग्रहों के परिहार दोष निवारण हेतु यह सूत्र भी अवलोकनीय है । यथा जो भाव अपने स्वामी से युक्त हो या दृष्टि प्रदाता हो तो उन भावों का फल शुभ-सूचक बनेगा । तथा पापग्रहयुक्त बुध एवं क्षीण चन्द्रमा यदि शनि-मंगल-सूर्य के साथ अथवा इनसे ही देखा जावे तो उन भाव स्थानों की हानि नेष्टफल बनना भी स्पष्ट है तथा शुभग्रह बुध-गुरू-शुक्र सबल प्रभावशील चन्द्र से युक्त अथवा दृष्ट हो उन भावों का प्रतिफल शुभसूचक यथा शास्त्रीय वचनसूत्र विशेष - **यो यो भावः स्वामिदृष्टो युतो वा सौम्येर्वास्यात्तस्य तस्यास्ति वृद्धिः । पापैरेवं तस्य भावस्य हानि निर्देष्टव्या पृच्छतां जन्मतो वा ।।** इस प्रकार केवल १-४-७-८-१२ स्थान स्थित मंगल के रहते ही कुजदोष-मांगलिक कुयोग नहीं बन पाता है । अन्य भी लिखित विविध शास्त्रीय परिहार समाधान सूचक वचनों का मंथन करते-विचारशील रहते सारभूत तथ्य निर्णय करना शास्त्रसम्मत

**निर्णयसागर पंचांग कार्यालय-नीमच छावनी (म.प्र.)**

# विविधशास्त्रीयपरिहार

अष्टकूट गुण मेलापक एवं विविध मुहूर्त्त निर्णय में तथा ग्रह शांति - अनुष्ठान आदि कार्य रचना में मूल दोष-प्रदोष रचना स्थिति बनने पर उन विषयक समाधान सुविधा परिहार वचनों की सन्मान्यता आगम काल से सन्मान्य है। कुयोगद स्थिति रहते सुयोग का वर्चस्व प्रभाव बनने पर कुयोग का पलायन होना - बनना सर्वशास्त्र सम्मत है। **यथा-अयोगे सुयोगोऽपिचेत् स्यात्तदानीमयोगं निहत्यैष सिद्धिं तनोति ।। पुनरपिवचनम् - अयोग: सिद्धियोगश्च द्वावेतौ भवतो यदि। अयोगो हन्यते तत्र सिद्ध योग: प्रवर्त्तते। ग्रन्थान्तरेऽपि सूत्राधारम्-दोषाश्चबहव: सन्ति गुणा: स्वल्पा: कलौयुगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवाद गुणै: सह ।।** भावार्थ यह कि किसी कुयोग दिवस पर सुयोग विशेष यथा (अमृतसिद्धि-सवार्थ सिद्धि-दोष संघ विनाशक रवि योगादि तथा अन्य विशेष कल्पादि योग स्थिति) का समावेश बनें तो कुयोग दिवस नष्ट होकर सुयोग का ही प्रतिफल चरितार्थ होता है। इसी प्रकार गुण मेलापक-अष्टकूट गणना में भी बहुविध परिहार समाधान सूत्र हैं, परिहार बनने पर गुण संख्या वृद्धि करना-बनना भी एक नैसर्गिक नीति-रीति का स्पष्ट विषय है।

**(१) राशि वर्ण** (ब्राह्मण + क्षत्रिय + वैश्य + शुद्र) गुण मेलापक में इनकी विषमता बनने पर परिहार सूत्र - **हीन वर्णो यदा राशी राशीशो वर्ण उत्तम: । तदा राशीश्वरो ग्राह्यस्तद्राशिं नैव चिन्तयेत् ।।** वर की अपेक्षा कन्या के राशि वर्ण अल्प होने पर यदि वर का राशिपति कन्या के राशिपति से उत्तम वर्ण का हो तो उस राशि का चिन्तन नहीं करें। **ग्रहों का वर्ण संज्ञा सूत्र-गुरू शुक्र**-विप्र ब्राह्मण। **सूर्य मंगल-क्षत्रिय। चन्द्रमा-वैश्य। बुध-शनि** - शुद्र वर्णक मान्य हैं। (२) वर कन्या के नक्षत्र योनि दोष विकार होने पर यदि वश्य गुण स्थिति योग्य है तो नक्षत्र योनि दोष पर विचार नहीं करें। यथा-**योनेरथो वैरिभाव: स तु कार्ये वियोगद: । राशिवश्यं च यद्यस्ति कारयेन्न तु दोषभाक् ।।** (३) वर कन्या के राशिपतियों में शत्रुता रहने पर भी यदि दोनों की राशियों के नवाशंपतियों में मित्रता हो अथवा नवांशपति बलवान हो तो ग्रह शत्रुता का दोष नहीं। यथा-**राशिनाथे विरूद्धेऽपि सबलावंशकाधिपौ । तन्मैत्रेऽपि च कर्तव्यं दम्पत्यो: शुभमिच्छता ।।** (४) वर-कन्या के गण विषयक दोष विकार होने पर भी यदि राशिपतियों की परस्पर मित्रता है तो गण विकार नहीं रहेगा। यथा-**ग्रहमैत्री च राशिश्च विद्यते नियतं यदि। न गणभावजनितं दूषणं स्याद्विरोधदम् ।।** (५) **भकूट दोष निवारक परिहार वचन** - वर की राशि से कन्या की राशि गणनानुगत ५ वीं अशुभ किन्तु नवम ९ वीं शुभ तथा वर से कन्या की राशि २ अशुभ परन्तु १२ वीं शुभ होती है। **यथा-पुंसो गृहात् सुतगृहे सुतहा च कन्या, धर्मे स्थिता सुतवति पतिवल्लभा च। द्विर्द्वादशे धनगृहे धनहा च कन्या, रि:फे स्थिता धनवती पतिवल्लभा च ।।** तथा वर कन्या की २-१२, ६-८, ९-५ दुष्ट भकूट गणना होने पर भी यदि वर कन्या के राशि स्वामी एक ही हो अथवा राशिपतियों की मित्रता होने पर, गणदोष-दुष्ट भकूट दोष नगण्य हो जाता है। **यथा-द्विर्द्वादशे वा नवपंचमे वा षट्काष्टके राक्षस-योषितौ वा। एकाधिपत्ये भवनेशमैत्रै: शुभाय पाणिग्रहणं विधेयम् ।। पुनरपिशास्त्रवचनम् -वर्गवैरं योनिवैरं गणवैरं नृदूरकम। दुष्टकूट फलं सर्वं ग्रह मैत्रेण नश्यति ।। प्रोक्तेदुष्टभकूटके परिणयस्त्वेकाधिपत्ये शुभो-अथो राशीश्वरसौहदेऽपि** - सूत्रानुगत भकूट परिहार यह भी कि १. वर कन्या राशिपति एक ही ग्रह होवें। २. राशिपतियों की मित्रता परस्पर होवें। ३. वर कन्या की तारायें **(कन्यर्क्षाद् वरभं यावद् इत्यादि)** परस्पर तारा शुद्धि रहते भी दुष्ट भकूट मान्य नहीं। ४. वर कन्या की राशि वश्यतासबलता - शुद्धि। ५. नवांश पतियों की मित्रता। ये पांच प्रकार के परिहार भी दुष्टभकूट दोष निवारक हैं तथापि इनमें परस्पर नाड़ी शुद्धि होना ही चाहिये। **मैत्र्यां राशि स्वामिनो रंशनाथ द्वन्दस्यापि स्याद् गणनां न दोष: । खेटारित्वं नाशयेत्सद्भकूटं खेट प्रीतिश्चापि दुष्टं भकूटम् ।।** भावार्थ यह कि वर कन्या के राशिपतियों की परस्पर मित्रता हो अथवा दोनों के नवांशपतियों की मैत्री हो तो गण का दोष नहीं बनेगा तथा शुभ भकूट अथवा वर कन्या की एक समान राशि हो तो ग्रह शत्रुता दोष नष्ट होगा। एवं परस्पर ग्रह मित्रता रहने पर दुष्ट भकूट (६-८, ९-५, २-१२) दोष नष्ट होता है। स्पष्ट अभिप्राय यह कि वर कन्या की भकूट शुद्धि तथा ग्रह मित्रता इन दोनों विषय में कोई भी एक अवश्य होना चाहिये। शुभ भकूट ग्रह शत्रुतानाशक-तो परस्पर ग्रह मित्रता अशुभ भकूट दोष नाशक होती है। (६) गुण मेलापक में नाड़ी विचार विशेषकर देखा जाता है। नाड़ी दोष का परिहार ग्रह मेलापक-आचार्य सीताराम झा कृत में यह कि यदि वर-कन्या के जन्म ग्रह राशि जनित वर्ण (जन्मजाति से अभिप्राय नहीं) जन्मराशि वर्ण-ब्राह्मण वर्ग है तो नाड़ीदोष पूर्णतया मान्य होगा। क्षत्रिय-वैश्य-शुद्र वर्ण राशि रहते नाडी दोष प्रभावी नहीं। यथा-**नाड़ी दोषो ही विप्राणां वर्ण दोषस्तु भू भुजाम्। वैश्यानां गण दोषस्तु शुद्राणां योनि दूषणम् ।।** अर्थात् नाड़ी दोष विप्र वर्ण पर प्रभावी, वर्ण दोष क्षत्रिय वर्ण पर, गण दोष वैश्य वर्ण पर, योनि दोष शुद्र वर्ण आदि राशि पर ही प्रभावशील होता है। पुनरपि शास्त्रीय नाड़ी परिहार व्यवस्था-**राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयो: स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव। नाड़ी दोषो न गणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदेशुभं स्यात् ।।** सरलार्थ यह कि वर-कन्या दोनों की राशि एक ही हो तथा नक्षत्र भिन्न-भिन्न अलग हों तथा दोनों का नक्षत्र एक ही हो और राशि भिन्न-अलग हो तो नाड़ी दोष तथा गण दोष प्रभावशील नहीं बनेगा। एवमेव नक्षत्र भी वर-कन्या के एक ही हो तथा नक्षत्र चरण भेद-भिन्न भिन्न हो तो नाड़ी दोष मान्य नहीं होगा। यथा पूर्वाभाद्रपद ३ चरण ४ चरण इन दोनों में नक्षत्र एक ही है परन्तु राशि भिन्न भिन्न है, अत: नाड़ी दोष नहीं बनेगा। जन्म नक्षत्र भेद अनुसार भी नाड़ी दोष परिहार व्यवस्था है यथा-**रोहिण्यार्द्रा मृगेन्द्राग्नि पुष्यश्रवण पौष्णभम्। अहिर्बुधन्यर्क्षमेतेषां नाड़ी दोषो न विद्यते ।।** अर्थात् वर कन्या के जन्म नक्षत्र रोहिणी-आर्द्रा-मृगशिरा-विशाखा-पुष्य-श्रवण-रेवती तथा उत्तराभाद्रपद जन्म नक्षत्र होने पर नाड़ी दोष मान्य नहीं होगा। संकेत-इसी प्रमाण में कहीं मृगेन्द्राग्नि की जगह मघेन्द्राग्नि अर्थात् मृगशिरा की जगह मघा नक्षत्र का प्रारूप भी है। पुनरपि शास्त्रवचनम् - **शुक्रे जीवे तथा सौम्ये एकराशीश्वरो यदि। नाड़ी दोषो न वक्तव्य: सर्वथा यत्नतो बुधै: ।।** भावार्थ यह कि वर-कन्या के राशिपति शुक्र-गुरू-बुध आदि में अन्त्यतम एक ही हो तो भी नाडी दोष का परिहार मान्य होता है। अत्यावश्यकता में नाडी शुद्धि नहीं बनने पर शास्त्रीय वचन यह भी है कि - **दोषापनुत्तये नाड्या मृत्युंजय जपादिकम्। विधाय ब्राह्मणांश्चैव तर्पयेत् कांचनादिना ।। हिरण्यमयीं दक्षिणां च दद्याद्वर्णादिकूटके। गवोऽन्नं वसनं हेम सर्वदोषापहारकम् ।।** अर्थात् महामृत्यंजयजप-स्वर्णदान-गौदान-अन्न वस्त्रादि अनुदान विविध दोष के निवारक हैं तथापि नाडी दोष विकार हेतु लक्ष्य रखना ही चाहिये। इस प्रकार का उद्बोधन विविध मुहूर्त्त ग्रन्थों में है। (७) वर-कन्या के वय-उम्र प्रमाण अधिकता की स्थिति होने पर आवश्यकता विशेष स्थिति अनुसार विवाह मुहूर्त्त समाधान सूत्र वचन यह भी लोक प्रचलित है। **दुर्भिक्षे राष्ट्रभंगे च पित्रोर्वा प्राण संशये। प्रोढायामपि कन्यायां प्रतिकूलं न दुष्यति ।। संकटे समनुप्राप्ते याज्ञवल्क्येन योगिना। शान्तिरूक्ता गणेशस्य कृत्वा तां शुभमाचरेत ।। आवश्यकेषु कार्येषु राज्ञां तत् कर्मकारिणाम्। विवाहादीनि कुर्वीत विषमेऽपि गुरूशुक्रयो: ।।** भावार्थ यह कि दुर्भिक्ष-राष्ट्रभंग-पिता के अवसान स्थिति-वय प्रमाण विशेष-पद विशेषस्थ वर्ग तथा शासकीय कर्मचारीगण आवश्यकता विशेष स्थिति में वसिष्ठ हवन शांति श्री गणेशजी की पूजा आदि करके कार्य समाधान कर सकते हैं। **दशवर्षव्यतिक्रांता कन्याशुद्धि विवर्जिता। तस्यास्तारेन्दु लग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहोमत: ।। द्वादशाऽब्दे परे कन्या षोडशाब्दे परे वरे। व्ययवेदाष्टमे सूर्ये जीवे चैव न दोष भाक् ।। अष्टवर्षा भवेद् गौरी नववर्षा च रोहिणी दश वर्षा भवेत् कन्या अत उर्ध्व रजस्वला ।। वर लोभाप्ति कालाभ्यां दुर्भिक्षद्देश विप्लवात्। विवाहो शुभदो मान्यं अनिष्टगे बृहस्पतौ ।।** इत्यादि श्लोक वचन भी आवश्यकता विशेष स्थिति के ही समाधानसूचक उपलक्षक वचन मात्र हैं पूर्णतया मुहूर्त्त शास्त्र सम्मत नहीं। तथापि विवाहादि समाधान सूचक सूत्र-**प्रमाणं ग्राम वचनं विवाहादौ तथात्यये। यत: परम्परायातं धर्मं विन्दन्ति ते खलु ।। देशाचार: कुलाचारो जात्याचारो विशेषत: । कर्तव्यो विदुषा तत्र साराऽसारं विचार्य च। देशाचारस्तावदादौ विचिन्त्यो देशेदेशे या स्थिति: सैव कार्या। लोके कोऽपि पण्डितावर्जयन्ति दैवज्ञऽतो लोकमार्गेण यायात् ।। एवमुक्ति: आचार्य वराहमिहिर: बृहत्संहितायामपि।** विवाहादिक कार्य समाधान में ये सूत्र वचन भी देश काल परिस्थिति विशेष अनुसार ही समाधान सूचक उपलक्षक संज्ञा के समझना चाहिये। लग्न शुद्धि में ग्रह स्थिति परिहार-**दोषो नैव सितेऽरिनीच गृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न। भौमेस्ते रिपु नीचगे नहि भवेद्भौमोऽष्टमो दोष कृन्नीचे। नीच नवांशके शशिनि रि:फाष्टारिदोषोऽपि न ।। लग्न विकार परिहार - गुरौ लग्नाधिपे शुक्रे सवीर्ये लग्न केन्द्रगे दशदोषा विनश्यन्ति यथाऽग्नौ तूलराशय: ।। प्रकारान्तरेऽपि-बुध गुरू सितेषु केन्द्रे १-४-१० मात्रे तथा त्रिकोण ९-५ स्थाने विविध दोष विनाशका: ।। ग्रहयुति दोष परिहार - स्वक्षेत्रग: स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगते विधु:। युतिदोषाय न भवद्दम्पत्यो: श्रेयसे तदा ।।**

♠ ♣ ♠

# ● नक्षत्र चरण से विंशोत्तरी एवं अष्टोत्तरी भुक्ता दशा सुगम-अभिज्ञान सारणी ●

| राशि | मेष १ | | | | | | | | | वृष २ | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्र | अश्विनी | | | | भरणी | | | | कृत्तिका | | | | रोहिणी | | | | मृगशिर | |
| चरण | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ |
| अक्षर | चु | चे | चो | ला | लि | लू | ले | लो | अ | इ | उ | ए | ओ | वा | वि | वू | वे | वो |
| राशि | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ |
| अंश | ३ | ६ | १० | १३ | १६ | २० | २३ | २६ | ० | ३ | ६ | १० | १३ | १६ | २० | २३ | २६ | ० |
| कला | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० |
| विंशोत्तरी महादशा | केतु ७ | | | | शुक्र २० | | | | सूर्य ६ | | | | चंद्र १० | | | | मंगल ७ | |
| भुक्ता वर्ष | १ | ३ | ५ | ७ | ५ | १० | १५ | २० | १ | ३ | ४ | ६ | २ | ५ | ७ | १० | १ | ३ |
| भुक्ता मास | ९ | ६ | ३ | ० | ० | ० | ० | ० | ६ | ० | ६ | ० | ६ | ० | ६ | ० | ९ | ६ |
| अष्टोत्तरी महादशा | राहु | | | | राहु | | | | शुक्र | | | | शुक्र | | | | शुक्र | |
| भुक्ता वर्ष | ६ | ७ | ८ | ९ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | ३ | ५ | ७ | ८ | १० | १२ | १४ | १५ | १७ |
| भुक्ता मास | ९ | ६ | ३ | ० | ९ | ६ | ३ | ० | ९ | ६ | ३ | ० | ९ | ६ | ३ | ० | ९ | ६ |
| भुक्ता दिन | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

| राशि | मिथुन ३ | | | | | | | | | कर्क ४ | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्र | | | आर्द्रा | | | | पुनर्वसु | | | | पुष्य | | | | अश्लेषा | | | |
| चरण | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ |
| अक्षर | क | की | कू | घ | ङ | छ | के | को | हा | ही | हू | हे | हो | डा | डी | डू | डे | डो |
| राशि | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ |
| अंश | ३ | ६ | १० | १३ | १६ | २० | २३ | २६ | ० | ३ | ६ | १० | १३ | १६ | २० | २३ | २६ | ० |
| कला | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० |
| विंशोत्तरी महादशा | | | राहु १८ | | | | गुरू १६ | | | | शनि १९ | | | | बुध १७ | | | |
| भुक्ता वर्ष | ५ | ७ | ४ | ९ | १३ | १८ | ४ | ८ | १२ | १६ | ४ | ९ | १४ | १९ | ४ | ८ | १२ | १७ |
| भुक्ता मास | ३ | ० | ६ | ० | ६ | ० | ० | ० | ० | ० | ९ | ६ | ३ | ० | ३ | ६ | ९ | ० |
| अष्टोत्तरी महादशा | | | सूर्य | | | | सूर्य | | | | सूर्य | | | | सूर्य | | | |
| भुक्ता वर्ष | १९ | २१ | ० | ० | १ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ |
| भुक्ता मास | ३ | ० | ४ | ९ | १ | ६ | १० | ३ | ७ | ० | ४ | ९ | १ | ६ | १० | ३ | ७ | ० |
| भुक्ता दिन | ० | ० | १५ | ० | १५ | ० | १५ | ० | १५ | ० | १५ | ० | १५ | ० | १५ | ० | १५ | ० |

| राशि | सिंह ५ | | | | | | | | | कन्या ६ | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्र | मघा | | | | पूर्वाफाल्गुनी | | | | उत्तराफाल्गुनी | | | | हस्त | | | | चित्रा | |
| चरण | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ |
| अक्षर | मा | मी | मू | मे | मो | टा | टी | टू | टे | टो | पा | पी | पू | ष | ण | ठ | पे | पो |
| राशि | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ |
| अंश | ३ | ६ | १० | १३ | १६ | २० | २३ | २६ | ० | ३ | ६ | १० | १३ | १६ | २० | २३ | २६ | ० |
| कला | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० |
| विंशोत्तरी महादशा | केतु ७ | | | | शुक्र २० | | | | सूर्य ६ | | | | चंद्र १० | | | | मंगल ७ | |
| भुक्ता वर्ष | १ | ३ | ५ | ७ | ५ | १० | १५ | २० | १ | ३ | ४ | ५ | २ | ५ | ७ | १० | १ | ३ |
| भुक्ता मास | ९ | ६ | ३ | ० | ० | ० | ० | ० | ६ | ० | ६ | ० | ६ | ० | ६ | ० | ९ | ६ |
| अष्टोत्तरी महादशा | चंद्र | | | | चंद्र | | | | चंद्र | | | | मंगल | | | | मंगल | |
| भुक्ता वर्ष | १ | २ | ३ | ५ | ६ | ७ | ८ | १० | ११ | १२ | १३ | १५ | ० | १ | १ | २ | २ | ३ |
| भुक्ता मास | ३ | ६ | ९ | ० | ३ | ६ | ९ | ० | ३ | ६ | ९ | ० | ६ | ० | ६ | ० | ६ | ० |
| भुक्ता दिन | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

| राशि | तुला ७ | | | | | | | | | वृश्चिक ८ | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्र | चित्रा | | स्वाति | | | | विशाखा | | | | अनुराधा | | | | ज्येष्ठा | | | |
| चरण | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ |
| अक्षर | रा | री | रू | रे | रो | ता | ती | तू | ते | तो | ना | नी | नू | ने | नो | या | यी | यू |
| राशि | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ |
| अंश | ३ | ६ | १० | १३ | १६ | २० | २३ | २६ | ० | ३ | ६ | १० | १३ | १६ | २० | २३ | २६ | ० |
| कला | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० |
| विंशोत्तरी महादशा | मंगल ७ | | राहु १८ | | | | गुरू १६ | | | | शनि १९ | | | | बुध १७ | | | |
| भुक्ता वर्ष | ५ | ७ | ४ | ९ | १३ | १८ | ४ | ८ | १२ | १६ | ४ | ९ | १४ | १९ | ४ | ८ | १२ | १७ |
| भुक्ता मास | ३ | ० | ६ | ० | ६ | ० | ० | ० | ० | ० | ९ | ६ | ३ | ० | ३ | ६ | ९ | ० |
| अष्टोत्तरी महादशा | मंगल | | मंगल | | | | मंगल | | | | बुध | | | | बुध | | | |
| भुक्ता वर्ष | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ७ | ७ | ८ | १ | २ | ४ | ५ | ७ | ८ | ९ | ११ |
| भुक्ता मास | ६ | ० | ६ | ० | ६ | ० | ६ | ० | ६ | ० | ५ | १० | ३ | ८ | १ | ६ | ११ | ४ |
| भुक्ता दिन | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

| राशि | धनु ९ | | | | | | | | | मकर १० | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्र | मूल | | | | पूर्वाषाढ | | | | उत्तराषाढ | | | | श्रवण | | | | धनिष्ठा | |
| चरण | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ |
| अक्षर | ये | यो | भा | भी | भू | धा | फा | ढा | भे | भो | जा | जी | खी | खू | खे | खो | गा | गी |
| राशि | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० |
| अंश | ३ | ६ | १० | १३ | १६ | २० | २३ | २६ | ० | ३ | ६ | १० | १३ | १६ | २० | २३ | २६ | ० |
| कला | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० |
| विंशोत्तरी महादशा | केतु ७ | | | | शुक्र २० | | | | सूर्य ६ | | | | चन्द्र १० | | | | मंगल ७ | |
| भुक्ता वर्ष | १ | ३ | ५ | ७ | ५ | १० | १५ | २० | १ | ३ | ४ | ६ | २ | ५ | ७ | १० | १ | ३ |
| भुक्ता मास | ९ | ६ | ३ | ० | ० | ० | ० | ० | ६ | ० | ६ | ० | ६ | ० | ६ | ० | ९ | ६ |
| अष्टोत्तरी महादशा | बुध | | | | शनि | | | | शनि | | | | शनि | | | | गुरू | |
| भुक्ता वर्ष | १२ | १४ | १५ | १७ | ० | १ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | १ | ३ |
| भुक्ता मास | ९ | २ | ७ | ० | ७ | ३ | १० | ६ | ४ | २ | ० | ११ | ११ | ७ | ३ | ० | ७ | २ |
| भुक्ता दिन | ० | ० | ० | ० | १५ | ० | १५ | ० | ० | ० | ० | २१ | २७ | २८ | २९ | ० | ० | ० |

| राशि | कुंभ ११ | | | | | | | | | मीन १२ | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्र | | | शतभिषा | | | | पूर्वाभाद्रपद | | | | उत्तराभाद्रपद | | | | रेवती | | | |
| चरण | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ |
| अक्षर | गू | गे | गो | सा | सी | सू | से | सो | दा | दी | दू | थ | झ | ञ | दे | दो | चा | ची |
| राशि | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ० |
| अंश | ३ | ६ | १० | १३ | १६ | २० | २३ | २६ | ० | ३ | ६ | १० | १३ | १६ | २० | २३ | २६ | ० |
| कला | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० |
| विंशोत्तरी महादशा | | | राहु १८ | | | | गुरू १६ | | | | शनि १९ | | | | बुध १७ | | | |
| भुक्ता वर्ष | ५ | ७ | ४ | ९ | १३ | १८ | ४ | ८ | १२ | १६ | ४ | ९ | १४ | १९ | ४ | ८ | १२ | १७ |
| भुक्ता मास | ३ | ० | ६ | ० | ६ | ० | ० | ० | ० | ० | ९ | ६ | ३ | ० | ३ | ६ | ९ | ० |
| अष्टोत्तरी महादशा | | | गुरू | | | | गुरू | | | | राहु | | | | राहु | | | |
| भुक्ता वर्ष | ४ | ६ | ७ | ९ | ११ | १२ | १४ | १५ | १७ | १९ | ० | १ | २ | ३ | ३ | ४ | ५ | ६ |
| भुक्ता मास | ९ | ४ | ११ | ६ | १ | ८ | ३ | १० | ५ | ० | ९ | ६ | ३ | ० | ९ | ६ | ३ | ० |
| भुक्ता दिन | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

# ✿ क्रमांक १ चन्द्र स्पष्ट सारिणी ✿

| सर्वर्क्ष | गति | सर्वर्क्ष | गति | सर्वर्क्ष | गति | सर्वर्क्ष | गति | सर्वर्क्ष | गति | सर्वर्क्ष | गति | सर्वर्क्ष | गति | सर्वर्क्ष | गति | सर्वर्क्ष | गति | सर्वर्क्ष | गति |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५३<br>० | १५<br>५ | ५४<br>१४ | १४<br>४५ | ५५<br>२९ | १४<br>२५ | ५६<br>४८ | १४<br>०५ | ५८<br>११ | १३<br>४५ | ५९<br>३८ | १३<br>२५ | ६१<br>०८ | १३<br>०५ | ६२<br>४४ | १२<br>४५ | ६४<br>२६ | १२<br>२५ | ६६<br>१२ | १२<br>०५ |
| ५३<br>६ | १५<br>४ | ५४<br>१८ | १४<br>४४ | ५५<br>३३ | १४<br>२४ | ५६<br>५२ | १४<br>०४ | ५८<br>१५ | १३<br>४४ | ५९<br>४२ | १३<br>२४ | ६१<br>१३ | १३<br>०४ | ६२<br>४९ | १२<br>४४ | ६४<br>३१ | १२<br>२४ | ६६<br>१८ | १२<br>०४ |
| ५३<br>९ | १५<br>३ | ५४<br>२१ | १४<br>४३ | ५५<br>३६ | १४<br>२३ | ५६<br>५६ | १४<br>०३ | ५८<br>१९ | १३<br>४३ | ५९<br>४७ | १३<br>२३ | ६१<br>१७ | १३<br>०३ | ६२<br>५४ | १२<br>४३ | ६४<br>३६ | १२<br>२३ | ६६<br>२३ | १२<br>०३ |
| ५३<br>१३ | १५<br>२ | ५४<br>२५ | १४<br>४२ | ५५<br>४० | १४<br>२२ | ५७<br>० | १४<br>०२ | ५८<br>२३ | १३<br>४२ | ५९<br>५१ | १३<br>२२ | ६१<br>२२ | १३<br>०२ | ६२<br>५९ | १२<br>४२ | ६४<br>४१ | १२<br>२२ | ६६<br>२९ | १२<br>०२ |
| ५३<br>१६ | १५<br>१ | ५४<br>२९ | १४<br>४१ | ५५<br>४४ | १४<br>२१ | ५७<br>४ | १४<br>०१ | ५८<br>२८ | १३<br>४१ | ५९<br>५५ | १३<br>२१ | ६१<br>२७ | १३<br>०१ | ६३<br>०४ | १२<br>४१ | ६४<br>४६ | १२<br>२१ | ६६<br>३४ | १२<br>०१ |
| ५३<br>२० | १५<br>० | ५४<br>३२ | १४<br>४० | ५५<br>४८ | १४<br>२० | ५७<br>८ | १४<br>०० | ५८<br>३२ | १३<br>४० | ६०<br>०० | १३<br>२० | ६१<br>३२ | १३<br>०० | ६३<br>०९ | १२<br>४० | ६४<br>५२ | १२<br>२० | ६६<br>४० | १२<br>०० |
| ५३<br>२३ | १४<br>५९ | ५४<br>३७ | १४<br>३९ | ५५<br>५२ | १४<br>१९ | ५७<br>१२ | १३<br>५९ | ५८<br>३६ | १३<br>३९ | ६०<br>०४ | १३<br>१९ | ६१<br>३७ | १२<br>५९ | ६३<br>१४ | १२<br>३९ | ६४<br>५७ | १२<br>१९ | ६६<br>४६ | ११<br>५९ |
| ५३<br>२७ | १४<br>५८ | ५४<br>४० | १४<br>३८ | ५५<br>५६ | १४<br>१८ | ५७<br>१६ | १३<br>५८ | ५८<br>४० | १३<br>३८ | ६०<br>०९ | १३<br>१८ | ६१<br>४१ | १२<br>५८ | ६३<br>१९ | १२<br>३८ | ६५<br>०३ | १२<br>१८ | ६६<br>५२ | ११<br>५८ |
| ५३<br>३० | १४<br>५७ | ५४<br>४४ | १४<br>३७ | ५६<br>० | १४<br>१७ | ५७<br>२० | १३<br>५७ | ५८<br>४५ | १३<br>३७ | ६०<br>१३ | १३<br>१७ | ६१<br>४६ | १२<br>५७ | ६३<br>२४ | १२<br>३७ | ६५<br>०८ | १२<br>१७ | ६६<br>५९ | ११<br>५७ |
| ५३<br>३४ | १४<br>५६ | ५४<br>४८ | १४<br>३६ | ५६<br>४ | १४<br>१६ | ५७<br>२४ | १३<br>५६ | ५८<br>४९ | १३<br>३६ | ६०<br>१८ | १३<br>१६ | ६१<br>५१ | १२<br>५६ | ६३<br>२९ | १२<br>३६ | ६५<br>१३ | १२<br>१६ | ६७<br>०५ | ११<br>५६ |
| ५३<br>३८ | १४<br>५५ | ५४<br>५१ | १४<br>३५ | ५६<br>८ | १४<br>१५ | ५७<br>२८ | १३<br>५५ | ५८<br>५४ | १३<br>३५ | ६०<br>२२ | १३<br>१५ | ६१<br>५६ | १२<br>५५ | ६३<br>३४ | १२<br>३५ | ६५<br>१८ | १२<br>१५ | ६७<br>११ | ११<br>५५ |
| ५३<br>४१ | १४<br>५४ | ५४<br>५५ | १४<br>३४ | ५६<br>१२ | १४<br>१४ | ५७<br>३२ | १३<br>५४ | ५८<br>५८ | १३<br>३४ | ६०<br>२७ | १३<br>१४ | ६२<br>०१ | १२<br>५४ | ६३<br>३९ | १२<br>३४ | ६५<br>२४ | १२<br>१४ | ६७<br>१८ | ११<br>५४ |
| ५३<br>४५ | १४<br>५३ | ५४<br>५९ | १४<br>३३ | ५६<br>१६ | १४<br>१३ | ५७<br>३६ | १३<br>५३ | ५९<br>०३ | १३<br>३३ | ६०<br>३१ | १३<br>१३ | ६२<br>०६ | १२<br>५३ | ६३<br>४४ | १२<br>३३ | ६५<br>२९ | १२<br>१३ | ६७<br>२३ | ११<br>५३ |
| ५३<br>४८ | १४<br>५२ | ५५<br>३ | १४<br>३२ | ५६<br>२० | १४<br>१२ | ५७<br>४१ | १३<br>५२ | ५९<br>०७ | १३<br>३२ | ६०<br>३६ | १३<br>१२ | ६२<br>१० | १२<br>५२ | ६३<br>४९ | १२<br>३२ | ६५<br>३४ | १२<br>१२ | ६७<br>३० | ११<br>५२ |
| ५३<br>५२ | १४<br>५१ | ५५<br>६ | १४<br>३१ | ५६<br>२४ | १४<br>११ | ५७<br>४५ | १३<br>५१ | ५९<br>११ | १३<br>३१ | ६०<br>४१ | १३<br>११ | ६२<br>१५ | १२<br>५१ | ६३<br>५४ | १२<br>३१ | ६५<br>४० | १२<br>११ | ६७<br>३७ | ११<br>५१ |
| ५३<br>५६ | १४<br>५० | ५५<br>११ | १४<br>३० | ५६<br>२८ | १४<br>१० | ५७<br>५० | १३<br>५० | ५९<br>१६ | १३<br>३० | ६०<br>४६ | १३<br>१० | ६२<br>२० | १२<br>५० | ६४<br>०० | १२<br>३० | ६५<br>४५ | १२<br>१० | ६७<br>४३ | ११<br>५० |
| ५३<br>५९ | १४<br>४९ | ५५<br>१४ | १४<br>२९ | ५६<br>३२ | १४<br>०९ | ५७<br>५४ | १३<br>४९ | ५९<br>२० | १३<br>२९ | ६०<br>५० | १३<br>०९ | ६२<br>२५ | १२<br>४९ | ६४<br>०५ | १२<br>२९ | ६५<br>५२ | १२<br>०९ | ६७<br>५० | ११<br>४९ |
| ५४<br>३ | १४<br>४८ | ५५<br>१७ | १४<br>२८ | ५६<br>३६ | १४<br>०८ | ५७<br>५८ | १३<br>४८ | ५९<br>२४ | १३<br>२८ | ६०<br>५५ | १३<br>०८ | ६२<br>३० | १२<br>४८ | ६४<br>१० | १२<br>२८ | ६५<br>५६ | १२<br>०८ | ६७<br>५७ | ११<br>४८ |
| ५४<br>७ | १४<br>४७ | ५५<br>२१ | १४<br>२७ | ५६<br>४० | १४<br>०७ | ५८<br>२ | १३<br>४७ | ५९<br>२९ | १३<br>२७ | ६०<br>५९ | १३<br>०७ | ६२<br>३५ | १२<br>४७ | ६४<br>१५ | १२<br>२७ | ६६<br>०१ | १२<br>०७ | ६८<br>०३ | ११<br>४७ |
| ५४<br>१० | १४<br>४६ | ५५<br>२५ | १४<br>२६ | ५६<br>४४ | १४<br>०६ | ५८<br>६ | १३<br>४६ | ५९<br>३३ | १३<br>२६ | ६१<br>०४ | १३<br>०६ | ६२<br>३९ | १२<br>४६ | ६४<br>२० | १२<br>२६ | ६६<br>०७ | १२<br>०६ | +<br>+ | +<br>+ |

✿ **नाड़ीदोषपरिहार विशेष** ✿ रोहिण्यार्द्रामृगेन्द्राग्नि पुष्यश्रवणपौष्णभम् । अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाड़ी दोषो न विद्यते ॥ ज्योतिषचिन्तामणौ । तथा च विवाह कुतूहले - शुक्र जीवे तथा सौम्ये एकराशीश्वरो यदि । नाड़ीदोषो न वक्तव्यः सर्वथा यत्नतो बुधैः ॥ भावार्थ यह कि - रोहिणी, आर्द्रा, मृगशिरा, पुष्य, श्रवण, रेवती तथा उत्तराभाद्रपद जन्म नक्षत्र होने पर नाड़ी दोष मान्य नहीं। तथा शुक्र-गुरू-बुध में सेयदि अन्यतम दोनों (वर-कन्या) के राश्याधिप मेलापक में एक ही तो भी विद्वान वर्ग को नाड़ी दोष का परिहार सूत्र वचन ही समझना चाहिए। ▲ तथा वर्ण वश्यादि गणना में जातक विप्र-वर्ण का होवे तो नाड़ी दोष, अन्य वर्ण में नाड़ी दोष मान्य नहीं। ▲ **सूतक विषयेशास्त्रवचन विशेष** - व्रतयज्ञविवाहेषु श्राद्धे होमेऽर्चने जपे । प्रारब्धं सूतकं न स्यादनारब्धे तु सुतकम् ॥ भावार्थ - व्रत, यज्ञ, विवाह, श्राद्ध, होम, हवन कृत्य, पूजा-अनुष्ठान, जप का प्रारंभ होने पर सूतक मान्य नहीं तथा इनका आरंभ नहीं होने पर सूतक मान्य होता है तथा च बृहपतिमतानुगत-विवाहोत्सवयज्ञेषु त्वन्तरामृत सूतके । पूर्व संकल्पितेर्थेषु न दोषपरिकीर्त्तितः ॥ अर्थात विवाह, यज्ञ, विविध उत्सव, पूर्व संकल्पित कार्यों के मध्य में मरण होने पर सूतकादि दोष नहीं होता है। ✿ ✿

# ❀ क्रमांक २ चन्द्र स्पष्ट सारिणी ❀

| अश्व. | भर. | कृति. | रोहि. | मृग. | आर्द्रा | पुन. | पुष्य. | आश्ले. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ४ |
| १३ | २६ | १० | २३ | ६ | २० | ३ | १६ | ० |
| २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

| मघा | पूफा. | उफा. | हस्त. | चित्रा | स्वा. | विशा. | अनु. | ज्ये. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ७ | ७ | ८ |
| १३ | २६ | १० | २३ | ६ | २० | ३ | १६ | ० |
| २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

| मूल | पूषा | उषा | श्रवण | घनि. | शत. | पूभा. | उभा. | रेवती |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८ | ८ | ९ | ९ | १० | १० | ११ | ११ | ० |
| १३ | २६ | १० | २३ | ६ | २० | ३ | १६ | ० |
| २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

● **चन्द्र स्पष्ट सारिणी प्रयोग विधि** ● भयात भभोगरचना - ६०।० में से गत नक्षत्र के घटीपल घटा देवें तथा वर्तमान नक्षत्र के घटी पल जोड़ देवें, यह भभोग होगा तथा ६०।० में से घटायें, अंकों के घटी पलों में इष्ट घटी पल जोड़ें तो भयात होगा। भभोग के घटीपल (सर्वर्क्ष) अंकों को चन्द्र स्पष्ट सारिणी क्रम १ में देखें, उसमें भभोग घटी पल अंक तुल्य या समकक्ष अंक के सामने जो गति है, उससे भयात घटीपलों में गुणा करें, गुणनफल को ६० के भाग से अंश क.वि.३ अंक लेवें। तदुपरान्त अपने विगत नक्षत्र का फलांक (चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम २) से प्राप्त करें तथा इन विगत नक्षत्र फलांक अंकों में पूर्व प्राप्त गुणनफल अंशात्मक ३ फल जोड + देवें तो स्पष्ट चन्द्रमा होगा। **गति स्पष्ट विधि** - चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम १ से प्राप्त जो गति है उसकी केवल कला को ६० से गुणा कर गुणनफल में गति के विकलांक जोड़ देवें, यह चन्द्र स्पष्ट गति मध्यम मानेन स्पष्ट रहेगी। **उदाहरण यथा** - भयात् १९।३ है। भभोग ६५।५२ इस भभोग के समीपस्थ सर्वर्क्ष कोष्टांक ६५।५२ के सामने गति १२।९ को और भयात १९।३ को गुणा किया गुणनफल में ६० से भाग देकर ३।५१।२७ अंशादि ३ अंक मिले, इनको गत नक्षत्र विशाखा के कोष्टांक ७।३।२०।० में जोड़ा+युक्त किया तो ७।७।११।२७ स्पष्ट चन्द्र आया। गति १२-९ केवल कला १२ को ६० से गुणित कर ७२० प्राप्त बनें इसमें विकला ९ + युक्त किया तो ७२९।० गति फल आया। गणितागत एवं सारणी सिद्ध में विशेष अन्तरांश नहीं होने से जन्मपत्रादि हेतु यह सामग्री बहुत उपयुक्त तथा शीघ्र ही कार्य करने में सक्षम सुलभ है। ✿ ✿

# अथग्रहाणां-विंशोत्तरी महादशा एवं अन्तर्दशा गणना अनुक्रम ज्ञानार्थचक्रम्

| सूर्यदशावर्ष ६ कृतिका उ.फा.उ.षा. | | | | चन्द्रदशावर्ष १० रोहि. हस्त. श्रवण | | | | भौमदशावर्ष ७ मृग. चित्रा. घनि. | | | | राहुदशावर्ष १८ आर्द्रा. स्वा. शत. | | | | गुरूदशावर्ष १६ पुन. विशा. पू.भाद्र. | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अन्तर्दशादि. | | | | अन्तर्दशादि. | | | | अन्तर्दशादि. | | | | अन्तर्दशादि. | | | | अन्तर्दशादि. | | | |
| ग्र. | व | मा. | दि. | ग्र. | व. | मा. | दि. | ग्र. | व. | मा. | दि. | ग्र. | व. | मा. | दि. | ग्र. | व. | मा. | दि. |
| सू. | ० | ३ | १८ | चं. | ० | १० | ० | मं. | ० | ४ | २७ | रा. | २ | ८ | १२ | बृ. | २ | १ | १८ |
| चं. | ० | ६ | ० | मं. | ० | ७ | ० | रा. | १ | ० | १८ | बृ. | २ | ४ | २४ | श. | २ | ६ | १२ |
| मं. | ० | ४ | ६ | रा. | १ | ६ | ० | बृ. | ० | ११ | ६ | श. | २ | १० | ६ | बु. | २ | ३ | ६ |
| रा. | ० | १० | २४ | बृ. | १ | ४ | ० | श. | १ | १ | ९ | बु. | २ | ६ | १८ | के. | ० | ११ | ६ |
| बृ. | ० | ९ | १८ | श. | १ | ७ | ० | बु. | ० | ११ | २७ | के. | १ | ० | १८ | शु. | २ | ८ | ० |
| श. | ० | ११ | १२ | बु. | १ | ५ | ० | के. | ० | ४ | २७ | शु. | ३ | ० | ० | सू. | ० | ९ | १८ |
| बु. | ० | १० | ६ | के. | ० | ७ | ० | शु. | १ | २ | ० | सू. | ० | १० | २४ | चं. | १ | ४ | ० |
| के. | ० | ४ | ६ | शु. | १ | ८ | ० | सू. | ० | ४ | ६ | चं. | १ | ६ | ० | मं. | ० | ११ | ६ |
| शु. | १ | ० | ० | सू. | ० | ६ | ० | चं. | ० | ७ | ० | मं. | १ | ० | १८ | रा. | २ | ४ | २४ |

| शनिदशावर्ष १९ पुष्य. अनु. उ.भाद्र. | | | | बुधदशावर्ष १७ आश्ले. ज्ये. रेवती | | | | केतुदशावर्ष ७ मघा. मूल. अश्वि. | | | | शुक्रदशावर्ष २० पू.फा.पू.षा.भरणी | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अन्तर्दशादि. | | | | अन्तर्दशादि. | | | | अन्तर्दशादि. | | | | अन्तर्दशादि. | | | |
| ग्र. | व. | मा. | दि. | ग्र. | व. | मा. | दि. | ग्र. | व. | मा. | दि. | ग्र. | व. | मा. | दि. |
| श. | ३ | ० | ३ | बु. | २ | ४ | २७ | के. | ० | ४ | २७ | शु. | ३ | ४ | ० |
| बु. | २ | ८ | ९ | के. | ० | ११ | २७ | शु. | १ | २ | ० | सू. | १ | ० | ० |
| के. | १ | १ | ९ | शु. | २ | १० | ० | सू. | ० | ४ | ६ | चं. | १ | ८ | ० |
| शु. | ३ | २ | ० | सू. | ० | १० | ६ | चं. | ० | ७ | ० | मं. | १ | २ | ० |
| सू. | ० | ११ | १२ | चं. | १ | ५ | ० | मं. | ० | ४ | २७ | रा. | ३ | ० | ० |
| चं. | १ | ७ | ० | मं. | ० | ११ | २७ | रा. | १ | ० | १८ | बृ. | २ | ८ | ० |
| मं. | १ | १ | ९ | रा. | २ | ६ | १८ | बृ. | ० | ११ | ६ | श. | ३ | २ | ० |
| रा. | २ | १० | ६ | बृ. | २ | ३ | ६ | श. | १ | १ | ९ | बु. | २ | १० | ० |
| बृ. | २ | ६ | १२ | श. | २ | ८ | ९ | बु. | ० | ११ | २७ | के. | १ | २ | ० |

## अथ द्वादशराशिमध्ये शनि-गोचर परिभ्रमणविज्ञान-पाद-वाहन-देहनिवास-प्रतिफल

**शनिपानोतिविचार** अपनी जन्मराशि से शनि गोचर भ्रमण करते १२-१-२ स्थान गणनानुगत बनें, तो इस स्थिति में उस जातक को साढेसाती ७ाा बृहत्कल्याणी शनिदशा कालांश बनता है तथा इसी प्रकार जन्मराशि से गणना करते ४-८ स्थान पर शनि राशि भ्रमण बनें तो ढैया दशा-लघुकल्याणी शनि दशाकालांश बनता है। प्रथम १ शनि पेट पर दूसरा २ पैरों पर तथा बारहवां १२ नैत्रों पर प्रभावशाली रहता है।

**शनिपाद ज्ञान** जिस नक्षत्र पर शनि हो उसकी संख्या में अपने जन्म नक्षत्र की संख्या जोड़कर चार ४ का भाग देवें। १ शेष रहते सोने का, २ शेष रहते लोहे का, ३ शेष रहते ताम्बे का तथा शून्य शेष रहे तो चांदी पाद समझें। स्वर्ण पाद से सुख-हानि, लोहपाद से धन द्रव्यनाश, ताम्र-तांबा से सामान्य फलद तथा चांदी पाया शुभ श्रीकार होता है।

**शनिवाहन ज्ञान** शनि नक्षत्र चार से अपने जन्म नक्षत्र तक गणना करें, उसमें ९ का भाग देवें तथा शेष १ रहते गंधर्व, २ शेष से अश्व, ३ शेष से गज, ४ शेष से मेष, ५ शेष से जम्बूक (सियार) तथा ६ से सिंह, ७ से काग, ८ से मृग तथा ० शून्य ९ शेष रहते मयूर वाहन होगा। इनमें अश्व-गज-मयूर वाहन योगवाही सुखद होता है।

**साढेसात ७ाा वर्षमध्ये शनिनिवास** शनिदेव ३ मास १० दिन मुख पर, १ वर्ष १ मास १० दिन दाहिनीं भुजा पर, १० मास दाहिनें पैर पर, १० मास बायां वाम पैर तथा १ वर्ष ४ मास २० दिन हृदय पर, १ वर्ष १ मास १० दिन वाम बायीं भुजा पर, १० मास मस्तिष्क सिर पर तथा ३ मास १० दिन बायाँ वाम नेत्र, ३ मास १० दिन दाहिने नेत्र पर ६ मास २० दिन गुदा पर निवास करते हैं। इनका स्थान प्रतिफल यह है कि मुखवास हानिप्रद, दाहिनी भुजा विजय उत्साह प्रदायक, दाहिनापाद भ्रमण प्रदायक, हृदयनिवास, धन-धान्य-सम्पदाकारक, बायीं वाम भुजा पीड़ा विकार प्रदायक, मस्तिष्क शिरवास, शांति विधायक, सौख्यप्रद, नेत्र निवास शुभ फलद तथा गुदा स्थानवास चिन्ता, विकार पीड़ा प्रदायक होता है।

**साढेसाती शनि स्थिति प्रतिफल** जन्म कुण्डली में यदि शनि मित्र राशि, उच्च राशि तथा शुभ ग्रह से सम्बंधशील हो तो शनि जनित ढैया-साढेसाती का कालांश विशेष अशुभ फल का सूचक नहीं, अपितु योगवाही शुभकारक प्रतिफल भी बन पाता है तथा जन्मकुण्डली में चन्द्र तथा शनि अशुभ ग्रहों से युक्त तथा नीच-शत्रु राशि में तब भी नेष्टफल सूचक रहता है। यथा अवनति, मानहानि, अपवाद, स्थाननाश, विरोधाभास, कार्य व्यवसाय में न्यूनता, हानि, शरीर सुख में कमी तथा रोग शोक सहज बन पाता है। व्यर्थ कार्यों में गति, मतिविभ्रम, कोर्ट-कचहरी आदि में समय यापन, पारिवारिक अशांति, अशोभनीय वार्ता, राज्य-कर्म-भाग्य पक्ष में न्यूनता का प्रारूप सहज बन पाता है। यदि जन्म में लग्न पंचम - नवम भाव का स्वामी बनते ३-६-११ भाव स्थान में शनि स्थित हो तो भी उपर्युक्त कुफल में न्यूनता बन कर सुख सम्पदा वृद्धि तथा मनोत्साह, सुखद दिनचर्यारात्रिचर्या बन पाती है।

## महादशा ज्ञान एवं भुक्तभोग्य कर्तव्यता

गत नक्षत्र के घटीपल ६०।० में से घटाकर जन्म इष्ट घटीपल में जोड़ें उसे भयात कहते हैं तथा ६० में से घटाये गये घटीपल उसी में वर्तमान नक्षत्र के घटीपल जोडे उसे भभोग कहते हैं। भयात के पलात्मक मान में जो दशा हो उसके वर्ष संख्या से गुणा करें तथा भभोग के पलात्मक मान से भाग देवें। लब्धांक वर्ष होंगे। फिर शेषांक को १२ से गुणा कर भभोग की पलों का भाग देवें लब्धांक मास होंगे। फिर शेषांक में ३० से गुणा कर दिन लेवें तथा फिर शेषांक में ६० से गुणा कर घटी तथा पल प्राप्त करें। इस प्रकार यह महादशा का भुक्तकाल आवेगा इसे अभीष्ट दशा के वर्षों में से घटाने पर दशा के भोग्य वर्ष-मास-घटी पल सिद्ध होंगे। इस प्रकार दशानयन सुगम स्पष्ट है।

## ग्रहाणां दोषोपशान्त्यर्थसूत्र

✦ **स्नान विधान** - यथा सिद्धोषधैः रोगान्नश्येयुर्मन्त्रतोऽथवा तथा स्नान विधानेन ग्रहदोषः प्रणश्यति ॥ कूट, खिली, मालकांगनी, लाजवंती, जव, सरसूं, देवदारू, हल्दी, सर्वोषधि, लोंघ इनके मिश्रित जल स्नान से ग्रह पीड़ा शरीर का कष्ट दूर होवे इनमें जो भी वस्तु प्राप्त बनें वह भी देशकाल परिस्थिति अनुसार मान्य योग्य है।

✦ शांतिसूत्र विधान - ग्रहों के जो दान होंवे देवें तथा सत्य वार्ता मानना, ज्ञानी व्यक्तियों की सलाह, अनुसरण, जप, दान, मंत्रस्मरण, यज्ञ, होम, नियमित दिनचर्या, मन की शुद्धता, उत्तम ज्योतिषी की सलाह, रत्न नगों का धारण, ये कार्य स्वतः ग्रहशमन शांतिकारक हैं। यथा- धर्मेण हन्यते व्याधिधर्मेण हन्यते ग्रहः । धर्मेणहन्यते शत्रुर्यतोधर्मस्ततो जयः ।। धर्मिष्ठा ये सदाचारा देवब्राह्मणपूजकाः । ये पथ्यभोजनरतास्ते सर्वे दीर्घजीविनः ।

विशेषकर ग्रहशांति हेतु शरीरस्थषट् शत्रु - काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर (ईर्ष्या) विकार इनसे अधिकाधिक बचाव का प्रयास रखना चाहिए। नीतिवचनसूत्र - रहिमन चुप है बैठीयों, देख दिनन को फेर । जब नीके दिन आही हैं, बनत न लागे देर॥ डूबेगा रे तीन जणा - आमद कम खर्चा घणा। बल कम गुस्सा घणा॥ पूंजी कम व्यापार घणा॥

✦ तुलसी विपदा के सखा, विद्या विनय विवेक। सुकृत सह सत्य सिय, राम भरोसो एक।

✦ दुर्योग-अयोग परिहार - अयोगे सुयोगोऽपि चेत् स्यात्तदानीमयोगं निहत्यैष सिद्धिं तनोति ॥ भावार्थ यह कि किसी कुयोग दिवस पर सुयोग (अमृत-सवार्थ सिद्धि-दोष संघ विनाशक रवि योगादि) का समावेश बनें तो, सिद्धि आदि सुयोग का ही फल चरितार्थ होता है। यथाशास्त्र वचन विशेष - अयोगः सिद्धियोगश्च द्वावेतौ भवतो यदि। अयोगो हन्यते तत्र सिद्धियोगः प्रवर्त्तते ॥

# स्पष्ट चन्द्रतः विंशोत्तरीय महादशा ज्ञानार्थे-सारिणी भाग-१

| राशि चन्द्र अंश | कला | मेष, सिंह, धनु भोग्य दशा | वर्ष | मास | दिन | वृष, कन्या, मकर भोग्य दशा | वर्ष | मास | दिन | मिथुन, तुला, कुम्भ भोग्य दशा | वर्ष | मास | दिन | कर्क, वृश्चिक, मीन भोग्य दशा | वर्ष | मास | दिन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ०० | केतु | ७ | ० | ०० | सूर्य | ४ | ६ | ०० | मंग | ३ | ६ | ०० | गुरू | ४ | ० | ० |
| ० | २० | ● | ६ | ९ | २७ | ● | ४ | ४ | ०६ | ● | ३ | ३ | २७ | ● | ३ | ७ | ६ |
| ० | ४० | ,, | ६ | ७ | २४ | ,, | ४ | २ | १२ | ,, | ३ | १ | २४ | ,, | ३ | २ | १२ |
| १ | ०० | ,, | ६ | ५ | २१ | ,, | ४ | ० | १८ | ,, | २ | ११ | २१ | ,, | २ | ९ | १८ |
| १ | २० | ,, | ६ | ३ | १८ | ,, | ३ | १० | २४ | ,, | २ | ९ | १८ | ,, | २ | ४ | २४ |
| १ | ४० | ,, | ६ | १ | १५ | ,, | ३ | ९ | ०० | ,, | २ | ७ | १५ | ,, | २ | ० | ० |
| २ | ०० | ,, | ५ | ११ | १२ | ,, | ३ | ७ | ६ | ,, | २ | ५ | १२ | ,, | १ | ७ | ६ |
| २ | २० | ,, | ५ | ९ | ०९ | ,, | ३ | ५ | १२ | ,, | २ | ३ | ०९ | ,, | १ | २ | १२ |
| २ | ४० | ,, | ५ | ७ | ०६ | ,, | ३ | ३ | १८ | ,, | २ | १ | ०६ | ,, | ० | ९ | १८ |
| ३ | ०० | ,, | ५ | ५ | ०३ | ,, | ३ | १ | २४ | ,, | १ | ११ | ०३ | ,, | ० | ४ | २४ |
| ३ | २० | ,, | ५ | ३ | ०० | ,, | ३ | ० | ०० | ,, | १ | ९ | ०० | शनि | १९ | ० | ० |
| ३ | ४० | ,, | ५ | ० | २७ | ,, | २ | १० | ०६ | ,, | १ | ६ | २७ | ● | १८ | ६ | ९ |
| ४ | ०० | ,, | ४ | १० | २४ | ,, | २ | ८ | १२ | ,, | १ | ४ | २४ | ,, | १८ | ० | १८ |
| ४ | २० | ,, | ४ | ८ | २१ | ,, | २ | ६ | १८ | ,, | १ | २ | २१ | ,, | १७ | ६ | २७ |
| ४ | ४० | ,, | ४ | ६ | १८ | ,, | २ | ४ | २४ | ,, | १ | ० | १८ | ,, | १७ | १ | ६ |
| ५ | ०० | ,, | ४ | ४ | १५ | ,, | २ | ३ | ०० | ,, | ० | १० | १५ | ,, | १६ | ७ | १५ |
| ५ | २० | ,, | ४ | २ | १२ | ,, | २ | १ | ०६ | ,, | ० | ८ | १२ | ,, | १६ | १ | २४ |
| ५ | ४० | ,, | ४ | ० | ०९ | ,, | १ | ११ | १२ | ,, | ० | ६ | ९ | ,, | १५ | ८ | ३ |
| ६ | ०० | ,, | ३ | १० | ०६ | ,, | १ | ९ | १८ | ,, | ० | ४ | ६ | ,, | १५ | २ | १२ |
| ६ | २० | ,, | ३ | ८ | ०३ | ,, | १ | ७ | २४ | ,, | ० | २ | ३ | ,, | १४ | ८ | २१ |
| ६ | ४० | ,, | ३ | ६ | ०० | ,, | १ | ६ | ०० | राहु | १८ | ० | ०० | ,, | १४ | ३ | ० |
| ७ | ०० | ,, | ३ | ३ | २७ | ,, | १ | ४ | ०६ | ● | १७ | ६ | १८ | ,, | १३ | ९ | ९ |
| ७ | २० | ,, | ३ | १ | २४ | ,, | १ | २ | १२ | ,, | १७ | १ | ६ | ,, | १३ | ३ | १८ |
| ७ | ४० | ,, | २ | ११ | २१ | ,, | १ | ० | १८ | ,, | १६ | ७ | २४ | ,, | १२ | ९ | २७ |
| ८ | ०० | ,, | २ | ९ | १८ | ,, | ० | १० | २४ | ,, | १६ | २ | १२ | ,, | १२ | ४ | ६ |
| ८ | २० | ,, | २ | ७ | १५ | ,, | ० | ९ | ०० | ,, | १५ | ९ | ०० | ,, | ११ | १० | १५ |
| ८ | ४० | ,, | २ | ५ | १२ | ,, | ० | ७ | ०६ | ,, | १५ | ३ | १८ | ,, | ११ | ४ | २४ |
| ९ | ०० | ,, | २ | ३ | ०९ | ,, | ० | ५ | १२ | ,, | १४ | १० | ६ | ,, | १० | ११ | ३ |
| ९ | २० | ,, | २ | १ | ०६ | ,, | ० | ३ | १८ | ,, | १४ | ४ | २४ | ,, | १० | ५ | १२ |
| ९ | ४० | ,, | १ | ११ | ०३ | ,, | ० | १ | २४ | ,, | १३ | ११ | १२ | ,, | ९ | ११ | २१ |
| १० | ०० | ,, | १ | ९ | ०० | चंद्र | १० | ० | ०० | ,, | १३ | ६ | ०० | ,, | ९ | ६ | ० |
| १० | २० | ,, | १ | ६ | २७ | ● | ९ | ९ | ० | ,, | १३ | ० | १८ | ,, | ९ | ० | ९ |
| १० | ४० | ,, | १ | ४ | २४ | ,, | ९ | ६ | ० | ,, | १२ | ७ | ६ | ,, | ८ | ६ | १८ |
| ११ | ०० | ,, | १ | २ | २१ | ,, | ९ | ३ | ० | ,, | १२ | १ | २४ | ,, | ८ | ० | २७ |
| ११ | २० | ,, | १ | ० | १८ | ,, | ९ | ० | ० | ,, | ११ | ८ | १२ | ,, | ७ | ७ | ६ |
| ११ | ४० | ,, | ० | १० | १५ | ,, | ८ | ९ | ० | ,, | ११ | ३ | ०० | ,, | ७ | १ | १५ |
| १२ | ०० | ,, | ० | ८ | १२ | ,, | ८ | ६ | ० | ,, | १० | ९ | १८ | ,, | ६ | ७ | २४ |
| १२ | २० | ,, | ० | ६ | ०९ | ,, | ८ | ३ | ० | ,, | १० | ४ | ६ | ,, | ६ | २ | ३ |
| १२ | ४० | ,, | ० | ४ | ०६ | ,, | ८ | ० | ० | ,, | ९ | १० | २४ | ,, | ५ | ८ | १२ |
| १३ | ०० | ,, | ० | २ | ०३ | ,, | ७ | ९ | ० | ,, | ९ | ५ | १२ | ,, | ५ | २ | २१ |

| राशि चन्द्र अंश | कला | मेष, सिंह, धनु भोग्य दशा | वर्ष | मास | दिन | वृष, कन्या, मकर भोग्य दशा | वर्ष | मास | दिन | मिथुन, तुला, कुम्भ भोग्य दशा | वर्ष | मास | दिन | कर्क, वृश्चिक, मीन भोग्य दशा | वर्ष | मास | दिन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३ | २० | शुक्र | २० | ० | ० | चन्द्र | ७ | ६ | ० | राहु | ९ | ० | ० | शनि | ४ | ९ | ० |
| १३ | ४० | ● | १९ | ६ | ० | ● | ७ | ३ | ० | ● | ८ | ६ | १८ | ● | ४ | ३ | ९ |
| १४ | ०० | ,, | १९ | ० | ० | ,, | ७ | ० | ० | ,, | ८ | १ | ६ | ,, | ३ | ९ | १८ |
| १४ | २० | ,, | १८ | ६ | ० | ,, | ६ | ९ | ० | ,, | ७ | ७ | २४ | ,, | ३ | ३ | २७ |
| १४ | ४० | ,, | १८ | ० | ० | ,, | ६ | ६ | ० | ,, | ७ | २ | १२ | ,, | २ | १० | ६ |
| १५ | ०० | ,, | १७ | ६ | ० | ,, | ६ | ३ | ० | ,, | ६ | ९ | ०० | ,, | २ | ४ | १५ |
| १५ | २० | ,, | १७ | ० | ० | ,, | ६ | ० | ० | ,, | ६ | ३ | १८ | ,, | १ | १० | २४ |
| १५ | ४० | ,, | १६ | ६ | ० | ,, | ५ | ९ | ० | ,, | ५ | १० | ६ | ,, | १ | ५ | ३ |
| १६ | ०० | ,, | १६ | ० | ० | ,, | ५ | ६ | ० | ,, | ५ | ४ | २४ | ,, | ० | ११ | १२ |
| १६ | २० | ,, | १५ | ६ | ० | ,, | ५ | ३ | ० | ,, | ४ | ११ | १२ | ,, | ० | ५ | २१ |
| १६ | ४० | ,, | १५ | ० | ० | ,, | ५ | ० | ० | ,, | ४ | ६ | ० | बुध | १७ | ० | ० |
| १७ | ०० | ,, | १४ | ६ | ० | ,, | ४ | ९ | ० | ,, | ४ | ० | १८ | ● | १६ | ६ | २७ |
| १७ | २० | ,, | १४ | ० | ० | ,, | ४ | ६ | ० | ,, | ३ | ७ | ६ | ,, | १६ | १ | २४ |
| १७ | ४० | ,, | १३ | ६ | ० | ,, | ४ | ३ | ० | ,, | ३ | १ | २४ | ,, | १५ | ८ | २१ |
| १८ | ०० | ,, | १३ | ० | ० | ,, | ४ | ० | ० | ,, | २ | ८ | १२ | ,, | १५ | ३ | १८ |
| १८ | २० | ,, | १२ | ६ | ० | ,, | ३ | ९ | ० | ,, | २ | ३ | ० | ,, | १४ | १० | १५ |
| १८ | ४० | ,, | १२ | ० | ० | ,, | ३ | ६ | ० | ,, | १ | ९ | १८ | ,, | १४ | ५ | १२ |
| १९ | ०० | ,, | ११ | ६ | ० | ,, | ३ | ३ | ० | ,, | १ | ४ | ६ | ,, | १४ | ० | ९ |
| १९ | २० | ,, | ११ | ० | ० | ,, | ३ | ० | ० | ,, | ० | १० | २४ | ,, | १३ | ७ | ६ |
| १९ | ४० | ,, | १० | ६ | ० | ,, | २ | ९ | ० | ,, | ० | ५ | १२ | ,, | १३ | २ | ३ |
| २० | ०० | ,, | १० | ० | ० | ,, | २ | ६ | ० | गुरू | १६ | ० | ० | ,, | १२ | ९ | ० |
| २० | २० | ,, | ९ | ६ | ० | ,, | २ | ३ | ० | ● | १५ | ७ | ६ | ,, | १२ | ३ | २७ |
| २० | ४० | ,, | ९ | ० | ० | ,, | २ | ० | ० | ,, | १५ | २ | १२ | ,, | ११ | १० | २४ |
| २१ | ०० | ,, | ८ | ६ | ० | ,, | १ | ९ | ० | ,, | १४ | ९ | १८ | ,, | ११ | ५ | २१ |
| २१ | २० | ,, | ८ | ० | ० | ,, | १ | ६ | ० | ,, | १४ | ४ | २४ | ,, | ११ | ० | १८ |
| २१ | ४० | ,, | ७ | ६ | ० | ,, | १ | ३ | ० | ,, | १४ | ० | ० | ,, | १० | ७ | १५ |
| २२ | ०० | ,, | ७ | ० | ० | ,, | १ | ० | ० | ,, | १३ | ७ | ६ | ,, | १० | २ | १२ |
| २२ | २० | ,, | ६ | ६ | ० | ,, | ० | ९ | ० | ,, | १३ | २ | १२ | ,, | ९ | ९ | ९ |
| २२ | ४० | ,, | ६ | ० | ० | ,, | ० | ६ | ० | ,, | १२ | ९ | १८ | ,, | ९ | ४ | ६ |
| २३ | ०० | ,, | ५ | ६ | ० | ,, | ० | ३ | ० | ,, | १२ | ४ | २४ | ,, | ८ | ११ | ३ |
| २३ | २० | ,, | ५ | ० | ० | मंग | ७ | ० | ० | ,, | १२ | ० | ० | ,, | ८ | ६ | ० |
| २३ | ४० | ,, | ४ | ६ | ० | ● | ६ | ९ | २७ | ,, | ११ | ७ | ६ | ,, | ८ | ० | २७ |
| २४ | ०० | ,, | ४ | ० | ० | ,, | ६ | ७ | २४ | ,, | ११ | २ | १२ | ,, | ७ | ७ | २४ |
| २४ | २० | ,, | ३ | ६ | ० | ,, | ६ | ५ | २१ | ,, | १० | ९ | १८ | ,, | ७ | २ | २१ |
| २४ | ४० | ,, | ३ | ० | ० | ,, | ६ | ३ | १८ | ,, | १० | ४ | २४ | ,, | ६ | ९ | १८ |
| २५ | ०० | ,, | २ | ६ | ० | ,, | ६ | १ | १५ | ,, | १० | ० | ० | ,, | ६ | ४ | १५ |
| २५ | २० | ,, | २ | ० | ० | ,, | ५ | ११ | १२ | ,, | ९ | ७ | ६ | ,, | ५ | ११ | १२ |
| २५ | ४० | ,, | १ | ६ | ० | ,, | ५ | ९ | ९ | ,, | ९ | २ | १२ | ,, | ५ | ६ | ९ |
| २६ | ०० | ,, | १ | ० | ० | ,, | ५ | ७ | ६ | ,, | ८ | ९ | १८ | ,, | ५ | १ | ६ |
| २६ | २० | ,, | ० | ६ | ० | ,, | ५ | ५ | ३ | ,, | ८ | ४ | २४ | ,, | ४ | ८ | ३ |

| राशि चन्द्र अंश | कला | मेष, सिंह, धनु भोग्य दशा | वर्ष | मास | दिन | वृष, कन्या, मकर भोग्य दशा | वर्ष | मास | दिन | मिथुन, तुला, कुम्भ भोग्य दशा | वर्ष | मास | दिन | कर्क, वृश्चिक, मीन भोग्य दशा | वर्ष | मास | दिन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६ | ४० | सूर्य | ६ | ० | ० | मंग | ५ | ३ | ० | गुरू | ८ | ० | ० | बुध | ४ | ३ | ० |
| २७ | ०० | ● | ५ | १० | ६ | ● | ५ | ० | २७ | ● | ७ | ७ | ६ | ● | ३ | ९ | २७ |
| २७ | २० | ,, | ५ | ८ | १२ | ,, | ४ | १० | २४ | ,, | ७ | २ | १२ | ,, | ३ | ४ | २४ |
| २७ | ४० | ,, | ५ | ६ | १८ | ,, | ४ | ८ | २१ | ,, | ६ | ९ | १८ | ,, | २ | ११ | २१ |
| २८ | ०० | ,, | ५ | ४ | २४ | ,, | ४ | ६ | १८ | ,, | ६ | ४ | २४ | ,, | २ | ६ | १८ |
| २८ | २० | ,, | ५ | ३ | ०० | ,, | ४ | ४ | १५ | ,, | ६ | ० | ० | ,, | २ | १ | १५ |
| २८ | ४० | ,, | ४ | १ | ६ | ,, | ४ | २ | १२ | ,, | ५ | ७ | ६ | ,, | १ | ८ | १२ |
| २९ | ०० | ,, | ४ | ११ | १२ | ,, | ४ | ० | ०९ | ,, | ५ | २ | १२ | ,, | १ | ३ | ९ |
| २९ | २० | ,, | ४ | ९ | १८ | ,, | ३ | १० | ०६ | ,, | ४ | ९ | १८ | ,, | ० | १० | ६ |
| २९ | ४० | ,, | ४ | ७ | २४ | ,, | ३ | ८ | ०३ | ,, | ४ | ४ | २४ | ,, | ० | ५ | ३ |
| ३० | ०० | ,, | ४ | ६ | ०० | ,, | ३ | ६ | ०० | ,, | ४ | ० | ० | ,, | ० | ० | ० |

## चन्द्रकला से विंशोत्तरी दशा सारणी भाग-२

| चन्द्रकला | केतु ७ वर्ष मा. | दि. | शुक्र २० वर्ष मा. | दि. | सूर्य ६ वर्ष मा. | दि. | चन्द्र १० वर्ष मा. | दि. | मंगल ७ वर्ष मा. | दि. | राहु १८ वर्ष मा. | दि. | गुरू १६ वर्ष मा. | दि. | शनि १९ वर्ष मा. | दि. | बुध १७ वर्ष मा. | दि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ० | ३ | ० | ९ | ० | ३ | ० | ५ | ० | ३ | ० | ८ | ० | ७ | ० | ९ | ० | ८ |
| २ | ० | ६ | ० | १८ | ० | ५ | ० | ९ | ० | ६ | ० | १६ | ० | १४ | ० | १७ | ० | १५ |
| ३ | ० | ९ | ० | २७ | ० | ८ | ० | १४ | ० | ९ | ० | २४ | ० | २२ | ० | २६ | ० | २३ |
| ४ | ० | १३ | १ | ६ | ० | ११ | ० | १८ | ० | १३ | १ | २ | ० | २९ | १ | ४ | १ | १ |
| ५ | ० | १६ | १ | १५ | ० | १४ | ० | २३ | ० | १६ | १ | ११ | १ | ६ | १ | १३ | १ | ८ |
| ६ | ० | १९ | १ | २४ | ० | १६ | ० | २७ | ० | १९ | १ | १९ | १ | १३ | १ | २१ | १ | १६ |
| ७ | ० | २२ | २ | ३ | ० | १९ | १ | २ | ० | २२ | १ | २७ | १ | २० | २ | ० | १ | २४ |
| ८ | ० | २५ | २ | १२ | ० | २२ | १ | ६ | ० | २५ | २ | ५ | १ | २८ | २ | ८ | २ | १ |
| ९ | ० | २८ | २ | २१ | ० | २४ | १ | ११ | ० | २८ | २ | १३ | २ | ५ | २ | १७ | २ | ९ |
| १० | १ | १॥ | ३ | ० | ० | २७ | १ | १५ | १ | १॥ | २ | २१ | २ | १२ | २ | २६ | २ | १७ |
| १५ | १ | १७ | ४ | १५ | १ | ११ | २ | ७॥ | १ | १७ | ४ | २ | ३ | १८ | ४ | ८ | ३ | २५ |
| २० | २ | ३ | ६ | ० | १ | २४ | ३ | ० | २ | ३ | ५ | १२ | ४ | २४ | ५ | २१ | ५ | ३ |

## विंशोत्तरी भोग्य दशा निकालने की विधि

इष्ट काल का चन्द्र स्पष्ट बनाकर उसकी राशि के कोष्ठक में अंश एवं कलाओं के अनुसार विंशोत्तरी दशा का भोग्य समय निकालें। २०-२० कलाओं के अन्तर पर दशा का भोग्य समय दिया है। फिर २० कलाओं से जितनी कलाऐं कम या अधिक का निकालना हो उनका कला सारिणी से उस ग्रह कोष्ठक में दिया समय निकालकर पहले निकाले गए समय में घटा या जोड़ कर अभीष्ट समय प्राप्त करें।

## षड्वर्गीय होरा.

| मे. | वृ. | मि. | क. | सिं. | क. | तु. | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी. | अंश |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ४ | ५ | ४ | ५ | ४ | ५ | ४ | ५ | ४ | ५ | ४ | १५ |
| ४ | ५ | ४ | ५ | ४ | ५ | ४ | ५ | ४ | ५ | ४ | ५ | ३० |

## द्रेष्काण.

| मे. | वृ. | मि. | क. | सिं. | क. | तु. | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी. | अंश |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १० |
| ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | २० |
| ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ३० |

## विषमे त्रिंशांशकाः ❀ समे त्रिंशांशकाः

| अं | मे | मि | सिं | तु | ध | कुं | वृ | क | क | वृ | म | मी | अं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ५ |
| १० | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | १२ |
| १८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | २० |
| २५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | २५ |
| ३० | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ३० |

## सप्तांशक ४।१७।८।३४

| मे. | वृ. | मि. | क. | सिं | क. | तु. | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी. | अंश | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ८ | ३ | १० | ५ | १२ | ७ | २ | ९ | ४ | ११ | ६ | ४ | १७ |
| २ | ९ | ४ | ११ | ६ | १ | ८ | ३ | १० | ५ | १२ | ७ | ८ | ३४ |
| ३ | १० | ५ | १२ | ७ | २ | ९ | ४ | ११ | ६ | १ | ८ | १२ | ५१ |
| ४ | ११ | ६ | १ | ८ | ३ | १० | ५ | १२ | ७ | २ | ९ | १७ | ८ |
| ५ | १२ | ७ | २ | ९ | ४ | ११ | ६ | १ | ८ | ३ | १० | २१ | २५ |
| ६ | १ | ८ | ३ | १० | ५ | १२ | ७ | २ | ९ | ४ | ११ | २५ | ४२ |
| ७ | २ | ९ | ४ | ११ | ६ | १ | ८ | ३ | १० | ५ | १२ | ३० | ० |

## नवमांशक.

| मे. | वृ. | मि | क. | सिं. | क. | तु. | वृ | ध. | म. | कुं. | मी. | अंश | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १० | ७ | ४ | १ | १० | ७ | ४ | १ | १० | ७ | ४ | ३ | २० |
| २ | ११ | ८ | ५ | २ | ११ | ८ | ५ | २ | ११ | ८ | ५ | ६ | ४० |
| ३ | १२ | ९ | ६ | ३ | १२ | ९ | ६ | ३ | १२ | ९ | ६ | १० | ० |
| ४ | १ | १० | ७ | ४ | १ | १० | ७ | ४ | १ | १० | ७ | १३ | २० |
| ५ | २ | ११ | ८ | ५ | २ | ११ | ८ | ५ | २ | ११ | ८ | १६ | ४० |
| ६ | ३ | १२ | ९ | ६ | ३ | १२ | ९ | ६ | ३ | १२ | ९ | २० | ० |
| ७ | ४ | १ | १० | ७ | ४ | १ | १० | ७ | ४ | १ | १० | २३ | २० |
| ८ | ५ | २ | ११ | ८ | ५ | २ | ११ | ८ | ५ | २ | ११ | २६ | ४० |
| ९ | ६ | ३ | १२ | ९ | ६ | ३ | १२ | ९ | ६ | ३ | १२ | ३० | ० |

## द्वादशांशक.

| मे | वृ | मि | क | सिं | क | तु | वृ | ध | म | कुं | मी | अंश | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | २ | ३० |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | ५ | ० |
| ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ७ | ३० |
| ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | १० | ० |
| ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | १२ | ३० |
| ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | १५ | ० |
| ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | १७ | ३० |
| ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | २० | ० |
| ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | २२ | ३० |
| १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | २५ | ० |
| ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | २७ | ३० |
| १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | ३० | ० |

## विंशोत्तरीदशा विगणना

| सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६ | १० | ७ | १८ | १६ | १९ | १७ | ७ | २० |
| कृ.<br>उ.<br>उ. | रो.<br>ह.<br>श्र. | मृ.<br>चि.<br>ध. | आ.<br>स्वा.<br>श. | पु.<br>वि.<br>पू. | पु.<br>अ.<br>उ. | श्ले.<br>ज्ये.<br>रे. | म.<br>मू.<br>अ. | पू.<br>पू.<br>भ. |

## योगिनीदशा विगणना

| मंगला | पिंगला | धान्या | भ्रामरी | भद्रिका | उल्का | सिद्धा | संकटा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आ.<br>चि.<br>श्र<br>० | पु.<br>स्वा.<br>ध.<br>० | पु.<br>वि.<br>श.<br>० | श्ले.<br>अ.<br>पू.<br>अ. | म.<br>ज्ये.<br>उ.<br>भ. | पू.<br>मू.<br>रे.<br>कृ. | उ.<br>पू.<br>०<br>रो. | ह.<br>उ.<br>०<br>मृ. |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ |

## दशाभुक्त भोग्य की कर्त्तव्यता

गत नक्षत्र की घटी पल को ६० में से घटाकर इष्ट घटी पल में जोड़ें उसे भयात और ६० में घटाया उसी में प्रवेश नक्षत्र की घटी जोड़ें उसे भभोग कहते हैं, भयात के पलों को दशा के वर्ष से गुणा करके भभोग की पलों से भाग लें लब्ध अंक वर्ष फिर शेषांक को १२ से गुणा कर भभोग की पलों का भाग दे लब्ध मास फिर ३० गुणाकर दिन तथा ६० से गुणाकर घटी और पल ले एवं दशा का भुक्त यह है। इसे दशा के वर्षों में घटा दें तो भोग्य वर्ष प्राप्त होते हैं।

## रविरेखा ४८

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ३ | १ | ३ | ५ | ६ | १ | ३ |
| २ | ६ | २ | ५ | ६ | ७ | २ | ४ |
| ४ | १० | ४ | ६ | ९ | १२ | ४ | ६ |
| ७ | ११ | ७ | ९ | ११ | | ७ | १० |
| ८ | | ८ | १० | | | ८ | ११ |
| ९ | | ९ | ११ | | | ९ | १२ |
| १० | | १० | १२ | | | १० | |
| ११ | | ११ | | | | ११ | |

## चंद्ररेखा ४९

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | १ | २ | १ | १ | ३ | ३ | ३ |
| ६ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ६ |
| ७ | ६ | ५ | ४ | ७ | ५ | ६ | १० |
| ८ | ७ | ६ | ५ | ८ | ७ | ११ | ११ |
| १० | १० | ९ | ७ | १० | ९ | | |
| ११ | ११ | १० | ८ | ११ | १० | | |
| | | ११ | १० | १२ | ११ | | |
| | | | ११ | | | | |

## भौमेरेखा ३९

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ३ | १ | ३ | ६ | ६ | १ | १ |
| ५ | ६ | २ | ५ | १० | ८ | ४ | ३ |
| ६ | ११ | ४ | ६ | ११ | ११ | ७ | ६ |
| १० | | ७ | ११ | १२ | १२ | ८ | १० |
| ११ | | ८ | | | | ९ | ११ |
| | | १० | | | | १० | |
| | | ११ | | | | ११ | |

## अवस्थाच.

| विषमे. | | समे. |
|---|---|---|
| मृता. | ३० | बाल. |
| वृद्धा. | २४ | कुमार. |
| युवा. | १८ | युवा. |
| कुमा. | १२ | वृद्धा. |
| बाल. | ६ | मृता. |

## अवस्थाजाग्र.

| विषम | जाग्र. | सुप्ता. | सुप्ता |
|---|---|---|---|
| अं. | १० | २० | ३० |
| सम | सु. | सु. | जा. |

## बुधरेखा ५४

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | २ | १ | १ | ६ | १ | १ | १ |
| ६ | ४ | २ | ३ | ८ | २ | २ | २ |
| ९ | ६ | ४ | ५ | ११ | ३ | ४ | ४ |
| ११ | ८ | ७ | ६ | १२ | ४ | ७ | ६ |
| १२ | १० | ८ | ९ | | ५ | ८ | ८ |
| | ११ | ९ | १० | | ८ | ९ | १० |
| | | १० | ११ | | ९ | १० | ११ |
| | | ११ | १२ | | ११ | ११ | |

## गुरु. रेखा ५६

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | १ | १ | १ | २ | ३ | १ |
| २ | ५ | २ | २ | २ | ५ | ५ | २ |
| ३ | ७ | ४ | ४ | ३ | ६ | ६ | ४ |
| ४ | ९ | ७ | ५ | ४ | ९ | १२ | ५ |
| ७ | ११ | ८ | ६ | ७ | १० | | ६ |
| ८ | | १० | ९ | ८ | ११ | | ७ |
| ९ | | ११ | १० | १० | | | ९ |
| १० | | | ११ | ११ | | | १० |
| ११ | | | | | | | ११ |

## शुक्ररेखा ५२

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८ | १ | ३ | ३ | ५ | १ | ३ | १ |
| ११ | २ | ५ | ५ | ८ | २ | ४ | २ |
| १२ | ३ | ६ | ६ | ९ | ३ | ५ | ३ |
| | ४ | ९ | ९ | १० | ४ | ८ | ४ |
| | ५ | ११ | ११ | ११ | ५ | ९ | ५ |
| | ८ | १२ | | | ८ | १० | ८ |
| | ९ | | | | ९ | ११ | ९ |
| | ११ | | | | १० | | ११ |
| | १२ | | | | ११ | | |

## तात्कालमैत्री

| मित्राणि | शत्रवः |
|---|---|
| २ | १ |
| ३ | ५ |
| ४ | ६ |
| १० | ७ |
| ११ | ८ |
| १२ | ९ |

## शनिरेखा ३९

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ३ | ३ | ६ | ५ | ६ | ३ | १ |
| २ | ६ | ५ | ८ | ६ | ११ | ५ | ३ |
| ४ | ११ | ६ | ९ | ११ | १२ | ६ | ४ |
| ७ | | १० | १० | १२ | | ११ | ६ |
| ८ | | ११ | ११ | | | | १० |
| १० | | १२ | १२ | | | | ११ |
| ११ | | | | | | | |

## लग्नरेखा ४९

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ३ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ |
| ४ | ६ | ३ | २ | २ | २ | ३ | ६ |
| ६ | १० | ६ | ४ | ४ | ३ | ४ | १० |
| १० | ११ | १० | ६ | ५ | ४ | ६ | ११ |
| ११ | | ११ | ८ | ६ | ५ | १० | |
| १२ | | | १० | ७ | ८ | ११ | |
| | | | ११ | ९ | ९ | | |
| | | | | १० | ११ | | |
| | | | | ११ | | | |

## निसर्गग्रहमैत्रीचक्रम्

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चं. मं. गु. | सू. बु. | सू. चं. गु. | सू. शु. | सू. चं. मं. | बु. श. | बु. शु. | मित्राणि |
| बु | मं. गु. शु. श | शु. श. | मं. गु. श. | श. | म. गु. | गु. | समाः |
| शु. श. | ० | बु. | चं. | बु. शु. | सू. चं. | सू. चं. मं. | शत्रवः |

## कारककुण्डली

सबसे अधिक अंश वाला ग्रह आत्मकारक। तथा जन्मचक्र में जिस राशि का उसे लग्न मानते ग्रह स्थापित करें एवं कारकांश कुण्डली हेतु आत्मकारक ग्रह नवमांश कुण्डली में जहां हो उसे लग्न मानते जन्म ग्रह रचना। स्वांश कुण्डली - हेतु कारकांश का ही लग्न तथा नवमांश कुण्डली की ग्रह रचना।

▲ कष्टःस्यादेकरेखायांद्वाभ्यामर्थेक्षयो भवेत्। त्रिभिः क्लेशं विजानीयाच्चतुर्भिस्समतां वदेत् ॥१॥ पंचभिश्च वदेन्सौख्यं षड्भिश्चैव धनागमः। सप्तभिः परमानंदमष्टभिस्सर्वसंपदम् ॥२॥ टी. जिस ग्रह का बल देखना हो उसकी रेखा इष्टग्रह की कुण्डली लिखके लगानी फिर विचारणीय राशि में कितने रेखा पाया है यदि १ से ३ तक पाया तो निर्बली ग्रह हुवा ४ पाया तो सम ५ से ८ पाया तो बली ऐसे ही विचार विवाह जनेऊ आदि प्रसंग में भी करना चाहिये, रेखा ४ से ऊपर जितनी अधिक रेखा प्राप्त होगी, ग्रह प्रभावशील बनते गोचर में ४-८-१२ गणना का शुभ मान्य रहेगा।

## पंचधामैत्री सप्तकवर्गफलम्.

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १ | सप्तकवर्ग में स्वग्रहीका. | ३० | ० | ० |
| २ | मित्र मित्र को अति मित्रता को. | २२ | ३० | ० |
| ३ | मित्र सम को मित्र होय ताको. | १५ | ० | ० |
| ४ | मित्रशत्रुकोसम होय ताको. | ७ | ३० | ० |
| ५ | सम शत्रु का शत्रु होय ताको. | ३ | ४५ | ० |
| ६ | शत्रु शत्रुकी अतिशत्रु होय ताको. | १ | ५२ | ३० |

● अन्यत्र सप्तशलाकाचक्रम ●




शाक्रे ज्ये शतभानिले जलशिवे पौष्णा-र्यमर्क्षे वसुद्वीशे वैश्वसुधां-शुभे हयभगे सार्पानुराधेमिथ:। हस्तो-पांतिमभे विधातृविधिभे मुलादिती त्वाष्ट्रभाजांघ्री याम्यमघे कृशानुहरिभे विद्धे कुभृद्रेखिके ॥

● ज्येष्ठा-पुष्य ● शततारका- स्वाति ● पूर्वाषाढा-आर्द्रा ● रेवती-उत्तराफाल्गुनी ● घनिष्ठा - विशाखा ● उत्तराषाढा- मृगशिरा ● अश्विनी - पूर्वाफाल्गुनी ● आश्लेषा - अनुराधा ● हस्त-उत्तराभाद्रपदा ● रोहिणी - अभिजित ● मूल - पुनर्वसु ● चित्रा -पूर्वाभाद्रपदा ● भरणी - मघा ● कृतिका - श्रवण ● इन नक्षत्रों का आपस में सप्तशलाका वेध होता है।

## ✦ शास्त्रीय-वेधसूत्र ✦

उपर्युक्त नक्षत्रों का वेध यदि पाप ग्रह से हो तो उस सम्पूर्ण नक्षत्र का त्याग करना चाहिए। यदि शुभ ग्रह से वेध हो तो केवल चरण वेध ही त्याज्य होता है। यथा श्री नारदीयसूत्रम - पदमेव शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नत: ॥

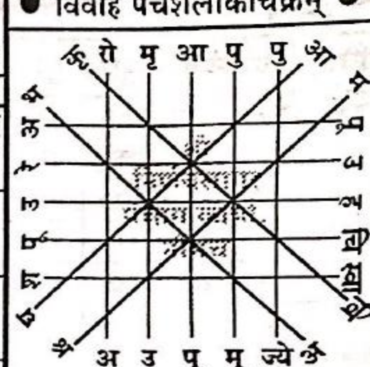
# अथ विनानतं दशम भावस्य स्पष्ट सारणीयम्

लग्न स्पष्ट के राशि अंश तुल्य सम सूत्र में जो फल होवें वही दशम स्पष्ट है तथा दशम भाव राशि फलांकों में ६ राशि योग से चतुर्थ भाव स्पष्ट होगा। शेष क्रिया जातक ग्रन्थानुसार

| अंश | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राशि मेष ० | ८ २३ ५६ २६ | ८ २४ ३७ ५६ | ८ २५ १८ २६ | ८ २५ ५९ ३८ | ८ २६ ४० ४३ | ८ २७ २१ ४२ | ८ २८ ०२ ४७ | ८ २८ ४३ ५२ | ८ २९ २४ २७ | ९ ० ५ ५२ | ९ ० ४० ११ | ९ १ २८ ५९ | ९ २ १५ २६ | ९ ३ २ ३ | ९ ३ ४६ ३८ |
| वृ. १ | ९ १६ ४३ ३९ | ९ १७ २३ २१ | ९ १८ २९ ६ | ९ १९ १९ २४ | ९ २० १० ४२ | ९ २१ १ २४ | ९ २१ ५२ ६ | ९ २२ ४२ ५४ | ९ २३ ३३ ४४ | ९ २४ २४ ३० | ९ २५ १८ १८ | ९ २६ ६ २ | ९ २७ ८ ५४ | ९ २८ ९ ५४ | ९ २९ १० ५४ |
| मि. २ | १० १५ ४६ ४८ | १० १६ ५२ ४२ | १० १७ ५७ ५८ | १० १९ ३ २ | १० २० ९ २७ | १० २१ १५ ३ | १० २२ २० ३७ | १० २३ २९ १३ | १० २४ ३१ ५१ | १० २५ २७ २४ | १० २६ ४१ २० | १० २७ ५१ २३ | १० २९ ५ १२ | ११ ० ९ ८ | ११ १ ३२ ५३ |
| क. ३ | ११ २१ १४ ० | ११ २२ २७ ४५ | ११ २३ ४१ ३६ | ११ २४ ५५ २३ | ११ २६ ९ १६ | ११ २७ २३ २४ | ११ २८ ३६ ४१ | ११ २९ ५० २६ | ० १ ४ ५३ | ० २ १८ ११ | ० ३ ३२ ७ | ० ४ ४७ ५१ | ० ६ २ २२ | ० ७ १९ ४१ | ० ८ ३१ १५ |
| सिं. ४ | ० २७ ९ २५ | ० २८ १८ ३९ | ० २९ २७ ५२ | १ ० ३७ ६ | १ १ ४६ १९ | १ २ ५५ ३३ | १ ४ ४ ४८ | १ ५ १४ २ | १ ६ २३ १६ | १ ७ ३२ ३० | १ ८ ४२ ५४ | १ ९ ५६ ३२ | १ ११ २० ५ | १ १२ ३५ ८ | १ १३ ४४ १२ |
| कं. ५ | १ २९ ३८ २ | २ ० ४१ ८ | २ १ ४३ १० | २ २ ४५ १२ | २ ३ ४७ १ | २ ४ ५० ० | २ ५ ५२ ५ | २ ६ ५४ ८ | २ ७ ५९ ३ | २ ८ ५९ ७ | २ १० १ १३ | २ ११ ३ २१ | २ १२ ५ ३५ | २ १३ ७ ५२ | २ १४ १० ८ |
| तु. ६ | ३ ० ४५ ७ | ३ ० ४८ ५ | ३ २ ५० ८ | ३ ३ ५२ १३ | ३ ४ ५४ १५ | ३ ५ ५६ १९ | ३ ६ ५९ २२ | ३ ८ १ २ | ३ ९ २ ५ | ३ १० ५ १४ | ३ ११ ८ ३८ | ३ १२ १५ ५५ | ३ १३ २३ १७ | ३ १४ २१ १२ | ३ १५ ४२ ३ |
| वृ. ७ | ४ ४ १० ७ | ४ ५ १९ ५ | ४ ६ २९ ३ | ४ ७ ३८ २ | ४ ८ ४३ ० | ४ ९ ५३ १ | ४ ११ ३ ५ | ४ १२ २० १३ | ४ १३ ३५ २५ | ४ १४ ४९ ३५ | ४ १६ ४ ४५ | ४ १७ १६ ८ | ४ १८ ३० ३ | ४ १९ ४४ १० | ४ २० ५८ १ |
| ध. ८ | ५ १० ३९ १४ | ५ ११ ५३ १ | ५ १३ ६ ५ | ५ १४ २० ३० | ५ १५ ३४ १५ | ५ १६ ४८ २२ | ५ १८ २ ११ | ५ १९ १५ ३ | ५ २० २९ २९ | ५ २१ ४३ १० | ५ २२ ५७ १५ | ५ २४ ११ २५ | ५ २५ १४ ४८ | ५ २६ १९ ३७ | ५ २७ २७ ३७ |
| म. ९ | ६ १४ ३८ १ | ६ १५ ३९ २ | ६ १६ ४८ ५ | ६ १७ ४१ २ | ६ १८ ४२ १ | ६ १९ ४३ ० | ६ २० ४४ ३ | ६ २१ ४५ १ | ६ २२ ४६ ५० | ६ २३ ४७ २२ | ६ २४ ४८ ११ | ६ २५ ४९ ८ | ६ २६ ५० १५ | ६ २७ ५२ ३० | ६ २८ ४० ३२ |
| कुं. १० | ७ ११ ४६ ५१ | ७ १२ ५ ३२ | ७ १३ २२ ३२ | ७ १४ ९ ३३ | ७ १४ ५६ ३० | ७ १५ ४३ २२ | ७ १६ ३० ७ | ७ १७ २१ ५ | ७ १८ १४ ९ | ७ १८ ५१ १० | ७ १९ ३८ १२ | ७ २० २४ ८ | ७ २१ ५ ३ | ७ २१ ४६ १५ | ७ २२ ३८ २७ |
| मी. ११ | ८ ३ २४ ३९ | ८ ४ ५ १२ | ८ ४ ४९ ५ | ८ ५ २८ ३ | ८ ६ ९ ० | ८ ६ ५० ८ | ८ ७ ३२ ७ | ८ ८ १२ ६ | ८ ८ ५३ १ | ८ ९ ३४ ५ | ८ १० १५ ३ | ८ १० ५६ ४२ | ८ ११ २७ ४७ | ८ १२ १३ ३२ | ८ १२ ५९ २६ |
| अंश | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ |

| अंश | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | अंश |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राशि मेष ० | ९ ४ ३६ ४९ | ९ ५ २३ १० | ९ ६ १० ४६ | ९ ६ ५७ ४६ | ९ ७ ४४ ४८ | ९ ८ ३१ ४० | ९ ९ १८ ५१ | ९ १० ५ १ | ९ ११ ७ १४ | ९ ११ ४२ ५० | ९ १२ ३२ ४३ | ९ १३ २४ ४८ | ९ १४ २४ ५० | ९ १५ ६ १ | ९ १५ ५६ ४८ | राशि मेष ० |
| वृ. १ | १० ० ११ ५४ | १० १ १२ ५४ | १० २ १३ ५४ | १० ३ १४ ५४ | १० ४ १५ ५४ | १० ५ १६ ५४ | १० ६ १७ ५४ | १० ७ १८ ५४ | १० ८ १९ ५४ | १० ९ २० ५४ | १० १० २१ ५४ | १० ११ २४ ३४ | १० १२ २३ ३० | १० १३ ३५ ४० | १० १४ ४१ १७ | वृ. १ |
| मि. २ | ११ २ ४६ ३७ | ११ ४ ० ३८ | ११ ५ १४ २४ | ११ ६ २८ १० | ११ ७ ४१ ५५ | ११ ८ ५५ ५५ | ११ १० ९ ४० | ११ ११ २३ २९ | ११ १२ ३७ १७ | ११ १३ ५१ ५ | ११ १५ ४ ५७ | ११ १६ १८ ४२ | ११ १७ ३२ २७ | ११ १८ ४६ २१ | ११ २० ० १३ | मि. २ |
| क. ३ | ० ९ ४५ ४२ | ० ११ ० १३ | ० १२ ९ ३५ | ० १३ १८ ३१ | ० १४ २७ ५२ | ० १५ ३७ ६ | ० १६ ४६ १९ | ० १७ ५५ ३५ | ० १९ ४ ४८ | ० २० १४ १२ | ० २१ २३ १६ | ० २२ ३२ २९ | ० २३ ४१ ४३ | ० २४ ५० ५६ | ० २६ ० १२ | क. ३ |
| सिं. ४ | १ १४ ३५ १२ | १ १५ ४४ १९ | १ १६ १० २० | १ १७ १२ १५ | १ १८ १४ ४ | १ १९ १६ ८ | १ २० १८ ९ | १ २१ २७ १० | १ २२ ३० १५ | १ २३ ३२ ५५ | १ २४ ३४ ७ | १ २५ २६ २ | १ २६ ३८ ५ | १ २७ ४० ८ | १ २८ ५२ १ | सिं. ४ |
| कं. ५ | २ १५ १२ १ | २ १६ १४ ० | २ १७ १६ ७ | २ १८ १८ १४ | २ १९ २१ २२ | २ २० २३ ३० | २ २१ २५ ३२ | २ २२ २७ १ | २ २३ ३० ५ | २ २४ ३२ ८ | २ २५ ३५ ९ | २ २६ ३७ १० | २ २७ ४० २५ | २ २८ ४२ ५० | २ २९ ४३ ५९ | कं. ५ |
| तु. ६ | ३ १६ ५० ० | ३ १८ १ १ | ३ १९ १० ८ | ३ २० १९ १५ | ३ २१ २८ २२ | ३ २२ ३८ ८ | ३ २३ ४८ ९ | ३ २४ ५८ ३५ | ३ २६ ९ ४२ | ३ २७ १७ ५६ | ३ २८ २४ २ | ३ २९ ३५ ८ | ४ ० ४२ ५ | ४ १ ५२ ३ | ४ ३ १ ७ | तु. ६ |
| वृ. ७ | ४ २२ १२ २ | ४ २३ २५ ५ | ४ २४ ३८ ३ | ४ २५ ५५ ५७ | ४ २७ ७ १२ | ४ २८ १९ २५ | ४ २९ ३४ १८ | ५ ० ४८ २१ | ५ २ २ ७ | ५ ३ १६ ४ | ५ ४ ३० ५ | ५ ५ ४३ ३ | ५ ६ ५३ १ | ५ ८ ११ १५ | ५ ९ २५ ५ | वृ. ७ |
| ध. ८ | ५ २८ ३० ३७ | ५ २९ ३६ ४२ | ६ ० ४२ ३ | ६ १ ४७ ४ | ६ २ ५३ ४ | ६ ३ ५८ ३ | ६ ५ ४ १५ | ६ ६ १० १२ | ६ ७ १५ २० | ६ ८ २१ ३० | ६ ९ २६ ५ | ६ १० ३२ ८ | ६ ११ ३४ ३ | ६ १२ ३६ ४५ | ६ १३ ३७ ० | ध. ८ |
| म. ९ | ६ २९ १ ४० | ७ ० १ ४५ | ७ ० ५२ ५० | ७ १ ४३ ७ | ७ २ ३३ ३ | ७ ३ २४ ४ | ७ ४ १५ ९ | ७ ५ ६ १३ | ७ ५ ५७ २१ | ७ ६ ४६ २७ | ७ ७ ३८ ३५ | ७ ८ २९ ४० | ७ ९ २० ४५ | ७ १० १० ५० | ७ ११ ७ ५० | म. ९ |
| कुं. १० | ७ २३ २९ ३७ | ७ २४ १६ ४८ | ७ २४ ५९ ५९ | ७ २५ १२ १ | ७ २५ ५६ २ | ७ २६ ३४ ३ | ७ २७ १५ ५ | ७ २७ ५६ ८ | ७ २८ ३७ १० | ७ २९ १८ १२ | ७ २९ ५९ ५ | ८ ० ४० ३० | ८ १ २१ १२ | ८ २ ३० १६ | ८ २ ३ ४ | कुं. १० |
| मी. ११ | ८ १३ ४० १२ | ८ १४ २० ४२ | ८ १५ ४० ३५ | ८ १५ ३५ १ | ८ १६ २४ ३ | ८ १७ ५ ८ | ८ १७ ४६ ५ | ८ १८ २८ ७ | ८ १९ ९ ३ | ८ १९ ५७ ५३ | ८ २० ३१ ५९ | ८ २१ १२ १ | ८ २१ ५३ ५ | ८ २२ ४५ ३ | ८ २३ १५ ४ | मी. ११ |
| अंश | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | अंश |

● विवाहे पंचशलाकाचक्रम् ●




वेधोऽन्योन्य - मसौ, विरिंच्यभि जितोर्याम्यानुराधर्क्ष - योर्विश्वेद्वोर्हरि पित्र्ययोर्ग्रह - कृतो - हस्तोत्तराभाद्रयो: । स्वातीवारूण - योर्भवे - न्निर्ऋति-भादित्यो - स्तथो फांत्ययो: खेटे तत्र गते तुरीयचरणाद्योर्वा तृतीयद्वयो: ॥

● रोहिणी-अमिजित् ● भरणी-अनुराधा ● उत्तराषाढा-मृगशिरा ● श्रवण-मघा ● हस्त-उत्तराभाद्रपदा ● स्वाति-शतभिषा ● मूल-पुनर्वसु ● उत्तराफाल्गुनी-रेवती

वधू प्रवेशने दाने वरणे पाणिपीड़ने वेध: पंचशलाकाख्येऽन्य त्रसप्तशलाकक: ॥

## ✦ इतिशास्त्रीयसूत्रम ✦

इन दो-दो नक्षत्रों में परस्पर गृह कृत वेध होता है एवं इन दो-दो नक्षत्रों में इष्टकालिक गोचर ग्रह के रहने पर चतुर्थ-प्रथम चरणों में तथा तृतीय-द्वितीय चरणों में परस्पर वेध होता है।

**निर्णय सागर पंचांग कार्यालय**
**नीमच छावनी**

# ●卐● अथ विविधविषयसम्पन्न बृहद्नवग्रह गुणधर्मविवेचन चक्रम् पंचांगे निर्णयसागरे नीमच नगरस्थे ●卐●

| रवि: | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आफताब | महताब | मिरीख | उता.रूद | मुस्तरी | झाहार | झाहल | रास. | जनव. | सितारा |
| सन् | मून | मार्स. | मर्क्यू. | जुपिटर | वीनस | सॅटर्न | ड्रगोन्स | ड्रगोन्स | प्लेनेट |
| ३।१० | ३।१० | ३।१० | ३।१० | ३।१० | ३।१० | ३।१० | ३।१० | ३।१० | १ पाददृष्टि. |
| ५।९ | ५।९ | ५।९ | ५।९ | ५।९ | ५।९ | ५।९ | ५।९ | ५।९ | द्विपाददृष्टि. |
| ४।८ | ४।८ | ४।८ | ४।८ | ४।८ | ४।८ | ४।८ | ४।८ | ४।८ | त्रिपाददृष्टि. |
| ७ | ७ | ४।७।८ | ७ | ५।७।९ | ७ | ३।७।१० | ७ | ७ | सम्पूर्णदृष्टि. |
| हरिवंश श्रवण | त्रिपुर रुद्र जप. | रुद्री-जप मन्त्रादि | कांस्य दान | अमाव स्या व्रत | गोरक्षा दानम् | मृत्युं जयजप | सीसा दान | ध्वजा दान | नेष्टग्रहस्यवर्षे |
| गेहूँ | चाँवल | मसूर | हरे मूंग | चना दाल | चाँवल | उड़द | तिल | तिल | दानादिवस्तु |
| मास १ | दिन २। | मास १॥ | मास १ | मास १३ | मास १ | मास ३० | मास १८ | मास १८ | माध्यमिक एक राशि भुक्तगति |
| माणक | मोती | प्रवाल | पन्ना | पुष्पराज | हीरा | नीलम | गोमेद | लसणि | ग्रहाणां रत्नानि |
| चं.मं. गु. | र.बु. | र.गु. चं. | र.रा. शु. | र.चं. मं. | बु.रा. श. | बु.रा. शु. | बु.श. शु. | बु. | मित्रग्रहा: |
| बु. | मं.शु. गु.श. | शु.श. | मं.श. गु. | श.रा. | मं.गु. | गु. | गु. | ० | समग्रहा: |
| श.रा. शु. | रा. | बु.रा. | चं. | बु.शु. | र.चं. | र.चं. मं. | र.चं. मं. | ० | शत्रुग्रहा: |
| मेष १० | वृषभ ३ | मकर २८ | कन्या १५ | कर्क ५ | मीन २७ | तुला २० | मिथुन १५ | धनु १५ | ग्रहाणां उच्चराश्यंश |
| तुला १० | वृश्चिक ३ | कर्क २८ | मीन १५ | मकर ५ | कन्या २७ | मेष २० | धनु १५ | मिथुन १५ | ग्रहाणां नीचराश्यंश |
| सिंह २० | वृषभ ४ से ३० | मेष १८ | कन्या १६ से २० | धनु १३ | तुला १० | कुंभ २० | कर्क | मकर | मूल त्रिकोण राशि अंश |
| अर्क | पलाश | खदिर | अपामार्ग | पीपल | गूलर | शमी | दुर्वा | कुशा | ग्रह समिधा |
| कमल लाल पुष्प | श्वेत पुष्प | लाल कनेर | सभी पुष्प | पीला पुष्प | श्वेत पुष्प | काला पुष्प | काला पुष्प | काला पुष्प | ग्रहाणां पुष्पादि |

| रवि: | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सिंह | कर्क | मेषवृश्चि. | कन्यामिथु. | धनुमीन | वृषतुला | मकरकुंभ | कन्या | मीन | स्वगृहाणि |
| सिंह | वृष | मेष | कन्या | धनु | तुला | कुंभ | कर्क | मकर | मूलत्रिकोण |
| क्षत्रीय | वैश्य | क्षत्रीय | शुद्र | विप्र | विप्र | अंत्यज | शुद्र | संकर | वर्ण |
| पुरूष | स्त्री | पुरूष | स्त्री-नपुं | पुरूष | स्त्री | स्त्री-नपुं. | पुरूष | पुरूष | पुरूष स्त्री |
| चतुरस्त्र | वर्तुल | चतु. | वृत्त | वृत्त | दीर्घ | दीर्घ | दीर्घ | पुच्छ | आकार |
| मध्या. | अपरा. | मध्या | प्रभात | प्रभात | अपरा. | संध्या | संध्या | संध्या | समय |
| पूर्व | वायव्य | दक्षिण | उत्तर | ईशान | आग्नेय | पश्चिम | नैर्ऋत्य | सर्व दिक् | दिशा |
| सुवर्ण | रौप्य | सुवर्ण ताम्र | कांस्य | सुवर्ण | रौप्य | लोह | सीसा | लोह | धातु |
| चतुष्प | बहुपद | चतुष्प | द्विपद | द्विपद | द्विपद | भुजंग अपद | अपद | अपद | पाद |
| उग्र. | सौम्य | उग्र | शुभ | शुभ | शुभ | पाप | पाप | पाप | शुभादि |
| सत्व. | सत्व | तम | रज | सत्व | रज | तम | तम | तम | गुण |
| स्थिर | चर | चर | द्विस्व. | स्थिर | चर | पक्षीस्थिर | चर | पक्षी | चरादि |
| तिक्त | क्षार | कटु | सर्वरस | मधुर | अम्ल | कषाय | कषाय | कषाय | रस |
| पशु भूमि | जल भूमि | दग्ध भूमि | श्मशा. भूमि | वाणी सुरालय | जल भूमि | उत्कर भूमि | उषर भूमि | उषर भूमि | भूमि |
| पित्त | श्लेष्म | पित्त | समधातु | समधातु | कफशुक्र | वायु | वायु | वायु | पित्तादि |
| प्रोढ | युवा | युवा | युवा | वृद्ध | युवा | अतिवृ | वृद्ध | वृद्ध | अवस्था |
| रक्त | श्वेत | रक्त | नीला हरा | पीत | श्वेत | नीला काला | धूम्र | धूम्र | रंग |
| मूल | जीव | धातु | जीव | जीव | मूल | मूल | धातु | धातु | धात्वादि |
| वन | जल | वन | ग्राम | ग्राम | ग्राम | संधि | विवर | विवर | स्थान |
| आत्मा | मन | शक्ति | वाणी | विद्या | वासना | संघर्ष | विकार | खेद | कारक |
| पिता | माता | भ्राता | मित्र-बन्धु | संतान | स्त्री | भृत्य | शत्रु | बाधा | सम्बन्ध |
| अग्नि | वरूण | स्कन्द | विष्णु | इन्द्र | इन्द्राणी | ब्रह्मा | वायु | आकाश | देवता |
| अस्थि | रक्त | मांस मज्जा | चर्म त्वचा | मेद चर्बी | वीर्य ओज | स्नायु | नस | नस | शरीर धातु |

## ❋ हवनादिकृत्ये अग्निवास: ❋

अभीष्ट तिथि में १ जोड़ें, उसमें अभीष्ट वार संख्या जोड़ें तथा ४ का भाग देवें, शेष ३ या शून्य हो तो अग्निवास पृथ्वी पर, उस दिन होम करने में सफलता प्राप्त होती है। शेष १ तथा २ रहे तो स्वर्ग एवं पाताल में अग्निवास रहेगा, यह शुभप्रद नहीं है तिथि - गणना शुक्लादि अमान्त मासानुसार तथा इष्ट दिवसीय तिथि प्रमाण अनुसार करना चाहिए।

## ❋ हवनादिकृत्ये आहुतिशुद्धि: ❋

सूर्य जिस नक्षत्र पर रहता है उससे ३ नक्षत्रों की अग्रिम गणना से दी हुई आहुति सूर्य को मिलती है तदुपरांत आगे के ३ नक्षत्रों में बुध को, फिर ३ में शुक्र को, फिर ३ में शनि को, फिर ३ में चंद्र को, फिर ३ में मंगल को, फिर ३ नक्षत्र गुरू तथा ३ राहु केतु को आहूति मिलती है। पाप ग्रह वाले नक्षत्रों में होम की आहुति शुभ नहीं होती है, अत: शुभ ग्रह वाले नक्षत्रों में ही हवनादि कृत्य शुभद एवं सन्मान्य रहते हैं। सूर्य नक्षत्र से अभीष्ट नक्षत्र तक की गणना करके आहुति क्रिया का ज्ञान होता है।

## ✦ अग्निवासविषये-परिहारसूत्राणि ✦

बृहददेवज्ञरञ्जने मतानुगते-विवाह चूड़ा व्रतबंधगोचरे उत्पातशान्तिग्रहणे युगादौ। दुर्गाविधाने सततं प्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिशोधनीयम् ॥ ग्रहणोद्वाहगण्डान्ते तथा दुर्गोत्सवेपिच। तदाग्निचक्रं नालोक्यं - ग्रहशान्तौ विचारयेत् ॥ व्रतबंधे विवाहे च नवरात्रे च नित्यके। कुलदेवार्चने धीमान्नो कुर्यादग्निचिन्तम् ॥ विवाहे व्रतबंधे च यजने मधुसूदने। दुर्गायां पुत्र जन्मादौ अग्निचक्रं न दृश्यते॥ परन्तुनवीन गृह प्रवेश, विशिष्ट अनुष्ठान शांति कर्म विधान विशिष्ट यज्ञ यागादि हेतु अग्निवास विषयक विचार करना समुचित ही है।

निर्णयसागर पंचांग, नीमच (म.प्र.)

# अथ बृहदद्वादशराशि गुणधर्म विवेचनचक्रम् पंचांगे निर्णयसागरे

| संज्ञा | पु.स्त्री | चरादि | तत्व | पुष्टकृश | पाद | वर्ण | गुण | धातु | शब्द | स्थान | क्रूरादि | बलस | समवि. | दिशा | स्त्रीसंग | कांति | जाति | समादि | उदय | ऋतु | बुरज | साइन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेष | पुरूष | चर | अग्नि | दृढ | चतुष्प. | रक्त-लाल | तप्तदेह | पित्त | अतिरव | पर्वत | उग्र | दिवा | विषम | पूर्व | अल्प | रूक्ष | क्षत्री | सम | पृष्ठोदय | बसन्त | हमल | एरिज |
| वृषभ | स्त्री | स्थिर | पृथ्वी | दृढ | चतुष्प. | श्वेत | शीत | वायु | अतिरव | समभू. | सौम्य | रात्रि | सम | दक्षिण | मध्य | रूक्ष | वैश्य | विषम | पृष्ठोदय | ग्रीष्म | सौर | ट्यूरस |
| मिथुन | पुरूष | द्विस्व. | वायु | मृदु | द्विपद | हरित | तप्त | समधा | दीर्घशब्द | वनचर | उग्र | दिवा | विषम | पश्चिम | मध्य | स्निग्ध | शूद्र | विषम | शीर्षोदय | ग्रीष्म | जोबझ | जेमिनी |
| कर्क | स्त्री | चर | जल | मृदु | अपद | श्वेत | शीत | कफ | शब्दहीन | जलचर | सौम्य | रात्रि | सम | उत्तर | बहु | स्निग्ध | विप्र | सम | पृष्ठोदय | वर्षा | सर्तान | केन्सर |
| सिंह | पुरूष | स्थिर | अग्नि | दृढ | चतुष्प. | धूम्र-लाल | उष्ण | पित्त | दीर्घशब्द | पर्वत | उग्र | दिवा | विषम | पूर्व | अल्प | रूक्ष | क्षत्री | सम | शीर्षोदय | वर्षा | अशद | लेयो |
| कन्या | स्त्री | द्विस्व. | पृथ्वी | कृश | द्विपद | पांडुरंग | शीत | वायु | अर्धशब्द | समभू. | सौम्य | रात्रि | सम | दक्षिण | अल्प | रूक्ष | वैश्य | सम | शीर्षोदय | शरत् | संबुला | विर्गो |
| तुला | पुरूष | चर | वायु | दृढ | द्विपद | विचित्र | उष्ण | समधा | शब्दहीन | वनचर | उग्र | दिवा | विषम | पश्चिम | अल्प | स्निग्ध | शूद्र | सम | शीर्षोदय | शरत् | मीझान | लीब्रा |
| वृश्चिक | स्त्री | स्थिर | जल | कृश | बहुपद | श्वेत-ताम्र | शीत | कफ | शब्दहीन | जलचर | सौम्य | रात्रि | सम | उत्तर | बहु | स्निग्ध | विप्र | सम | शीर्षोदय | हेमंत | अक्रव | स्कार्पिओ |
| धनु | पुरूष | द्विस्व. | अग्नि | दृढ | द्विपद | सुवर्ण | उष्ण | पित्त | अतिशब्द | पर्वत | उग्र | दिवा | विषम | पूर्व | अल्प | रूक्ष | क्षत्री | सम | पृष्ठोदय | हेमंत | कौश | सेगीटेरी |
| मकर | स्त्री | चर | पृथ्वी | दृढ | चतुष्प. | भूरा | शीत | वायु | अतिशब्द | वनचर | सौम्य | रात्रि | सम | दक्षिण | अल्प | रूक्ष | वैश्य | विषम | पृष्ठोदय | शिशिर | जदी | केप्रीकार्न |
| कुंभ | पुरूष | स्थिर | वायु | दृढ | अपद | कृष्ण | उष्ण | समधा | खंडशब्द | भूमि | उग्र | दिवा | विषम | पश्चिम | मध्य | स्निग्ध | शूद्र | विषम | शीर्षोदय | शिशिर | दलव | एक्वारीस |
| मीन | स्त्री | द्विस्व. | जल | दृढ | अपद | धूम्र-पीला | शीत | कफ | हीनशब्द | जलचर | सौम्य | रात्रि | सम | उत्तर | बहु | स्निग्ध | विप्र | विषम | उभयोदय | वसन्त | हुत | पिसेस |

## अथ नक्षत्र कष्टावली सूत्रम्

| नक्षत्र | चरणगत कष्टदिन | | | | जपार्थ मंत्राः | रोग उत्पत्ति कष्टदिन | दान पदार्थाः | आराध्य वृक्ष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | | | | |
| अश्विनी | ९ | ११ | १ | २० | मृत्युंजयमन्त्रः | ९ | भोजनदानम् | कुचला वृक्ष |
| भरणी | ० | ८० | ४० | ११ | यमायतवेतिमंत्रः | ११ | गौअन्नदानम् | आंवला |
| कृतिका | ९ | ११ | १६ | २७ | अग्निर्मर्धेतिमंत्रः | ९ | स्वर्णदानम् | गूलर |
| रोहिणी | ३ | ९ | १८ | ३० | ब्रह्मयर्येति मंत्रः | ७ | घृत दानम् | जामुन |
| मृगशिरा | ९ | ५ | ७ | १० | इमं देवेति मंत्रः | ३० | तिलदानम् | खैरी |
| आर्द्रा | ० | १८ | ० | ० | नमस्तेरूद्रइतिमंत्रः | मृ.तु. | गौ दानम् | कृष्णगुरू |
| पुनर्वसु | ७ | १४ | २ | २१ | अदितिद्योरिति मंत्रः | ७ | पीतल दानम् | कीकर |
| पुष्य | ६ | ७ | १० | २१ | वृहस्पतेति मंत्रः | ७ | तेलान्न दानम् | पीपल |
| आश्लेषा | ० | ० | ४१ | ० | नमोऽस्तुसर्पेतिमंत्रः | मृ.तु. | गोऽजादि दानम् | नागचम्पा |
| मघा | १५ | ७ | १७ | २० | पितृभ्यइति मंत्रः | २० | वस्त्राज्यदानम् | वटवृक्ष |
| पू.फा. | ० | १५ | ० | ३० | भगप्रणेति मंत्रः | मृ.तु. | भोजन दानम् | अशोक वृक्ष |
| उ.फा. | ७ | १४ | ७ | ६० | दध्यावद्धेति मंत्रः | ७ | अन्न दानम् | खेजड़ीवृक्ष |
| हस्त | १५ | १७ | १५ | ० | उदुत्यंजातवेदेति मंत्रः | १५ | तैल दानम् | जूही |
| चित्रा | ११ | ९ | ९ | १६ | त्वष्टातुरीगति मंत्रः | ११ | दुग्धदानम् | बिल्ववृक्ष |

| नक्षत्र | चरणगत कष्टदिन | | | | जपार्थ मंत्राः | रोग उत्पत्ति कष्टदिन | दान पदार्थाः | आराध्य वृक्ष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | | | | |
| स्वाति | ६० | १७ | ३० | ० | वायोरग्नेति मंत्रः | मृ.तु. | गोघृतदानम् | अर्जुन वृक्ष |
| विशाखा | १५ | ० | ४ | १३ | इन्द्राग्निइतिमंत्रः | १६ | गोस्वर्णदानम् | नागकेशर |
| अनुराधा | ६० | १२ | ३६ | ३० | नमोमित्रेतिमंत्रः | स्थिर | गोघृत दानम् | नागकेशर |
| ज्येष्ठा | ६९ | ९ | ६ | ४ | त्रातारमिन्द्रमिति मंत्रः | मृ.तु. | तिल दानम् | नीमवृक्ष |
| मूल | ० | ९ | १५ | ६ | मातापुत्रेति मंत्रः | ९ | रजत पात्र दानम् | वेतवृक्ष |
| पू.षाढा | ० | १५ | २४ | १० | आपोधर्मेति मंत्रः | मृ.तु. | गौमुक्तादानम् | अर्कवृक्ष |
| उ.षाढा | ३० | २४ | २६ | १६ | विश्वेदेवेति मंत्रः | ३० | भोजन दानम् | कटहल वृक्ष |
| श्रवण | ६० | २४ | ६ | ९ | विष्णोररा. मंत्र | ११ | श्रीफलदानम् | श्वेत वृक्ष |
| घनिष्ठा | १५ | ४ | २० | २१ | वसो.पवित्रेति मंत्रः | १५ | अश्वान्नदानम् | नारियल |
| शतभिषा | ० | ४५ | ३ | २२ | वरणस्तम्भेति मंत्रः | ११ | भोजनान्नदानम् | आम वृक्ष |
| पू.भाद्र. | ० | १२ | २१ | १९ | अहिर्बुध्येति मंत्रः | मृ.तु. | भोजनदानम् | कदम्बवृक्ष |
| उ.भाद्र. | १० | ३ | ९ | १५ | अहिर्बुध्येति मंत्रः | ७ | अन्नदानम् | मेहंदीवृक्ष |
| रेवती | १८ | १० | ९ | २० | पृषण्तवव्रं मंत्रः | स्थिर | वृष दानम् | बैर वृक्ष |

● निर्णयसागर पंचांग कार्यालय, मु.पो. नीमच (म.प्र.) फोन - २२०५२० ●

## ● नवग्रह मुद्रिका-विधान ●

| | | |
|---|---|---|
| बुध पन्ना | शुक्र हीरा | चन्द्र मुक्ता |
| गुरू पुखराज | सूर्य माणिक्य | मंगल मूंगा |
| कैतु वैदूर्य | शनि नीलम | राहु गोमेद |

▲ नवरत्न की मुद्रिका निर्माण हेतु कौन रत्न किस स्थान दिशा में धारण स्थापित किया जावे - मुहूर्तचिन्तामणि शास्त्र मान्यतानुसार उपर्युक्त कोष्ठ रचना प्रस्तुत है। यह नवरत्न की मुद्रिका रजत-चाँदी धातु में अथवा सोना-स्वर्ण धातु में निर्माण करवाना योग्य है। अशुभ नवग्रह जनित दोष निवारण हेतु नवरत्न की मुद्रिका धारण करना सर्वविध श्रीकार शुभ फलप्रदायक है।

### ✦ श्रीवर्धक-सिद्धिप्रदायक मुद्रिका ✦

विषुवद् दिवस (२१ मार्च) पर इस मुद्रिका का निर्माण करें। २५ रत्ती सोना - १६ रत्ती चाँदी - १० रत्ती ताम्बा एवं ५१ रत्ती इन धातु योग से तार-मुद्रिका बनावें। यह ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक

## मार्त्तण्ड प्रश्नावली

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ५ | ४ | ३ | २ | १ |
| ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
| १५ | १४ | १३ | १२ | ११ |
| १६ | १७ | १८ | १९ | २० |

**❋ मार्त्तण्डप्रश्नोत्तर विधान ❋** इस प्रश्नावली अंक यंत्र का उपयोग किसी भी रविवार को प्रातः विशेष फलद रहता है। शुद्ध सात्विक विचारधारा से शांतचित्त होकर आवश्यक उपयोगिता जानकर ही इस अंक प्रश्न यंत्र का उपयोग करना सार्थक है। प्रश्नकर्ता प्रमाद, कुतर्क व अव्यवस्थित मन से इस यंत्र फल का उपयोग नहीं करें। पूर्वाभिमुख होकर श्री सूर्यनारायण का मानसिक ध्यान करते इस यंत्र के किसी भी कोष्ठ के अंक पर अपनी दाहिनी अनामिका अंगुली रखे, फलाशय निम्नानुसार - **१ कार्यसिद्धि, २ कार्यसिद्धि दुःखनाश, ३ कार्यसिद्धि-लाभ, ४ प्रश्नसामान्य श्रमतः साधना, ५ प्रश्नयोगवाही सार्थक, ६ सफलता उत्तम गति, ७ मनोत्साह कार्यसिद्धि, ८ श्रमसाधनामात्र, विफलता, ९ हितलाभ कार्यगति, १०, सफलता सम्पर्क, ११ उत्तमक्रिया फलाशययोग्य, १२ विफलता वृथागति, १३ सामान्य गति श्रमासधना, १४ सफलता उत्तमगति, १५ लाभांश कार्यसिद्धि, १६ प्रश्न कुयोगद असिद्धि, १७ मनोत्साह मनोनीत गति, १८ श्रमतः सफलता समफल, १९ प्रश्न सामान्य आशा बलवति राजन्, २० प्रश्न योगद कार्य विधायक।** ✦ ❋ ✦

## हिमांशु प्रश्नावली

| | | |
|---|---|---|
| श | ब | ग |
| उ | व | म |
| प | स | ह |

**❋ मनोकामना हिमांशु प्रश्नावली ❋** इस यंत्र का उपयोग सायंकाल विशेष फलद रहता है सोमवार विशेषकर मान्य है। प्रश्नफल इच्छुक जीव प्रमाद व अव्यवस्थित चित्त से इसका उपयोग नहीं करें, अन्यथा फलाशय योग्य नहीं। पश्चिमाभिमुख होकर तथा **'नमामि शशिनं सोमं'** शब्द का मानसिक उच्चारण करके अनामिका उंगुली यंत्र पर रखें, तथा फलाशय इस प्रकार समझे। **१ श-कार्यलाभ मनोकामना। २ ब-कार्यसिद्धि में सन्देह। ३ ग-फल योग्य सफलता। ४ म-उत्तम गति सुलाभ। ५ व-कार्यसिद्धि दुष्कर, विवेक से काम करें। ६ उ-सामान्य प्रतिफल, विशेष गतिविधि नैव। ७ प-सदकार्यरत रहने से ही सफलता। ८ स-मनोकामना, अर्थलाभ, सुआशा। ९ ह-कार्यपूर्ति में संदेह, श्रमसाधना विशेष से सुगति** (श्रीरस्तु)

**❋ सर्वधर्म मूल बोधवचन ❋ १.सत्यं वद** - सत्य बोलो। **२ धर्मं चर** - योग्य धर्माचरण करो। **३ मातृदेवो भव** - जननी को देव मानो। **४ पितृदेवो भव** - पिता को देव मानो। **५ आचार्य देवो भव** -ज्ञान एवं शिक्षा प्रदाता को देव मानो। **६ अतिथि देवो भव** - अतिथि को देव मानो। **७ स्वाध्यायान्मा प्रमदः** कर्तव्य पथ पर दृढ रहो, कार्यसिद्धि पर लक्ष्य तथा प्रमाद आलस्य से दूर रहो। **८ श्रद्धया देयम्** - यथाशक्ति श्रद्धा से आदान-प्रदान करो। ✣ ✣ ✣

## ✤ विविध शास्त्रीय विवेक ✤

**✱ जमीन जायदाद लेन-देन**-श्रवण घनिष्ठा शतभिषा। हस्त चित्रा स्वाति। पुर्नवसु पुष्य। मृगशिरा, अश्विनी, रेवती, अनुराधा इन नक्षत्रों में लेन-देन, सौदा सूत, भूमि खरीदी आदि करना शुभ फलद। तीनों उत्तरा, तीनों पूर्वा, विशाखा, रोहिणी, कृतिका, मघा, आर्द्रा, भरणी, आश्लेषा, मूल इन नक्षत्रों में चोरी गया, धरोहर रखा, उधार दिया या भू-गत द्रव्य वापस नहीं मिलता है। श्री तुलसीदासजी के ये वचनामृत अनुभूत हैं। ✦ ❋ ✦

✱ किसी भी मंगलवार को ऋण कर्जा नहीं लेना चाहिए। साथ ही संक्रान्ति दिवस, वृद्धि नामक योग और हस्त नक्षत्र तथा रविवार को भी कर्ज धन नहीं लेना चाहिये तथा इन दिनों में कर्ज की रकम वापस करना शुभद है। ✦ ❋ ✦

✱ बुधवार के दिन किसी को भी ऋण अथवा धन नहीं देना चाहिये अन्यथा उसके वापस आने में विबाधा अवरोध ही बन पावे। ✦ ❋ ✦

**❋ भावीवर्ष फलाशय ❋** अंक शास्त्रीय नियम से वर्षप्रतिफल जानने का मौलिक सूत्र प्रस्तुत है। नववर्ष के शुभाशुभ गणना हेतु आप आयु की संख्या, जन्मराशि तथा जन्मनक्षत्र की संख्या, इन तीनों का योग करें तथा इस योग फलांक को तीन जगह अलग-अलग रखें। इसमें क्रमशः २-४-३ अंक से गुणा करें और क्रमशः इन गुणन फलों में ७-८-६ से भाग देवें। भाग देने पर यदि पहली और तीसरी स्थान संख्या भागावशेष में ० बचे तो विविध समस्या, त्रास, व्यय की स्थिति बने। दूसरे मध्य स्थान पर शून्य रहते आपत्ति, खेद, भय, अर्थ, हानि। अर्थात् तीनों स्थान पर शून्य बचते वर्षफलनेष्ट। कार्य-व्यवसाय संपर्क तथा अन्य विषयक हीनता रहे। यदि शून्य के अलावा अन्य अंक बचे तो वर्ष फलाशय सुखद। किसी स्थान पर ० रहें तो अनुपातिक क्रिया से शुभाशुभ प्रतिफल समझना चाहिए। ✦ ❋ ✦

**वेदमाता गायत्री मंत्र** ॐ भूर्भुवः स्वः। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ ॐ

**❋आज का दिन कैसा ❋** जिस दिन विशेष का शुभाऽशुभ जानना हो उस दिन पंचांग में वर्तमान दिन का नक्षत्र देखें जो उस दिन नक्षत्र से आपके जन्म नाम का नक्षत्र ४-५-११-१२-१८-१९-२५-२६ वां हो तो समझें कि आपका दिन सुखद तथा अभिनव समाचार वा क्रियाओं से प्रसन्नता बने। यदि वर्तमान दिन नक्षत्र से आपके जन्म नक्षत्र की गणना क्रमशः २-३-६-७-९-१०, १३, १४, १६, १७, २०, २१, २३, २४, २७ होवे तो दिन का आधा भाग शुभ, आधा भाग अशुभ तथा १-८-१५-२२ वाँ गणनानुगत नक्षत्र आवे तो सारा दिन ठीक नहीं समझना चाहिये।

**❋ शुभ यात्रा शकुन ❋** रविवार को यात्रा करनी हो तो दही, शक्कर, इलायची खाकर प्रस्थान करना चाहिये। सोमवार को खीर, मंगल को दलिया-थूली, बुध को दूध सेवन करके तथा गुरू को दही का भक्षण, शुक्रवार को दूध या दही की लस्सी, शनिवार को कुछ तिल मिले चांवल खाकर यात्रा करना श्रेयस्कर शुभफलात्मक समझना चाहिये श्रीरस्तु।

## ✤ विशिष्ट यात्रा मुहूर्त्त रचना ✤

**✱ तिथि** - षष्ठी, द्वादशी, अष्टमी, शुक्लपक्ष की प्रतिपदा पूर्णिमा, अमावस्या और रिक्ता ४-९-१४ तिथि मान्य नहीं, इनसे अन्य तिथि शुभ।

**✱ नक्षत्र** - अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, मृगशिरा, पुष्य, रेवती, हस्त, श्रवण तथा घनिष्ठा, ये नक्षत्र यात्रा विशेष में शुभद हैं। तीनों उत्तरा, शतभिषा, मूल, ज्येष्ठा, तीनों पूर्वा और रोहिणी मध्यम रूप से मान्य। परन्तु - स्वाति, कृतिका, आर्द्रा, विशाखा, चित्रा, आश्लेषा, मघा, भरणी आदि ८ नक्षत्र अशुभ सूचक हैं।

**✱ विशेष वचन यह भी कि पूर्व दिशा में ज्येष्ठा, दक्षिण में पूर्वा भाद्रपद, पश्चिम में रोहिणी और उत्तर में उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र, शूलदोष संज्ञा के हैं।** इनको विशेष निषेध जानें। यात्रायां प्रविदित जन्मनां नराणां सूत्रानुसार जन्म नक्षत्र राशि से ही यात्रा मुहूर्त्त विचार करना चाहिये। ✦ ❋ ✦

# ● श्री बीज प्रश्नोत्तरी प्रतिफलम् ●

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ऋ |
| ॠ | ऌ | ॡ | ए | ऐ | ओ | औ |
| अं | अः | क | ख | ग | घ | ङ |
| च | छ | ज | झ | ञ | ट | ठ |
| ड | ढ | ण | त | थ | द | ध |
| न | प | फ | ब | भ | म | य |
| र | ल | व | श | स | ह | क्ष |
| | | | ष | | | |

## ♦ प्रश्न फलाशय ज्ञान-अवलोकन सूत्र ♦

सर्वदा प्रश्न फलाशय कथन-श्रवण-मनन हेतु देश काल परिस्थिति - कार्य व्यवसाय-आयुवय प्रमाण मानक आदि पक्ष विषय पर ध्यान रखना चाहिये। श्री बीज प्रश्नोत्तरी का उपयोग शुद्ध सात्विक मन एवं आस्था आत्म विश्वास रखते ही करें तथा स्वयं की बौद्धिक प्रतिभा-ज्ञान विवेक का सन्तुलन रखते ही समाधान करना भी योग्य सूत्र है।

प्रश्नकर्त्ता को विशेषकर प्रात:काल ६ से ९ तथा दिवा १२ से १ एवं सायं ३ से ६ समय मध्य ही इस प्रश्न यन्त्र का उपयोग करना विशेष अनुकूल है। पृच्छक अपने इष्टदेव का ध्यान करते तथा किसी फल या वृक्ष का नाम स्मरण करते अपनी अनामिका (पूजा कार्य वाली) अंगुली अकारादि प्रश्न कोष्ठक में रखें तथा जिस प्रश्नाक्षर कोष्ठ में अंगुली रखें, उसी स्थान-प्रश्नाक्षर का फल निम्नानुसार कहना देखना चाहिये।

**अ** कार प्रश्नाक्षर हो तो विजय, धन की प्राप्ति जानना सर्व कार्य की सिद्धि, पुत्र का लाभ सुख निश्चय करके हो ॥१॥

**आ** कारक्षर में रखे तो शोक-सन्ताप, सब प्राणियों से विरोध मानसिक चिन्तन, क्लेश कहना ॥२॥

**इ** कार में परम सुख, सर्व कार्यों की सिद्धि, सर्व दु:खों का नाश, धन-धान्य की वृद्धि कहना ॥३॥

**ई** कार में धन, पुत्र का लाभ, सर्व कार्यों की सिद्धि सौभाग्य अनुकूलता हो ॥४॥

**उ** काराक्षर में शोक त्रिविध ताप तथा चित्त में निश्चय करके वियोग हो और मानसिक दु:ख हो, नि:सन्देह विपत्ति हो ॥५॥

**ऊ** कार में स्थान का लाभ हो, अच्छी प्रतिष्ठा सर्व कार्यों की सिद्धि और जो-जो चित्त में चिन्तन विचार करें सो होवें ॥६॥

**ऋ** कार में अत्यन्त प्रीति, स्वर्ण का नित्य ही लाभ, सर्व कार्य सिद्ध हो, लाभ नि:सन्देह हो ॥७॥

**ॠ** कार में व्याधि की उत्पत्ति, दु:ख, सन्ताप हो और मित्रों के साथ विरोध नि:सन्देह उत्पन्न हो ॥८॥

**ऌ** कार में सब कार्य की सिद्धि, मित्रों के समागम, शरीर में आरोग्य तथा राजकृत सम्मान हो ॥९॥

**ॡ** कार में सर्वविषयक हानि, रोग की उत्पत्ति, सम्पत्ति का हरण, कार्य की हानि नि:सन्देह हो ॥१०॥

**ए** कार में कार्य की सिद्धि, मित्रों के साथ समागम हो, स्थान का लाभ, शरीर में सुख और कल्याण हो ॥११॥

**ऐ** कार में बन्धन, मित्रों के साथ विरोध, औरों से भी विग्रह, नि:सन्देह मृत्यु व मृत्यु-समान कष्ट हो ॥१२॥

**ओ** कार में सिद्धि का दर्शन, दु:ख, शोक का विनाश, सर्वकार्य सिद्ध हो और भय न हो, इसमें संशय नहीं ॥१३॥

**औ** काराक्षर में सर्वकार्य की सिद्धि न हो, मित्रों के साथ विरोध और शोक संताप हो ॥१४॥

**अं** कार हो तो मानहानि, बन्धन, महादु:ख, क्लेश, भय, नि:सन्देह हो ॥१५॥

**अ:** अक्षर हो तो कार्य की सिद्धि, प्रतिष्ठा, पुत्र का लाभ, महासुख नि:सन्देह प्राप्त हो ॥१६॥

**क** कार में राजकृत सम्मान, अर्थ की सिद्धि, प्रिय का समागम और कल्याण निश्चय करके हो ॥१७॥

**ख** काराक्षर में शोक-सन्ताप, द्रव्य का नाश और शरीर में मानसिक ताप जनित व्याधि नि:सन्देह हो ॥१८॥

**ग** काराक्षर में जो कार्य विचारे उसकी सिद्धि हो, सौभाग्य की प्राप्ति एवं मित्रों के साथ समागम होगा ॥१९॥

**घ** काराक्षर में सर्वकार्य की सिद्धि, प्रिय-समागम का लाभ, भली-भाँति सौभाग्य और कल्याण हो ॥२०॥

**ङ** कार में कार्य का नाश, सिद्धि की निष्फलता, अर्थ का नाश, विपत्ति, सर्वकर्म निष्फल हों ॥२१॥

**च** काराक्षर में सर्वकार्य के विषय में विजय हो, राजकृत सन्मान, तथा द्रव्य का लाभ नि:सन्देह प्राप्त हो ॥२२॥

**छ** काराक्षर हो तो सर्वकार्य हो, अनेक तरह के सुख मिलें, शरीर में आरोग्यता रहे कुशल, आनन्द और सौभाग्य का अतुल लाभ हो ॥२३॥

**ज** काराक्षर हो तो द्रव्य की हानि, कार्य का विनाश हो, मित्रों के साथ विरोध और झगड़ा हो ॥२४॥

**झ** कार में द्रव्य का और अनेक विषय का लाभ, सौभाग्य की सफलता हो ॥२५॥

**ञ** कार में चित्त में शोक-सन्ताप हो, बन्धन, मित्रों के साथ विरोध और मृत्यु हो ॥२६॥

**ट** कार में लाभ हो, विजय हो, कार्य सफल हो और निश्चय करके सर्व अर्थ का साधन हो ॥२७॥

**ठ** काराक्षर में सर्वसिद्धि, धन की और धान्य की सिद्धि, शरीर रोग रहित और सि:सन्देह कार्य सफल हो ॥२८॥

**ड** काराक्षर में वृद्धि को प्राप्त हो। जो सिद्धि है वह मिले और कुशल पूर्वक शरीर में आरोग्यता नि:सन्देह सत्य करके प्राप्त हो ॥२९॥

**ढ** काराक्षर में बन्धन और रोग-शोक, चित्त में ताप हो और मन में जो-जो विचार हो सो सब व्यर्थ हों ॥३०॥

**ण** कार में सब विद्या, अतुल सौभाग्य हो, शरीर में आरोग्य, धन-धान्य सब हो ॥३१॥

**त** काराक्षर में अर्थ का लाभ धन सम्पदा सुख, सौभाग्य और दूसरे के द्वारा सब काम का अर्थसाधन हो ॥३२॥

**थ** काराक्षर में अर्थ की हानि, स्थान का विच्छेद, विशेषकरके भ्रम रोग की उत्पत्ति हो ॥३३॥

**द** काराक्षर में धन का लाभ, सुख शरीर में हो, निरोगता, अनेक प्रकार के भोग का सुख नित्य ही प्राप्त हो ॥३४॥

**ध** कार हो तो धन का लाभ, शरीर में सुख, आरोग्यता हो, मनुष्य को नि:संदेह अतुल भाग्य अर्थात् बड़े ऐश्वर्य की प्राप्ति हो ॥३५॥

**न** काराक्षर में अनेक भोग की प्राप्ति, सब वस्तु का लाभ, शरीर में आरोग्यता, कार्य की सफलता नि:सन्देह हो ॥३६॥

**प** काराक्षर में धन का नाश, रोग और बन्धन हो। चित्त में उद्वेग, नित्य ही कलह नि:सन्देह हो ॥३७॥

**फ** काराक्षर में धन की और सब सम्पत्ति की प्राप्ति और सब कार्य की सिद्धि, शरीर में निरोगता, सुख लाभ हो ॥३८॥

**ब** काराक्षर में बन्धन, धन का नाश और राजकाज में व्यय खर्च तथा शरीर व्याधि कहना ॥३९॥

**भ** काराक्षर में पहिले तो कार्य की हानि अनन्तर लाभ हो और पुत्र-सुखमनोकामना की सिद्धि होती है इसमें संशय नहीं ॥४०॥

**म** काराक्षर में निश्चय करके कष्ट, परम आपत्ति कहना, भोग की प्राप्ति न हो, सर्व कर्म निष्फल हों ॥४१॥

**य** काराक्षर में अर्थ की प्राप्ति, धन-धान्य की प्राप्ति हो, शोभा हो, सर्व-वस्तु का लाभ हो ॥४२॥

**र** काराक्षर में भययुक्त कार्य और स्वजनों के साथ विरोध, शारीरिक मानसिक चिन्ता विकार ॥४३॥

**ल** काराक्षर धन की सम्यक् प्राप्ति और वस्तुओं का लाभ, विपुल अर्थात् बड़े भोग का लाभ नि:सन्देह हो ॥४४॥

**व** काराक्षर में कार्य का नाश, धन की हानि हो, दु:ख-शोक, चित्त में खेद और महान भय प्राप्त हो ॥४५॥

**श** कार हो तो कार्य की सिद्धि, दिन-दिन सफल हो और अर्थ का लाभ, निश्चय ही सर्वकार्य हो ॥४६॥

**स** कार में सब कार्य निष्फल हों, अनेक चिन्ता मनुष्य को हो और मन में जो विचार करे वह सब नष्ट हो ॥४७॥

**ह** कार में सब काम और फलों को देने वाली महासिद्धि हो, सब कार्य सिद्ध हों, इसमें कुछ विचार नहीं करना ॥४८॥

**क्ष** काराक्षर में राजसम्मान, विद्या का लाभ स्थान का लाभ और कल्याण हो ॥४९॥

**ष** काराक्षर में धन-धान्य की ओर सर्व कार्य की सिद्धि हो, निश्चय करके सदा कल्याण और सर्वदा शुभ हो ॥५०॥

## ● सुगम सूर्यक्रान्ति सारिणी ●

प्रत्येक अंग्रेजी मास तारीख अनुसार सारिणी की स्पष्टता की गई है प्रति मासों के नीचे रवि क्रान्ति दक्षिण या उत्तर का वर्णन है, तथा अंश कला संकेत भी दिये गये हैं। **२२ मार्च से उत्तर क्रान्ति ● (+)धनफल प्रारंभ एवं २४ सितम्बर से दक्षिण क्रान्ति ● (-) ऋण फल** का निर्देश भी है।

## ●❀ देशान्तर संस्कार एवं पंचांग विभेद विधि ❀●

जोधपुर से अन्यत्र नगरों का देशान्तर जानने हेतु सुगम विधि यह है कि **जोधपुर के रेखांश** ७३-४ में से अपने इष्ट स्थान के **रेखांश** घटा देवें, शेष अंश-कला संख्या के प्राप्त होंगे। इस शेष में ४ से गुणा करें, जो गुणनफल आवेगा वह **'देशान्तर संस्कार'** मिनिट सेकण्ड में आवेगा। तथा मिनिट सैकण्ड देशान्तर फल को घटी पल में चाहें तो इस हेतु नियम २॥ गुणा करने से पलात्मक 'देशान्तर' प्राप्त होगा। इसे जोधपुर से **पूर्व देशों में धन** तथा **पश्चिम देशों में ऋण** करें एवं मध्यम इष्ट नगरीय पंचांग बन जावेगा। यथा देहली रेखांश ७७।१२ जोधपुर रेखांश ७३।४ के अन्तर से शेष ४ अंश ८ कला आया इसमें ४ से गुणित फल १६।३२ आया इसे २॥ से गुणन करने पर ४०।८० आया विपल में ६० से संशोधन करने पर ४२ पल **'देशान्तर'** फलाशय आया। जोधपुर से देहली पूर्व देश वश धन + संज्ञक प्रतिफल बना।

| वार | समय | राहुकालवेला | समय | गुलिककालम् | समय | यमगण्डम् |
|---|---|---|---|---|---|---|
| रवि | सायं | ४।३० से ६।० | दिवा | ३।० से ४।३० | दिवा | १२।० से १।३० |
| सोम | प्रातः | ७।३० से ९।० | दिवा | १।३० से ३।०० | प्रातः | १०।३० से १२।०० |
| मंगल | दिवा | ३।० से ४।३० | दिवा | १२।०० से १।३० | प्रातः | ९।०० से १०।३० |
| बुध | दिवा | १२।० से १।३० | प्रातः | १०।३० से १२।० | प्रातः | ७।३० से ९।०० |
| गुरू | दिवा | १।३० से ३।० | प्रातः | ९।० से १०।३० | प्रातः | ६।०० से ७।३० |
| शुक्र | प्रातः | १०।३० से १२।० | प्रातः | ७।३० से ९।०० | दिवा | ३।०० से ४।३० |
| शनि | प्रातः | ९।० से १०।३० | प्रातः | ६।०० से ७।३० | दिवा | १।३० से ३।०० |

▲ **राहुकालम् - कुवेला** भारत के दक्षिण संभाग कर्नाटक, केरल, मद्रास, गोआ, आंध्र आदि में भी निर्णयसागरीय पंचांग की सन्मान्यता तथा प्रचलन है। उन जनवर्ग की सुविधा हेतु राहुकाल गुलिक-यमगंडम् आदि का गणना नियम प्रस्तुत है। इस राहुकाल का दोष विशेष है तथा यमगण्डम् का सामान्य दोष विचार है एवं गुलिककालम् निर्वाह योग्य। इस प्रकार की लोकशास्त्रीय मान्यता है।

## श्री शिवद्विघटिका मुहूर्त्ताः तथा च विविध शास्त्रीय शकुन ज्ञान सूत्राणि पंचांगे निर्णय सागरे - नीमच नगरस्थे

न तिथिर्न च नक्षत्रं योगं करणं तथा। शिवस्याज्ञां समादाय देवकार्यं विचिन्तयेत्॥ माहेन्द्रममृतं वक्रं शून्यं क्षणचतुष्टयम्। क्रियते मिहिरेणेदं यात्रोद्वाहादिमंगले॥ माहेन्द्रे विजयो नित्यममृते कार्यशोभनम्। वक्रे गतिविलम्बः स्याच्छून्ये च मरणंभयम्॥ सूत्रानुसार विभिन्न प्रान्तों में ज्योतिर्विद मुहूर्त्त समाधान करते हैं। यहाँ कोष्ठक रचना में दिन तथा रात्रि का मान ३०-३० घटी का लिया गया है, यदि और भी काल सूक्ष्मता चाहे तो इष्ट दिन के दिनमान अथवा रात्रिमान के न्यूनाधिक होने पर अनुपात से अधिक या कम घटी मान करना युक्तियुक्त है। ● मा. अर्थात् माहेन्द्र शुभ प्रतिफल ● अ. अर्थात् अमृत-शुभ प्रतिफल ● व. अर्थात् वक्र-कष्टतः समाधान ● शू. अर्थात् शून्य-नेष्ट अशुभ फलकाल इस प्रकार का शुभाऽशुभ प्रतिफल यात्रा कार्य तथा अन्य भी आवश्यकता विशेष के मांगलिक कार्यसमाधान हेतु विचार करके समय निर्धारण कर सकते हैं। तथापि श्री मिहिराचार्य दैवज्ञ श्री द्वारा १२-१२ घन्टे का समय मानक ही मान्य रखा है। एवं २-२ घटी का प्रत्येक १ मुहूर्त्त का मानक ही गणनीय है।

| ♣ माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, श्रावण और भाद्रपद ♣ | |
|---|---|
| रवि | दिन - मा.२ अ.८ व.१० शू.८ अ.२<br>रात्रि - शू.२ मा.२ शू.२ अ.४ शू.२ व.६ शू.६ मा.२ अ.४ |
| चन्द्र | दिन - मा.४ व.८ अ.६ व.६ अ.४ शू.२<br>रात्रि - व.४ मा.४ अ.२ व.८ अ.४ शू.४ व.२ शू.२ |
| मंगल | दिन - अ.६ शू.२ व.२ अ.६ शू.८ अ.४ शू.२<br>रात्रि - व.४ मा.४ अ.२ व.६ अ.४ शू.२ व.२ मा.२ अ.४ |
| बुध | दिन - व.४ अ.४ व.६ अ.४ शू.२ व.४ मा.२ अ.४<br>रात्रि - शू.२ अ.६ मा.४ व.४ शू.४ अ.१० |
| गुरू | दिन - अ.६ शू.२ व.४ अ.६ व.८ अ.४<br>रात्रि - व.४ मा.४ अ.२ व.८ अ.४ शू.४ अ.४ |
| शुक्र | दिन - शू.२ अ.१६ व.८ अ.२ शू.२<br>रात्रि - व.४ शू.२ अ.६ व.६ मा.६ शू.२ अ.४ |
| शनि | दिन - शू.४ व.२ शू.२ अ.८ शू.२ व.२ शू.४ अ.४ शू.२<br>रात्रि - व.६ अ.६ व.४ शू.४ अ.४ शू.२ अ.४ |

| ♣♠♣ ज्येष्ठ और आषाढ ♣♠♣ | |
|---|---|
| रवि | दिन - अ.६ व.८ अ.८ शू.२ मा.२ शू.४<br>रात्रि - शू.२ अ.८ व.६ अ.६ व.४ मा.४ |
| चन्द्र | दिन - अ.४ व.४ अ.६ व.१६<br>रात्रि - व.६ अ.८ व.८ मा.२ व.६ |
| मंगल | दिन - शू.४ व.६ अ.४ शू.४ व.६ शू.२ अ.४<br>रात्रि - शू.२ अ.८ व.६ अ.६ व.६ मा.२ |
| बुध | दिन - शू.२ मा.४ अ.४ व.६ शू.२ व.४ अ.६ शू.२<br>रात्रि - व.४ अ.४ व.८ अ.६ शू.८ |
| गुरू | दिन - अ.४ व.६ अ.४ शू.४ व.६ शू.२ अ.४<br>रात्रि - व.८ अ.६ व.६ अ.६ व.४ |
| शुक्र | दिन - अ.२ व.२ अ.६ व.६ अ.८ शू.२ व.४<br>रात्रि - व.४ अ.४ शू.४ अ.२ व.४ अ.४ शू.८ |
| शनि | दिन - मा.२ शू.६ अ.८ व.१० शू.४<br>रात्रि - शू.२ व.४ मा.२ अ.४ शू.१० अ.२ व.२ शू.२ अ.२ |

| ♣ आश्विन, कार्त्तिक, मार्गशीर्ष और पौष ♣ | |
|---|---|
| रवि | दिन - शू.४ अ.६ व.६ अ.६ व.४ अ.२ शू.२<br>रात्रि - शू.४ अ.४ व.६ अ.६ शू.४ व.६ |
| चन्द्र | दिन - अ.८ मा.४ शू.६ अ.६ मा.६<br>रात्रि - व.६ अ.८ व.६ अ.४ शू.२ व.४ |
| मंगल | दिन - अ.४ व.६ अ.२ शू.४ मा.६ शू.६ व.२<br>रात्रि - व.६ अ.८ व.६ अ.४ शू.२ व.४ |
| बुध | दिन - शू.२ मा.४ अ.८ व.६ शू.८ व.२<br>रात्रि - अ.१० शू.२ व.८ अ.६ शू.२ व.२ |
| गुरू | दिन - अ.२ शू.४ व.६ अ.४ शू.२ व.४ अ.६ मा.२<br>रात्रि - शू.४ व.४ शू.२ अ.६ व.६ शू.२ व.६ |
| शुक्र | दिन - व.८ अ.४ शू.२ अ.२ व.४ अ.६ मा.४<br>रात्रि - व.४ शू.२ अ.६ शू.६ मा.२ शू.२ व.८ |
| शनि | दिन - शू.४ अ.४ शू.४ अ.८ शू.२ व.४ शू.२ मा.२<br>रात्रि - शू.२ व.४ अ.६ व.४ अ.६ व.४ अ.४ |

♠ **छिक्कायाः प्रतिफलम्** मूलतया सर्दी जुकाम तथा नासिका के रोग विशेष की छींक तथा मदिरा आदि विविध मद्य-मादक पदार्थों के सेवन से उत्पन्न छींक का शुभाऽशुभ प्रभाव नहीं बनता है एवं धेनु-गाय, कन्या, विधवा स्त्री, मालन, धोबिन, रजस्वला, वैश्या, चर्मकारिन स्त्री की छींक का दुष्प्रभाव विघटित ही होता है तथा स्वस्थ स्त्री-पुरुष, बालक-बालिका को छींक का फलाशय इस प्रकार सन्मुख छींक द्वन्द्व की कारक, पीठ पिछली सुख संचारक। छींक दाहिनी द्रव्य विनाशक, वाम छींक सौख्य विधायक। उँची छींक सौख्य की सूचक, निम्न भाग की भय प्रदायक। अपनी छींक गमन की कारक, भावी हेतु खेद विचारक। छींक शकुन निर्णय अभिसार, शास्त्र भवानी तत्व विचार। ♣ ♠ ♣

### भद्रा-मुख-पुच्छ-घटी ज्ञानसूत्र

| उपकरण | शुक्ल पक्ष | | | | कृष्ण पक्ष | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तिथि | ४ | ८ | ११ | १५ | ३ | ७ | १० | १४ |
| प्रहर | ५ | २ | ७ | ४ | ८ | ३ | ६ | १ |
| आदिमुखघटी | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| प्रहर | ८ | १ | ६ | ३ | ७ | २ | ५ | ४ |
| अन्त पुच्छघटी | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |

● **विवरण सूत्र** ● तिथि प्रयोग (आरम्भ से अन्त) के घट्यादि पूर्ण मान में ८ के भाग देने से लब्धांक १ एक प्रहर का मान होगा। पुच्छ घटीकाल शुभ-मुख घटी कालनेष्ट प्रतिफल सूचक। माध्यमिक मान से ४ चार प्रहर दिन में तथा रात्रि में भी ४ प्रहर का मानक होता है। १ प्रहर का माध्यमिक मान ७ घटी ३० पल तथापि स्पष्ट दिनमान-रात्रिमान अनुसार न्यूनाधिक प्रहर मान गणितागत प्राप्त होता है। ♣ ♠ ♣

### पल्ली (छिपकली) प्रपात-पतन फल

| स्थान | प्रतिफल | स्थान | प्रतिफल |
|---|---|---|---|
| मस्तक | लाभ | जानु | सुखद सन्देश |
| ललाट | प्रियदर्शन | जंघा | सुयोग विकास |
| भ्रूमध्य | सुयोग सम्पर्क | हाथ | लाभद-योग |
| उ.ओष्ठ | धननाश | कन्धा | विकास-हर्ष |
| अ.ओष्ठ | धनलाभ | नाभि | लाभ-सुयोग |
| नासिका | विकार खेद | कटि | सुख-सुविधा |
| द.कर्ण | सुयोगद | द.मणिबंध | अर्थ-हानि |
| वा.कर्ण | लाभ योग | वा.मणिबंध | अपवाद-खेद |
| नेत्र | कोष वृद्धि | हृदय | लाभ-सुयोग |
| द.भुजा | मानद योग | मुख | सुख-सुविधा |
| वा.भुजा | भय विकार | गुल्फ | भय विकार |
| कण्ठ | विजय हर्ष | केशान्त | विबाधा खेद |
| स्तन | विकार खेद | द.पाद | यात्रा प्रवास |
| उदर | लाभ योग | वा.पाद | कार्य हानि |
| पृष्ठ | व्यर्थ कार्य | पादांगुली | खेद विकार |

### ▲ पल्ली पाते (छिपकली) परिहार ▲

♣ **शांति सूत्र** - रात्रि में पल्ली पतन होने पर किसी प्रकार का दोष विशेष नहीं। परन्तु जन्म नक्षत्र दिवस मृत्यु योग (आनन्दादि) भद्रा, व्यतिपात, वैधृति तथा अष्टम चन्द्र स्थिति के समय छिपकली पतन विशेष अशुभ। दोष शान्ति हेतु गौमूत्र से आचमन करें, पंचगव्य से स्नान करें। अथवा धारित कपड़ों सहित स्नान करें, तथा ५-७ तुलसी पत्र का सेवन कर सूर्यनारायण का दर्शन-ध्यान करें। अथवा घृत-घी में मुखमण्डल की छाया देखकर अनुदान करें। एवमेव "ॐ ह्रीं जूं सः" इस बीज मंत्र की १ माला का जप जाप शांति विधायक सूत्र।

♣ **छींक विषयक विशेष सूत्र** - आसने शयने शौचे, दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहाः॥ तथा च-छींक सूंघनी छल कर लेनो, शकुन तत्व फल नाहीं जानो।

### स्त्री-पुरूष अंगस्फुरण - शकुनप्रतिफलम्

पुरूषस्य दक्षिणांगे-स्त्रीणां वामांगे स्फुरणं शुभफलप्रदम्

| स्थान | प्रतिफल | स्थान | प्रतिफल | स्थान | प्रतिफल |
|---|---|---|---|---|---|
| मस्तक | भूमि लाभ | वक्षःस्थल | विजयश्री | ओष्ठ | इष्ट सिद्धि |
| ललाट | स्थान लाभ | हृदय | कामना फल | हनु-ठोड़ी | सुख वृद्धि |
| स्कन्ध | सुख विकास | कटि | व्यर्थ कार्य | कण्ठ | लाभ सुयोग |
| भ्रूमध्य | सुखद फल | कटि पार्श्व | सम्पर्क लाभ | ग्रीवाधः | विकारभय |
| भ्रूयुग्म | सुखसुविधा | नाभि | स्त्री खेद | पृष्ठ | चिन्ता खेद |
| कपोल | शुभ फलद | आन्त्रिक | लाभ योग | मुख | सम्पर्क सुयोग |
| नेत्र | लाभद योग | भग | पति सुख | भुज | सुख सुविधा |
| नेत्रकोण | सुख सन्देश | कुक्षि | सुप्रीति | भुजमध्य | अर्थ लाभ |
| नेत्र समीप | प्रिय संगम | उदर | लाभ योग | वस्तिदेश | विकास योग |
| नेत्र-पक्ष्म | सम्पर्क लाभ | लिंग | स्त्री सुयोग | उरू | सुसन्देश |
| हस्त | लाभद योग | गुदा | वाहन योग | जानु | चिन्ता खेद |
| नेत्रोर्ध्व | हर्ष विजय | वृषण | पुत्र लाभ | जंघा | सम्पर्क सुयोग |
| पादोपरि | स्थान लाभ | पादतल | ज्ञान वृद्धि | निर्णयसागर पंचांगम् | |

## ✿❀✿ जोधपुर नगरीय-दैनिक लग्न प्रवेश समय से अन्य भारतीय प्रमुख नगरों हेतु लग्न प्रवेश समय ज्ञानार्थ-संस्कार सारिणी ✿❀✿

| लग्न ➤ / ▼ शहर | मेष मिनट | वृषभ मिनट | मिथुन मिनट | कर्क मिनट | सिंह मिनट | कन्या मिनट | तुला मिनट | वृश्चिक मिनट | धनु मिनट | मकर मिनट | कुंभ मिनट | मीन मिनट |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अयोध्या (उत्तरप्रदेश) | -३७ | -३८ | -३८ | -३८ | -३७ | -३७ | -३६ | -३६ | -३६ | -३६ | -३६ | -३७ |
| अजमेर (राज) | -०७ | -०७ | -०६ | -०७ | -०७ | -०७ | -०६ | -०६ | -०६ | -०६ | -०६ | -०७ |
| अजीतगढ (सीकर) | -१२ | -१३ | -१३ | -१३ | -१२ | -११ | -१० | -०९ | -०८ | -०९ | -१० | -११ |
| अलवर (राज.) | -१५ | -१६ | -१७ | -१७ | -१६ | -१५ | -१३ | -१२ | -११ | -१२ | -१३ | -१४ |
| अहमदाबाद (गुज.) | +०५ | +०७ | +०८ | +०८ | +०६ | +०२ | -०१ | -०४ | -०५ | -०४ | -०२ | +०१ |
| अलीगढ (उत्तरप्रदेश) | -२२ | -२३ | -२४ | -२३ | -२२ | -२१ | -१९ | -१७ | -१७ | -१७ | -१८ | -२० |
| अहमद नगर (महाराष्ट्र) | -०१ | +०५ | +०८ | +०७ | +०२ | -०५ | -१२ | -१८ | -२१ | -२० | -१५ | -०८ |
| अनूप शहर (उत्तरप्रदेश) | -२३ | -२५ | -२६ | -२५ | -२४ | -२२ | -२० | -१८ | -१७ | -१७ | -१९ | -२१ |
| आदिलाबाद (आन्ध्र) | -१६ | -११ | -०८ | -०९ | -१४ | -२० | -२७ | -३२ | -३५ | -३४ | -२९ | -२३ |
| आबू रोड़ (राजस्थान) | +०३ | +०४ | +०५ | +०५ | +०३ | +०२ | ०० | -०१ | -०२ | -०२ | -०१ | +०१ |
| आकोला-अमरावती | -११ | -०६ | -०४ | -०५ | -०९ | -१५ | -२० | -२५ | -२७ | -२६ | -२२ | -१७ |
| आगरा (उत्तरप्रदेश) | -२१ | -२१ | -२१ | -२२ | -२१ | -२० | -१९ | -१८ | -१८ | -१८ | -१९ | -२० |
| इटावा (उत्तरप्रदेश) | -२४ | -२५ | -२५ | -२५ | -२४ | -२४ | -२४ | -२३ | -२३ | -२३ | -२३ | -२४ |
| इचलकरंजी (महाराष्ट्र) | +०२ | +१० | +१४ | +१२ | +०५ | -०४ | -१३ | -२१ | -२५ | -२३ | -१६ | -०७ |
| इम्फाल-मणिपुर | -८२ | -८१ | -८० | -८१ | -८२ | -८३ | -८४ | -८६ | -८६ | -८६ | -८५ | -८४ |
| इन्दौर (मध्यप्रदेश) | -०८ | -०५ | -०३ | -०४ | -०७ | -११ | -१४ | -१७ | -१९ | -१८ | -१५ | -१२ |
| उज्जैन (मध्यप्रदेश) | -११ | -१० | -१० | -१० | -११ | -११ | -११ | -११ | -११ | -११ | -११ | -११ |
| उदयपुर (राज.) | -०१ | -०० | +०१ | +०१ | ०० | -०२ | -०४ | -०५ | -०६ | -०६ | -०४ | -०३ |
| औरंगाबाद (महाराष्ट्र) | -०४ | +०२ | +०४ | +०३ | -०२ | -०८ | -१४ | -१९ | -२२ | -२१ | -१६ | -१० |
| कटक (उड़ीसा) | -४६ | -४२ | -३९ | -४० | -४४ | -५० | -५६ | -६१ | -६३ | -६२ | -५८ | -५२ |
| कन्नौज (उत्तरप्रदेश) | -२८ | -२९ | -२९ | -२९ | -२९ | -२८ | -२७ | -२६ | -२६ | -२६ | -२७ | -२७ |
| कलकत्ता (बंगाल) | -५८ | -५५ | -५३ | -५४ | -५७ | -६० | -६४ | -६७ | -६९ | -६८ | -६६ | -६२ |
| कच्छ-भुज (गुजरात) | +१६ | +१९ | +२० | +२० | +१७ | +१४ | +११ | +०९ | +०७ | +०८ | +१० | +१३ |
| कानपुर (उत्तरप्रदेश) | -२९ | -३० | -३० | -३० | -३० | -२९ | -२९ | -२९ | -२९ | -२९ | -२९ | -२९ |
| काशी (वाराणसी) | -३९ | -३८ | -३८ | -३८ | -३९ | -३९ | -४० | -४१ | -४२ | -४२ | -४१ | -४० |
| कुचामन सिटी (राज | -०८ | -०९ | -०९ | -०९ | -०८ | -०७ | -०६ | -०६ | -०५ | -०५ | -०६ | -०७ |
| कोटा (राज.) | -१० | -०९ | -०८ | -०९ | -१० | -११ | -१२ | -१३ | -१३ | -१३ | -१२ | -११ |
| कोरबा (छ.गढ) | -३५ | -३२ | -३१ | -३१ | -३४ | -३८ | -४२ | -४५ | -४७ | -४६ | -४३ | -३९ |
| गुड़गाँव (हरियाणा) | -१८ | -२० | -२१ | -२० | -१९ | -१७ | -१४ | -१२ | -११ | -१२ | -१४ | -१६ |
| गुवाहाटी (आसाम) | -७५ | -७५ | -७४ | -७४ | -७५ | -७५ | -७५ | -७५ | -७५ | -७५ | -७५ | -७५ |

| लग्न ➤ / ▼ शहर | मेष मिनट | वृषभ मिनट | मिथुन मिनट | कर्क मिनट | सिंह मिनट | कन्या मिनट | तुला मिनट | वृश्चिक मिनट | धनु मिनट | मकर मिनट | कुंभ मिनट | मीन मिनट |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग्वालियर (म.प्र.) | -२० | -२० | -२० | -२० | -२० | -२० | -२० | -२० | -२० | -२० | -२० | -२० |
| गंगापुर सिटी (राज.) | -१५ | -१५ | -१५ | -१५ | -१५ | -१५ | -१५ | -१४ | -१४ | -१४ | -१५ | -१५ |
| चण्डीगढ | -१९ | -२३ | -२५ | -२४ | -२१ | -१६ | -१२ | -०७ | -०५ | -०६ | -१० | -१४ |
| चित्तौडगढ (राज.) | -०५ | -०४ | -०३ | -०४ | -०५ | -०६ | -०८ | -०९ | -०९ | -०९ | -०८ | -०७ |
| चुरू (राज.) | -०९ | -११ | -१२ | -१२ | -१० | -०८ | -०६ | -०४ | -०३ | -०४ | -०५ | -०७ |
| जमशेदपुर (टाटा) | -४९ | -४६ | -४५ | -४६ | -४८ | -५२ | -५५ | -५८ | -६० | -५९ | -५६ | -५३ |
| जगदलपुर (बस्तर) | -३० | -२४ | -२१ | -२२ | -२७ | -३४ | -४१ | -४७ | -५० | -४९ | -४४ | -३७ |
| जबलपुर (मध्यप्रदेश) | -२५ | -२२ | -२१ | -२२ | -२४ | -२७ | -३० | -३३ | -३४ | -३४ | -३१ | -२८ |
| जयपुर (राज.) | -१२ | -१२ | -१३ | -१२ | -१२ | -११ | -११ | -१० | -१० | -१० | -१० | -११ |
| जालौर (राज.) | +०३ | +०३ | +०३ | +०४ | +०३ | +०२ | +०१ | ०० | ०० | ०० | +०१ | +०२ |
| जावरा (मध्यप्रदेश) | -०६ | -०४ | -०२ | -०३ | -०५ | -०८ | -१० | -१३ | -१४ | -१३ | -११ | -०९ |
| जीन्द (हरियाणा) | -१६ | -१८ | -२० | -१९ | -१७ | -१४ | -११ | -०८ | -०६ | -०७ | -१० | -१३ |
| जैसलमेर (राजस्थान | +०८ | +०८ | +०७ | +०५ | +०८ | +०९ | +०९ | +१० | +१० | +१० | +०९ | +०९ |
| झाँसी (उत्तरप्रदेश) | -२२ | -२१ | -२१ | -२१ | -२१ | -२२ | -२३ | -२३ | -२४ | -२४ | -२३ | -२२ |
| झालावाड़ (राज.) | -११ | -०९ | -०८ | -०९ | -१० | -१२ | -१४ | -१५ | -१६ | -१६ | -१६ | -१३ |
| झुंझुनू (राज.) | -११ | -१२ | -१३ | -१३ | -१२ | -१० | -०८ | -०६ | -०५ | -०६ | -०७ | -०९ |
| टोंक (राज.) | -११ | -११ | -१० | -११ | -११ | -११ | -११ | -११ | -११ | -११ | -११ | -११ |
| दिल्ली (देहली) | -१९ | -२१ | -२२ | -२२ | -२० | -१७ | -१५ | -१३ | -१२ | -१२ | -१४ | -१६ |
| दाहोद (गुजरात) | -०२ | +०१ | +०३ | +०२ | ०० | -०४ | -०७ | -१० | -१२ | -११ | -०९ | -०५ |
| दौसा (राज.) | -१४ | -१४ | -१४ | -१४ | -१४ | -१३ | -१३ | -१२ | -१२ | -१२ | -१२ | -१३ |
| धौलपुर (राज.) | -२० | -२० | -२० | -२० | -२० | -१९ | -१९ | -१९ | -१८ | -१८ | -१९ | -१९ |
| धूलिया (महाराष्ट्र) | -०२ | +०२ | +०५ | +०४ | ०० | -०५ | -११ | -१५ | -१७ | -१६ | -१२ | -०७ |
| नागौर (राज.) | -०३ | -०४ | -०४ | -०४ | -०४ | -०३ | -०२ | -०१ | -०१ | -०१ | -०२ | -०२ |
| नाथद्वारा (राज.) | -०२ | -०१ | ०० | ०० | -०१ | -०३ | -०४ | -०५ | -०६ | -०६ | -०५ | -०३ |
| नीमच (म.प्र.) | -०६ | -०४ | -०३ | -०४ | -०५ | -०७ | -०९ | -१० | -११ | -११ | -०९ | -०७ |
| नीम का थाना (राज.) | -१२ | -१३ | -१४ | -१४ | -१३ | -११ | -१० | -०९ | -०८ | -०८ | -०९ | -११ |
| नोहर (राजस्थान) | -०९ | -१२ | -१३ | -१३ | -१० | -०७ | -०४ | -०२ | ०० | -०१ | -०३ | -०६ |
| नान्देड़ (महाराष्ट्र) | -११ | -०५ | -०२ | -०४ | -०९ | -१५ | -२२ | -२८ | -३१ | -३० | -२५ | -१८ |
| नागपुर (महाराष्ट्र) | -२० | -१६ | -१३ | -१४ | -१८ | -२३ | -२८ | -३३ | -३५ | -३४ | -३० | -२५ |
| पटना (बिहार) | -४८ | -४७ | -४७ | -४७ | -४८ | -४८ | -४९ | -५० | -५० | -५० | -४९ | -४९ |

| लग्न ➤ / ✓ शहर | मेष मिनट | वृषभ मिनट | मिथुन मिनट | कर्क मिनट | सिंह मिनट | कन्या मिनट | तुला मिनट | वृश्चिक मिनट | धनु मिनट | मकर मिनट | कुंभ मिनट | मीन मिनट |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पाली (राज.) | -०१ | ०० | ०० | ०० | ०० | -०१ | -०१ | -०२ | -०२ | -०२ | -०२ | -०१ |
| पिलानी (राज.) | -१२ | -१४ | -१४ | -१४ | -१३ | -१० | -०८ | -०६ | -०५ | -०६ | -०८ | -१० |
| प्रतापगढ (राज.) | -०५ | -०३ | -०२ | -०२ | -०४ | -०६ | -१० | -११ | -१२ | -११ | -१० | -०७ |
| बंगलौर (कर्नाटक) | -०८ | +०३ | +०८ | +०६ | -०३ | -१५ | -२८ | -३९ | -४४ | -४१ | -३२ | -२० |
| ब्यावर (राज.) | -०५ | -०५ | -०४ | -०५ | -०५ | -०५ | -०५ | -०५ | -०५ | -०५ | -०५ | -०५ |
| ब्यावरा (म.प्र.) | -१४ | -१२ | -१० | -११ | -१३ | -१५ | -१७ | -१९ | -२० | -२० | -१८ | -१६ |
| बयाना (राज.) | -१७ | -१८ | -१८ | -१८ | -१८ | -१७ | -१६ | -१६ | -१६ | -१६ | -१६ | -१७ |
| बाड़मेर (राज.) | +०७ | +०८ | +०७ | +०८ | +०७ | +०७ | +०६ | +०६ | +०५ | +०६ | +०६ | +०६ |
| बारां (राज.) | -१३ | -१२ | -११ | -११ | -१२ | -१४ | -१५ | -१६ | -१६ | -१६ | -१५ | -१४ |
| बांसवाड़ा (राज.) | -०३ | -०१ | ०० | ०० | -०२ | -०५ | -०८ | -१० | -११ | -११ | -०९ | -०६ |
| बीकानेर (राज.) | -०२ | -०४ | -०४ | -०५ | -०३ | -०१ | ०० | +०२ | +०३ | +०२ | +०१ | -०१ |
| बूंदी (राज.) | -१० | -०९ | -०८ | -०९ | -०९ | -१० | -११ | -१२ | -१२ | -१२ | -११ | -११ |
| भरतपुर (राज.) | -१८ | -१९ | -१९ | -२० | -१९ | -१८ | -१७ | -१६ | -१६ | -१६ | -१७ | -१८ |
| भीलवाड़ा (राज.) | -०६ | -०५ | -०४ | -०५ | -०५ | -०६ | -०७ | -०८ | -०८ | -०८ | -०७ | -०७ |
| भोपाल (म.प्र.) | -१५ | -१२ | -१० | -११ | -१४ | -१७ | -२० | -२२ | -२४ | -२३ | -२१ | -१८ |
| भुवनेश्वर (उड़ीसा) | -४६ | -४२ | -३९ | -४० | -४४ | -५० | -५६ | -६१ | -६३ | -६२ | -५८ | -५२ |
| भीनमाल (राज) | +०४ | +०५ | +०६ | +०६ | +०५ | +०३ | +०२ | +०१ | ०० | ०० | +०१ | +०३ |
| भिवानी (हरियाणा) | -१५ | -१७ | -१८ | -१७ | -१५ | -१३ | -१० | -०८ | -०७ | -०७ | -०९ | -१२ |
| महेन्द्रगढ (हरि.) | -१४ | -१६ | -१७ | -१६ | -१५ | -१३ | -११ | -०९ | -०८ | -०९ | -१० | -१२ |
| मद्रास (चैन्नई) | -१८ | -०८ | -०२ | -०५ | -१४ | -२६ | -३८ | -४९ | -५४ | -५२ | -४३ | -३१ |
| मैसूर (कर्नाटक) | -०३ | +०८ | +१३ | +११ | +०२ | -११ | -२५ | -३६ | -४१ | -३९ | -२९ | -१७ |
| मेरठ (उत्तर प्रदेश) | -२१ | -२४ | -२५ | -२४ | -२२ | -१९ | -१७ | -१४ | -१३ | -१४ | -१६ | -१८ |
| मैनपुरी (उत्तर प्रदेश) | -२५ | -२६ | -२६ | -२६ | -२५ | -२४ | -२३ | -२३ | -२२ | -२२ | -२३ | -२४ |
| मथुरा (उ.प्र.) | -१९ | -२० | -२१ | -२१ | -२० | -१९ | -१७ | -१६ | -१६ | -१६ | -१७ | -१८ |
| मंदसौर (म.प्र.) | -०६ | -०४ | -०३ | -०४ | -०५ | -०८ | -१० | -१२ | -१३ | -१२ | -११ | -०८ |
| मुम्बई (महा.) | +०७ | +१३ | +१६ | +१५ | +०९ | +०२ | -०५ | -११ | -१४ | -१३ | -०७ | -०१ |
| मुरैना (म.प्र.) | -२० | -२० | -२० | -२० | -२० | -२० | -२० | -२० | -२० | -२० | -२० | -२० |
| मेड़ता सिटी (राज.) | -०४ | -०५ | -०४ | -०५ | -०५ | -०४ | -०४ | -०४ | -०३ | -०३ | -०४ | -०४ |

| लग्न ➤ / ✓ शहर | मेष मिनट | वृषभ मिनट | मिथुन मिनट | कर्क मिनट | सिंह मिनट | कन्या मिनट | तुला मिनट | वृश्चिक मिनट | धनु मिनट | मकर मिनट | कुंभ मिनट | मीन मिनट |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रतलाम (म.प्र.) | -०६ | -०३ | -०१ | -०३ | -०५ | -०८ | -१० | -१३ | -१४ | -१४ | -१२ | -०९ |
| राजसमन्द (राज.) | -०२ | -०१ | ०० | -०१ | -०२ | -०३ | -०४ | -०५ | -०६ | -०६ | -०५ | -०३ |
| रोहतक (हरियाणा) | -१६ | -१९ | -२० | -१९ | -१७ | -१५ | -१२ | -१० | -०८ | -०९ | -११ | -१४ |
| रायपुर (छत्तीसगढ) | -३० | -२६ | -२४ | -२५ | -२८ | -३३ | -३८ | -४३ | -४५ | -४४ | -४० | -३५ |
| लूनकरणसर (राज.) | -०५ | -०७ | -०७ | -०७ | -०५ | -०३ | -०१ | +०१ | +०२ | +०२ | ०० | -०२ |
| सागर (मध्यप्रदेश) | -२१ | -१८ | -१७ | -१८ | -२० | -२२ | -२५ | -२७ | -२८ | -२७ | -२६ | -२३ |
| सूरत (गुजरात) | +०५ | +०९ | +१२ | +११ | +०७ | +०२ | -०३ | -०७ | -१० | -०९ | -०५ | ०० |
| शिवपुरी (म.प्र.) | -१८ | -१८ | -१७ | -१७ | -१८ | -१८ | -१९ | -२० | -२० | -२० | -१९ | -१९ |
| श्रीगंगानगर (राज.) | -०७ | -०९ | -११ | -१० | -०७ | -०४ | +०१ | +०३ | +०५ | +०४ | +०१ | -०२ |
| सरदारशहर (राज.) | -०७ | -०९ | -१० | -१० | -०८ | -०६ | -०४ | -०२ | -०१ | -०१ | -०३ | -०५ |
| सवाईमाधोपुर (राज.) | -१३ | -१३ | -१२ | -१३ | -१३ | -१३ | -१४ | -१४ | -१४ | -१४ | -१४ | -१३ |
| सांचौर (राज.) | +०६ | +०८ | +०८ | +०८ | +०७ | +०५ | +०४ | +०२ | +०१ | +०२ | +०३ | +०५ |
| सिरोही (राज.) | +०२ | +०३ | +०३ | +०३ | +०२ | +०१ | ०० | -०२ | -०२ | -०२ | -०१ | ०० |
| सीकर (राज.) | -०९ | -११ | -११ | -११ | -१० | -०९ | -०७ | -०६ | -०५ | -०६ | -०७ | -०८ |
| सुजानगढ (राज.) | -०७ | -०८ | -०८ | -०९ | -०७ | -०६ | -०५ | -०३ | -०३ | -०३ | -०४ | -०५ |
| सूरतगढ (राज.) | -०६ | -०९ | -१० | -१० | -०७ | -०४ | -०१ | +०२ | +०३ | +०३ | ०० | -०३ |
| सोजत (राज.) | -०२ | -०२ | -०१ | -०२ | -०२ | -०२ | -०३ | -०३ | -०३ | -०३ | -०३ | -०३ |
| हैदराबाद (आंध्र) | -१४ | -०७ | -०३ | -०५ | -११ | -२० | -२८ | -३६ | -४० | -३८ | -३२ | -२३ |
| हरिद्वार (उत्तराखण्ड) | -२४ | -२७ | -२९ | -२८ | -२५ | -२२ | -१८ | -१४ | -१३ | -१४ | -१६ | -२० |
| होशंगाबाद (म.प्र.) | -१६ | -१३ | -११ | -१२ | -१४ | -१८ | -२१ | -२४ | -२६ | -२५ | -२३ | -१९ |
| हनुमानगढ (राज.) | -०८ | -११ | -१२ | -१२ | -०९ | -०६ | -०२ | +०१ | +०२ | +०२ | -०१ | -०४ |
| हिण्डौन (राज.) | -१६ | -१७ | -१६ | -१७ | -१६ | -१६ | -१६ | -१५ | -१५ | -१५ | -१५ | -१६ |
| हिसार (हरियाणा) | -१३ | -१६ | -१७ | -१७ | -१५ | -१२ | -०९ | -०६ | -०५ | -०५ | -०७ | -१० |
| हाथरस (उत्तरप्रदेश) | -२१ | -२२ | -२३ | -२३ | -२२ | -२० | -१९ | -१८ | -१७ | -१८ | -१९ | -२० |
| डिब्रुगढ (आसाम) | -८९ | -९० | -९० | -९० | -९० | -८८ | -८७ | -८६ | -८५ | -८५ | -८६ | -८७ |
| डेगाना (राज.) | -०५ | -०६ | -०६ | -०६ | -०६ | -०५ | -०४ | -०४ | -०४ | -०४ | -०४ | -०५ |
| डीडवाना (राज.) | -०७ | -०८ | -०८ | -०८ | -०७ | -०६ | -०५ | -०४ | -०४ | -०४ | -०५ | -०६ |
| डूंगरपुर (राज.) | -०१ | +०२ | +०२ | +०२ | ०० | -०२ | -०५ | -०७ | -०८ | -०७ | -०५ | -०३ |

**आपके लोकप्रिय–गणमान्य निर्णयसागरीय पंचांग में दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी** ● भारतीय स्टैण्डर्ड समय घन्टा–मिनिट समय अनुसार मुद्रित है। यह मेषादि द्वादश लग्न प्रवेश तथा समाप्ति का समय जोधपुर नगर का मान्य है। जोधपुर समय से भारतीय अन्य प्रमुख नगरों के इष्ट लग्न प्रवेश तथा समाप्ति का समय जानने हेतु इस २ पृष्ठीय सारिणी में द्वादश लग्नों का समय संस्कार मिनिटों में दिया गया है। ये इष्ट देशीय संस्कार चिन्हानुसार जोधपुर लग्न प्रवेश तथा समापन काल में धन + अथवा ऋण – करने से इष्ट नगर का सूक्ष्म लग्न काल विदित होगा। ● यथा उदाहरण – मुम्बई में १० अक्टूबर को वृषभ लग्न का प्रवेश काल जानना है, दिनांक १० अक्टूबर को जोधपुर में वृषभ लग्न रात्रि ८ घन्टा. १२मि. है तथा २ पृष्ठीय सारिणी कोष्ठक में मुम्बई के सामने वृषभ लग्न कोष्ठ में (+) १३ मिनट लिखे हैं एवं जोधपुर लग्न प्रवेश रात्रि ८ घण्टा १२ मि. में धन (+) योग करने पर (८।१२+०।१३)= ८ घण्टा २५ मिनिट पर मुम्बई में वृषभ लग्न प्रवेशकाल प्रारंभ होगा। ✸ एवमेव सभी इष्ट नगरीय तथा समीपस्थ नगर संभाग हेतु भी इसी प्रकार गणना अनुसार स्पष्ट ज्ञान होगा। ✸

## ● दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी – चैत्र शुक्ल संवत् २०८१ से प्रारंभ ●

### ❋ अप्रैल–२०२४ मासे दैनिक लग्नप्रवेश सारणी ❋ (समय - घंटा : मिनट)

| ★ तारीख | मेष प्रातः | वृषभ प्रातः | मिथुन दिवा | कर्क दिवा | सिंह दिवा | कन्या दिवा | तुला सायं | वृश्चिक रात्रि | धनु रात्रि | मकर रात्रि | कुम्भ रात्रि | मीन रात्रि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९ | ६:३७ | ८:१५ | १०:११ | १२:२५ | २:४३ | ४:५८ | ७:१३ | ९:३१ | ११:४७ | १:५१ | ३:३५ | ५:०५ |
| १० | ६:३३ | ८:११ | १०:०८ | १२:२१ | २:३९ | ४:५४ | ७:०९ | ९:२७ | ११:४४ | १:४७ | ३:३१ | ५:०१ |
| ११ | ६:२९ | ८:०७ | १०:०४ | १२:१७ | २:३५ | ४:५० | ७:०५ | ९:२३ | ११:४० | १:४३ | ३:२७ | ४:५८ |
| १२ | ६:२५ | ८:०३ | १०:०० | १२:१३ | २:३१ | ४:४६ | ७:०२ | ९:१९ | ११:३६ | १:३९ | ३:२४ | ४:५४ |
| १३ | ६:२१ | ७:५९ | ९:५६ | १२:०९ | २:२७ | ४:४३ | ६:५८ | ९:१५ | ११:३२ | १:३५ | ३:२० | ४:५० |
| १४ | ६:१७ | ७:५६ | ९:५२ | १२:०५ | २:२३ | ४:३९ | ६:५४ | ९:११ | ११:२८ | १:३२ | ३:१६ | ४:४६ |
| १५ | ६:१३ | ७:५२ | ९:४८ | १२:०१ | २:१९ | ४:३५ | ६:५० | ९:०८ | ११:२४ | १:२८ | ३:१२ | ४:४२ |
| १६ | ६:०९ | ७:४८ | ९:४४ | ११:५८ | २:१६ | ४:३१ | ६:४६ | ९:०४ | ११:२० | १:२४ | ३:०८ | ४:३८ |
| १७ | ६:०५ | ७:४४ | ९:४१ | ११:५४ | २:१२ | ४:२७ | ६:४२ | ९:०० | ११:१७ | १:२० | ३:०४ | ४:३५ |
| १८ | ६:०१ | ७:४० | ९:३७ | ११:५० | २:०८ | ४:२४ | ६:३९ | ८:५६ | ११:१३ | १:१६ | ३:०१ | ४:३१ |
| १९ | ५:५८ | ७:३६ | ९:३३ | ११:४६ | २:०४ | ४:२० | ६:३५ | ८:५२ | ११:०९ | १:१३ | २:५७ | ४:२७ |
| २० | ५:५१ | ७:३३ | ९:२९ | ११:४२ | २:०० | ४:१६ | ६:३१ | ८:४८ | ११:०५ | १:०९ | २:५३ | ४:२३ |
| २१ | ५:४६ | ७:२८ | ९:२५ | ११:३८ | १:५६ | ४:१२ | ६:२७ | ८:४४ | ११:०१ | १:०४ | २:४९ | ४:१९ |
| २२ | ५:४२ | ७:२४ | ९:२१ | ११:३४ | १:५२ | ४:०७ | ६:२२ | ८:४० | १०:५७ | १:०० | २:४५ | ४:१५ |
| २३ | ५:३८ | ७:२० | ९:१७ | ११:३० | १:४८ | ४:०३ | ६:१८ | ८:३६ | १०:५३ | १२:५६ | २:४० | ४:११ |
| २४ | ५:३४ | ७:१६ | ९:१३ | ११:२६ | १:४४ | ३:५९ | ६:१४ | ८:३२ | १०:४८ | १२:५२ | २:३६ | ४:०६ |
| २५ | ५:३० | ७:१२ | ९:०८ | ११:२२ | १:३९ | ३:५५ | ६:१० | ८:२८ | १०:४४ | १२:४८ | २:३२ | ४:०२ |
| २६ | ५:२६ | ७:०८ | ९:०४ | ११:१८ | १:३५ | ३:५१ | ६:०६ | ८:२४ | १०:४० | १२:४४ | २:२८ | ३:५८ |
| २७ | ५:२२ | ७:०४ | ९:०० | ११:१३ | १:३१ | ३:४७ | ६:०२ | ८:२० | १०:३६ | १२:४० | २:२४ | ३:५४ |
| २८ | ५:१८ | ७:०० | ८:५६ | ११:०९ | १:२७ | ३:४३ | ५:५८ | ८:१६ | १०:३२ | १२:३६ | २:२० | ३:५० |
| २९ | ५:१४ | ६:५६ | ८:५२ | ११:०५ | १:२३ | ३:३९ | ५:५४ | ८:११ | १०:२८ | १२:३२ | २:१६ | ३:४६ |
| ३० | ५:१० | ६:५२ | ८:४८ | ११:०१ | १:१९ | ३:३५ | ५:५० | ८:०७ | १०:२४ | १२:२८ | २:१२ | ३:४२ |

**● दैनिक लग्नसारणी स्पष्टता ●** प्रत्येक अंग्रेजी माह क्रम से प्रस्तुत है तथा प्रत्येक तारीख को मेषादि क्रम से लग्नों का प्रवेशकाल दिया है यथा– ९ मार्च, २०२४ को स्टैण्डर्ड समयानुसार प्रातः के ६:३७ से मेष लग्न प्रारम्भ तथा प्रातः के ८:१५ तक, यहां से वृषभ लग्न प्रारंभ एवं सभी हेतु यही क्रम समझें। लग्न प्रवेश राशियों के नीचे लिखे गए (प्रातः, दिवा, सायं एवं रात्रि) समयकाल को अंग्रेजी महीने की पहली तारीख के लग्न प्रवेश का दिशा–निर्देश समझें।

पता– निर्णय सागर पंचांग कार्यालय, नीमच (म.प्र.), फोन : ८९६४०९८६४०

### ❋ मई–२०२४ मासे दैनिक लग्नप्रवेश सारणी ❋ (समय - घंटा : मिनट)

| ★ तारीख | मेष प्रातः | वृषभ प्रातः | मिथुन प्रातः | कर्क दिवा | सिंह दिवा | कन्या दिवा | तुला दिवा | वृश्चिक रात्रि | धनु रात्रि | मकर रात्रि | कुम्भ रात्रि | मीन रात्रि | ★ तारीख |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ५:०६ | ६:४८ | ८:४४ | १०:५७ | १:१५ | ३:३१ | ५:४६ | ८:०३ | १०:२० | १२:२४ | २:०८ | ३:३८ | १ |
| २ | ५:०२ | ६:४४ | ८:४० | १०:५३ | १:११ | ३:२७ | ५:४२ | ७:५९ | १०:१६ | १२:२० | २:०४ | ३:३४ | २ |
| ३ | ४:५८ | ६:४० | ८:३६ | १०:४९ | १:०७ | ३:२३ | ५:३८ | ७:५६ | १०:१२ | १२:१६ | २:०० | ३:३० | ३ |
| ४ | ४:५४ | ६:३६ | ८:३२ | १०:४५ | १:०३ | ३:१९ | ५:३४ | ७:५२ | १०:०८ | १२:१२ | १:५६ | ३:२६ | ४ |
| ५ | ४:५० | ६:३२ | ८:२८ | १०:४१ | १२:५९ | ३:१५ | ५:३० | ७:४८ | १०:०४ | १२:०८ | १:५२ | ३:२२ | ५ |
| ६ | ४:४६ | ६:२८ | ८:२४ | १०:३८ | १२:५५ | ३:११ | ५:२६ | ७:४४ | १०:०० | १२:०४ | १:४८ | ३:१८ | ६ |
| ७ | ४:४२ | ६:२४ | ८:२० | १०:३४ | १२:५२ | ३:०७ | ५:२२ | ७:४० | ९:५६ | १२:०० | १:४४ | ३:१४ | ७ |
| ८ | ४:३८ | ६:२० | ८:१७ | १०:३० | १२:४८ | ३:०३ | ५:१८ | ७:३६ | ९:५३ | ११:५६ | १:४० | ३:१० | ८ |
| ९ | ४:३४ | ६:१६ | ८:१३ | १०:२६ | १२:४४ | २:५९ | ५:१४ | ७:३२ | ९:४९ | ११:५२ | १:३७ | ३:०७ | ९ |
| १० | ४:३० | ६:१२ | ८:०९ | १०:२२ | १२:४० | २:५६ | ५:११ | ७:२८ | ९:४५ | ११:४८ | १:३३ | ३:०३ | १० |
| ११ | ४:२७ | ६:०९ | ८:०५ | १०:१८ | १२:३६ | २:५२ | ५:०७ | ७:२४ | ९:४१ | ११:४५ | १:२९ | २:५९ | ११ |
| १२ | ४:२३ | ६:०५ | ८:०१ | १०:१५ | १२:३२ | २:४८ | ५:०३ | ७:२१ | ९:३७ | ११:४१ | १:२५ | २:५५ | १२ |
| १३ | ४:१९ | ६:०१ | ७:५८ | १०:११ | १२:२९ | २:४४ | ४:५९ | ७:१७ | ९:३३ | ११:३७ | १:२१ | २:५१ | १३ |
| १४ | ४:१५ | ५:५७ | ७:५४ | १०:०७ | १२:२५ | २:४० | ४:५५ | ७:१३ | ९:३० | ११:३३ | १:१८ | २:४८ | १४ |
| १५ | ४:१२ | ५:५३ | ७:५० | १०:०३ | १२:२१ | २:३७ | ४:५२ | ७:०९ | ९:२६ | ११:३० | १:१४ | २:४४ | १५ |
| १६ | ४:०८ | ५:४९ | ७:४६ | १०:०० | १२:१७ | २:३३ | ४:४८ | ७:०६ | ९:२२ | ११:२६ | १:१० | २:४० | १६ |
| १७ | ४:०४ | ५:४६ | ७:४३ | ९:५६ | १२:१४ | २:२९ | ४:४४ | ७:०२ | ९:१९ | ११:२२ | १:०६ | २:३६ | १७ |
| १८ | ४:०० | ५:४२ | ७:३९ | ९:५२ | १२:१० | २:२६ | ४:४१ | ६:५८ | ९:१५ | ११:१८ | १:०३ | २:३३ | १८ |
| १९ | ३:५७ | ५:३८ | ७:३५ | ९:४९ | १२:०६ | २:२२ | ४:३७ | ६:५५ | ९:११ | ११:१५ | १२:५९ | २:२९ | १९ |
| २० | ३:५३ | ५:३५ | ७:३२ | ९:४५ | १२:०३ | २:१८ | ४:३३ | ६:५१ | ९:०८ | ११:११ | १२:५५ | २:२६ | २० |
| २१ | ३:४९ | ५:२७ | ७:२८ | ९:४१ | ११:५९ | २:१४ | ४:२९ | ६:४७ | ९:०४ | ११:०७ | १२:५१ | २:२२ | २१ |
| २२ | ३:४५ | ५:२३ | ७:२४ | ९:३७ | ११:५५ | २:१० | ४:२५ | ६:४३ | ८:५९ | ११:०३ | १२:४७ | २:१७ | २२ |
| २३ | ३:४१ | ५:१९ | ७:१९ | ९:३२ | ११:५० | २:०६ | ४:२१ | ६:३९ | ८:५५ | १०:५९ | १२:४३ | २:१३ | २३ |
| २४ | ३:३७ | ५:१४ | ७:१५ | ९:२८ | ११:४६ | २:०२ | ४:१७ | ६:३४ | ८:५१ | १०:५५ | १२:३९ | २:०९ | २४ |
| २५ | ३:३२ | ५:१० | ७:११ | ९:२४ | ११:४२ | १:५८ | ४:१३ | ६:३० | ८:४७ | १०:५० | १२:३५ | २:०५ | २५ |
| २६ | ३:२८ | ५:०६ | ७:०७ | ९:२० | ११:३८ | १:५३ | ४:०८ | ६:२६ | ८:४३ | १०:४६ | १२:३१ | २:०१ | २६ |
| २७ | ३:२४ | ५:०२ | ७:०३ | ९:१६ | ११:३४ | १:४९ | ४:०४ | ६:२२ | ८:३९ | १०:४२ | १२:२६ | १:५७ | २७ |
| २८ | ३:२० | ४:५८ | ६:५९ | ९:१२ | ११:३० | १:४५ | ४:०० | ६:१८ | ८:३५ | १०:३८ | १२:२२ | १:५२ | २८ |
| २९ | ३:१६ | ४:५४ | ६:५४ | ९:०८ | ११:२६ | १:४१ | ३:५६ | ६:१४ | ८:३० | १०:३४ | १२:१८ | १:४८ | २९ |
| ३० | ३:१२ | ४:५० | ६:५० | ९:०४ | ११:२१ | १:३७ | ३:५२ | ६:१० | ८:२६ | १०:३० | १२:१४ | १:४४ | ३० |
| ३१ | ३:०८ | ४:४६ | ६:४६ | ९:०० | ११:१७ | १:३३ | ३:४८ | ६:०६ | ८:२२ | १०:२६ | १२:१० | १:४० | ३१ |

## ★ ❊ जून–२०२४ मासे दैनिक लग्नप्रवेश सारणी ❊ (समय - घंटा : मिनट)

| तारीख | मेष रात्रि | वृषभ रात्रि | मिथुन प्रातः | कर्क प्रातः | सिंह दिवा | कन्या दिवा | तुला दिवा | वृश्चिक दिवा | धनु रात्रि | मकर रात्रि | कुम्भ रात्रि | मीन रात्रि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ३:०४ | ४:४२ | ६:४२ | ८:५६ | ११:१३ | १:२९ | ३:४४ | ६:०२ | ८:१८ | १०:२२ | १२:०६ | १:३६ |
| २ | ३:०० | ४:३८ | ६:३८ | ८:५२ | ११:०९ | १:२५ | ३:४० | ५:५८ | ८:१४ | १०:१८ | १२:०२ | १:३२ |
| ३ | २:५६ | ४:३४ | ६:३४ | ८:४८ | ११:०५ | १:२१ | ३:३६ | ५:५४ | ८:१० | १०:१४ | ११:५८ | १:२८ |
| ४ | २:५२ | ४:३० | ६:३० | ८:४४ | ११:०१ | १:१७ | ३:३२ | ५:५० | ८:०६ | १०:१० | ११:५४ | १:२४ |
| ५ | २:४८ | ४:२६ | ६:२६ | ८:४० | १०:५८ | १:१३ | ३:२८ | ५:४६ | ८:०२ | १०:०६ | ११:५० | १:२० |
| ६ | २:४४ | ४:२२ | ६:२३ | ८:३६ | १०:५४ | १:०९ | ३:२४ | ५:४२ | ७:५८ | १०:०२ | ११:४६ | १:१६ |
| ७ | २:४० | ४:१८ | ६:१९ | ८:३२ | १०:५० | १:०५ | ३:२० | ५:३८ | ७:५५ | ९:५८ | ११:४२ | १:१२ |
| ८ | २:३६ | ४:१४ | ६:१५ | ८:२८ | १०:४६ | १:०१ | ३:१६ | ५:३४ | ७:५१ | ९:५४ | ११:३८ | १:०९ |
| ९ | २:३२ | ४:१० | ६:११ | ८:२४ | १०:४२ | १२:५८ | ३:१३ | ५:३० | ७:४७ | ९:५० | ११:३५ | १:०५ |
| १० | २:२९ | ४:०६ | ६:०७ | ८:२० | १०:३८ | १२:५४ | ३:०९ | ५:२६ | ७:४३ | ९:४७ | ११:३१ | १:०१ |
| ११ | २:२५ | ४:०३ | ६:०३ | ८:१६ | १०:३४ | १२:५० | ३:०५ | ५:२३ | ७:३९ | ९:४३ | ११:२७ | १२:५७ |
| १२ | २:२१ | ३:५९ | ५:५९ | ८:१३ | १०:३१ | १२:४६ | ३:०१ | ५:१९ | ७:३५ | ९:३९ | ११:२३ | १२:५३ |
| १३ | २:१७ | ३:५५ | ५:५६ | ८:०९ | १०:२७ | १२:४२ | २:५७ | ५:१५ | ७:३२ | ९:३५ | ११:१९ | १२:५० |
| १४ | २:१३ | ३:५१ | ५:५२ | ८:०५ | १०:२३ | १२:३९ | २:५४ | ५:११ | ७:२८ | ९:३१ | ११:१६ | १२:४६ |
| १५ | २:१० | ३:४८ | ५:४८ | ८:०१ | १०:१९ | १२:३५ | २:५० | ५:०७ | ७:२४ | ९:२८ | ११:१२ | १२:४२ |
| १६ | २:०६ | ३:४४ | ५:४५ | ७:५८ | १०:१६ | १२:३१ | २:४६ | ५:०४ | ७:२० | ९:२४ | ११:०८ | १२:३८ |
| १७ | २:०२ | ३:४० | ५:४१ | ७:५४ | १०:१२ | १२:२७ | २:४२ | ५:०० | ७:१७ | ९:२० | ११:०४ | १२:३५ |
| १८ | १:५९ | ३:३६ | ५:३७ | ७:५० | १०:०८ | १२:२४ | २:३९ | ४:५६ | ७:१३ | ९:१७ | ११:०१ | १२:३१ |
| १९ | १:५५ | ३:३३ | ५:३४ | ७:४७ | १०:०४ | १२:२० | २:३५ | ४:५३ | ७:०९ | ९:१३ | १०:५७ | १२:२७ |
| २० | १:५१ | ३:२९ | ५:३० | ७:४३ | १०:०१ | १२:१६ | २:३१ | ४:४९ | ७:०६ | ९:०९ | १०:५३ | १२:२४ |
| २१ | १:४८ | ३:२५ | ५:२२ | ७:३९ | ९:५७ | १२:१३ | २:२८ | ४:४५ | ७:०२ | ९:०५ | १०:५० | १२:२० |
| २२ | १:४३ | ३:२१ | ५:१८ | ७:३५ | ९:५३ | १२:०९ | २:२४ | ४:४१ | ६:५८ | ९:०१ | १०:४६ | १२:१६ |
| २३ | १:३९ | ३:१७ | ५:१४ | ७:३१ | ९:४९ | १२:०४ | २:१९ | ४:३७ | ६:५४ | ८:५७ | १०:४२ | १२:१२ |
| २४ | १:३५ | ३:१३ | ५:१० | ७:२७ | ९:४५ | १२:०० | २:१५ | ४:३३ | ६:५० | ८:५३ | १०:३७ | १२:०८ |
| २५ | १:३१ | ३:०९ | ५:०६ | ७:२३ | ९:४१ | ११:५६ | २:११ | ४:२९ | ६:४६ | ८:४९ | १०:३३ | १२:०३ |
| २६ | १:२७ | ३:०५ | ५:०२ | ७:१९ | ९:३७ | ११:५२ | २:०७ | ४:२५ | ६:४२ | ८:४५ | १०:२९ | ११:५९ |
| २७ | १:२३ | ३:०१ | ४:५८ | ७:१५ | ९:३३ | ११:४८ | २:०३ | ४:२१ | ६:३७ | ८:४१ | १०:२५ | ११:५५ |
| २८ | १:१९ | २:५७ | ४:५३ | ७:११ | ९:२९ | ११:४४ | १:५९ | ४:१७ | ६:३३ | ८:३७ | १०:२१ | ११:५१ |
| २९ | १:१५ | २:५३ | ४:४९ | ७:०७ | ९:२५ | ११:४० | १:५५ | ४:१३ | ६:२९ | ८:३३ | १०:१७ | ११:४७ |
| ३० | १:११ | २:४९ | ४:४५ | ७:०३ | ९:२१ | ११:३६ | १:५१ | ४:०९ | ६:२५ | ८:२९ | १०:१३ | ११:४३ |

पता– निर्णय सागर पंचांग कार्यालय, नीमच (म.प्र.), फोन : ८९६४०९८६४०

## ★ ❊ जुलाई–२०२४ मासे दैनिक लग्नप्रवेश सारणी ❊ (समय - घंटा : मिनट) ★

| तारीख | मेष रात्रि | वृषभ रात्रि | मिथुन रात्रि | कर्क प्रातः | सिंह दिवा | कन्या दिवा | तुला दिवा | वृश्चिक दिवा | धनु साय | मकर रात्रि | कुम्भ रात्रि | मीन रात्रि | तारीख |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १:०७ | २:४५ | ४:४१ | ६:५९ | ९:१७ | ११:३२ | १:४७ | ४:०५ | ६:२१ | ८:२५ | १०:०९ | ११:३९ | १ |
| २ | १:०३ | २:४१ | ४:३८ | ६:५५ | ९:१३ | ११:२८ | १:४३ | ४:०१ | ६:१७ | ८:२१ | १०:०५ | ११:३५ | २ |
| ३ | १२:५९ | २:३७ | ४:३४ | ६:५१ | ९:०९ | ११:२४ | १:३९ | ३:५७ | ६:१४ | ८:१७ | १०:०१ | ११:३१ | ३ |
| ४ | १२:५५ | २:३३ | ४:३० | ६:४७ | ९:०५ | ११:२० | १:३५ | ३:५३ | ६:१० | ८:१३ | ९:५७ | ११:२७ | ४ |
| ५ | १२:५१ | २:२९ | ४:२६ | ६:४३ | ९:०१ | ११:१६ | १:३१ | ३:४९ | ६:०६ | ८:०९ | ९:५३ | ११:२३ | ५ |
| ६ | १२:४७ | २:२५ | ४:२२ | ६:३९ | ८:५७ | ११:१२ | १:२७ | ३:४५ | ६:०२ | ८:०५ | ९:४९ | ११:२० | ६ |
| ७ | १२:४३ | २:२१ | ४:१८ | ६:३५ | ८:५३ | ११:०८ | १:२३ | ३:४१ | ५:५८ | ८:०१ | ९:४६ | ११:१६ | ७ |
| ८ | १२:३९ | २:१७ | ४:१४ | ६:३१ | ८:४९ | ११:०५ | १:२० | ३:३७ | ५:५४ | ७:५७ | ९:४२ | ११:१२ | ८ |
| ९ | १२:३५ | २:१३ | ४:१० | ६:२७ | ८:४५ | ११:०१ | १:१६ | ३:३३ | ५:५० | ७:५३ | ९:३८ | ११:०८ | ९ |
| १० | १२:३२ | २:०९ | ४:०६ | ६:२३ | ८:४१ | १०:५७ | १:१२ | ३:२९ | ५:४६ | ७:५० | ९:३४ | ११:०४ | १० |
| ११ | १२:२८ | २:०६ | ४:०२ | ६:१९ | ८:३७ | १०:५३ | १:०८ | ३:२६ | ५:४२ | ७:४६ | ९:३० | ११:०० | ११ |
| १२ | १२:२४ | २:०२ | ३:५८ | ६:१६ | ८:३३ | १०:४९ | १:०४ | ३:२२ | ५:३८ | ७:४२ | ९:२६ | १०:५६ | १२ |
| १३ | १२:२० | १:५८ | ३:५४ | ६:१२ | ८:२९ | १०:४५ | १:०० | ३:१८ | ५:३४ | ७:३८ | ९:२२ | १०:५२ | १३ |
| १४ | १२:१६ | १:५४ | ३:५१ | ६:०८ | ८:२६ | १०:४१ | १२:५६ | ३:१४ | ५:३१ | ७:३४ | ९:१८ | १०:४८ | १४ |
| १५ | १२:१२ | १:५० | ३:४७ | ६:०४ | ८:२२ | १०:३७ | १२:५२ | ३:१० | ५:२७ | ७:३० | ९:१४ | १०:४५ | १५ |
| १६ | १२:०८ | १:४६ | ३:४३ | ६:०० | ८:१८ | १०:३४ | १२:४९ | ३:०६ | ५:२३ | ७:२६ | ९:११ | १०:४१ | १६ |
| १७ | १२:०४ | १:४२ | ३:३९ | ५:५७ | ८:१४ | १०:३० | १२:४५ | ३:०२ | ५:१९ | ७:२२ | ९:०७ | १०:३७ | १७ |
| १८ | १२:०१ | १:३९ | ३:३५ | ५:५३ | ८:१० | १०:२६ | १२:४१ | २:५८ | ५:१५ | ७:१९ | ९:०३ | १०:३३ | १८ |
| १९ | ११:५७ | १:३५ | ३:३१ | ५:४९ | ८:०६ | १०:२२ | १२:३७ | २:५५ | ५:११ | ७:१५ | ८:५९ | १०:२९ | १९ |
| २० | ११:५३ | १:३१ | ३:२७ | ५:४५ | ८:०२ | १०:१८ | १२:३३ | २:५१ | ५:०७ | ७:११ | ८:५५ | १०:२५ | २० |
| २१ | ११:४९ | १:२७ | ३:२४ | ५:४१ | ७:५९ | १०:१४ | १२:२९ | २:४७ | ५:०४ | ७:०७ | ८:५१ | १०:२१ | २१ |
| २२ | ११:४५ | १:२३ | ३:२० | ५:३७ | ७:५५ | १०:१० | १२:२५ | २:४३ | ५:०० | ७:०३ | ८:४८ | १०:१८ | २२ |
| २३ | ११:४१ | १:१९ | ३:१६ | ५:२९ | ७:५१ | १०:०७ | १२:२२ | २:३९ | ४:५६ | ६:५९ | ८:४४ | १०:१४ | २३ |
| २४ | ११:३८ | १:१५ | ३:१२ | ५:२५ | ७:४७ | १०:०३ | १२:१८ | २:३५ | ४:५२ | ६:५५ | ८:४० | १०:१० | २४ |
| २५ | ११:३४ | १:१२ | ३:०८ | ५:२१ | ७:४३ | ९:५९ | १२:१४ | २:३१ | ४:४८ | ६:५२ | ८:३६ | १०:०६ | २५ |
| २६ | ११:३० | १:०८ | ३:०४ | ५:१७ | ७:३९ | ९:५५ | १२:१० | २:२८ | ४:४४ | ६:४८ | ८:३२ | १०:०२ | २६ |
| २७ | ११:२६ | १:०४ | ३:०० | ५:१४ | ७:३५ | ९:५१ | १२:०६ | २:२४ | ४:४० | ६:४४ | ८:२८ | ९:५८ | २७ |
| २८ | ११:२२ | १:०० | २:५६ | ५:१० | ७:३१ | ९:४७ | १२:०२ | २:२० | ४:३६ | ६:४० | ८:२४ | ९:५४ | २८ |
| २९ | ११:१८ | १२:५६ | २:५३ | ५:०६ | ७:२८ | ९:४३ | ११:५८ | २:१६ | ४:३२ | ६:३६ | ८:२० | ९:५० | २९ |
| ३० | ११:१४ | १२:५२ | २:४९ | ५:०२ | ७:२४ | ९:३९ | ११:५४ | २:१२ | ४:२९ | ६:३२ | ८:१६ | ९:४६ | ३० |
| ३१ | ११:१० | १२:४८ | २:४५ | ४:५८ | ७:२० | ९:३५ | ११:५० | २:०८ | ४:२५ | ६:२८ | ८:१२ | ९:४३ | ३१ |

## ❊ अगस्त–२०२४ मासे दैनिक लग्नप्रवेश सारणी ❊ (समय - घंटा : मिनट)

| ★ तारीख | मेष रात्रि | वृषभ रात्रि | मिथुन रात्रि | कर्क रात्रि | सिंह प्रातः | कन्या दिवा | तुला दिवा | वृश्चिक दिवा | धनु दिवा | मकर सायं | कुम्भ रात्रि | मीन रात्रि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ११:०६ | १२:४४ | २:४१ | ४:५४ | ७:१६ | ९:३२ | ११:४७ | २:०४ | ४:२१ | ६:२४ | ८:०९ | ९:३९ |
| २ | ११:०२ | १२:४० | २:३७ | ४:५० | ७:१२ | ९:२८ | ११:४३ | २:०० | ४:१७ | ६:२० | ८:०५ | ९:३५ |
| ३ | १०:५९ | १२:३६ | २:३३ | ४:४६ | ७:०८ | ९:२४ | ११:३९ | १:५६ | ४:१३ | ६:१६ | ८:०१ | ९:३१ |
| ४ | १०:५५ | १२:३३ | २:२९ | ४:४२ | ७:०४ | ९:२० | ११:३५ | १:५२ | ४:०९ | ६:१३ | ७:५७ | ९:२७ |
| ५ | १०:५१ | १२:२९ | २:२५ | ४:३८ | ७:०० | ९:१६ | ११:३१ | १:४९ | ४:०५ | ६:०९ | ७:५३ | ९:२३ |
| ६ | १०:४७ | १२:२५ | २:२१ | ४:३५ | ६:५६ | ९:१२ | ११:२७ | १:४५ | ४:०१ | ६:०५ | ७:४९ | ९:१९ |
| ७ | १०:४३ | १२:२१ | २:१७ | ४:३१ | ६:५२ | ९:०८ | ११:२३ | १:४१ | ३:५७ | ६:०१ | ७:४५ | ९:१५ |
| ८ | १०:३९ | १२:१७ | २:१३ | ४:२७ | ६:४९ | ९:०४ | ११:१९ | १:३७ | ३:५३ | ५:५७ | ७:४१ | ९:११ |
| ९ | १०:३५ | १२:१३ | २:१० | ४:२३ | ६:४५ | ९:०० | ११:१५ | १:३३ | ३:४९ | ५:५३ | ७:३७ | ९:०७ |
| १० | १०:३१ | १२:०९ | २:०६ | ४:१९ | ६:४१ | ८:५६ | ११:११ | १:२९ | ३:४६ | ५:४९ | ७:३३ | ९:०३ |
| ११ | १०:२७ | १२:०५ | २:०२ | ४:१५ | ६:३७ | ८:५२ | ११:०७ | १:२५ | ३:४२ | ५:४५ | ७:२९ | ९:०० |
| १२ | १०:२३ | १२:०१ | १:५८ | ४:११ | ६:३३ | ८:४८ | ११:०३ | १:२१ | ३:३८ | ५:४१ | ७:२५ | ८:५६ |
| १३ | १०:१९ | ११:५७ | १:५४ | ४:०७ | ६:२९ | ८:४५ | ११:०० | १:१७ | ३:३४ | ५:३७ | ७:२२ | ८:५२ |
| १४ | १०:१५ | ११:५३ | १:५० | ४:०३ | ६:२५ | ८:४१ | १०:५६ | १:१३ | ३:३० | ५:३३ | ७:१८ | ८:४८ |
| १५ | १०:११ | ११:४९ | १:४६ | ३:५९ | ६:२१ | ८:३७ | १०:५२ | १:०९ | ३:२६ | ५:२९ | ७:१४ | ८:४४ |
| १६ | १०:०७ | ११:४५ | १:४२ | ३:५५ | ६:१७ | ८:३३ | १०:४८ | १:०५ | ३:२२ | ५:२५ | ७:१० | ८:४० |
| १७ | १०:०४ | ११:४१ | १:३८ | ३:५१ | ६:१४ | ८:२९ | १०:४४ | १:०१ | ३:१८ | ५:२१ | ७:०६ | ८:३६ |
| १८ | १०:०० | ११:३७ | १:३४ | ३:४७ | ६:१० | ८:२५ | १०:४० | १२:५७ | ३:१४ | ५:१८ | ७:०२ | ८:३२ |
| १९ | ९:५६ | ११:३३ | १:३० | ३:४३ | ६:०६ | ८:२१ | १०:३६ | १२:५३ | ३:१० | ५:१४ | ६:५८ | ८:२८ |
| २० | ९:५२ | ११:३० | १:२६ | ३:३९ | ६:०२ | ८:१७ | १०:३२ | १२:४९ | ३:०६ | ५:१० | ६:५४ | ८:२४ |
| २१ | ९:४८ | ११:२६ | १:२२ | ३:३५ | ५:५८ | ८:१३ | १०:२८ | १२:४५ | ३:०२ | ५:०६ | ६:५० | ८:२० |
| २२ | ९:४४ | ११:२२ | १:१८ | ३:३१ | ५:५४ | ८:०९ | १०:२४ | १२:४१ | २:५८ | ५:०२ | ६:४६ | ८:१६ |
| २३ | ९:४० | ११:१८ | १:१४ | ३:२७ | ५:४५ | ८:०५ | १०:२० | १२:३७ | २:५४ | ४:५८ | ६:४२ | ८:१२ |
| २४ | ९:३६ | ११:१४ | १:१० | ३:२३ | ५:४१ | ८:०१ | १०:१६ | १२:३४ | २:५० | ४:५४ | ६:३८ | ८:०८ |
| २५ | ९:३२ | ११:१० | १:०६ | ३:२० | ५:३७ | ७:५७ | १०:१२ | १२:३० | २:४६ | ४:५० | ६:३४ | ८:०४ |
| २६ | ९:२८ | ११:०६ | १:०२ | ३:१६ | ५:३४ | ७:५३ | १०:०८ | १२:२६ | २:४२ | ४:४६ | ६:३० | ८:०० |
| २७ | ९:२४ | ११:०२ | १२:५९ | ३:१२ | ५:३० | ७:४९ | १०:०४ | १२:२२ | २:३९ | ४:४२ | ६:२६ | ७:५६ |
| २८ | ९:२० | १०:५८ | १२:५५ | ३:०८ | ५:२६ | ७:४५ | १०:०० | १२:१८ | २:३५ | ४:३८ | ६:२२ | ७:५२ |
| २९ | ९:१६ | १०:५४ | १२:५१ | ३:०४ | ५:२२ | ७:४१ | ९:५६ | १२:१४ | २:३१ | ४:३४ | ६:१८ | ७:४९ |
| ३० | ९:१२ | १०:५० | १२:४७ | ३:०० | ५:१८ | ७:३७ | ९:५२ | १२:१० | २:२७ | ४:३० | ६:१५ | ७:४५ |
| ३१ | ९:०८ | १०:४६ | १२:४३ | २:५६ | ५:१४ | ७:३४ | ९:४९ | १२:०६ | २:२३ | ४:२६ | ६:११ | ७:४१ |

## ❊ सितम्बर–२०२४ मासे दैनिक लग्नप्रवेश सारणी ❊ (समय - घंटा : मिनट)

| ★ तारीख | मेष रात्रि | वृषभ रात्रि | मिथुन रात्रि | कर्क रात्रि | सिंह रात्रि | कन्या प्रातः | तुला दिवा | वृश्चिक दिवा | धनु दिवा | मकर दिवा | कुम्भ सायं | मीन सायं | ★ तारीख |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ९:०४ | १०:४२ | १२:३९ | २:५२ | ५:१० | ७:३० | ९:४५ | १२:०२ | २:१९ | ४:२२ | ६:०७ | ७:३७ | १ |
| २ | ९:०० | १०:३८ | १२:३५ | २:४८ | ५:०६ | ७:२६ | ९:४१ | ११:५८ | २:१५ | ४:१८ | ६:०३ | ७:३३ | २ |
| ३ | ८:५७ | १०:३४ | १२:३१ | २:४४ | ५:०२ | ७:२२ | ९:३७ | ११:५४ | २:११ | ४:१५ | ५:५९ | ७:२९ | ३ |
| ४ | ८:५३ | १०:३० | १२:२७ | २:४० | ४:५८ | ७:१८ | ९:३३ | ११:५० | २:०७ | ४:११ | ५:५५ | ७:२५ | ४ |
| ५ | ८:४९ | १०:२७ | १२:२३ | २:३६ | ४:५४ | ७:१४ | ९:२९ | ११:४६ | २:०३ | ४:०७ | ५:५१ | ७:२१ | ५ |
| ६ | ८:४५ | १०:२३ | १२:१९ | २:३२ | ४:५० | ७:१० | ९:२५ | ११:४२ | १:५९ | ४:०३ | ५:४७ | ७:१७ | ६ |
| ७ | ८:४१ | १०:१९ | १२:१५ | २:२८ | ४:४६ | ७:०६ | ९:२१ | ११:३९ | १:५५ | ३:५९ | ५:४३ | ७:१३ | ७ |
| ८ | ८:३७ | १०:१५ | १२:११ | २:२४ | ४:४२ | ७:०२ | ९:१७ | ११:३५ | १:५१ | ३:५५ | ५:३९ | ७:०९ | ८ |
| ९ | ८:३३ | १०:११ | १२:०७ | २:२० | ४:३८ | ६:५८ | ९:१३ | ११:३१ | १:४७ | ३:५१ | ५:३५ | ७:०५ | ९ |
| १० | ८:२९ | १०:०७ | १२:०३ | २:१६ | ४:३४ | ६:५४ | ९:०९ | ११:२७ | १:४३ | ३:४७ | ५:३१ | ७:०१ | १० |
| ११ | ८:२५ | १०:०३ | ११:५९ | २:१२ | ४:३० | ६:५० | ९:०५ | ११:२३ | १:३९ | ३:४३ | ५:२७ | ६:५७ | ११ |
| १२ | ८:२१ | ९:५९ | ११:५५ | २:०९ | ४:२६ | ६:४६ | ९:०१ | ११:१९ | १:३५ | ३:३९ | ५:२३ | ६:५३ | १२ |
| १३ | ८:१७ | ९:५५ | ११:५१ | २:०५ | ४:२२ | ६:४२ | ८:५७ | ११:१५ | १:३१ | ३:३५ | ५:१९ | ६:४९ | १३ |
| १४ | ८:१३ | ९:५१ | ११:४७ | २:०१ | ४:१८ | ६:३८ | ८:५३ | ११:११ | १:२७ | ३:३१ | ५:१५ | ६:४५ | १४ |
| १५ | ८:०९ | ९:४७ | ११:४३ | १:५७ | ४:१४ | ६:३४ | ८:४९ | ११:०७ | १:२३ | ३:२७ | ५:११ | ६:४१ | १५ |
| १६ | ८:०५ | ९:४३ | ११:३९ | १:५३ | ४:१० | ६:३० | ८:४५ | ११:०३ | १:१९ | ३:२३ | ५:०७ | ६:३७ | १६ |
| १७ | ८:०१ | ९:३९ | ११:३५ | १:४९ | ४:०६ | ६:२६ | ८:४१ | १०:५९ | १:१५ | ३:१९ | ५:०३ | ६:३३ | १७ |
| १८ | ७:५७ | ९:३५ | ११:३१ | १:४५ | ४:०२ | ६:२२ | ८:३७ | १०:५५ | १:११ | ३:१५ | ४:५९ | ६:२९ | १८ |
| १९ | ७:५३ | ९:३१ | ११:२७ | १:४१ | ३:५८ | ६:१८ | ८:३३ | १०:५१ | १:०७ | ३:११ | ४:५५ | ६:२५ | १९ |
| २० | ७:४९ | ९:२७ | ११:२३ | १:३७ | ३:५४ | ६:१४ | ८:२९ | १०:४७ | १:०३ | ३:०७ | ४:५१ | ६:२१ | २० |
| २१ | ७:४५ | ९:२३ | ११:१९ | १:३३ | ३:५० | ६:१० | ८:२५ | १०:४३ | १२:५९ | ३:०३ | ४:४७ | ६:१७ | २१ |
| २२ | ७:४१ | ९:१९ | ११:१५ | १:२९ | ३:४६ | ६:०६ | ८:२१ | १०:३९ | १२:५५ | २:५९ | ४:४३ | ६:१३ | २२ |
| २३ | ७:३७ | ९:१५ | ११:११ | १:२५ | ३:४२ | ५:५८ | ८:१७ | १०:३५ | १२:५१ | २:५५ | ४:३९ | ६:०९ | २३ |
| २४ | ७:३३ | ९:११ | ११:०७ | १:२१ | ३:३८ | ५:५४ | ८:१३ | १०:३१ | १२:४७ | २:५१ | ४:३५ | ६:०५ | २४ |
| २५ | ७:२९ | ९:०७ | ११:०३ | १:१७ | ३:३४ | ५:५० | ८:०९ | १०:२७ | १२:४३ | २:४७ | ४:३१ | ६:०१ | २५ |
| २६ | ७:२५ | ९:०३ | १०:५९ | १:१३ | ३:३० | ५:४६ | ८:०५ | १०:२३ | १२:३९ | २:४३ | ४:२७ | ५:५७ | २६ |
| २७ | ७:२१ | ८:५९ | १०:५५ | १:०९ | ३:२६ | ५:४२ | ८:०१ | १०:१९ | १२:३५ | २:३९ | ४:२३ | ५:५३ | २७ |
| २८ | ७:१७ | ८:५५ | १०:५१ | १:०५ | ३:२२ | ५:३८ | ७:५७ | १०:१५ | १२:३१ | २:३५ | ४:१९ | ५:४९ | २८ |
| २९ | ७:१३ | ८:५१ | १०:४७ | १:०१ | ३:१८ | ५:३४ | ७:५३ | १०:११ | १२:२७ | २:३१ | ४:१५ | ५:४५ | २९ |
| ३० | ७:०९ | ८:४७ | १०:४३ | १२:५७ | ३:१४ | ५:३० | ७:४९ | १०:०७ | १२:२३ | २:२७ | ४:११ | ५:४१ | ३० |

पता– निर्णय सागर पंचांग कार्यालय, नीमच (म.प्र.), फोन : ८९६४०९८६४०

## ❊ अक्टूबर–२०२४ मासे दैनिक लग्नप्रवेश सारणी ❊ (समय - घंटा : मिनट)

| ★ तारीख | मेष सायं | वृषभ रात्रि | मिथुन रात्रि | कर्क रात्रि | सिंह रात्रि | कन्या रात्रि | तुला प्रातः | वृश्चिक दिवा | धनु दिवा | मकर दिवा | कुम्भ दिवा | मीन दिवा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ७:०५ | ८:४३ | १०:३९ | १२:५३ | ३:१० | ५:२६ | ७:४५ | १०:०३ | १२:१९ | २:२३ | ४:०७ | ५:३७ |
| २ | ७:०१ | ८:३९ | १०:३५ | १२:४९ | ३:०७ | ५:२२ | ७:४१ | ९:५९ | १२:१५ | २:१९ | ४:०३ | ५:३३ |
| ३ | ६:५७ | ८:३५ | १०:३१ | १२:४५ | ३:०३ | ५:१८ | ७:३७ | ९:५५ | १२:११ | २:१५ | ३:५९ | ५:२९ |
| ४ | ६:५३ | ८:३१ | १०:२७ | १२:४१ | २:५९ | ५:१४ | ७:३३ | ९:५१ | १२:०७ | २:११ | ३:५५ | ५:२५ |
| ५ | ६:४९ | ८:२७ | १०:२३ | १२:३७ | २:५५ | ५:१० | ७:२९ | ९:४७ | १२:०३ | २:०७ | ३:५१ | ५:२१ |
| ६ | ६:४५ | ८:२३ | १०:२० | १२:३३ | २:५१ | ५:०६ | ७:२५ | ९:४३ | ११:५९ | २:०३ | ३:४७ | ५:१७ |
| ७ | ६:४१ | ८:१९ | १०:१६ | १२:२९ | २:४७ | ५:०२ | ७:२१ | ९:३९ | ११:५६ | १:५९ | ३:४३ | ५:१३ |
| ८ | ६:३७ | ८:१५ | १०:१२ | १२:२५ | २:४३ | ४:५८ | ७:१७ | ९:३५ | ११:५२ | १:५५ | ३:३९ | ५:०९ |
| ९ | ६:३३ | ८:११ | १०:०८ | १२:२१ | २:३९ | ४:५४ | ७:१३ | ९:३१ | ११:४८ | १:५१ | ३:३५ | ५:०५ |
| १० | ६:२९ | ८:०७ | १०:०४ | १२:१७ | २:३५ | ४:५० | ७:०९ | ९:२७ | ११:४४ | १:४७ | ३:३१ | ५:०१ |
| ११ | ६:२५ | ८:०३ | १०:०० | १२:१३ | २:३१ | ४:४६ | ७:०५ | ९:२३ | ११:४० | १:४३ | ३:२७ | ४:५८ |
| १२ | ६:२१ | ७:५९ | ९:५६ | १२:०९ | २:२७ | ४:४२ | ७:०१ | ९:१९ | ११:३६ | १:३९ | ३:२३ | ४:५४ |
| १३ | ६:१७ | ७:५५ | ९:५२ | १२:०५ | २:२३ | ४:३९ | ६:५८ | ९:१५ | ११:३२ | १:३५ | ३:२० | ४:५० |
| १४ | ६:१३ | ७:५१ | ९:४८ | १२:०१ | २:१९ | ४:३५ | ६:५४ | ९:११ | ११:२८ | १:३१ | ३:१६ | ४:४६ |
| १५ | ६:०९ | ७:४७ | ९:४४ | ११:५७ | २:१५ | ४:३१ | ६:५० | ९:०७ | ११:२४ | १:२७ | ३:१२ | ४:४२ |
| १६ | ६:०५ | ७:४३ | ९:४० | ११:५३ | २:११ | ४:२७ | ६:४६ | ९:०३ | ११:२० | १:२३ | ३:०८ | ४:३८ |
| १७ | ६:०२ | ७:३९ | ९:३६ | ११:४९ | २:०७ | ४:२३ | ६:४२ | ८:५९ | ११:१६ | १:२० | ३:०४ | ४:३४ |
| १८ | ५:५८ | ७:३६ | ९:३२ | ११:४५ | २:०३ | ४:१९ | ६:३८ | ८:५५ | ११:१२ | १:१६ | ३:०० | ४:३० |
| १९ | ५:५४ | ७:३२ | ९:२८ | ११:४१ | १:५९ | ४:१५ | ६:३५ | ८:५२ | ११:०८ | १:१२ | २:५६ | ४:२६ |
| २० | ५:५० | ७:२८ | ९:२४ | ११:३८ | १:५५ | ४:११ | ६:३१ | ८:४८ | ११:०४ | १:०८ | २:५२ | ४:२२ |
| २१ | ५:४६ | ७:२४ | ९:२० | ११:३४ | १:५२ | ४:०७ | ६:२७ | ८:४४ | ११:०० | १:०४ | २:४८ | ४:१८ |
| २२ | ५:४२ | ७:२० | ९:१७ | ११:३० | १:४८ | ४:०३ | ६:२३ | ८:४० | १०:५७ | १:०० | २:४४ | ४:१४ |
| २३ | ५:३८ | ७:१६ | ९:१३ | ११:२६ | १:४४ | ३:५९ | ६:१४ | ८:३६ | १०:५३ | १२:५६ | २:४० | ४:१० |
| २४ | ५:३४ | ७:१२ | ९:०९ | ११:२२ | १:४० | ३:५५ | ६:१० | ८:३२ | १०:४९ | १२:५२ | २:३६ | ४:०७ |
| २५ | ५:३० | ७:०८ | ९:०५ | ११:१८ | १:३६ | ३:५१ | ६:०६ | ८:२८ | १०:४५ | १२:४८ | २:३२ | ४:०३ |
| २६ | ५:२६ | ७:०४ | ९:०१ | ११:१४ | १:३२ | ३:४७ | ६:०२ | ८:२४ | १०:४१ | १२:४४ | २:२८ | ३:५९ |
| २७ | ५:२२ | ७:०० | ८:५७ | ११:१० | १:२८ | ३:४३ | ५:५८ | ८:२० | १०:३७ | १२:४० | २:२४ | ३:५५ |
| २८ | ५:१८ | ६:५६ | ८:५३ | ११:०६ | १:२४ | ३:३९ | ५:५४ | ८:१६ | १०:३३ | १२:३६ | २:२० | ३:५१ |
| २९ | ५:१४ | ६:५२ | ८:४९ | ११:०२ | १:२० | ३:३५ | ५:५० | ८:१२ | १०:२९ | १२:३२ | २:१७ | ३:४७ |
| ३० | ५:१० | ६:४८ | ८:४५ | १०:५८ | १:१६ | ३:३२ | ५:४७ | ८:०८ | १०:२५ | १२:२८ | २:१३ | ३:४३ |
| ३१ | ५:०६ | ६:४४ | ८:४१ | १०:५४ | १:१२ | ३:२८ | ५:४३ | ८:०४ | १०:२१ | १२:२४ | २:०९ | ३:३९ |

## ❊ नवम्बर–२०२४ मासे दैनिक लग्नप्रवेश सारणी ❊ (समय - घंटा : मिनट)

| ★ तारीख | मेष दिवा | वृषभ सायं | मिथुन रात्रि | कर्क रात्रि | सिंह रात्रि | कन्या रात्रि | तुला रात्रि | वृश्चिक प्रातः | धनु दिवा | मकर दिवा | कुम्भ दिवा | मीन दिवा | ★ तारीख |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ५:०२ | ६:४० | ८:३७ | १०:५० | १:०८ | ३:२४ | ५:३९ | ८:०० | १०:१७ | १२:२० | २:०५ | ३:३५ | १ |
| २ | ४:५९ | ६:३६ | ८:३३ | १०:४६ | १:०४ | ३:२० | ५:३५ | ७:५६ | १०:१३ | १२:१६ | २:०१ | ३:३१ | २ |
| ३ | ४:५५ | ६:३२ | ८:२९ | १०:४२ | १:०० | ३:१६ | ५:३१ | ७:५२ | १०:०९ | १२:१३ | १:५७ | ३:२७ | ३ |
| ४ | ४:५१ | ६:२९ | ८:२५ | १०:३८ | १२:५६ | ३:१२ | ५:२७ | ७:४८ | १०:०५ | १२:०९ | १:५३ | ३:२३ | ४ |
| ५ | ४:४७ | ६:२५ | ८:२१ | १०:३४ | १२:५२ | ३:०८ | ५:२३ | ७:४५ | १०:०१ | १२:०५ | १:४९ | ३:१९ | ५ |
| ६ | ४:४३ | ६:२१ | ८:१७ | १०:३० | १२:४८ | ३:०४ | ५:१९ | ७:४१ | ९:५७ | १२:०१ | १:४५ | ३:१५ | ६ |
| ७ | ४:३९ | ६:१७ | ८:१३ | १०:२७ | १२:४४ | ३:०० | ५:१५ | ७:३७ | ९:५३ | ११:५७ | १:४१ | ३:११ | ७ |
| ८ | ४:३५ | ६:१३ | ८:०९ | १०:२३ | १२:४१ | २:५६ | ५:११ | ७:३३ | ९:४९ | ११:५३ | १:३७ | ३:०७ | ८ |
| ९ | ४:३१ | ६:०९ | ८:०६ | १०:१९ | १२:३७ | २:५२ | ५:०७ | ७:२९ | ९:४६ | ११:४९ | १:३३ | ३:०३ | ९ |
| १० | ४:२७ | ६:०५ | ८:०२ | १०:१५ | १२:३३ | २:४८ | ५:०३ | ७:२५ | ९:४२ | ११:४५ | १:२९ | ३:०० | १० |
| ११ | ४:२३ | ६:०१ | ७:५८ | १०:११ | १२:२९ | २:४४ | ४:५९ | ७:२१ | ९:३८ | ११:४१ | १:२६ | २:५६ | ११ |
| १२ | ४:१९ | ५:५७ | ७:५४ | १०:०७ | १२:२५ | २:४१ | ४:५६ | ७:१७ | ९:३४ | ११:३७ | १:२२ | २:५२ | १२ |
| १३ | ४:१५ | ५:५३ | ७:५० | १०:०३ | १२:२१ | २:३७ | ४:५२ | ७:१३ | ९:३० | ११:३३ | १:१८ | २:४८ | १३ |
| १४ | ४:१२ | ५:४९ | ७:४६ | ९:५९ | १२:१७ | २:३३ | ४:४८ | ७:०९ | ९:२६ | ११:३० | १:१४ | २:४४ | १४ |
| १५ | ४:०८ | ५:४६ | ७:४२ | ९:५५ | १२:१३ | २:२९ | ४:४४ | ७:०६ | ९:२२ | ११:२६ | १:१० | २:४० | १५ |
| १६ | ४:०४ | ५:४२ | ७:३८ | ९:५२ | १२:०९ | २:२५ | ४:४० | ७:०२ | ९:१८ | ११:२२ | १:०६ | २:३६ | १६ |
| १७ | ४:०० | ५:३८ | ७:३४ | ९:४८ | १२:०५ | २:२१ | ४:३६ | ६:५८ | ९:१४ | ११:१८ | १:०२ | २:३२ | १७ |
| १८ | ३:५६ | ५:३४ | ७:३१ | ९:४४ | १२:०२ | २:१७ | ४:३२ | ६:५५ | ९:१० | ११:१४ | १२:५८ | २:२८ | १८ |
| १९ | ३:५२ | ५:३० | ७:२७ | ९:४० | ११:५८ | २:१३ | ४:२८ | ६:५१ | ९:०७ | ११:१० | १२:५४ | २:२४ | १९ |
| २० | ३:४८ | ५:२६ | ७:२३ | ९:३६ | ११:५४ | २:०९ | ४:२४ | ६:४७ | ९:०३ | ११:०६ | १२:५० | २:२१ | २० |
| २१ | ३:४४ | ५:२२ | ७:१९ | ९:३२ | ११:५० | २:०६ | ४:२१ | ६:४३ | ८:५९ | ११:०२ | १२:४७ | २:१७ | २१ |
| २२ | ३:४० | ५:१८ | ७:१५ | ९:२८ | ११:४६ | २:०२ | ४:१७ | ६:३४ | ८:५५ | १०:५८ | १२:४३ | २:१३ | २२ |
| २३ | ३:३७ | ५:१५ | ७:११ | ९:२४ | ११:४२ | १:५८ | ४:१३ | ६:३० | ८:५१ | १०:५५ | १२:३९ | २:०९ | २३ |
| २४ | ३:३३ | ५:११ | ७:०७ | ९:२१ | ११:३८ | १:५४ | ४:०९ | ६:२७ | ८:४७ | १०:५१ | १२:३५ | २:०५ | २४ |
| २५ | ३:२९ | ५:०७ | ७:०३ | ९:१७ | ११:३५ | १:५० | ४:०५ | ६:२३ | ८:४३ | १०:४७ | १२:३१ | २:०१ | २५ |
| २६ | ३:२५ | ५:०३ | ७:०० | ९:१३ | ११:३१ | १:४६ | ४:०१ | ६:१९ | ८:४० | १०:४३ | १२:२७ | १:५७ | २६ |
| २७ | ३:२१ | ४:५९ | ६:५६ | ९:०९ | ११:२७ | १:४२ | ३:५८ | ६:१५ | ८:३६ | १०:३९ | १२:२४ | १:५४ | २७ |
| २८ | ३:१७ | ४:५५ | ६:५२ | ९:०५ | ११:२३ | १:३९ | ३:५४ | ६:११ | ८:३२ | १०:३५ | १२:२० | १:५० | २८ |
| २९ | ३:१४ | ४:५२ | ६:४८ | ९:०१ | ११:१९ | १:३५ | ३:५० | ६:०७ | ८:२८ | १०:३२ | १२:१६ | १:४६ | २९ |
| ३० | ३:१० | ४:४८ | ६:४४ | ८:५७ | ११:१५ | १:३१ | ३:४६ | ६:०४ | ८:२४ | १०:२८ | १२:१२ | १:४२ | ३० |

पता– निर्णय सागर पंचांग कार्यालय, नीमच (म.प्र.), फोन : ८९६४०९८६४०

## ✱दिसम्बर–२०२४ मासे दैनिक लग्नप्रवेश सारणी✱ (समय - घंटा : मिनट)

| ★ तारीख | मेष दिवा | वृषभ दिवा | मिथुन सायं | कर्क रात्रि | सिंह रात्रि | कन्या रात्रि | तुला रात्रि | वृश्चिक प्रातः | धनु दिवा | मकर दिवा | कुम्भ दिवा | मीन दिवा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ३:०६ | ४:४४ | ६:४० | ८:५४ | ११:११ | १:२७ | ३:४२ | ६:०० | ८:२० | १०:२४ | १२:०८ | १:३८ |
| २ | ३:०२ | ४:४० | ६:३७ | ८:५० | ११:०८ | १:२३ | ३:३८ | ५:५६ | ८:१६ | १०:२० | १२:०४ | १:३४ |
| ३ | २:५८ | ४:३६ | ६:३३ | ८:४६ | ११:०४ | १:१९ | ३:३४ | ५:५२ | ८:१३ | १०:१६ | १२:०० | १:३० |
| ४ | २:५४ | ४:३२ | ६:२९ | ८:४२ | ११:०० | १:१५ | ३:३० | ५:४८ | ८:०९ | १०:१२ | ११:५६ | १:२७ |
| ५ | २:५० | ४:२८ | ६:२५ | ८:३८ | १०:५६ | १:१२ | ३:२७ | ५:४४ | ८:०५ | १०:०८ | ११:५३ | १:२३ |
| ६ | २:४६ | ४:२४ | ६:२१ | ८:३४ | १०:५२ | १:०८ | ३:२३ | ५:४० | ८:०१ | १०:०४ | ११:४९ | १:१९ |
| ७ | २:४३ | ४:२० | ६:१७ | ८:३० | १०:४८ | १:०४ | ३:१९ | ५:३६ | ७:५७ | १०:०० | ११:४५ | १:१५ |
| ८ | २:३९ | ४:१६ | ६:१३ | ८:२६ | १०:४४ | १:०० | ३:१५ | ५:३२ | ७:५३ | ९:५७ | ११:४१ | १:११ |
| ९ | २:३५ | ४:१३ | ६:०९ | ८:२२ | १०:४० | १२:५६ | ३:११ | ५:२८ | ७:४९ | ९:५३ | ११:३७ | १:०७ |
| १० | २:३१ | ४:०९ | ६:०५ | ८:१८ | १०:३६ | १२:५२ | ३:०७ | ५:२४ | ७:४५ | ९:४९ | ११:३३ | १:०३ |
| ११ | २:२७ | ४:०५ | ६:०१ | ८:१४ | १०:३२ | १२:४८ | ३:०३ | ५:२१ | ७:४१ | ९:४५ | ११:२९ | १२:५९ |
| १२ | २:२३ | ४:०१ | ५:५७ | ८:१० | १०:२८ | १२:४४ | २:५९ | ५:१७ | ७:३७ | ९:४१ | ११:२५ | १२:५५ |
| १३ | २:१९ | ३:५७ | ५:५३ | ८:०६ | १०:२४ | १२:४० | २:५५ | ५:१३ | ७:३३ | ९:३७ | ११:२१ | १२:५१ |
| १४ | २:१५ | ३:५३ | ५:४९ | ८:०२ | १०:२० | १२:३६ | २:५१ | ५:०९ | ७:२९ | ९:३३ | ११:१७ | १२:४७ |
| १५ | २:११ | ३:४९ | ५:४५ | ७:५८ | १०:१६ | १२:३२ | २:४७ | ५:०५ | ७:२५ | ९:२९ | ११:१३ | १२:४३ |
| १६ | २:०७ | ३:४५ | ५:४१ | ७:५४ | १०:१२ | १२:२८ | २:४३ | ५:०० | ७:२२ | ९:२५ | ११:०९ | १२:३९ |
| १७ | २:०३ | ३:४१ | ५:३७ | ७:५० | १०:०८ | १२:२४ | २:३९ | ४:५६ | ७:१८ | ९:२१ | ११:०५ | १२:३५ |
| १८ | १:५९ | ३:३६ | ५:३३ | ७:४६ | १०:०४ | १२:२० | २:३५ | ४:५२ | ७:१३ | ९:१६ | ११:०१ | १२:३१ |
| १९ | १:५४ | ३:३२ | ५:२९ | ७:४२ | १०:०० | १२:१६ | २:३१ | ४:४८ | ७:०९ | ९:१२ | १०:५७ | १२:२७ |
| २० | १:५० | ३:२८ | ५:२५ | ७:३८ | ९:५६ | १२:११ | २:२७ | ४:४४ | ७:०५ | ९:०८ | १०:५३ | १२:२३ |
| २१ | १:४६ | ३:२४ | ५:२१ | ७:३४ | ९:५२ | १२:०७ | २:२२ | ४:४० | ७:०१ | ९:०४ | १०:४८ | १२:१९ |
| २२ | १:४२ | ३:२० | ५:१७ | ७:३० | ९:४८ | १२:०४ | २:१९ | ४:३६ | ६:५३ | ९:०० | १०:४५ | १२:१५ |
| २३ | १:३९ | ३:१७ | ५:१३ | ७:२६ | ९:४४ | १२:०० | २:१५ | ४:३३ | ६:४९ | ८:५७ | १०:४१ | १२:११ |
| २४ | १:३५ | ३:१३ | ५:१० | ७:२३ | ९:४१ | ११:५६ | २:११ | ४:२९ | ६:४६ | ८:५३ | १०:३७ | १२:०७ |
| २५ | १:३१ | ३:०९ | ५:०६ | ७:१९ | ९:३७ | ११:५३ | २:०८ | ४:२५ | ६:४२ | ८:४९ | १०:३४ | १२:०४ |
| २६ | १:२८ | ३:०६ | ५:०२ | ७:१५ | ९:३३ | ११:४९ | २:०४ | ४:२२ | ६:३८ | ८:४६ | १०:३० | १२:०० |
| २७ | १:२४ | ३:०२ | ४:५९ | ७:१२ | ९:३० | ११:४५ | २:०० | ४:१८ | ६:३५ | ८:४२ | १०:२६ | ११:५६ |
| २८ | १:२० | २:५८ | ४:५५ | ७:०८ | ९:२६ | ११:४२ | १:५७ | ४:१४ | ६:३१ | ८:३८ | १०:२३ | ११:५३ |
| २९ | १:१७ | २:५४ | ४:५१ | ७:०४ | ९:२२ | ११:३८ | १:५३ | ४:१० | ६:२७ | ८:३५ | १०:१९ | ११:४९ |
| ३० | १:१३ | २:५१ | ४:४७ | ७:०० | ९:१८ | ११:३४ | १:४९ | ४:०७ | ६:२३ | ८:३१ | १०:१५ | ११:४५ |
| ३१ | १:०९ | २:४७ | ४:४३ | ६:५७ | ९:१५ | ११:३० | १:४५ | ४:०३ | ६:१९ | ८:२७ | १०:११ | ११:४१ |

## ✱ जनवरी–२०२५ मासे दैनिक लग्नप्रवेश सारणी ✱ (समय - घंटा : मिनट)

| ★ तारीख | मेष दिवा | वृषभ दिवा | मिथुन दिवा | कर्क सायं | सिंह रात्रि | कन्या रात्रि | तुला रात्रि | वृश्चिक रात्रि | धनु रात्रि | मकर प्रातः | कुम्भ दिवा | मीन दिवा | ★ तारीख |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १:०५ | २:४३ | ४:४० | ६:५३ | ९:११ | ११:२६ | १:४१ | ३:५९ | ६:१६ | ८:२३ | १०:०७ | ११:३८ | १ |
| २ | १:०१ | २:३९ | ४:३६ | ६:४९ | ९:०७ | ११:२३ | १:३८ | ३:५५ | ६:१२ | ८:१९ | १०:०४ | ११:३४ | २ |
| ३ | १२:५७ | २:३५ | ४:३२ | ६:४५ | ९:०३ | ११:१९ | १:३४ | ३:५१ | ६:०८ | ८:१५ | १०:०० | ११:३० | ३ |
| ४ | १२:५४ | २:३१ | ४:२८ | ६:४१ | ८:५९ | ११:१५ | १:३० | ३:४७ | ६:०४ | ८:१२ | ९:५६ | ११:२६ | ४ |
| ५ | १२:५० | २:२८ | ४:२४ | ६:३७ | ८:५५ | ११:११ | १:२६ | ३:४३ | ६:०० | ८:०८ | ९:५२ | ११:२२ | ५ |
| ६ | १२:४६ | २:२४ | ४:२० | ६:३३ | ८:५१ | ११:०७ | १:२२ | ३:४० | ५:५६ | ८:०४ | ९:४८ | ११:१८ | ६ |
| ७ | १२:४२ | २:२० | ४:१६ | ६:२९ | ८:४७ | ११:०३ | १:१८ | ३:३६ | ५:५२ | ८:०० | ९:४४ | ११:१४ | ७ |
| ८ | १२:३८ | २:१६ | ४:१२ | ६:२५ | ८:४३ | १०:५९ | १:१४ | ३:३२ | ५:४८ | ७:५६ | ९:४० | ११:१० | ८ |
| ९ | १२:३४ | २:१२ | ४:०८ | ६:२१ | ८:३९ | १०:५५ | १:१० | ३:२८ | ५:४४ | ७:५२ | ९:३६ | ११:०६ | ९ |
| १० | १२:३० | २:०८ | ४:०४ | ६:१७ | ८:३५ | १०:५१ | १:०६ | ३:२४ | ५:४० | ७:४८ | ९:३२ | ११:०२ | १० |
| ११ | १२:२६ | २:०४ | ४:०० | ६:१३ | ८:३१ | १०:४७ | १:०२ | ३:१९ | ५:३६ | ७:४४ | ९:२८ | १०:५८ | ११ |
| १२ | १२:२२ | २:०० | ३:५६ | ६:०९ | ८:२७ | १०:४३ | १२:५८ | ३:१५ | ५:३२ | ७:४० | ९:२४ | १०:५४ | १२ |
| १३ | १२:१८ | १:५५ | ३:५२ | ६:०५ | ८:२३ | १०:३९ | १२:५४ | ३:११ | ५:२८ | ७:३५ | ९:२० | १०:५० | १३ |
| १४ | १२:१३ | १:५१ | ३:४८ | ६:०१ | ८:१९ | १०:३५ | १२:५० | ३:०७ | ५:२४ | ७:३१ | ९:१६ | १०:४६ | १४ |
| १५ | १२:०९ | १:४७ | ३:४४ | ५:५७ | ८:१५ | १०:३० | १२:४५ | ३:०३ | ५:२० | ७:२७ | ९:११ | १०:४२ | १५ |
| १६ | १२:०५ | १:४३ | ३:४० | ५:५३ | ८:११ | १०:२६ | १२:४१ | २:५९ | ५:१६ | ७:२३ | ९:०७ | १०:३७ | १६ |
| १७ | १२:०१ | १:३९ | ३:३५ | ५:४९ | ८:०६ | १०:२२ | १२:३७ | २:५५ | ५:११ | ७:१९ | ९:०३ | १०:३३ | १७ |
| १८ | ११:५७ | १:३५ | ३:३१ | ५:४४ | ८:०२ | १०:१८ | १२:३३ | २:५० | ५:०७ | ७:१४ | ८:५९ | १०:२९ | १८ |
| १९ | ११:५२ | १:३० | ३:२७ | ५:४० | ७:५८ | १०:१४ | १२:२९ | २:४६ | ५:०३ | ७:१० | ८:५५ | १०:२५ | १९ |
| २० | ११:४८ | १:२६ | ३:२३ | ५:३६ | ७:५४ | १०:०९ | १२:२४ | २:४२ | ४:५९ | ७:०२ | ८:५० | १०:२१ | २० |
| २१ | ११:४५ | १:२३ | ३:१९ | ५:३२ | ७:५० | १०:०६ | १२:२१ | २:३८ | ४:५५ | ६:५९ | ८:४७ | १०:१७ | २१ |
| २२ | ११:४१ | १:१९ | ३:१६ | ५:२९ | ७:४७ | १०:०२ | १२:१७ | २:३५ | ४:५१ | ६:५५ | ८:४३ | १०:१३ | २२ |
| २३ | ११:३७ | १:१५ | ३:१२ | ५:२५ | ७:४३ | ९:५९ | १२:१४ | २:३१ | ४:४८ | ६:५१ | ८:४० | १०:१० | २३ |
| २४ | ११:३४ | १:१२ | ३:०८ | ५:२१ | ७:३९ | ९:५५ | १२:१० | २:२८ | ४:४४ | ६:४८ | ८:३६ | १०:०६ | २४ |
| २५ | ११:३० | १:०८ | ३:०४ | ५:१८ | ७:३६ | ९:५१ | १२:०६ | २:२४ | ४:४० | ६:४४ | ८:३२ | १०:०२ | २५ |
| २६ | ११:२६ | १:०४ | ३:०१ | ५:१४ | ७:३२ | ९:४७ | १२:०२ | २:२० | ४:३७ | ६:४० | ८:२८ | ९:५९ | २६ |
| २७ | ११:२२ | १:०० | २:५७ | ५:१० | ७:२८ | ९:४४ | ११:५९ | २:१६ | ४:३३ | ६:३६ | ८:२५ | ९:५५ | २७ |
| २८ | ११:१९ | १२:५७ | २:५३ | ५:०६ | ७:२४ | ९:४० | ११:५५ | २:१३ | ४:२९ | ६:३३ | ८:२१ | ९:५१ | २८ |
| २९ | ११:१५ | १२:५३ | २:४९ | ५:०३ | ७:२० | ९:३६ | ११:५१ | २:०९ | ४:२५ | ६:२९ | ८:१७ | ९:४७ | २९ |
| ३० | ११:११ | १२:४९ | २:४६ | ४:५९ | ७:१७ | ९:३२ | ११:४७ | २:०५ | ४:२२ | ६:२५ | ८:१३ | ९:४३ | ३० |
| ३१ | ११:०७ | १२:४५ | २:४२ | ४:५५ | ७:१३ | ९:२८ | ११:४३ | २:०१ | ४:१८ | ६:२१ | ८:१० | ९:४० | ३१ |

## ★ ❊ फरवरी–२०२५ मासे दैनिक लग्नप्रवेश सारणी ❊ (समय - घंटा : मिनट)

| तारीख | मेष दिवा | वृषभ दिवा | मिथुन दिवा | कर्क दिवा | सिंह सायं | कन्या रात्रि | तुला रात्रि | वृश्चिक रात्रि | धनु रात्रि | मकर प्रातः | कुम्भ प्रातः | मीन दिवा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ११:०३ | १२:४१ | २:३८ | ४:५१ | ७:०९ | ९:२५ | ११:४० | १:५७ | ४:१४ | ६:१७ | ८:०६ | ९:३६ |
| २ | ११:०० | १२:३७ | २:३४ | ४:४७ | ७:०५ | ९:२१ | ११:३६ | १:५३ | ४:१० | ६:१४ | ८:०२ | ९:३२ |
| ३ | १०:५६ | १२:३४ | २:३० | ४:४३ | ७:०१ | ९:१७ | ११:३२ | १:४९ | ४:०६ | ६:१० | ७:५८ | ९:२८ |
| ४ | १०:५२ | १२:३० | २:२६ | ४:३९ | ६:५७ | ९:१३ | ११:२८ | १:४६ | ४:०२ | ६:०६ | ७:५४ | ९:२४ |
| ५ | १०:४८ | १२:२६ | २:२२ | ४:३५ | ६:५३ | ९:०९ | ११:२४ | १:४२ | ३:५८ | ६:०२ | ७:५० | ९:२० |
| ६ | १०:४४ | १२:२२ | २:१८ | ४:३१ | ६:४९ | ९:०५ | ११:२० | १:३८ | ३:५४ | ५:५८ | ७:४६ | ९:१६ |
| ७ | १०:४० | १२:१८ | २:१४ | ४:२८ | ६:४५ | ९:०१ | ११:१६ | १:३४ | ३:५० | ५:५४ | ७:४२ | ९:१२ |
| ८ | १०:३६ | १२:१४ | २:१० | ४:२४ | ६:४१ | ८:५७ | ११:१२ | १:३० | ३:४६ | ५:५० | ७:३८ | ९:०८ |
| ९ | १०:३२ | १२:१० | २:०६ | ४:१९ | ६:३७ | ८:५३ | ११:०८ | १:२६ | ३:४२ | ५:४६ | ७:३४ | ९:०४ |
| १० | १०:२८ | १२:०६ | २:०२ | ४:१५ | ६:३३ | ८:४९ | ११:०४ | १:२२ | ३:३८ | ५:४२ | ७:३० | ९:०० |
| ११ | १०:२४ | १२:०२ | १:५८ | ४:११ | ६:२९ | ८:४५ | ११:०० | १:१८ | ३:३४ | ५:३८ | ७:२६ | ८:५६ |
| १२ | १०:२० | ११:५८ | १:५४ | ४:०७ | ६:२५ | ८:४१ | १०:५६ | १:१३ | ३:३० | ५:३४ | ७:२२ | ८:५२ |
| १३ | १०:१६ | ११:५३ | १:५० | ४:०३ | ६:२१ | ८:३७ | १०:५२ | १:०९ | ३:२६ | ५:२९ | ७:१७ | ८:४८ |
| १४ | १०:११ | ११:४९ | १:४६ | ३:५९ | ६:१७ | ८:३३ | १०:४८ | १:०५ | ३:२२ | ५:२५ | ७:१३ | ८:४४ |
| १५ | १०:०७ | ११:४५ | १:४२ | ३:५५ | ६:१३ | ८:२८ | १०:४३ | १:०१ | ३:१८ | ५:२१ | ७:०९ | ८:४० |
| १६ | १०:०३ | ११:४१ | १:३८ | ३:५१ | ६:०९ | ८:२४ | १०:३९ | १२:५७ | ३:१४ | ५:१७ | ७:०५ | ८:३५ |
| १७ | ९:५९ | ११:३७ | १:३३ | ३:४७ | ६:०५ | ८:२० | १०:३५ | १२:५३ | ३:०९ | ५:१३ | ७:०० | ८:३१ |
| १८ | ९:५५ | ११:३३ | १:२९ | ३:४२ | ६:०० | ८:१६ | १०:३१ | १२:४९ | ३:०५ | ५:०९ | ६:५६ | ८:२७ |
| १९ | ९:५१ | ११:२९ | १:२५ | ३:३९ | ५:५६ | ८:१२ | १०:२७ | १२:४५ | ३:०१ | ५:०५ | ६:४९ | ८:२३ |
| २० | ९:४७ | ११:२५ | १:२२ | ३:३५ | ५:५३ | ८:०८ | १०:२३ | १२:४१ | २:५८ | ५:०१ | ६:४५ | ८:१९ |
| २१ | ९:४३ | ११:२१ | १:१८ | ३:३१ | ५:४९ | ८:०४ | १०:१९ | १२:३७ | २:५४ | ४:५७ | ६:४२ | ८:१६ |
| २२ | ९:३९ | ११:१७ | १:१४ | ३:२७ | ५:४५ | ८:०१ | १०:१६ | १२:३३ | २:५० | ४:५३ | ६:३८ | ८:१२ |
| २३ | ९:३६ | ११:१४ | १:१० | ३:२३ | ५:४१ | ७:५७ | १०:१२ | १२:२९ | २:४६ | ४:५० | ६:३४ | ८:०८ |
| २४ | ९:३२ | ११:१० | १:०६ | ३:२० | ५:३७ | ७:५३ | १०:०८ | १२:२६ | २:४२ | ४:४६ | ६:३० | ८:०४ |
| २५ | ९:२८ | ११:०६ | १:०२ | ३:१६ | ५:३४ | ७:४९ | १०:०४ | १२:२२ | २:३८ | ४:४२ | ६:२६ | ८:०० |
| २६ | ९:२४ | ११:०२ | १२:५९ | ३:१२ | ५:३० | ७:४५ | १०:०० | १२:१८ | २:३५ | ४:३८ | ६:२२ | ७:५६ |
| २७ | ९:२० | १०:५८ | १२:५५ | ३:०८ | ५:२६ | ७:४१ | ९:५६ | १२:१४ | २:३१ | ४:३४ | ६:१८ | ७:५३ |
| २८ | ९:१६ | १०:५४ | १२:५१ | ३:०४ | ५:२२ | ७:३८ | ९:५३ | १२:१० | २:२७ | ४:३० | ६:१५ | ७:४९ |

● **दैनिक लग्नसारणी स्पष्टता** ● प्रत्येक अंग्रेजी माह क्रम से प्रस्तुत है तथा प्रत्येक तारीख को मेषादि क्रम से लग्नों का प्रवेशकाल दिया है यथा–१ फरवरी, २०२५ को स्टैण्डर्ड समयानुसार दिन के ११:०३ से मेष लग्न प्रारम्भ तथा दिन के १२:४१ तक, यहां से वृषभ लग्न प्रारंभ एवं सभी हेतु यही क्रम समझें। ● **निर्णयसागर पंचांग कार्यालय, नीमच (म.प्र.)**

## ★ ❊ मार्च–२०२५ मासे दैनिक लग्नप्रवेश सारणी ❊ (समय - घंटा : मिनट) ★

| तारीख | मेष दिवा | वृषभ दिवा | मिथुन दिवा | कर्क दिवा | सिंह दिवा | कन्या सायं | तुला रात्रि | वृश्चिक रात्रि | धनु रात्रि | मकर रात्रि | कुम्भ रात्रि | मीन प्रातः | तारीख |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ९:१२ | १०:५० | १२:४७ | ३:०० | ५:१८ | ७:३४ | ९:४९ | १२:०६ | २:२३ | ४:२६ | ६:११ | ७:४५ | १ |
| २ | ९:०९ | १०:४६ | १२:४३ | २:५६ | ५:१४ | ७:३० | ९:४५ | १२:०२ | २:१९ | ४:२३ | ६:०७ | ७:४१ | २ |
| ३ | ९:०५ | १०:४३ | १२:३९ | २:५२ | ५:१० | ७:२६ | ९:४१ | ११:५८ | २:१५ | ४:१९ | ६:०३ | ७:३७ | ३ |
| ४ | ९:०१ | १०:३९ | १२:३५ | २:४८ | ५:०६ | ७:२२ | ९:३७ | ११:५५ | २:११ | ४:१५ | ५:५९ | ७:३३ | ४ |
| ५ | ८:५७ | १०:३५ | १२:३१ | २:४४ | ५:०२ | ७:१८ | ९:३३ | ११:५१ | २:०७ | ४:११ | ५:५५ | ७:२९ | ५ |
| ६ | ८:५३ | १०:३१ | १२:२७ | २:४१ | ४:५८ | ७:१४ | ९:२९ | ११:४७ | २:०३ | ४:०७ | ५:५१ | ७:२५ | ६ |
| ७ | ८:४९ | १०:२७ | १२:२३ | २:३७ | ४:५४ | ७:१० | ९:२५ | ११:४३ | १:५९ | ४:०३ | ५:४७ | ७:२१ | ७ |
| ८ | ८:४५ | १०:२३ | १२:१९ | २:३३ | ४:५१ | ७:०६ | ९:२१ | ११:३९ | १:५५ | ३:५९ | ५:४३ | ७:१७ | ८ |
| ९ | ८:४१ | १०:१९ | १२:१६ | २:२९ | ४:४७ | ७:०२ | ९:१७ | ११:३५ | १:५१ | ३:५५ | ५:३९ | ७:१३ | ९ |
| १० | ८:३७ | १०:१५ | १२:१२ | २:२५ | ४:४३ | ६:५८ | ९:१३ | ११:३१ | १:४८ | ३:५१ | ५:३५ | ७:०९ | १० |
| ११ | ८:३३ | १०:११ | १२:०८ | २:२१ | ४:३९ | ६:५४ | ९:०९ | ११:२७ | १:४४ | ३:४७ | ५:३१ | ७:०५ | ११ |
| १२ | ८:२९ | १०:०७ | १२:०४ | २:१७ | ४:३५ | ६:५० | ९:०५ | ११:२३ | १:४० | ३:४३ | ५:२७ | ७:०१ | १२ |
| १३ | ८:२५ | १०:०३ | १२:०० | २:१३ | ४:३१ | ६:४६ | ९:०१ | ११:१९ | १:३६ | ३:३९ | ५:२३ | ६:५७ | १३ |
| १४ | ८:२१ | ९:५९ | ११:५६ | २:०९ | ४:२७ | ६:४२ | ८:५७ | ११:१५ | १:३२ | ३:३५ | ५:१९ | ६:५३ | १४ |
| १५ | ८:१७ | ९:५५ | ११:५२ | २:०५ | ४:२३ | ६:३८ | ८:५३ | ११:११ | १:२८ | ३:३१ | ५:१५ | ६:४८ | १५ |
| १६ | ८:१३ | ९:५१ | ११:४८ | २:०१ | ४:१९ | ६:३४ | ८:४९ | ११:०७ | १:२४ | ३:२७ | ५:११ | ६:४४ | १६ |
| १७ | ८:०९ | ९:४७ | ११:४४ | १:५७ | ४:१५ | ६:३० | ८:४५ | ११:०३ | १:२० | ३:२३ | ५:०७ | ६:४० | १७ |
| १८ | ८:०५ | ९:४३ | ११:४० | १:५३ | ४:११ | ६:२६ | ८:४१ | १०:५९ | १:१६ | ३:१९ | ५:०३ | ६:३६ | १८ |
| १९ | ८:०१ | ९:३९ | ११:३६ | १:४९ | ४:०७ | ६:२२ | ८:३७ | १०:५५ | १:१२ | ३:१५ | ४:५९ | ६:३२ | १९ |
| २० | ७:५७ | ९:३५ | ११:३२ | १:४५ | ४:०३ | ६:१८ | ८:३३ | १०:५१ | १:०८ | ३:११ | ४:५५ | ६:२८ | २० |
| २१ | ७:५३ | ९:३१ | ११:२८ | १:४१ | ३:५९ | ६:१४ | ८:२९ | १०:४७ | १:०४ | ३:०७ | ४:५१ | ६:२२ | २१ |
| २२ | ७:४९ | ९:२७ | ११:२४ | १:३७ | ३:५५ | ६:१० | ८:२५ | १०:४३ | १:०० | ३:०३ | ४:४७ | ६:१८ | २२ |
| २३ | ७:४५ | ९:२३ | ११:२० | १:३३ | ३:५१ | ६:०६ | ८:२१ | १०:३९ | १२:५६ | २:५९ | ४:४३ | ६:१४ | २३ |
| २४ | ७:४१ | ९:१९ | ११:१६ | १:२९ | ३:४७ | ६:०२ | ८:१७ | १०:३५ | १२:५२ | २:५५ | ४:३९ | ६:१० | २४ |
| २५ | ७:३७ | ९:१५ | ११:१२ | १:२५ | ३:४३ | ५:५८ | ८:१३ | १०:३१ | १२:४८ | २:५१ | ४:३५ | ६:०६ | २५ |
| २६ | ७:३३ | ९:११ | ११:०८ | १:२१ | ३:३९ | ५:५४ | ८:०९ | १०:२७ | १२:४४ | २:४७ | ४:३१ | ६:०२ | २६ |
| २७ | ७:२९ | ९:०७ | ११:०४ | १:१७ | ३:३५ | ५:५० | ८:०५ | १०:२३ | १२:४० | २:४३ | ४:२७ | ५:५८ | २७ |
| २८ | ७:२५ | ९:०३ | ११:०० | १:१३ | ३:३१ | ५:४६ | ८:०१ | १०:१९ | १२:३६ | २:३९ | ४:२३ | ५:५४ | २८ |
| २९ | ७:२१ | ८:५९ | १०:५६ | १:०९ | ३:२७ | ५:४२ | ७:५८ | १०:१५ | १२:३२ | २:३५ | ४:२० | ५:५० | २९ |

**पता– निर्णय सागर पंचांग कार्यालय, नीमच (म.प्र.), फोन : ८९६४०९८६४०**

## उत्तर अक्षांश ८ से ३६ पर्यन्त मिनिटात्मक चरान्तर फल कौष्टक

उपकरण-उत्तर क्रांति में मिनट + धन    दक्षिण क्रांति में मिनिट - ऋण

| क्रांति | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अंश | मिनिट | | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ०१ | ०२ | ०२ | ०२ | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० |
| ०२ | ०३ | ०३ | ०३ | ०२ | ०२ | ०२ | ०२ | ०२ | ०२ | ०२ | ०२ | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०० | ०० | ०० |
| ०३ | ०४ | ०४ | ०४ | ०४ | ०३ | ०३ | ०३ | ०३ | ०३ | ०३ | ०२ | ०२ | ०२ | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०० | ०० |
| ०४ | ०६ | ०५ | ०५ | ०५ | ०४ | ०४ | ०४ | ०४ | ०३ | ०३ | ०३ | ०२ | ०२ | ०२ | ०१ | ०१ | ०१ | ०० | ०० |
| ०५ | ०७ | ०७ | ०६ | ०६ | ०५ | ०५ | ०५ | ०५ | ०४ | ०४ | ०३ | ०३ | ०३ | ०२ | ०२ | ०१ | ०१ | ०१ | ०० |
| ०६ | ०८ | ०८ | ०८ | ०७ | ०६ | ०६ | ०६ | ०५ | ०५ | ०५ | ०४ | ०४ | ०३ | ०३ | ०२ | ०२ | ०१ | ०१ | ०० |
| ०७ | १० | ०९ | ०९ | ०८ | ०८ | ०७ | ०७ | ०६ | ०६ | ०५ | ०५ | ०४ | ०४ | ०३ | ०२ | ०२ | ०१ | ०१ | ०० |
| ०८ | ११ | १० | १० | १० | ०९ | ०८ | ०८ | ०७ | ०७ | ०६ | ०५ | ०५ | ०४ | ०४ | ०३ | ०२ | ०२ | ०१ | ०० |
| ०९ | १३ | १२ | १२ | ११ | १० | ०९ | ०९ | ०८ | ०८ | ०७ | ०६ | ०५ | ०५ | ०४ | ०३ | ०३ | ०२ | ०१ | ०० |
| १० | १४ | १४ | १३ | १२ | ११ | ११ | १० | ०९ | ०८ | ०८ | ०७ | ०६ | ०५ | ०५ | ०४ | ०३ | ०२ | ०१ | ०० |
| ११ | १६ | १५ | १४ | १३ | १२ | १२ | ११ | १० | ०९ | ०८ | ०८ | ०७ | ०६ | ०५ | ०४ | ०३ | ०२ | ०१ | ०० |
| १२ | १७ | १६ | १६ | १५ | १४ | १३ | १२ | ११ | १० | ०९ | ०८ | ०७ | ०६ | ०५ | ०४ | ०३ | ०२ | ०१ | ०० |
| १३ | १९ | १८ | १७ | १६ | १५ | १४ | १३ | १२ | ११ | १० | ०९ | ०८ | ०७ | ०६ | ०५ | ०४ | ०३ | ०१ | ०० |
| १४ | २० | १९ | १८ | १७ | १६ | १५ | १४ | १३ | १२ | ११ | ०९ | ०८ | ०७ | ०६ | ०५ | ०४ | ०३ | ०२ | ०० |
| १५ | २२ | २० | १९ | १८ | १७ | १६ | १५ | १४ | १३ | १२ | १० | ०९ | ०८ | ०७ | ०५ | ०४ | ०३ | ०२ | ०० |
| १६ | २३ | २२ | २१ | २० | १९ | १७ | १६ | १५ | १३ | १२ | ११ | १० | ०८ | ०७ | ०६ | ०४ | ०३ | ०२ | ०० |
| १७ | २४ | २३ | २२ | २१ | २० | १८ | १७ | १६ | १४ | १३ | १२ | १० | ०९ | ०८ | ०६ | ०५ | ०३ | ०२ | ०० |
| १८ | २६ | २५ | २३ | २२ | २१ | १९ | १८ | १७ | १५ | १४ | १२ | ११ | १० | ०८ | ०६ | ०५ | ०३ | ०२ | ०० |
| १९ | २८ | २६ | २५ | २३ | २२ | २० | १९ | १८ | १६ | १५ | १३ | १२ | १० | ०८ | ०७ | ०५ | ०४ | ०२ | ०० |
| २० | २९ | २८ | २६ | २५ | २३ | २१ | २० | १८ | १७ | १५ | १४ | १२ | ११ | ०९ | ०७ | ०५ | ०४ | ०२ | ०० |
| २१ | ३१ | २९ | २८ | २६ | २४ | २३ | २१ | १९ | १८ | १६ | १४ | १३ | ११ | ०९ | ०७ | ०६ | ०४ | ०२ | ०० |
| २२ | ३३ | ३१ | २९ | २८ | २६ | २४ | २२ | २० | १९ | १७ | १५ | १३ | १२ | १० | ०८ | ०६ | ०४ | ०२ | ०० |
| २३ | ३४ | ३२ | ३० | २९ | २७ | २५ | २३ | २१ | २० | १८ | १६ | १४ | १२ | १० | ०८ | ०६ | ०४ | ०२ | ०० |
| २४ | ३६ | ३४ | ३२ | ३० | २८ | २६ | २४ | २३ | २१ | १९ | १७ | १५ | १३ | ११ | ०९ | ०७ | ०४ | ०२ | ०० |
| | ०८ | ०९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ |

## अक्षांश २७ से ३६ उत्तरा क्रांति में मिनट

- ऋण    दक्षिण क्रांति में मिनिट + धन

| २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | क्रांति |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | अंश |
| ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ |
| ०० | ०० | ०० | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०२ | ०२ | ०२ |
| ०० | ०० | ०० | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०२ | ०२ | ०३ | ०३ |
| ०० | ०० | ०१ | ०१ | ०१ | ०२ | ०२ | ०३ | ०३ | ०४ | ०४ |
| ०० | ०१ | ०१ | ०१ | ०२ | ०२ | ०२ | ०४ | ०४ | ०४ | ०५ |
| ०० | ०१ | ०१ | ०२ | ०२ | ०३ | ०३ | ०५ | ०५ | ०५ | ०६ |
| ०० | ०१ | ०१ | ०२ | ०३ | ०३ | ०४ | ०६ | ०६ | ०६ | ०७ |
| ०० | ०१ | ०२ | ०३ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०६ | ०७ | ०८ |
| ०० | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०४ | ०६ | ०६ | ०७ | ०८ | ०९ |
| ०० | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०७ | ०८ | ०९ | १० |
| ०१ | ०१ | ०२ | ०४ | ०४ | ०६ | ०६ | ०८ | ०९ | १० | ११ |
| ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०७ | ०९ | १० | ११ | १२ |
| ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०६ | ०७ | ०८ | १० | ११ | १२ | १३ |
| ०१ | ०२ | ०३ | ०५ | ०६ | ०७ | ०९ | १० | १२ | १३ | १४ |
| ०१ | ०२ | ०४ | ०५ | ०७ | ०८ | १० | ११ | १३ | १४ | १५ |
| ०१ | ०२ | ०४ | ०५ | ०७ | ०९ | १० | १२ | १४ | १५ | १६ |
| ०१ | ०३ | ०४ | ०६ | ०८ | ०९ | ११ | १३ | १५ | १६ | १७ |
| ०१ | ०३ | ०५ | ०६ | ०८ | १० | १२ | १४ | १६ | १७ | १८ |
| ०१ | ०३ | ०५ | ०७ | ०९ | ११ | १३ | १५ | १७ | १८ | १९ |
| ०२ | ०३ | ०५ | ०७ | ०९ | ११ | १३ | १६ | १८ | २० | २० |
| ०२ | ०४ | ०६ | ०८ | १० | १२ | १४ | १७ | १९ | २१ | २१ |
| ०२ | ०४ | ०६ | ०८ | ११ | १३ | १५ | १७ | २० | २३ | २२ |
| ०२ | ०४ | ०७ | ०९ | ११ | १३ | १६ | १८ | २१ | २४ | २३ |
| ०२ | ०५ | ०७ | ०९ | १२ | १४ | १७ | १९ | २२ | २५ | २४ |
| २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | |

- **पंचामृत** - गोघृत, गौदुग्ध, गाय का दही, गंगोदक, शहद।
- **पंचगव्य** - गोबर, गौमूत्र, गौदुग्ध, गौघृत, गाय का दही
- **पंच रत्न** - स्वर्ण, रजत, ताम्र, प्रवाल, मोती।
- **पंचपल्लव** - पीपलपत्ता, आम पत्ता, गूलर पत्ता, बड़पत्ता, पिलखन (अशोक)।
- **सप्तमृतिका** - हाथी स्थान, अश्व स्थान, वाल्मिक, दीमक, नदी संगम, तालाब, गौशाला+राजद्वार।
- **सप्तधान्य** - जौ, गेहूँ, चांवल, तिल, कांगनी, उड़द, मूँग
- **सप्तधातु**- सोना, चाँदी, ताम्बा, लोहा, राँगा, सीसा, आरकूट
- **अष्टमहादान** - कपास, नमक, घी, सप्तधान्य, स्वर्ण, लोहा, भूमि, गौदान।
- **अष्टांगअर्ध्य** - जल, पुष्प, कुशा का अग्रभाग, दही, चाँवल, केशर, दूर्वा, सुपारी
- **दशमहादान**- गौ, भूमि, तिल, स्वर्ण, घी, वस्त्र, धान्य, गुड़, चाँदी, लवण।
- **पंचोपचार** - गन्ध (चन्दनादि), पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य
- **पंचदेव** - सूर्य, गणेश, शक्ति, शिव, विष्णु

## ❋ समय भेद - अन्तरांश ❋

ग्रह गणित नियम से २४ घण्टे एक अहोरात्र में सूर्यनारायण ३६० अंश का गतिक्रम पूर्ण कर लेते हैं तो १८० अंश पूर्ति में १२ घण्टे तथा ९० अंश भोग करने में ६ घण्टे लग पाते हैं एवं अनुपात गणना नियामक से २४ घण्टे में ३६० अंश रवि गतिचार तो १ घण्टा में क्या ? अर्थात् १५ अंश १ घण्टा में गमन होता है एवं १ घण्टा में (६० मिनिट) १५ अंश रविगमन तो १ अंश चलने में ४ मिनिट का चालक बनता है। अर्थात् अभिष्ट पंचांग गणना देश नगर से अन्यत्र १ अंश में ४ मिनिट का गतिभेद बनता है। जोधपुर से अक्षांश-रेखांश से पूर्व देशों में प्रति १ अंशान्तर में ४ मिनिट ऋण फल तथा पश्चिम देश संभाग में ४ मिनिट धनफल का रवि गतिचालक बनता है।

## ✿ चरान्तर फल अंक ज्ञान विधि ✿

इष्ट स्थानीयाऽक्षांशा-इष्टदिनांकीया: क्रांति। अनुयोर्गुणनं फलं तस्य यः पंचमांशः, तदिष्ट दिने पलात्मकं रूपकं चरं संभवित इस सूत्र से स्पष्ट चरान्तर संस्कार प्राप्त होता ही है। परन्तु इष्ट देशीय पंचांग गणनात: सुलभ साधित अनुपातिक गणना के चर फलांक चरान्तर सारिणी में प्रस्तुत हैं जो मिनिट संज्ञा में है मिनिट में २॥ गुणित करें तो पलात्मक संज्ञा का भी फल प्रतीत होगा। यथा १ जून ८५ ई. को देहली का चरान्तर जानना है तो दैनिक रवि क्रांति सारिणी से इस दिन की रवि क्रांति २१ अं.५९ कला **'अर्धाधिकं रूपं स्यात्'** नियम से २२ अंश तथा रेखांश अक्षांश सारिणी से प्राप्त देहली अक्षांश २८।३८ है। चरान्तर सारिणी में २८ अक्षांश व २२ क्रांति सम्पात पर फलांक ४ मिनिट, परन्तु देहली अक्षांश २८॥ होने से २८-२९ अक्षांश मध्य फल अनुपातिक ५ मिनिट, चर फल प्राप्त हुआ जो कि २७ से ३६ अक्षांश मध्य वश फल उत्तरा क्रांति में - ऋण संज्ञक ▲ पुनरपि यथा नागपुर अक्षांश २१।९ तथा क्रांति अंश २२ उत्तरा। चर सारिणी में सम्पात इन दोनों का देखा १० मिनिट चर फल है। अक्षांश ८ से २६ मध्य वश उत्तरा क्रांति में + संज्ञक ▲ १ जून को रवि उदय जोधपुर स्टै. टा. ५ घं. ५० मि. है इससे देहली सूर्योदय हेतु ऋणात्मक ५ चर मिनिट कम किये ५।४५ इसमें देशान्तर संस्कार अक्षांश रेखांश सारिणी से प्राप्त + धन ४२ पल, २॥ ढाई का भाग देने से १७ मिनिट बने जो ५।४५ में कम करने से ५।२८ देहली सूर्योदय स्टे. टा. का आया। ▲ **दिनमान संकेत - सूर्योदयास्त हेतु देशान्तर फल इस पंचांग के सूर्योदयास्त में जहां धन चिह्न हो तो वहां ऋण करें, तथा ऋण हो तो धन।** सूर्यास्त तथा दिनमान हेतु देहली चर फल ५ मिनिट-ऋण इसे नियमत: ५ से गुणा करें तो २५ पल बने जोधपुर दिनमान १ जून को ३३ घडी ५० पल में धन किया तो ३४ घटी १५ पल देहली का दिनमान बना। ▲ **संकेत** - दिनमान हेतु चरान्तर मिनिट से विपरीत धन ऋण करना चाहिए। यहाँ चर मि. ऋण है तो धन किया। दिनमान ३४ घटी १५ पल के घंटा मिनिट २॥ का भाग देने से प्राप्त १३ घन्टा ४२ मि. आये तथा इसे देहली सूर्योदय ५।२८ में जोड़े तो १९ घं. १० मि. स्टै. टा. का सूर्यास्त देहली का बना। इसी प्रकार इस पंचांग के सूर्योदयादि से अन्यत्र किसी भी शहर के विदित कर सकते हैं। एवं सर्वदेशीय संस्कारित इष्ट नगरीय मान्य पंचांग विदित होगा।

## ❋ उदयान्तर-वेलान्तर मिनिट सारणी रचना ❋

| तारीख | जन. मि. | फर मि. | मार्च मि. | अप्रैल मि. | मई मि. | जून मि. | जुलाई मि. | अग. मि. | सित मि. | अक्टू मि. | नवं. मि. | दिस. मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | -४ | -१४ | -१२ | -०४ | +०३ | +०२ | -०४ | -०६ | +०० | +१० | +१६ | +११ |
| २ | -४ | -१४ | -१२ | -०४ | +०३ | +०२ | -०४ | -०६ | +०० | +११ | +१६ | +१० |
| ३ | -५ | -१४ | -१२ | -०३ | +०३ | +०२ | -०४ | -०६ | +०१ | +११ | +१६ | +१० |
| ४ | -५ | -१४ | -१२ | -०३ | +०३ | +०२ | -०४ | -०६ | +०१ | +११ | +१६ | +१० |
| ५ | -६ | -१४ | -१२ | -०३ | +०४ | +०२ | -०४ | -०६ | +०१ | +१२ | +१६ | +०९ |
| ६ | -६ | -१४ | -११ | -०२ | +०४ | +०२ | -०४ | -०६ | +०२ | +१२ | +१६ | +०९ |
| ७ | -७ | -१४ | -११ | -०२ | +०४ | +०१ | -०५ | -०६ | +०२ | +१२ | +१६ | +०८ |
| ८ | -७ | -१४ | -११ | -०२ | +०४ | +०१ | -०५ | -०५ | +०२ | +१२ | +१६ | +०८ |
| ९ | -७ | -१४ | -११ | -०२ | +०४ | +०१ | -०५ | -०५ | +०३ | +१३ | +१६ | +०७ |
| १० | -८ | -१४ | -१० | -०१ | +०४ | +०१ | -०५ | -०५ | +०३ | +१३ | +१६ | +०७ |
| ११ | -८ | -१४ | -१० | -०१ | +०४ | +०१ | -०५ | -०५ | +०३ | +१३ | +१६ | +०६ |
| १२ | -९ | -१४ | -१० | -०१ | +०४ | +०० | -०५ | -०५ | +०४ | +१४ | +१६ | +०६ |
| १३ | -९ | -१४ | -१० | -०० | +०४ | +०० | -०५ | -०५ | +०४ | +१४ | +१६ | +०६ |
| १४ | -९ | -१४ | -०९ | -०० | +०४ | -०० | -०६ | -०४ | +०५ | +१४ | +१५ | +०५ |
| १५ | -१० | -१४ | -०९ | +०० | +०४ | -०० | -०६ | -०४ | +०५ | +१४ | +१५ | +०५ |
| १६ | -१० | -१४ | -०९ | +०० | +०४ | -०० | -०६ | -०४ | +०५ | +१४ | +१५ | +०४ |
| १७ | -१० | -१४ | -०८ | +०१ | +०४ | -०१ | -०६ | -०४ | +०६ | +१५ | +१५ | +०४ |
| १८ | -११ | -१४ | -०८ | +०१ | +०४ | -०१ | -०६ | -०४ | +०६ | +१५ | +१५ | +०३ |
| १९ | -११ | -१४ | -०८ | +०१ | +०४ | -०१ | -०६ | -०३ | +०६ | +१५ | +१४ | +०३ |
| २० | -११ | -१४ | -०८ | +०१ | +०४ | -०१ | -०६ | -०३ | +०७ | +१५ | +१४ | +०२ |
| २१ | -१२ | -१४ | -०७ | +०१ | +०४ | -०२ | -०६ | -०३ | +०७ | +१५ | +१४ | +०२ |
| २२ | -१२ | -१४ | -०७ | +०२ | +०४ | -०२ | -०६ | -०३ | +०७ | +१५ | +१४ | +०१ |
| २३ | -१२ | -१४ | -०७ | +०२ | +०३ | -०२ | -०६ | -०२ | +०८ | +१६ | +१३ | +०१ |
| २४ | -१२ | -१३ | -०६ | +०२ | +०३ | -०२ | -०६ | -०२ | +०८ | +१६ | +१३ | +०० |
| २५ | -१३ | -१३ | -०६ | +०२ | +०३ | -०२ | -०६ | -०२ | +०८ | +१६ | +१३ | +०० |
| २६ | -१३ | -१३ | -०६ | +०२ | +०३ | -०३ | -०६ | -०२ | +०९ | +१६ | +१२ | -०१ |
| २७ | -१३ | -१३ | -०५ | +०२ | +०३ | -०३ | -०६ | -०१ | +०९ | +१६ | +१२ | -०१ |
| २८ | -१३ | -१३ | -०५ | +०३ | +०३ | -०३ | -०६ | -०१ | +०९ | +१६ | +१२ | -०२ |
| २९ | -१३ | -१२ | -०५ | +०३ | +०३ | -०३ | -०६ | -०१ | +१० | +१६ | +११ | -०२ |
| ३० | -१४ | - | -०४ | +०३ | +०३ | -०३ | -०६ | -०० | +१० | +१६ | +११ | -०३ |
| ३१ | -१४ | - | -०४ | + | +०३ | - | -०६ | -०० | + | +१६ | + | -०३ |

▲●▲ **उपकरण हेतु** - स्टेण्डर्ड समय को देशी स्थानिक करने हेतु सारणी अनुसार + धन अथवा -ऋण करें तथा देशी स्थानिक समय को स्टेण्डर्ड समय करने में विपरीत क्रिया करें। धन + चिह्न हो तो ऋण करें तथा - चिह्न हो तो धन + करें।

▲●▲ भारतीय वैदिक शास्त्रों में अनेक प्रकार के स्तोत्र पाठ वाचन की महिमा ग्रह जनित कुयोगद दिनमान एवं ग्रहपीड़ा निवारण हेतु वर्णित हैं। ग्रह पीड़ा के निवारण के साथ ही नित्य की जन-जीवनीय सुख सम्पदा अभिवृद्धि-आत्मशक्ति विकास हेतु भी विविध स्तोत्र वाचन-पठन आदिकाल से प्रचलित है। भारतीय ऋषि-महर्षि द्वारा उपदिष्ट धर्म-संस्कृति एवं सभ्यता की परिचायक स्तोत्रपाठ की परम्परा निरन्तर चली आ रही है। नीति वचन भी है कि ● स्तोत्रं कस्य न तुष्टये ● के अनुसार ऋषि-मुनि तथा इन्द्रादि देवताओं ने भी अपने किसी न किसी उपास्य देवी देवताओं को अपने अभीष्ट सिद्धि-समाधान के निमित्त स्तोत्रों द्वारा अभिवन्दना प्रार्थना की है और अपने कार्य में सफलीभूत भी बने हैं। इसी समाधार पर स्तोत्रों के नित्य के पठन-पाठन का श्रीगणेश भारत वसुन्धरा पर चरितार्थ बना।

### ❋ दुःस्वप्न-नाशक-सूर्यस्तुतिः ❋

आदित्यः प्रथमं नाम द्वितीयं तु दिवाकरः।
तृतीयं भास्करः प्रोक्तं चतुर्थं च प्रभाकरः॥
पंचमं च सहस्रांशुः षष्ठं चैव त्रिलोचनः।
सप्तमं हरदिश्वश्च अष्टमं च विभावसुः॥
नवमं दिनकृत प्रोक्तं दशमं द्वादशात्मकः।
एकादशं त्रयीमूर्त्तिर्द्वादशं सूर्य एव च॥
द्वादशैतानि नामानि प्रातः काले पठेन्नरः।
दुःस्वप्ननाशनं सद्यः सर्वसिद्धि प्रजायते॥
अविमुक्त-चरण-युगलं दक्षिणमूर्तेश्च कुक्कुट - चतुष्कम्।
स्मरणं वाराणस्यां निहन्ति दुःस्वप्नमपशकुनं च॥

इत्यादि स्तोत्र पठन वाचन प्रातः काल करने से विविध प्रकार के दुष्ट स्वप्न दर्शन से मुक्ति प्राप्त होती है तथा विकारयुक्त अनिष्टसूचक स्वप्नदोषादि से निवृत्ति बने शक्तिसामर्थ्य का विकास बनता है एवं श्रीगजेन्द्रमोक्ष का पाठ भी मान्य है।

### ❋ सुख शांति प्रदायक स्तुतिः ❋

पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः।
पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः॥
हरं हरिं हरिश्चन्द्रं हनुमन्तं हलायुधम्।
पंचकं वै स्मरेन्नित्यं घोरसंकटनाशनम्॥
अहल्या द्रोपदी तारा कुन्ती मन्दोदरी तथा
पंचकन्याः स्मरेन्नित्यं महापातक नाशनम्।
अयोध्या मथुरा माया काशी कांचा ह्यवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिका॥
कश्यपोऽत्रिर्भरद्वाजो विश्वामित्रौऽथ गौतमः।
जमदग्निर्वसिष्ठश्च सप्तैते ऋषयः स्मृताः॥
तेषांवंशानुवंशानां वेदमंत्रस्य द्रष्टणाम्।
संस्मरामि सदा भक्त्या धर्ममार्ग प्रदर्शकान्॥

इनके नित्य पाठ से नित्य की दिनचर्या व कार्य विबाधा में समाधान सहज भाविक बन पाता है। अवरोधित कार्य एवं विविध समस्या का निवारण भी हो पाता है, अनुभव योग्य सूत्र रचना है।

### ❋ शनिवज्रपञ्जरकवचम् ❋

नीलाम्बरो नीलवपुः कीरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रसन्नः सदा मम स्याद वरदः प्रशान्तः॥
कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रान्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरोमन्दः पिप्लाश्रयसंस्थितः॥
एतानि शनि - नामानि जपेदश्वत्थसन्निधौ।
शनैश्चरकृता पीड़ा न कदाऽपि भविष्यति।

इस मंत्र कवच के नित्य पाठ से शनिजनित आदि व्याधि पलायित होकर शान्ति शमन का सन्मार्ग बन पाता है। शमी-खेजड़ा अथवा पीपल वृक्ष के पास इस मंत्र का ७ बार पाठ वाचन विशेष फलद रहता है।

### ❋ सप्त चिरजीवि स्तुतिः ❋

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः॥
सप्तैतान् संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्।
जीवेद् वर्षशतं सोऽपि सर्वव्याधिविवर्जितः॥

इस स्तोत्र श्लोक के पठन वाचन से यात्रा सुखद बनती है, यात्रा के प्रारंभ में इसका वाचन करना चाहिए तथा रोग-विकास-व्याधि से भी निवारण बनते आयुष्य वृद्धि बनती है। इस हेतु नित्य आठ बार प्रातः तथा आठ बार रात्रि शयन के पूर्व उच्चारण करना चाहिए।

**पंचज्ञानेन्द्रीय**

१ नेत्र - २ श्रौत्र (कर्ण) ३ नासिका (घ्राण) ४ त्वक (त्वचा स्पर्श) ५ रसना (जिह्वा) - ये पांच ज्ञानेन्द्रिय संज्ञा से मान्य।

**पंचकर्मेन्द्रीय**

१ वाक् २ हस्त ३ पाद ४ उपस्थ (लिंग) ५ गुदा ये पांच कर्मेन्द्रिय संज्ञा से मान्य।

**शरीरस्थ षडङ्ग**

१ शिरः २ हस्तद्वय १ उदर (पेट) २ पादद्वय - ये शरीर के छः अङ्ग हैं।

**मनस्**

(कर्म विबोधक संज्ञा) मानव नर देह की सुरम्य क्रियाशक्ति एवं नित्य के जीवन गतिक्रम संचलन हेतु उपर्युक्त मूल उपादेय हैं। नवग्रहजनित रश्मि प्रभामण्डल का प्रारूप इन विषयक पक्ष पर ही प्रभावशील बनता है।

❋ **सिद्धि प्रदायक-वाचा शक्ति विवर्धक-सिद्ध शारदा-स्तुतिः** ❋ सरस्वतीं शारदां च कौमारीं ब्रह्मचारिणीम्। वागीश्वरी बुद्धिदात्रीं भारतीं भुवनेश्वरीम्॥ चन्द्रघण्टां मरालस्थां जगन्मातरमुत्तमाम्। वरदायिनीं सदा वन्दे चर्तुर्वगफलप्रदाम्॥ द्वादशैतानि नामानि सततं ध्यानसंयुतः। यः पठेत् तस्य जिह्वाग्रे नूनं वसति शारदा॥

❋ **स्थिरा लक्ष्मी साधना सूत्र** ❋ त्रैलोक्य-पूजिते देवि। कमले विष्णुवल्लभे। यथा त्वमचला कृष्णे तथा भवमयि स्थिरा॥ ईश्वरी कमला लक्ष्मीश्चला भूतिर्हरिप्रिया। पद्मा पद्मालया सम्यगुच्चैः श्री पद्मधारिणी॥ द्वादशैतानि नामानि लक्ष्मीं सम्पूज्य यः पठेत्। स्थिरां लक्ष्मीर्भवेत् तस्य पुत्र-दारादिभिः सह॥

## समाधान सिद्धिसूत्रक – कालहोरा मुहूर्त्त

**यस्य ग्रहस्य वारेषु कर्म किंचित्प्रकीर्तितम् । तस्य ग्रहस्य होरायां सर्व कर्म विधीयते ।।** प्रस्तुत श्लोक मुहूर्त्त शास्त्रीयवचनविशेष का परिचायक है, आवश्यकता विशेष में कार्यसिद्धि समाधान हेतु काल होरा मुहूर्त्त की संरचना शास्त्रकारों ने वर्णित की है। जो कि पुरातन आगमकाल से लोक व्यवहार में स्थिति विशेष पर कार्य समाधान हेतु अपूर्वयोगिक फलद है। सप्त ग्रहों की सप्त ७ होरा बनती हैं, जो कि प्रतिदिन कार्य साधना समाधान हेतु श्रेष्ठ कार्य सूचक समय प्रदान करती हैं। एक होरा का कालांश समय २॥ ढाई घटी अर्थात एक घन्टा का बनता है तथा इस क्रम से प्रत्येक १ घंटे पर काल होरा का समय परिवर्तित होता है। स्थानीय सूर्योदय से क्रमशः प्रतिघन्टा गतिकाल समझें। किस वार की काल होरा के समय कौन-कौन कार्य फलद-योगद-सिद्धिप्रदायक बन पाते हैं, इसका सुलभ विवरण इस प्रकार मुहूर्त्त ग्रन्थों में प्रतिपादित है।

(१) ● **सूर्य की कालहोरा** - आवेदन पत्र देने, राज कार्य अथवा पदअधिग्रहण, शासकीय सेवा कार्य, टेन्डर आदि देने में श्रेष्ठ। (२) ● **चन्द्र होरा** - सभी कार्यों के लिये कल्याण कारक। (३) ● **मंगल होरा** - वाद-विवाद, मुकदमा, कर्ज देना, यात्रा प्रवास, सभा - सोसायटी में गमन तथा न्यायालय विषय कार्य नोटिस, द्यूत क्रीड़ा हेतु श्रेष्ठ। (४) ● **बुध की होरा** - विद्या-कला सीहित्यसंग्रह-विद्या शिक्षा, पठन, पाठन, नवीन लेखन, पुस्तक प्रकाशन, विमोचन, नवीन व्यापार तथा मुद्रण कार्य, कोष संग्रह, प्रार्थना पत्र प्रदान करने हेतु शुभ। (५) ● **गुरूकी होरा** - विवाह विषयक कार्य, संबंध स्थापित करना, उच्च अधिकारी वर्ग से सम्पर्क, व्यवहारगति, नवीन काव्य लेखन, प्रकाशन, बैंक खाता खोलना, वस्तु संग्रह, विद्या अभ्यास तथा अन्य भी विभिन्न शुभ कार्यों हेतु शुभ सूचक। (६) ● **शुक्र की होरा**-छाया चित्र - चलचित्र, फिल्म निर्माण शुभारंभ नवीन वस्त्र तथा आभूषण धारण व निर्माण, यात्रा प्रवास, सौभाग्यवर्धक कार्य-संगीत स्वर साधना हेतु योगद। (७) ● **शनि की होरा** - नवीन गृह निर्माण अथवा प्रवेश, भूमि खरीदी, मशीनरी मिल्स शुभारंभ, द्रव्य संग्रह, गृह नींव खात एवं खनिज खनन कार्य हेतु लाभद

● **सिद्धहोरा (क्षणवार) मुहूर्त्त ज्ञानविधि**- जिस दिन जिस समय कि कालहोरा देखनी होवे, नीचे प्रदत्त काल होरा ज्ञान चक्र कोष्ठक सारिणी से काल होरा समय ज्ञात कर लेवें यथा रविवार को पहली होरा सूर्य २॥ घटी अर्थात् एक घन्टा की, इसके बाद रविवार को ही दूसरी होरा शुक्र की ५ घटी तक, फिर इसी क्रमानुसरा तीसरी ५ से ७॥ घटी तक बुध की होरा एवं अग्रिम ७॥ से १० घटी तक चन्द्र की अर्थात् प्रति १ घंटा वृद्धि से १ घन्टे का समय प्रति १ काल होरा वार का बनता है। कोष्ठक में घटी मान तथा घन्टा मान दोनों स्पष्ट किये गये हैं। इसी क्रम से प्रत्येक दैनिक वार में इष्ट समय की होरा वार काल विदित कर सकते हैं। फलित अन्वेषक आचार्यों ने दैनिक प्रमुख वार से अधिक प्रधानता होरा के (क्षणवार) को प्रदान की है। तथ्य यह भी कि दैनिकवार तथा क्षणवार दोनों अनुकूल होवें तो विशेष फल प्रदाता समय। तथा आवश्यकता में वार दोष विकार होवे तो (क्षणवार) होराकाल के समय शुभ वार की काल होरा में कार्य सम्पन्न करना श्रेयस्कर। यथा अनायास कोई विशेष कार्यवश रविवार को पश्चिम दिशा में यात्रा करना है तो मुहूर्त्त नियामक से रविवार को 'दिशाशूल' यात्रा में होगा, परन्तु उस दिन भी रविवार को सामवार की 'काल होरा' में पश्चिम दिशा की यात्रा शुभ सूचक अर्थात् अवरोधितवार होने पर उस दिन की इष्ट शुभ होरा में कार्य सम्पन्न कर सकते हैं। पुनरपि फलाशय उदाहरण - आज सोमवार है तथा शासकीय सेवा कार्य हेतु आवेदन प्रस्तुत करना है, इस कार्य के लिये बुध की होरा योग्य फलद लिखी है अतः सोमवार को बुध की होरा (होरा चक्र कोष्ठक) में देखें तो ७-१४-२१ वें घंटे में बुध की होरा समय स्पष्ट लिखा ही है। अतः सोमवार को स्थानीय सूर्योदय से ६ वें, १३ वें अथवा २० वें घंटे के बाद एक-एक घंटे तक की बुध की होरा में अपना आवेदन पत्र प्रस्तुत कर सकते हैं। ▲ तथा प्रति घंटा गणना स्थानीय सूर्योदय से क्रमशः वृद्धिगत समझें। काल होरा (क्षणवार) कोष्ठ रचना निम्नानुसार -

| होरा घंटा | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| होरा घटी | २॥ | ५ | ७॥ | १० | १२॥ | १५ | १७॥ | २० | २२॥ | २५ | २७॥ | ३० | ३२॥ | ३५ | ३७॥ | ४० | ४२॥ | ४५ | ४७॥ | ५० | ५२॥ | ५५ | ५७॥ | ६० |
| सूर्य | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. |
| चन्द्र | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. |
| मंगल | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. |
| बुध | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. |
| गुरू | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. |
| शुक्र | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. |
| शनि | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. |

### भूमिभवनमध्ये कूपखनन स्थानफलम्

**कूपे वास्तोर्मध्यदेशेऽर्थनाशस्त्वैशान्यादौ पुष्टिरैश्वर्यवृद्धिः । सूनोर्नाशः स्त्रीविनाशो मृतिश्च सम्पत् पीड़ा शत्रुतः स्याच्च सौख्यम् ।। श्लोक भावार्थ स्पष्टता चक्र -**

| | | |
|---|---|---|
| ईशान-सौख्य | पूर्व-श्रीवृद्धि | अग्निकोण-पुत्रभार |
| उत्तर-सौख्य | मध्य-हानि | दक्षिण-स्त्रीभार |
| वायव्य-पीड़ा | पश्चिम-सौख्य | नैऋत्य-स्वामीभार |

अर्थात् वास्तु भूमि के ईशान-पूर्व-पश्चिम तथा उत्तरभाग में कूप खनन निर्माण शुभ फल सचारक होता है।

▲ **विशेष** - यदि कूप या अन्य जलाशय पहले से ही बना हो तो उस कूप-जलाशय भाग से प्रतिकूल वायव्य-उत्तर-ईशान-आग्नेय भागों में गृह निर्माण शुभ फलदायक नहीं।

### कूपजलाशयाऽरंभे - नक्षत्रशुद्धिस्पष्टता

सूर्यनक्षत्र चार से इष्टदिन नक्षत्र गणना ३ संख्या शुभ तथा अग्रिम ३ अशुभ एवं क्रमशः ३ शुभ, ३ अशुभ, ३ शुभ, ३ अशुभ तथा ३ क्रमशः शुभ, ३ अशुभ तथा ३ शुभ अग्रिम गणना करते प्रतिफल समझना योग्य

### वास्तु राजवल्लभे-देवस्थापनायां मुखदिशाज्ञान

**ब्रह्माविष्णुशिवेन्द्रभास्करगुहा पूर्वापरस्या शुभाः । प्रोक्तौ सर्वदिशामुखौ शिवजिनौ विष्णुर्विधाता तथा। चामुण्डाग्रहमातरौ धनपतिर्द्वौ भ्रातरौ भैरवो । देवोदक्षिण दिङ्मुखः कपिवरो नैऋत्यवक्रो भवेत् ।।** भावार्थ - ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, सूर्य, कार्तिकेय की प्रतिष्ठा में पूर्व या पश्चिम दिशा में मुख। शिव, जिन, विष्णु, ब्रह्मा का सभी दिशाओं में मुख। चामुण्डा (देवी) गृह, मातृका, शीतला-भैरव आदि का दक्षिण दिशा में और श्री हनुमानजी को नैऋत्यकोण मुख करके स्थापना करना चाहिए।

♠ **शिववास तिथि संरचना** - **तिथिं च द्विगुणीं कृत्य बाणैः संयोजयेत्ततः । सप्तिश्च हरेद्भागं शिववासं समुद्दिशेत् ।। एकेनवासः कैलाशे द्वितीये गौरी संनिधौ तृतीये वृषभारूढः संभायां च चतुष्टये । पंचकेभोजने चैव, क्रीड़ायांषष्मिते तथा ।। श्मशाने सप्तशेषे च शिववासः इतीरितः । कैलाशेलभते सौख्यं गौर्यां च सुखसम्पदः । वृषभेऽभीष्ट सिद्धिः स्यात् सभा सन्तापकारिणी ।। भोजने च भवेत् पीड़ा क्रीड़ायां कष्टमेव च : शम्शाने मरणज्ञेयं फलमैव विचारयेत् ।।** भावार्थ इष्ट तिथि को २ से गुणा कर ५ और मिलावें ७ के भाग से जो शेष रहे, फल उपर्युक्त स्पष्ट ही है।

♠ **स्पष्टार्थे** - शिववास शुभतिथिचक्र - **शुक्लपक्षे** २-५-६-९-१२-१३ तथा **कृष्ण पक्षे** - १-४-५-८-११-१२-३० शुभ मान्य।

♣ **प्रतिकूल दोषाऽभावः सूत्रम् दुर्भिक्षे राष्ट्रभंगे च पित्रोर्वाप्राणसंशये । प्रोढायामपि कन्यायां प्रतिकूलं न दूष्यति ।।** तथा च ऋषिमेधा वचन - **दीर्घरोगाभिभूतस्य दूदेशास्थितस्य च। उदासवर्तिनश्चैव प्रतिकूलं न विद्यते ।।** भावार्थ यह कि - दुर्भिक्ष, राष्ट्रसंकट या माता-पिता के मरण संदेह तथा कन्या प्रौढा हो तो प्रतिकूलता का दोष नहीं तथा अधिक काल तक रोग से पीड़ित या दूर देश स्थित या उदासी गति-मति के कारण होने पर प्रतिकूलता का दोष नहीं। ♠♣♠

## जन्म नक्षत्रानुसार - राशि - राशि स्वामी - वर्णवश्यादि - योनीगणनाड़ी - युंजा - हंसक - विविध विबोधक सूत्र

| नक्षत्र | चरणाक्षर | राशि | स्वामी | वर्ण | वश्य | योनि | गण | नाड़ी | युंजा | हंसक तत्व | नक्षत्र पति | पु.स्त्री | सू.चं. | मण्डल | नक्षत्र संज्ञा | सप्तनाड़ी | लोचन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अश्विनी<br>भरणी<br>कृतिका | चू चे चो ला<br>ली लू ले लो<br>अ ० ० ० | मेष | मंगल | क्षत्रिय | चतुष्पद | अश्व<br>गज<br>मेष | देव<br>नर<br>राक्षस | आदि<br>मध्य<br>अन्त्य | पूर्व<br>पूर्व<br>पूर्व | अग्नि | अश्विनीकुमार<br>यमराज<br>अग्नि | पुरूष<br>पुरूष<br>पुरूष | चन्द्र<br>चन्द्र<br>चन्द्र | वायु<br>अग्नि<br>अग्नि | क्षिप्र लघु<br>उग्र क्रूर<br>मिश्र साधा | वायु<br>चण्डा<br>चण्डा | मन्द<br>मध्य<br>सुलोचन |
| कृतिका<br>रोहिणी<br>मृगशिरा | ० इ उ ए<br>ओ वा वी वु<br>वे वो ० ० | वृषभ | शुक्र | वैश्य | चतुष्पद | मेष<br>सर्प<br>सर्प | राक्षस<br>नर<br>देव | अन्त्य<br>अन्त्य<br>मध्य | पूर्व<br>पूर्व<br>पूर्व | भूमि | अग्नि<br>ब्रह्मा<br>चन्द्रमा | पुरूष<br>पुरूष<br>पुरूष | चन्द्र<br>सूर्य<br>सूर्य | अग्नि<br>महेन्द्र<br>वायु | मिश्र साधा<br>ध्रूव स्थिर<br>मृदु मैत्र | चण्डा<br>वायु<br>दहना | सुलोचन<br>अन्ध<br>मन्द |
| मृगशिरा<br>आर्द्रा<br>पुनर्वसु | ० ० क की<br>कु घ ङ छ<br>के को ह ० | मिथुन | बुध | शूद्र | द्विपद<br>नर | सर्प<br>श्वान<br>मार्जा | देव<br>नर<br>देव | मध्य<br>आदि<br>आदि | पूर्व<br>मध्य<br>मध्य | वायु | चन्द्रमा<br>रूद्र शिव<br>अदिति | पुरूष<br>स्त्री<br>स्त्री | सूर्य<br>चन्द्र<br>चन्द्र | वायु<br>वरूण<br>वायु | मृदु मैत्र<br>तीक्ष्ण दारू<br>चर चल | दहना<br>सौम्य<br>नीर | मन्द<br>मध्य<br>सुलोचन |
| पुनर्वसु<br>पुष्य<br>आश्लेषा | ० ० ० ही<br>हु हे हो डा<br>डी डू डे डो | कर्क | चन्द्र | विप्र | जलचर | मार्जा<br>मेष<br>मार्जा | देव<br>देव<br>राक्षस | आदि<br>मध्य<br>अन्त्य | मध्य<br>मध्य<br>मध्य | जल | अदिति<br>बृहस्पति<br>सर्पदेव | स्त्री<br>स्त्री<br>स्त्री | चन्द्र<br>चन्द्र<br>चन्द्र | वायु<br>अग्नि<br>वरूण | चर चल<br>क्षिप्र लघु<br>तीक्ष्ण दारू | नीर<br>जल<br>अमृता | सुलोचन<br>अन्ध<br>मन्द |
| मघा<br>पूर्वाफाल्गुनी<br>उत्तराफाल्गुनी | मा मी मू मे<br>मो टा टी टू<br>टे ० ० ० | सिंह | सूर्य | क्षत्रिय | वनचर<br>चतुष्पद | मूषक<br>मूषक<br>गौ | राक्षस<br>नर<br>नर | अन्त्य<br>मध्य<br>आदि | मध्य<br>मध्य<br>मध्य | अग्नि | पितर<br>भग-सूर्य<br>अर्यमा-सूर्य | स्त्री<br>स्त्री<br>स्त्री | चन्द्र<br>सूर्य<br>सूर्य | अग्नि<br>अग्नि<br>वायु | उग्र क्रूर<br>उग्र क्रूर<br>ध्रूव स्थिर | अमृता<br>जल<br>नीर | मध्य<br>सुलोचन<br>अन्ध |
| उत्तराफाल्गुनी<br>हस्त<br>चित्रा | ० टो प पी<br>पू ष ण ठ<br>पे पो ० ० | कन्या | बुध | वैश्य | द्विपद<br>नर | गौ<br>महिष<br>व्याघ्र | नर<br>देव<br>राक्षस | आदि<br>आदि<br>मध्य | मध्य<br>मध्य<br>मध्य | भूमि | अर्यमा-सूर्य<br>सूर्यदेव<br>विश्वकर्मा | स्त्री<br>स्त्री<br>स्त्री | सूर्य<br>सूर्य<br>सूर्य | वायु<br>वायु<br>वायु | ध्रूव स्थिर<br>क्षिप्र लघु<br>मृदु मैत्र | नीर<br>सौम्य<br>दहना | अन्ध<br>मन्द<br>मध्य |
| चित्रा<br>स्वाति<br>विशाखा | ० ० रा री<br>रू रे रो ता<br>ती तू ते ० | तुला | शुक्र | शूद्र | द्विपद<br>नर | व्याघ्र<br>महिष<br>व्याघ्र | राक्षस<br>देव<br>राक्षस | मध्य<br>अन्त्य<br>अन्त्य | मध्य<br>मध्य<br>मध्य | वायु | विश्वकर्मा<br>वायुदेव<br>इन्द्र अग्नि | स्त्री<br>स्त्री<br>नपुंसक | सूर्य<br>सूर्य<br>सूर्य | वायु<br>वायु<br>अग्नि | मृदु मैत्र<br>चर चल<br>मिश्र साधा | दहना<br>वायु<br>चण्डा | मध्य<br>सुलोचन<br>मध्य |
| विशाखा<br>अनुराधा<br>ज्येष्ठा | ० ० ० तो<br>ना नी नू ने<br>नो या यी यू | वृश्चिक | मंगल | विप्र | कीट | व्याघ्र<br>मृग<br>मृग | राक्षस<br>देव<br>राक्षस | अन्त्य<br>मध्य<br>आदि | मध्य<br>मध्य<br>अन्त्य | जल | इन्द्र अग्नि<br>मित्र सूर्य<br>इन्द्र | नपुंसक<br>नपुंसक<br>नपुंसक | सूर्य<br>सूर्य<br>सूर्य | अग्नि<br>महेन्द्र<br>महेन्द्र | मिश्र साधा<br>मृदु मैत्र<br>तीक्ष्ण दारू | चण्डा<br>चण्डा<br>वायु | अन्ध<br>मन्द<br>मध्य |
| मूल<br>पूर्वाषाढ<br>उत्तराषाढ | ये यो भ भी<br>भू ध फ ढ<br>भे ० ० ० | धनु | गुरू | क्षत्रिय | द्विपद<br>नर | श्वान<br>वानर<br>नकुल | राक्षस<br>नर<br>नर | आदि<br>मध्य<br>अन्त्य | अन्त्य<br>अन्त्य<br>अन्त्य | अग्नि | राक्षस<br>जल<br>विश्वदेव | पुरूष<br>पुरूष<br>पुरूष | सूर्य<br>चन्द्र<br>चन्द्र | वरूण<br>वरूण<br>महेन्द्र | तीक्ष दारू<br>उग्र क्रूर<br>ध्रुव स्थिर | दहना<br>सौम्य<br>नीर | सुलोचन<br>अन्ध<br>मन्द |
| उत्तराषाढ<br>श्रवण<br>धनिष्ठा | ० भो ज जी<br>खी खू खे खो<br>गा गी ० ० | मकर | शनि | वैश्य | जलचर | नकुल<br>वानर<br>सिंह | नर<br>देव<br>राक्षस | अन्त्य<br>अन्त्य<br>मध्य | अन्त्य<br>अन्त्य<br>अन्त्य | भूमि | विश्वदेव<br>विष्णु<br>अष्टवसु | पुरूष<br>पुरूष<br>पुरूष | चन्द्र<br>चन्द्र<br>चन्द्र | महेन्द्र<br>महेन्द्र<br>महेन्द्र | ध्रुव स्थिर<br>चर चल<br>चर चल | नीर<br>अमृता<br>अमृता | मन्द<br>सुलोचन<br>अन्ध |
| धनिष्ठा<br>शतभिषा<br>पूर्वाभाद्रपद | ० ० गू गे<br>गो सा सी सू<br>से सो द ० | कुंभ | शनि | शूद्र | द्विपद<br>नर | सिंह<br>अश्व<br>सिंह | राक्षस<br>राक्षस<br>नर | मध्य<br>आदि<br>आदि | अन्त्य<br>अन्त्य<br>अन्त्य | वायु | अष्टवसु<br>वरूण<br>अजपाद-सूर्य | पुरूष<br>पुरूष<br>पुरूष | चन्द्र<br>सूर्य<br>सूर्य | महेन्द्र<br>वरूण<br>अग्नि | चर चल<br>चर चल<br>उग्र क्रूर | अमृता<br>जल<br>नीर | अन्ध<br>मन्द<br>मध्य |
| पूर्वाभाद्रपद<br>उत्तराभाद्रपद<br>रेवती | ० ० ० दी<br>दू थ झ ञ<br>दे दो चा ची | मीन | गुरू | विप्र | जलचर | सिंह<br>गौ<br>गज | नर<br>नर<br>देव | आदि<br>मध्य<br>अन्त्य | अन्त्य<br>अन्त्य<br>पूर्व | जल | अजपाद-सूर्य<br>अहिर्बुध्न्य-सूर्य<br>पूषण-सूर्य | पुरूष<br>पुरूष<br>पुरूष | सूर्य<br>चन्द्र<br>चन्द्र | अग्नि<br>वरूण<br>वरूण | उग्र क्रूर<br>ध्रुव स्थिर<br>मृदु मैत्र | नीर<br>सौम्य<br>दहना | मध्य<br>सुलोचन<br>अन्ध |

## स्थूलमानेन मानव आयुर्दाय ज्ञानाय चक्रम्

| दीर्घायुः | मध्यायुः | अल्पायुः |
|---|---|---|
| लग्नेश चर राशि<br>अष्टमेश चर राशि | लग्नेश चर राशि<br>अष्टमेश स्थिर राशि | लग्नेश चर राशि<br>अष्टमेश द्विस्वभाव राशि |
| लग्नेश स्थिर राशि<br>अष्टमेश द्विस्वभाव राशि | लग्नेश स्थिर राशि<br>अष्टमेश चर राशि | लग्नेश स्थिर राशि<br>अष्टमेश स्थिर राशि |
| लग्नेश द्विस्वभाव राशि<br>अष्टमेश स्थिर राशि | लग्नेश द्विस्वभाव राशि<br>अष्टमेश द्विस्वभाव राशि | लग्नेश द्विस्वभाव राशि<br>अष्टमेश चर राशि |

चर राशि - मेष, कर्क, तुला, मकर।
स्थिर राशि - वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ।
द्विस्वभाव राशि - मिथुन, कन्या, धनु, मीन।

महर्षि जैमिनी रचित शास्त्र वचनानुसार आयुर्दाय वय-उम्र के ३ भेद होते हैं। यथा - १ दीर्घायु २ मध्यायु ३ अल्पायु प्रत्येक खण्ड का निर्णय-विचार भी तीन ३ प्रकार से पृथक-पृथक किया जाता है। १ लग्नेश तथा अष्टमेश २ शनि तथा चन्द्रमा ३ लग्न तथा होरा लग्न। उपर्युक्त आयु कोष्ठक रचना अनुसार - जन्माक्षर स्थित ग्रह राशि स्थिति अनुसार सामान्य गतिक विचार किया जाता है। प्रत्येक प्रकार के दो-दो अधिनायकों में दोनों चर राशि में हो या कोई एक द्विस्वभाव राशि में तथा दूसरा स्थिर राशि में हो जातक दीर्घायु तथा दोनों द्विस्वभाव राशि में हो अथवा कोई एक चर राशि में दूसरा स्थिर राशि में हो तो मध्यायु। एवमेव यदि दोनों स्थिर राशि में हों अथवा एक चर राशि में, दूसरा द्विस्वभाव राशि में हो जातक अल्पायु इस प्रकार के आयु निर्णय हेतु सामान्य दिशा निर्देशक सूत्र हैं।

### ८४ चौरासी लाख योनि का गणनानुक्रम

| | | |
|---|---|---|
| जलज जन्तु | ९००००० | सप्त समुद्र |
| स्थावर जन्तु | २०००००० | १ लवण मय सिन्धु |
| कृमि (कीट पतंग) | ११००००० | २ क्षीर सिन्धु |
| पक्षिगण वर्ग | १०००००० | ३ दधि सिन्धु |
| पशु योनि वर्ग | ३०००००० | ४ घृत सिन्धु |
| मानव वर्ग योनि | ४००००० | ५ इक्षुरसमय सिन्धु |
| एवं गणनानुक्रमे | ८४००००० | ६ मधुमय सिन्धु |
| | | ७ अमृत मय सिन्धु |

सप्तपाताल - १ तल २ अतल ३ सुतल ४ वितल ५ तलातल ६ रसातल ७ पाताल सप्त द्वीप - १ जम्बु २ प्लक्ष ३ शाल्मलि ४ कुश ५ क्रौंच ६ शाक ७ पुष्कर जम्बूद्वीप नवखण्ड - १ इलावृत २ भद्राश्व ३ हरिवर्ष ४ केतुमाल ५ रम्यक ६ हिरण्यमय ७ कुरू ८ किंपुरूष ९ भारतवर्ष।

भवानीशंकरः शर्मा यस्याऽभूत प्राक् प्रवर्त्तकः। पंचाङ्ग तदिदं ग्राह्यं निर्णयसागराभिधम् ॥ पंचाङ्ग तदिदं शुद्धं रविशंकर निर्मितम्। शुभयाऽस्तु सदानृणां निर्णयसागरसंज्ञकम् ॥

| सूर्य नक्षत्र | ⬇ दैनिक चन्द्रनक्षत्र गणनाक्रम ⬇ ● रवियोग कोष्ट रचना ● | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अश्विनी | रोहिणी | आर्द्रा | आश्लेषा | मघा | हस्त | पूर्वा षा. |
| भरणी | मृगशिरा | पुनर्वसु | मघा | पूर्वा.फा. | चित्रा | उत्त.षा. |
| कृतिका | आर्द्रा | पुष्य | पूर्वा.फा. | उत्त.फा. | स्वाति | श्रवण |
| रोहिणी | पुनर्वसु | आश्लेषा | उत्त.फा. | हस्त | विशाखा | घनिष्ठा |
| मृगशिरा | पुष्य | मघा | हस्त | चित्रा | अनुराधा | शतभिषा |
| आर्द्रा | आश्लेषा | पूर्वा.फा. | चित्रा | स्वाति | ज्येष्ठा | पूर्वा.भा. |
| पुनर्वसु | मघा | उत्त.फा. | स्वाति | विशाखा | मूल | उत्त.भा. |
| पुष्य | पूर्वा.फा. | हस्त | विशाखा | अनुराधा | पूर्वा षा. | रेवती |
| आश्लेषा | उत्त.फा. | चित्रा | अनुराधा | ज्येष्ठा | उत्त.षा. | अश्विनी |
| मघा | हस्त | स्वाति | ज्येष्ठा | मूल | श्रवण | भरणी |
| पूर्वा.फा. | चित्रा | विशाखा | मूल | पूर्वा षा. | घनिष्ठा | कृतिका |
| उत्त.फा. | स्वाति | अनुराधा | पूर्वा षा. | उत्त.षा. | शतभिषा | रोहिणी |
| हस्त | विशाखा | ज्येष्ठा | उत्त.षा. | श्रवण | पूर्वा.भा. | मृगशिरा |
| चित्रा | अनुराधा | मूल | श्रवण | घनिष्ठा | उत्त.भा. | आर्द्रा |
| स्वाति | ज्येष्ठा | पूर्वा षा. | घनिष्ठा | शतभिषा | रेवती | पुनर्वसु |
| विशाखा | मूल | उत्त.षा. | शतभिषा | पूर्वा.भा. | अश्विनी | पुष्य |
| अनुराधा | पूर्वा षा. | श्रवण | पूर्वा.भा. | उत्त.भा. | भरणी | आश्लेषा |
| ज्येष्ठा | उत्त.षा. | घनिष्ठा | उत्त.भा. | रेवती | कृतिका | मघा |
| मूल | श्रवण | शतभिषा | रेवती | अश्विनी | रोहिणी | पूर्वा.फा. |
| पूर्वा षा. | घनिष्ठा | पूर्वा.भा. | अश्विनी | भरणी | मृगशिरा | उत्त.फा. |
| उत्त.षा. | शतभिषा | उत्त.भा. | भरणी | कृतिका | आर्द्रा | हस्त |
| श्रवण | पूर्वा.भा. | रेवती | कृतिका | रोहिणी | पुनर्वसु | चित्रा |
| घनिष्ठा | उत्त.भा. | अश्विनी | रोहिणी | मृगशिरा | पुष्य | स्वाति |
| शतभिषा | रेवती | भरणी | मृगशिरा | आर्द्रा | आश्लेषा | विशाखा |
| पूर्वा.भा. | अश्विनी | कृतिका | आर्द्रा | पुनर्वसु | मघा | अनुराधा |
| उत्त.भा. | भरणी | रोहिणी | पुनर्वसु | पुष्य | पूर्वा.फा. | ज्येष्ठा |
| रेवती | कृतिका | मृगशिरा | पुष्य | आश्लेषा | उत्त.फा. | मूल |

## ❊ दोषसंघ विनाशक-मुहूर्त्तशुद्धिप्रदायक ❊
## ❀ नाक्षत्रिक-रवियोग ❀

इस प्रस्तुत कोष्ठ रचना में सुलभतया रवि योग नक्षत्र वेला मुहूर्त्त का परिज्ञान कराया गया है। सूर्यचन्द्र जनितनक्षत्र दिवस विशेष को शास्त्रकारों ने सर्वोत्तम कालांश मान्य किया है। कोष्ठ में गहरे शब्दों में सूर्य नक्षत्र तथा श्वेत शब्दों में दैनिक चन्द्र नक्षत्र हैं। यथा-अश्विनी 'अश्विन्यांरविचार:' है, तो क्रमश: यदि दैनिक नक्षत्र रोहिणी-आर्द्रा-आश्लेषा-मघा-हस्त-पूर्वाषाढ नक्षत्र होने पर रवियोग दिवस मान्य होगा **सूर्यभात्चन्द्रर्क्षे रवियोगा: स्युर्दोषसंघविनाशका:** मुहूर्त्त चिन्तामणिकार का स्पष्ट अभिमत है, जो कि मुहूर्त्त वेलाशोधन निर्णय हित अत्युपयोगी है।

## ✦ सर्वार्थसिद्धियोग ✦

**रविवार** - अश्विनी, पुष्य ३ तीनों उत्तरा, हस्त, मूल। **सोमवार** - रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा, श्रवण। **मंगलवार** - अश्विनी, कृतिका, आश्लेषा, उत्तरा भाद्रपद। **बुधवार** - कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, अनुराधा। **गुरूवार** - अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, अनुराधा, रेवती। **शुक्रवार** - अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, श्रवण, रेवती। **शनिवार** - रोहिणी, स्वाति, श्रवण।

## * अमृतसिद्धियोग *

**रविवार** - हस्त। **सोमवार** - मृगशिरा। **मंगलवार** - अश्विनी। **बुधवार** - अनुराधा। **गुरूवार** - पुष्य। **शुक्रवार** - रेवती। **शनिवार** - रोहिणी। **परिज्ञान सूत्र** - वारों के आगे जो नक्षत्र हैं पंचांग में ये प्रतीत होने पर उपर्युक्त योग चरितार्थ होगा। **यथा** - रविवार को अश्विनी होने पर सर्वार्थसिद्धि तथा हस्तनक्षत्र होने पर अमृतसिद्धियोग बनेगा परन्तु मंगल-अश्विनी गृहप्रवेश में। शनि-रोहिणी महायात्रा में तथा गुरू-पुष्य विवाह में मान्य नहीं।

## ❁ दिन-रात्रि व्यवस्थासूत्र ❁

**प्रात: संध्याकाल** - अर्ध सूर्यबिम्ब सूर्योदय से ३ घटी तक। **सायं संध्याकाल** - सूर्यास्त से ३ घटी तक। **प्रदोषवेला अर्धबिम्ब** - सूर्यास्त से लेकर ६ घटी तक। **महानिशा वा निशीथ** - अर्द्ध रात्रि के मध्य की २ घटी। **ब्रह्ममुहूर्त्त उष:काल** - सूर्योदय से ५ घटी पहले। **अरूणोदय वेला** - सूर्योदय से ३ घटी पहले।

## ❀ दिनमान का विभाजन ❀

१ मुहूर्त्त का प्रमाण अनुपातिक २ घटी अथवा ४८ मिनिट का होता है। सूर्योदय से ६ घटी तक **प्रात:काल**। १२ घटी तक संगवकाल या **पूर्वाह्नकाल**। १८ घटी तक **मध्याह्नकाल**। २४ घटी तक **अपराह्न काल**। ३० घटी तक **सायंकाल**। इस प्रकार दिनमान में ५ का भाग देकर इष्टदिन के दिनमान घटीपल प्रमाण अनुसार अनुपातिक गणना से भी समझें। १ नाड़ी प्रमाण अर्थात् १ घटी मानक मान्य होता है।

## ★ आनन्दादि योगों के जानने का कोष्ठ ★

| सं. | आनंदादय: यो. | रवि | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरू | शुक्र | शनि | फलम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | आनन्द | अश्वि | मृग. | श्लेषा | हस्त | अनुरा. | उ.षा. | शत. | शुभ |
| २ | कालदं. | भरणी | आर्द्रा | मघा | चित्रा | ज्येष्ठा | अभि | पू.भा. | अशुभ |
| ३ | धूम्र | कृति. | पुनर्वसु | पू.फा. | स्वाति | मूल | श्रवण | उ.भा. | अशुभ |
| ४ | धाता | रोहिणी | पुष्य | उ.फा. | विशा. | पू.षा. | घ. | रेवती | शुभ |
| ५ | सौम्य | मृग | श्लेषा | हस्त | अनु. | उ.षा. | शत | अश्वि | शुभ |
| ६ | ध्वांक्ष | आर्द्रा | मघा | चित्रा | ज्येष्ठा | अभि. | पू.भा. | भरणी | अशुभ |
| ७ | केतु | पुनर्वसु | पूर्वाफा. | स्वाति | मूल | श्रवण | उ.भा. | कृति. | शुभ |
| ८ | श्रीवत्स | पुष्य | उ.फा. | विशा | पू.षा. | घनिष्ठा | रेवती | रोहिणी | शुभ |
| ९ | वज्र | श्लेषा | हस्त | अनु. | उ.षा. | शत. | अश्वि. | मृग | अशुभ |
| १० | मुद्गर | मघा | चित्रा | ज्येष्ठा | अभि. | पू.भा. | भरणी | आर्द्रा | अशुभ |
| ११ | छत्र | पूर्वाफा | स्वाति | मूल | श्रवण | उ.भा. | कृति. | पुन. | शुभ |
| १२ | मित्र | उ.फा. | विशा | पू.षा. | घनिष्ठा | रेवती | रोहिणी | पुष्य | शुभ |
| १३ | मानस | हस्त | अनुरा. | उ.षा. | शत. | अश्वि. | मृग | श्लेषा | शुभ |
| १४ | पद्म | चित्रा | ज्येष्ठा | अभि. | पू.भा. | भरणी | आर्द्रा | मघा | शुभ |
| १५ | लुम्बक | स्वाति | मूल | श्रवण | उ.भा. | कृति. | पुन. | पू.फा. | अशुभ |
| १६ | उत्पात | विशा. | पू.षा. | घनिष्ठा | रेवती | रोहिणी | पुष्य | उ.फा. | अशुभ |
| १७ | मृत्यु | अनु. | उ.षा. | शतभि | अश्वि. | मृग | श्लेषा | हस्त | अशुभ |
| १८ | काण | ज्येष्ठा | अभि. | पू.भा. | भरणी | आर्द्रा | मघा | चित्रा | अशुभ |
| १९ | सिद्धि | मूल | श्रवण | उ.भा. | कृति. | पुन. | पू.फा. | स्वाति | शुभ |
| २० | शुभ | पूर्वा.षा. | घनिष्ठा | रेवती | रोहिणी | पुष्य | उ.फा. | विशा. | शुभ |
| २१ | अमृत | उ.षा. | शतभि | अश्वि. | मृग. | श्लेषा | हस्त | अनु. | शुभ |
| २२ | मुसल | अभि. | पू.भा. | भरणी | आर्द्रा | मघा | चित्रा | ज्येष्ठा | अशुभ |
| २३ | गद | श्रवण | उ.भा. | कृति. | पुन. | पू.फा. | स्वाति | मूल | अशुभ |
| २४ | मातंग | घनिष्ठा | रेवती | रोहिणी | पुष्य | उ.फा. | विशा. | पू.षा. | शुभ |
| २५ | राक्षस | शत. | अश्वि | मृग | श्लेषा | हस्त | अनु. | उ.षा. | अशुभ |
| २६ | चर | पू.भा. | भरणी | आर्द्रा | मघा | चित्रा | ज्येष्ठा | अभि. | शुभ |
| २७ | सुस्थिर | उ.भा. | कृतिका | पुनर्व. | पू.फा. | स्वाति | मूल | श्रवण | शुभ |
| २८ | प्रवर्ध | रेवती | रोहिणी | पुष्य | उ.फा. | विशा. | पू.षा. | घनि. | शुभ |

## नवीन वर्ष प्रवेश सारिणी सौर आर्षमान-पूर्वानुगतम्

| गताब्द | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ६० | ७० | ८० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वार | ०१ | ०२ | ०३ | ०५ | ०६ | ०० | ०१ | ०३ | ०४ | ०५ | ०४ | ०२ | ०१ | ०६ | ०५ | ०४ | ०२ |
| घटी | १५ | ३१ | ४६ | ०२ | १७ | ३३ | ४८ | ०४ | १९ | ३५ | १० | ४५ | २१ | ५६ | ३१ | ०६ | ४२ |
| पल | ३१ | ०३ | ३४ | ०६ | ३७ | ०९ | ४० | १२ | ४३ | १५ | ३० | ४५ | ०० | १५ | ३० | ४५ | ०० |
| विपल | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० |

## अभिनव वर्ष प्रवेश सारिणी वैधसिद्ध-वर्षमानानुगतम्

| गताब्द | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ६० | ७० | ८० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वार | ०१ | ०२ | ०३ | ०५ | ०६ | ०० | ०१ | ०३ | ०४ | ०५ | ०४ | ०२ | ०१ | ०६ | ०५ | ०३ | ०२ |
| घटी | १५ | ३० | ४६ | ०१ | १६ | ३२ | ४७ | ०३ | १८ | ३३ | ०७ | ४१ | १५ | ४९ | २२ | ५६ | ३० |
| पल | २२ | ४५ | ०८ | ३१ | ५४ | १७ | ४० | ०३ | २६ | ४९ | ३९ | २८ | १८ | ०७ | ५७ | ४६ | ३६ |
| विपल | ५७ | ५४ | ५१ | ४८ | ४५ | ४२ | ३९ | ३६ | ३३ | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० |

✦ **नवीन वर्ष साधना** - सम्प्रति नवीन वर्ष गणना हेतु भारतीय दैवज्ञों द्वारा दो प्रकार के वर्षमान से वर्षफल साधना की जा रही है। हमारे पास बहुधा पत्र आते रहते हैं कि दोनों प्रकार के वर्षमान कोष्ठ की रचना प्रकाशित की जावे। तदर्थ आर्ष परम्परानुगत ३६५।१५।३१।३० वर्षमान तथा नवीन वेधसिद्ध वर्षमान ३६५।१५।२२।५७ नियामक से दोनों कोष्ठ रचना प्रस्तुत है। गणितज्ञजन निज-निज सुविधा एवं अनुभव से प्रयोग में लेवें। दक्षिण भारत-कर्नाटक-केरल-मद्रास-महाराष्ट्र-गुजरात-आंध्रप्रदेश आदि में प्राय: नवीन वर्ष मानानुगत गणना मान्य है तो मध्यभारत में उत्तरोत्तर संभागों में उभयविध वर्ष मानानुगत गणना चरितार्थ है। ✦ **नवीन वर्ष प्रवेश पद्धति** - गताब्द गत वर्षों के वार घटि पल विपल में अपने जन्मकालिक वार तथा इष्ट घटी पल जोडने से नवीन वर्ष के वार एवं वर्ष कालिक, इष्ट घटि पल प्राप्त होंगे। कोष्ठ रचना में एक वर्ष से दस वर्ष तक तथा बाद में १०-१० वर्षान्तर में ध्रुवांक दिये हैं। यथा १६ वां वर्ष प्रवेश लाना है तो ५ तथा १० के गताब्द वार घटी पल विपल जोड़ने से १५ वें वर्ष के गताब्द वारादि प्राप्त होंगे। एवमेव २७ वां वर्ष प्रवेश लाना है तो ६ तथा २० गताब्द ध्रुवांक के योग से २७ वें वर्ष हेतु गताब्द वारादि बनेंगे एवं योग क्रिया करते किसी भी वर्ष के गताब्द वर्ष इष्ट काल वारादि प्राप्त होंगे। ✦ **गताब्द ज्ञान विधि** - जन्मसंवत् को वर्तमान संवत में घटाने में गताब्द (विगत वर्ष) प्राप्त होंगे। ✦ **वर्ष मूँथा स्थान** - जन्म लग्न भाव को प्रथम वर्ष मानते क्रमश: १-१ वर्ष वृद्धि हेतु लग्न से गणना करते रहें, जिस लग्नादि भाव स्थान पर इष्ट वर्ष की गणना पूर्ण होवे, उसी भाव की राशि में वर्ष लग्न, कुण्डली में मुँथा का स्थान न्यास होगा। विशेष वर्ष गणित विषयक विविध ज्ञान हेतु वर्षपत्र निर्माणोपयुक्त हिन्दी भाषा में वर्षफल सहित वर्ष फल कैसे मू. ४०) रू. तथा ताजिक नीलकण्ठी मू. ७०) रू. मनीआर्डर भेजकर मंगा लेवें।

### ● किसी देश के अक्षांश द्वारा इष्ट देश की पलभा ज्ञान हेतु सुगम विधि नियामक ●

जिस स्थान की पलभा बनानी हो वहां का अक्षांश जानकर उपरोक्त चक्र से इष्ट देश अक्षांश तथा उससे अगले अक्षांश की पलभाओं को घटा लेवें, शेष में इष्ट अक्षांश कला से गुणा करें, तथा गुणनफल में ६०.का भाग देने पर अंगुलात्मिका पलभा सिद्ध होगी। **यथा उदाहरण** - मद्रास की पलभा जाननी है तो वहां का अक्षांश १३।४ स्पष्ट है। अब पलभा चक्र से १३ और १४ अंश की पलभा लेने से २।४६।४१ तथा २।५९।२८ प्राप्त हुईं, इनका ऋणफल अन्तरांश ०।१२।४७ हुआ। इसमें इष्ट देश के अंश उपरान्त शेष कला ४ से गुणा किया तथा गुणनफल में ६० का भाग दिया लब्धि ०।०।५१ प्राप्त। इसको प्रथम पलभा २।४६।४१ में यथा स्थान जोड़ने से २।४७।३२ तथा **'अर्धाधिकं रूपं स्यात्'** नियम से २ अंगुल ४८ व्यंगुल पलभा सिद्ध हुई। इसी पलभा को अक्षभा या विषुवती भी कहते हैं। पलभा से चर खंड तथा चरखंड से स्वदेशीय उदयमान प्राप्त होता है। ❀ **निरक्षोदय या लंकोदयमान - लंकोदया विघटिका गजमानिगोन्कदस्रा, त्रिपक्ष दहना** - इस प्रमाण से ● २७८ पल मेष ● २९९ वृष ● ३२३ मिथुन ● ३२३ कर्क ● २९९ सिंह ● २७८ पल कन्या तथा तुला का लंकोदय मान एवं ● २९९ वृश्चिक ● ३२३ धनु ● ३२३ मकर ● २९९ कुंभ तथा ● २७८ पल मीन आदि सभी राशि का स्थिर उदयमान होता है। ❀ **इष्ट स्थानीय चरखंड साधन** - इष्ट स्थानीय पलभा को ३ जगह रखें उनमें क्रमशः १० तथा ८ और १०/३ से गुणा करने पर मेषादि ३ राशियों के क्रमशः ३ चर खण्ड होंगे तथा विपरीत उत्क्रम से कर्कादि ३ राशियों के होंगे। एवमेव मेषादि ६ राशियों के ही क्रमशः मीन, कुंभ, मकर, धनु, वृश्चिक तथा तुला राशि के चर खण्ड होंगे। ❀ **स्वदेशी उदयमान विधि** - मेष के लंकोदय जो उपरोक्त स्पष्ट है, इनमें इष्ट स्थानीय प्रथम गुणित चरखंड घटाने से पलात्मक मेष का उदयमान आवेगा। द्वितीय गुणित चरखंड को वृष के लंकोदय में घटाने में वृष का, तृतीय गुणितफल को मिथुन लंकोदय मान से घटाया तो मिथुन को उदयमान आया। कर्कादि कन्या राशि तक इन ३ में उत्क्रम नियम से कर्क में तीसरा, सिंह में दूसरा, कन्या में पहला चरखंड जोड़ने से कर्क से कन्या पर्यन्त उदयमान होंगे एवं मेषादि ६ राशि के उदय ही क्रमशः मीन, कुंभ, मकर, धनु, वृश्चिक व तुला के मान्य होंगे।

## कस्यापिअक्षांशत: कस्यापि देशस्य पलभाबोधक चक्रम्

| अक्षांश | पलभा | अक्षांश | पलभा | अक्षांश | पलभा | अक्षांश | पलभा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०१ | ०।१२।३४ | १५ | ३।१२।५४ | २९ | ६।३९।४ | ४३ | ११।११।२४ |
| ०२ | ०।२५।९ | १६ | ३।२६।२४ | ३० | ६।५५।४१ | ४४ | ११।३५।२४ |
| ०३ | ०।३७।४४ | १७ | ३।४०।५ | ३१ | ७।१२।३६ | ४५ | १२।०।० |
| ०४ | ०।५०।२१ | १८ | ३।५३।६ | ३२ | ७।२९।५३ | ४६ | १२।२५।३७ |
| ०५ | ०।१०।३।० | १९ | ४।७।५५ | ३३ | ७।४७।३१ | ४७ | १२।५२।४ |
| ०६ | १।१५।१४ | २० | ४।२२।१ | ३४ | ८।५।३८ | ४८ | १३।१९।३४ |
| ०७ | १।२८।२३ | २१ | ४।३६।२२ | ३५ | ८।२४।७ | ४९ | १३।४८।१८ |
| ०८ | १।४१।१० | २२ | ४।५०।५३ | ३६ | ८।४३।५ | ५० | १४।१८।३ |
| ०९ | १।५४।० | २३ | ५।५।३८ | ३७ | ९।२।२५ | ५१ | १४।४९।८ |
| १० | २।६।५४ | २४ | ५।२०।३१ | ३८ | ९।२२।३० | ५२ | १५।२१।३२ |
| ११ | २।१९।५५ | २५ | ५।३२।४२ | ३९ | ९।४३।१ | ५३ | १५।५५।३० |
| १२ | २।३३।० | २६ | ५।५१।७ | ४० | १०।३।३६ | ५४ | १६।३१।१ |
| १३ | २।४६।४१ | २७ | ६।६।५० | ४१ | १०।२८।४८ | ५५ | १७।८।३४ |
| १४ | २।५९।२८ | २८ | ६।२२।४८ | ४२ | १०।४८।१८ | | |

## ▲ स्वास्थ्य लक्षण सूत्र ▲

● **सुखसंज्ञकमारोग्यं विकारो दुःखमेव च** ● **समदोषः समाऽग्निश्च समधातुमलक्रियः। प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाः स्वस्थ इत्यभिधीयते॥** सु.सू.अ.१५। जिस व्यक्ति के तीन दोष (वात-पित्त-कफ) समान अवस्था में रहें जठराग्नि क्षुधा तत्व भी सम हों, सातों धातु (रस-रक्त-मांस-मेद-अस्थि-मज्जा-शुक्र) सम हों, धातुओं के मलों की क्रिया (मल मूत्रादि का यथा समय-सामयिक उत्सर्जन) तथा आत्मा, पंच ज्ञानेन्द्रियाँ (कर्ण-त्वचा-नेत्र-रसना-नासिका) की कार्यक्षमता तथा मन प्रसन्न हो-वह व्यक्ति ही परिपूर्ण स्वस्थ है। **''विकारो धातु वैषम्यं साम्यं प्रकृतिरूच्यते''** तथा आरोग्य जीवन कौन प्राप्त कर पाता है - **नित्यं हिताहारविहारसेवी, समीक्ष्यकारी विषयेष्वसक्तः। दाता समः सत्यपरः क्षमावानाप्तोसेवी च भवत्यरोगः॥** सदैव हित आहार, हितविहार सेवन करने का स्वभाव वाला, सोचविचार कर क्रियाशील रहने वाला, बहु विषय-वासना से वंचित, त्यागी-दाता, सभी प्राणियों में तथा सभी अवस्था में समबुद्धि, सत्यनिष्ठा, सहिष्णु प्रकृति तथा विज्ञजनों का सत्संगशील मनुष्य निरोगी होता है। तभी शिष्टपुरूष हेतु नीतिवचन - **धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम्। रोगास्तस्यापहर्त्तारः श्रेयसो जीवितस्य च॥** धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष का सर्वोत्तम मूल आरोग्यता है, रोग विकार कल्याणकारक जीवन के अपहर्त्ता नाशक हैं।

Bhagwati Prasad Dadhich
Astrologer, Vedic Pandit

8586094945
8302680069

# Nirankar

## Astro & Vedic

Here we done all North Indian Pooja,
Manglik Work, Astrology, Karma
are Performed by Vedic Rituals

भारत में सर्वाधिक प्रामाणिक बिक्री वाले इस पञ्चाङ्ग को लेते समय ''निर्णयसागर पञ्चाङ्ग कार्यालय, नीमच'' नाम अवश्य देखें।

निर्णयसागर पञ्चाङ्ग कार्यालय, नीमच छावनी



















यह जोधपुरीय ♣ श्रीचण्डमार्त्तण्डनिर्णयसागरपञ्चाङ्ग ♣ नीमचनगरस्थ सुप्रसिद्ध ज्योतिर्विद पण्डित श्रीयुत भवानीशंकररविशंकरात्मज वैद्य श्री आनन्दस्वरूप शास्त्री द्वारा अभिनव सुसंस्कारित ग्रहगणितानुसार शुद्धकर, विविधशास्त्रीय विषयों से अलंकृत, धर्मकृत्योपयोगी सर्वजनहितार्थ स्व निर्णयसागरपञ्चाङ्ग कार्यालय, नीमच छावनी (म.प्र.) से प्रकाशित किया।

♠♠♠ इस पञ्चाङ्ग के पुनर्मुद्रणादिक सर्वाधिकार प्रकाशक के अधिनस्थ है। ♠♠♠



















Published, Printed & Prepared by Late Pt. Bhawani Shankar Ravishankar Sharma, Vaidya Anand Swaroop Shastri , Shobha Devi & Sons as
NIRNAY SAGAR PANCHANG KARYALAY, 503, Tilak Marg, Neemuch - 458441 (M.P.) Ph. : 9425974174, 07423-220520
Email us : nspkn1@gmail.com    Message us : 8964098640    Search us : "Nirnay Sagar Panchang Prakashan"